पाती

(भोजपुरी दिशा बोध के पत्रिका)

अंक: 75 (जयन्ती विशेषांक) | www.bhojpuripaati.com | (तिमाही) मार्च-जून 2015

आजीवन सदस्य/संरक्षक

तुषारकान्त उपाध्याय (पटना, बिहार), डा० शत्रुध्न पाण्डेय (तीखमपुर, बलिया), जे.जे. राजपूत (भड़ूच, गुजरात), राजगुप्त (चौक, बलिया) धीरा प्रसाद यादव (बलिया), डा० ओम प्रकाश सिंह (भोजपुरिका डाट काम), विजय मिश्र (टण्डवा, बलिया), डॉ० अरूणमोहन भारवि (बक्सर), ब्रजेश कुमार द्विवेदी (टैगोरनगर, बलिया), दयाशंकर तिवारी (भीटी, मऊ), श्री कन्हैया पाण्डेय (बलिया), भगवती प्रसाद द्विवेदी (पटना), सरदार बलजीत सिंह (सी० ए०), बलिया एवं जयन्त कुमार सिंह (खरौनी कोठी) बलिया।

प्रबन्ध संपादक
प्रगत द्विवेदी

उप-संपादक
विष्णुदेव तिवारी

सह-संपादक
हीरा लाल 'हीरा', सान्त्वना,
सुशील कुमार तिवारी

कंपोजिग/ग्राफिक्स
शैलेश कुमार, सत्यप्रकाश पांडेय

इन्टरनेट मीडिया सहयोगी
डा0 ओम प्रकाश सिंह

आवरण चित्र
शचीन्द्र नाथ झा
(ललित कला अकादमी के सौजन्य से)

संपादक
डॉ0 अशोक द्विवेदी

संचालन, संपादन
अवैतनिक एवं अव्यावसायिक
टैगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001

संपादन-कार्यालय:-

टेगोर नगर, सिविल लाइन्स, बलिया-277001 एवं
एफ/1118, आधार तल, चितरंजन पार्क, नई दिल्ली-19
मो0- 08004375093, 91-9919426249
e-mail:-ashok.dvivedipaati@gmail.com

एक अंक पर सहयोग-60/-
सालाना सहयोग-200/-
(डाक व्यय सहित)

(पत्रिका में प्रगट कइल विचार, लेखक लोग के हऽ ओसे पत्रिका परिवार के सहमति जरूरी नइखे)

एह अंक में....

हमार पन्ना –
- **प्रेमकथा विशेशांक पर**/3–4

कहानी –
- **भैरवी क साज** / ईश्वरचन्द्र सिन्हा/5–7
- **बाजलि बैरिन रे बँसुरिया** / गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश' / 8–11
- **बरमाला** / कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य' / 12–15
- **केकरा पर करबि सिंगार** / रामवृक्ष राय 'विधुर' / 16–17
- **लाल निशान** / विन्दु सिन्हा / 58–59

बतकुच्चन –
- ओम प्रकाश सिंह/15 एवं पृ0 109

गजल/गीतिका –
- शशि प्रेमदेव / कवर–2 • शिलीमुख / कवर–2
- आसिफ रोहतासवी / 7 • प्रो0 रिपुसूदन श्रीवास्तव / 80 एवं 86
- शशि प्रेमदेव / 98 • हीरालाल 'हीरा' / 68
- ब्रजेन्द्र नारायण 'शैलेश' / 72 एवं 123 • शंकर–शरण / 94

कहानी –
- **प्रेम के सुभाव** / डा0 रामदेव शुक्ल/18–22
- **कबहुँ न नाथ नींद भर सोयो** / कमलाकर त्रिपाठी / 60–63
- **जहँ तुहुँ अइतऽ** / प्रेमशीला शुक्ल / 64–68
- **हँ** / बरमेश्वर सिंह / 69–72
- **यादगार** / कन्हैया सिंह 'सदय' / 73–77
- **अनेति से प्रेम** / आनन्द सन्धिदूत / 78–80

उपन्यास-अंश –
- **बनचरी** / अशोक द्विवेदी / 23–57

कहानी –
- **अलबलाह** / रमाशंकर श्रीवास्तव / 124–125
- **अकथ कहानी** / तुषारकान्त उपाध्याय / 81–86
- **जंगली फूल** / डा0 तैयब हुसैन 'पीड़ित' / 87–90
- **सुलोचना** / कृष्ण कुमार / 91–93
- **डरपोक** / विजयानन्द तिवारी 95–98
- **अनबोलता क प्रेम** / विजयशंकर पाण्डेय / 99–100

लघुकथा –
- **तालमेल** / विनोद द्विवेदी / 77
- **बछरू** / राजगुप्त / 90

कहानी –
- **तामे दो न समाहिं** / विष्णुदेव तिवारी / 101–105
- **भिहिलात बतासा जइसन** / भगवती प्रसाद द्विवेदी / 106–109
- **अय अय हनुमान गोसाईं** / प्रकाश उदय / 110–119
- **बुढ़ारी क प्रेम** / अयोध्या प्रसाद उपाध्याय / 120–123
- **अर्द्धांगिनी** / अनिरुद्ध त्रिपाठी 'अशेष' / 126–129

कसौटी/समीक्षा/किताब चर्चा–
- प्रतिबद्ध कहानी सिरिजना / विष्णुदेव तिवारी / 130
- परलोक में लोक / डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव / 131

गतिविधि –
- विद्याश्री न्यास सम्मान समारोह आ लेखक शिविर / 132–133
- भाषा केन्द्र, जे0 एन0 यू0 में पुस्तक विमोचन, काव्यपाठ आ परिचर्चा आयोजन / 133–135

राउर पन्ना –
- पाठक लोगन क चिट्ठी / 136

प्रेम-कथा विशेषांक पर बतकही

अभाव आ गरीबी पहिलहूँ रहे। दुख–दलिद्दर अइसन कि रगरि के देंहि क चोंइटा छोड़ा देव। लोग आपुस में रोइ–गाइ के जिनिगी बिता लेव, बाकिर मन मइल ना होखे देव। हारल–थाकल जीव के प्रेमे सहारा रहे। धीरज आ बल रहे। आजु एतना तरक्की आ सुबिधा–साधन का बादो लोग अपने में बाझल–हकासल, हहुवाइल, हलकान–परेशान बा। सँगे रोवे–गावे वाला अँजरा–पँजरा लउकते नइखे। अब अदिमी क ना, ओकरा पद–पइसा, चीझ–बतुस आ ताकत क मोल बा। अदिमी के भाव गिरला का पाछा, आदमीयत क गिरावट बा।

खुदगर्जी, लालसा, हिरिस आ डाह–इरिखा जवन ना करावे। लोग मतलब पर भेंटो–मुलाकात करऽ ता। दुसरा का खुसी में खुस आ दुख में दुखाये वाली संवेदना बुझला मुवल जातिया। भौतिकी के जटिल जाल आ बढ़त बाजार अदिमी के शरीरी–भोक्ता बना देले बा। परायापन आ संवेदनहीनता अन्तर में अइसन पइसल जाता कि भित्तर क राग तत्व मुवल जाता। जीवन–रक्षा के सोत कइसे बाँची ? मनुष्य–रूपी बिरिछ के पुलुई ना सोरि क चिन्ता करे क – समय आ गइल बा।

हमन में 'योग' क सवख जरूर बढ़ल बा, बाकि भोग क रोग जाने नइखे छोड़त। सरलता, सच्चाई, हिरऊ प्रेम, लगाव, सहानुभूति आ सहकार क नाँवें बुताइल जाता। ई सब चीज कवनो बिजुली–पानी, आ गैस, तेल त हऽ ना, कि सरकार दे दी। खेत–बधार आ धन–दऊलत त हऽ ना कि अमीरन का कब्जा में बा। ई सब त नैसर्गिक जीवन क देन हऽ। अनुभव से अरजल–सँवारल जाला। जइसन प्रकृति सिखावेले। जइसन लोक बतावेला। भूख, पियास, नीन लेखा प्रेमो अदिमी क शाश्वत जरूरत बा। फरक अतने बा कि ई 'हाटे' ना बिकाय आ किनले ना किनाय। दुनियाँ जानेले कि ई कइल ना जाय, अपरूपी हो जाला।

प्रेम प्रकृति हऽ। प्रकृति जीवन। ई ऊ धड़कन हऽ जवन फूल–पतइन में रंग बन के स्पन्दन करेला, नदी, झरना का कल–कल, छल–छल में ध्वनित होला, चिरई–चुरूंग आ भँवरा में राग बन के गुंजित होला, कोयल–पपिहा बन के कूकेला, मोर–मोरनी बनि के नाचेला। प्रेमी त प्रेम में अतना अचेतन हो जाला कि बेसुधी में अपने के भुला जाला।

हृदय के अनुराग के विविध रंग रूप बा। लगाव, प्रीति, मोह, ममता, बात्सल्य, सखा भाव, दया, करूना, छोह प्रेमे का जोरे–जवरे विकसेला। पदारथ रहित त परिभाषा बतावल जाइत। बुझला ई बतवला, सिखवला आ समझवला से पार आ परे बा। प्रेम भइले पर एकर परतीति होला। ई आधा–अधूरा ना, होला त पूरा होला आ अधूरा के पूरा बना देला। ई जोखाये आ नपाये वाला पदारथ ना हऽ। प्रेम बेहोसी क नाँव हऽ। एमे आपन होसे कहाँ रहेला कि कवनो 'कमेन्ट' करी। होश चेतना से होला। चेतना सोचे–समझे के शाक्ति देले, बुद्धि तर्क–वितर्क करावेला। प्रेम बुद्धि आ चेतना से परे होला। समझदार आ चल्हाँक लोग एही से एकरा के पागलपन कहेला। प्रेम में तनिको चल्हाँकी आ सयानापन ना चले। बस साफ–सोझ डहर बा, बाकि तलवार के धार अइसन प्रेम एही.... ''तलवार के धार प' धावनो है।''

दुनियाँ क सगरी वैभव आ सरग–सुख के ठेंगा देखावे क कूबत खलिसा प्रेमे में बा। समझदार आ ज्ञानी लोगन का फतवा का कारन एकर डिवैलूएशन' हो गइल। 'प्रेम' प बोललो–बतियावल दुलम हो गइल। मनुष्य का 'निजता' आ 'स्व' के विस्तार देबे वाला प्रेम के फरियाद भौतिक–द्वन्द्व का अदालत में खारिज एसे भइल कि लोग एकरा के देह उपभोग से जोर के देखल, आत्मा से ना। प्रेम, प्रतिदान ना माँगे, कीमत ना वसूले, ऊ अपना के उबिछ के देबे जानेला, त्याग आ बलिदानो में ना हिचकिचाला। मर–मिट जाला बाकि 'प्रेम' का पवित्रता प आँच' ना आवे देला।

गनीमत बा कि 'लोक' आ 'लोक–अभिव्यक्ति में प्रेम क सुर–ताल अभी जीयत बा। उहाँ प्रेम क गीत अब्बो गवाता आ प्रेम क कहनी एहू घरी कहल जाता। हमनिये का ना, दुनिया का हर 'लोक' में अब्बो ई मगन होके कहल–सुनल, जाता। माता अब्बो संतान का प्रेम में पगलाइल मिलेले, पिता आ दादा–दादी के नेहे–मोह में भूखि–पियास गायब होले। रीझन–खीझन आ कहासुनी का बादो दाम्पत्य में एक–दुसरा खातिर बेकली आ तड़प बनल बा। दुसरा का खेयाल में आपन सुधि खोवे वाला लोक–भाव अजुओ देखे के मिलिये जाला। मनुष्य–जीवन के सहेजे–सँवारे वाला एह प्रेम के अकथ कहानी बा। बस देखे वाली आँखि चाहीं आ ओकर सम्मान करे वाला हृदय।

विश्व–साहित्य लेखा भोजपुरियो के साहित्य 'प्रेम' का बहुरंगी भाव–भंगिमा के उकेरे आ कहे क भरपूर उतजोग कइले बा। हमरा कुछ सहयोगी लोगन क विचार रहे कि प्रेमपरक भोजपुरी कहानी अपना खास भाषिक तेवर आ भाव – भंगिमा का साथे एक्के जगह पढ़े के मिल जाव, ईहे सोच के 'पाती' आपन 75वाँ अंक 'प्रेम–कथा–विशेषांक का रूप में पाठकन का आगा परोसे क कोसिस कइलस। पछिला साल एही फगुवा का समय 'प्रेम–कविता–विशेषांक' देबे क इहे मकसद रहे कि हमहन क कवि–कथाकार साहित्य–सिरजन में कवनो बान्ह–छान्ह, पगहा आ 'फतवा' के तरजीह ना देके, मनुष्य का मनुष्यता के जियावे–जोगावे खातिर अपना रचना कर्म में स्वतंत्र आ क्रियाशील बाड़न।

'पाती' का ए अंक में 'प्रेम' आ नेह–छोह के बहुरंगी कहानी बाड़ी सऽ। परम्परा बा, विकास बा आ विकासमान वर्तमानो बा। हमार कोसिस इहे बा कि पुरान से लेके नया तक, सब एक सँगे पढ़ल–समझल जाव। हर कथाकार अपना गढ़ल पात्र आ चरित्र में 'प्रेम' के दैहिक आ आत्मिक संरूप चित्रित करे क उतजोग कइले बा–कहीं सांकेतिक, कहीं वर्णनात्मक, कहीं प्रतीकात्मक ढंग से। कथा के ताना–बाना में, सुभाविक रंग आ रूप का जियतार अभिव्यक्ति का साथ, 'प्रेम' के जियतारे उघारे क अन्तर्मुखी आ बहिर्मुखी द्वन्द्वो एह कहानियन में देखे के मिली। एह कथा–अंक में प्रकाशित भोजपुरी कहानी के कुछ धरोहरो बा। ईश्वर चन्द्र सिन्हा के बनारसी ठसक आ ठाट वाली चर्चित कहानी 'भैरवी क साज' का साथे। 'बैरिन बँसुरिया' के यशस्वी लेखक गिरिजाशंकर राय आ रामवृक्ष राय 'विधुर' के कहानी बाड़ी सऽ। विन्दु सिन्हा के कहानी बा। कमलाकर त्रिपाठी के अवधी क पुट लिहले मरम छुवे वाली कहानी 'कबहुँ न नाथ नींद भर सोयो बा। साथ में भोजपुरी क चर्चित साहित्यकार–कथाकार लोगन क बीसन गो कहानी बाड़ी सऽ। 'प्रेम के सुभाव' में डा0 रामदेव शुक्ल जी मर्यादित प्रेम का जरिये पुरान आ नया पीढ़ी के द्वन्द्व सझुरावत, 'संगति' बइठावत बाड़न। प्रेमशीला जी के कहानी 'जहँ तुहुँ अइतऽ' में 'प्रेम' महतारी आ चाचा का सान्निध्य में सयान होत दाम्पत्य में गइल नारी के सोझा प्रश्न बन के खड़ा बा। नारी चेतना आ ओकरा मूक जागरन का साथ अन्तर्द्वन्द्व पढ़वइया का आगा कतने सवाल छोड़ जाता। अनिरूद्ध त्रिपाठी 'अशेष' आ कन्हैया सिंह 'सदय' का कथा में वैचारिक भावभूमि 'प्रेम' का सँगहीं तइयार होत बा। अइसहीं वरमेश्वर सिंह, अयोध्या प्रसाद उपाध्याय जी, विजयानन्द तिवारी, विष्णुदेव तिवारी, तैयब हुसेन 'पीड़ित', प्रकाश उदय आदि लोगन का कहानियन से सजल ई अंक संग्रह जोग बन गइल बा। तुषारकान्त उपाध्याय प्रेम का 'अकथ' के संवेदना से जोड़ देले बाड़े। चरित्र के चटक रंग आ मनोविनोद से भरल प्रकाश–उदय अपना कहानी में गंभीरता के परत के तूरत प्रेम के छिपल–सांकेतिक स्पर्श करावत बाड़े।

'कबहुँ न नाथ नींद भर सोयो' आ 'अकथ' में मूक प्रेम क मरम छुवे वाला चित्रण बा। कहीं दाम्पत्य के त कहीं प्रेम का निबाह खातिर मूक त्याग के संकेत बा। एह कहानियन के पढ़त खा, पढ़वइया के ओही भाव–भूमि पर उतरे के परी, जवना भूमि पर कहानी चल रहल बाड़ी सन। हम 'पाती' का मंच प' भोजपुरी का हर छोट–बड़ कथाकार के आदर देत बानी।

होली आ फाग क खुमार उतरे, एकरा पहिलहीं नया संवत् चढ़ि गइल बा। ई नया साल सउँसे–भारत खातिर शुभ आ मंगलकारी होखे। सबके हमार प्रेम–पगल शुभकामना।

अशोक द्विवेदी

भैरवी क साज

ईश्वरचन्द्र सिन्हा

सिंहवाहिनी देवी के सालाना सिंगार के समय माई के दरबार में जब चम्पा बाई अलाप लेके भैरवी सुरू कइलिन, त उहाँ बइठल लोगन क हाथ अनजाने में करेजा पै पहुँच गयल। रात भर गाना सुनत–सुनत जे झपकी लेवे सुरू कय देहले रहल, ऊहो अचकचाय के उठ बइठल, जइसे केहू ओनके उप्पर लोटा क पानी उड़ेल देहले होय।

चम्पा बाई के गला जइसन सुरीला रहल, बइसहीं ओनकर रूपो अइसन रहल कि देखवइयन के झाँई आवे लगे। औ भैरवी के ओन्हे जइसे सिद्धि मिलल रहल; बनारस में ओह समय ओनके जोड़ के भैरवी गावे वाला केहू दूसर नाही रहल।

चम्पा बाई क टीप ओह भोरहरी के बेरा गंगा के चीर के ओह पार रेती तक पहुँचत रहल। जइसहीं चम्पा बाई दोहराय के गउलिन– 'लगत करेजवा में चोट' सज्जै दरबार झूम उठल।

'वाह मालिक, तनी बताय के'– मंदिर के ओर के सीढ़ी से ई आवाज लगते, दरबार के एक कोने में जइसे हलचल मच गयल। चम्बा बाई चकपकाय के ओहर तकली, त देखैं कि बचऊ महराज क छः फुटी काया सीढ़ी पार कइके सामने आइ गइल हौ। चम्बा के गइबै जइसे भुलाय गयल।

बचऊ महराज आवाज देहलन– 'सुरू होवे दा चम्पा, काहें चुपाय गइलू। का सच्चौ के पीर उठ गयल?'

बचऊ महराज के एतना कहतै दरबार के जउने कोने में हलचल मचल रहल, ओहर से आठ दस जवान लाठी लेहले तनतनाय के खड़ा हो गइलन। ई पट्ठा बल्ली बाबू के रहलन, जेकरे नाम के दबदबा ओह समय बनारस पै रहल। हर समय दर बीस पट्ठ दुआरे पै पड़ल भाँग–बूटी छानल करें और जरूरत पड़ले पै सौ दू सौ के एकट्ठा करे में देर न लगे।

बल्ली बाबू के पट्ठन के लाठी खड़कतै, लोगन के देही के जइसे खून सुखा गयल। बाकी बचऊ महराज पै एकर तनिको असर नाहीं देखायल। ऊ अगिला पट्ठा के ओर ताक के कहलन– 'का रे सुमेरवा! जाय के बल्ली से कह दीहे कि हमसे मिल लीहें।'

सुमेर टकटकी लगाय के देखत रह गयल। बचऊ महराज कंधे से खसकल दुपट्टा उप्पर चढ़ावत घाट के ओर बढ़ गइलन। दरबार खतम हो गयल। कुछ लोग घरे गइलन, औ कुछ लोग नहाये बदे गंगा किनारे। चम्पा बाई बल्ली बाबू के पट्ठन के घेरा में दालमंडी के रस्ता धइलिन।

बात ओह समय के हौ, जब तुरुकन के अमलदारी के धूर चटाय के फिरंगिन के कोतवाली चौक के करेजा पर खड़ी होय के भद्दीमल के हवेली से आँख लड़ावे सुरू कइले रहल। बल्ली बाबू के घर एही हवेली के पिछवैं लख्खी चौतरा से सटले रहल। कहल जाला कि एकर नाम लख्खी चौतरा एह बदे पड़ल कि हाथ भरके चौतरा बदे जब दुइ बनारसिन में ठन गयल त दूनो ओर के कुल मिलाय के एक लाख रुपया लड़े में खरच हो गयल। बल्ली बाबू बनारस के सराफा बाजार क राजा कहल जाँय। का मजाल कि एक्को गुल्ली सोना चाहे एक्को सील चाँदी बिना ओनके मरजी के बिकाय जाय। उमिर त अबहीं पचीसिये में रहल, बाकी सराफा के बूढ़–बूढ़ दलाल ओनके गुरू कहैं औ मानै। जब बल्ली बाबू सराफा में पहुँचै त बड़े–बड़े सेठ हाथ में पान के दोना लेके खड़ा हो जाँय। बल्ली बाबू खाली दलालै ना रहें। बल्ली बाबू के रहत सराफा के ओर केहू आँख नाहीं उठाय सकत रहल। सराफा के नइकी कोतवाली पै ओतना भरोसा ना रहल, जेतना बल्ली बाबू पै।

बचऊ महराज पैंतीस के पास पहुँचल रहलन। बाल–बच्चा वाले रहलन। शरीर और रियाज खानदानी रहल। बाप दादा के बखत से जजमानी होत आइल रहल। जजमानियो एकठे रियासते होले, जेकरे रच्छा बदे मालिक के गुंडा बने के और चेलन के एकठे फउजो पाले के पड़ेला। बचऊ महराज ई दूनो में बनारस उप्पर मानल जात रहलन। ओनकर हवेली बालूजी के फरस पै रहल। ऊ हवेली का रहल एकठे किला रहल। सदरी दुआर एक्कै, बाकी ओम्मे अँगना इग्यारह ठे। बचऊ महराज लँगोट के पक्का रहलन, बाकी ओह समय के रईसन मतिन गाना सुनै के सउख ओन्हऊ के रहल। साल भर पहिले जब बनारस के रईसन के महफिल में चम्पा बाई के धूम मचल रहल, बचऊ महराज कब्बौ–कब्बौ चम्पा बाई क कोठा पै जाय के गाना सुन आवें। बाकी साल भर से चम्पा बाई मुजरा त बन्द करी देहलिन, महफिलो में जाब छोड़ि देहलिन, चाहे केहू ओनके एक लाख देवे बदे काहें न तइयार होय।

साल भर पहिले चम्पा बाई के भेंट जब बल्ली बाबू से भइल, त चम्पा अपने मतारी के कुल सिखावल–पढ़ावल भुलाय के बल्ली बाबू पर लट्टू हो गइलिन। बल्ली बाबू उहाँ जाये त सुरू कइलन गाना के आनन्द लेवे, बाकी धीरे–धीरे ऊ दूसरे आनन्द में पड़ गइलन। ऊहो समय आय गइल, जब मोजरा के समय रईस लोग दालमंडी पहुँचै त चम्पा बाई के खिरकी बन्द पावें। ई बात दालमंडी के घरे–घरे फइल गयल कि अपने रईस के कहले से चम्पा कोठा बन्द कय देहलिन। दालमंडी में बल्ली बाबू चम्पा के रईस कहल जाये लगलन और चम्पा के रोब–दाब ओह गली में सबके छाप लेहलस। नया–नया आयल कोतवाल फरजंद अली के भी तरह

के रह जाये के पड़ल। चम्पा के गाना सुने के लालसा ओनके मने में झुराय गयल।

चम्पा नाचब–गायब कुल छोड़ त देहलिन बाकी जब सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के समय नगिचायल त ओनके अपने माई के कहल इयाद पड़ गयल। ओनकर माई हर साल सिंहवाहिनी देवी के सिंगार के दरबार में गावे बदे जरूर जाँय। ऊ बतउले रहलिन कि चम्पा के नानियो उहाँ जाये में कउनो साल नागा नाहीं कइले रहलिन। ओनके ई विसवास रहे कि देवी जी के किरपा से ओनकर बंस फूलत–फलत आवत हौ। चम्पौ जब से नाचब–गाइब सुरू कइलिन, देवी जी के दरबार में जाय अपने हुनर से माई के रिझावे से ना चूकें। ऊ बल्ली बाबू के राजी कइ लेहलिन कि भोर के बखत मन्दिर में जाय के एक ठे भैरवी सुनाय अइहें। ओनके संगे बल्ली बाबू के दस बारह पट्ठौ उहाँ गइलन। संयोग क बात कि ओही समय गंगा–नहाये जात के जब बचऊ महराज मन्दिर के पास पहुँचलन त चम्पा के टीप सुनके माई के दरबार में पहुँच गइलन और अन्यासे ओनके मुँह से ऊ बात निकल गयल, जौन दरबारै के खड़बड़ाय देहलेस।

बल्ली बाबू अपने पट्ठन से जब ई कुल सुनलन त मारे गुस्सा के ओनकर चेहरा लाल हो गयल। ऊ दप से लाठी उठौलन और दलान के बाहर होय गइलन। गल्ली में पहुँचते ओनके मन में न जाने का आयल कि मुड़ के लाठी फेंक के खाली हाथ बचऊ महराज के घरे पहुँच गइलन।

बल्ली बाबू के देखतै बचऊ महराज उठ के आदर से ओनके बइठावे चहलन, लेकिन बल्ली बाबू खड़ै–खड़ै कहलन– 'सुमेरवा कहलेस ह कि महराज बोलउले हउवन। सुमेरवा कउनो गुस्ताखी कइलेस का?'

'नाहीं हो। चम्पा के भैरवी साल भर पै सुनै के मिलल, तवन ऊ ससुरा लाठी खड़कावे लागल। चम्पो त अइसन लजाइल जइसे तोहार बिअहुता होय।'

'बिअहुता' सुन के बल्ली बाबू तिलमिलाय उठलन। तब्बौ अपने के संभार के कहलन 'कल भोरे में मनकनिका घाट पर चम्पा के भैरवी सुने के तोहके नेवता हौ महराज।'

बल्ली बाबू के चुनौती समझत बचऊ महराज के देरी ना लगल। ऊ झगड़ा बढ़ावे नाही चाहत रहलन। ऊ त लाठी खड़कले पै सुमेरवा के ई चेत दियावे बदे कि हम तोहरे मतिन पट्ठा नाहीं, बल्कि गुरू हईं, बल्ली बाबू के बात से ऊ समझ गइलन कि बात उहाँ तक बढ़ गइल हौ, जौने से पीछे नाहीं हटल जा सकत। बल्लिओ बाबू बिना जबाब के इंतजार कइले उलट के बाहर चल गइलन।

ई खबर बिजली मतिन सहर भर में फइल गइल। सबकै जबान पै एकै बात रहल कि कल का होवे वाला हौ। दूनो ओर के पट्ठा लाठी चिकनावे सुरू कय देहलन। दूनो कोठियन में हलचल मच गयल। रात दुइये बजे से मनिकनिका पै लोग जुटे लगलन। भोर होत होत बचऊ महराज और बल्ली बाबू अपने–अपने पट्ठन के साथ पहुँच गइलन। ओहारदार पालकी में चम्पा बाई भी उहाँ ले आवल गइलिन। रोवत रोवत ओनकर आँख फूल गइल रहल। बार बार ओनके मन में आयल कि रोय–धोय के बल्ली बाबू के रोकीं। बाकी ई सोच के कि फिर बल्ली बाबू बनारस में कवन मुँह देखइहें, मुँह न खुलि पावे। चम्पा पत्थर के करेजा कय के ई तय कय लेहलिन कि चाहे जवन कुछ हो जाय, बल्ली बाबू के सान में बट्टा चम्पा के मोहब्बत औ चम्पा के अपने स्वारथ बदे न लगे पायी।

बचऊ महराज सामने के मढ़ी पै बइठल रहलन। बल्ली बाबू उहाँ जाय के पुछलन– 'का महराज भैरवी सुने के तइयार हउवा।'

'हाँ हो! हम त सुरू होवे बदे अगोरत हईं।' बचऊ महराज मुस्कियाय के कहलन।

'साज पै का बजे के चाहीं।' बल्ली बाबू तनी तिरछा होके कहलन।

'चम्पा तोहार हई और साजो तोहरे मन के रहे के चाहीं।' बचऊ महराज तनी ठनक के कहलन।

बल्ली बाबू लउट गइलन। चम्पा के पालकी से उतार के सामने के मढ़ी पै बइठा देहलन। हाथ में तलवार ले के माथे पै लगवलन आ आगे बढ़के बचऊ महराज से कहलन– 'आवा महराज! पहले साज मिलाय लेवल जाय।'

बचऊ महराज अपने चेला से तलवार लेके माथे लगउलन और जय जगदम्बा कहके सामने आ गइलन। जइसे जइसे तलवार खनके, वार अउर ओकर काट होय, वइसे वइसे देखवाइन के साँस टँगाये लगल। एक घड़ी बीत गइल, लेकिन दूनो लड़वइयन के तेजी में कउनो कमी ना आयल। चम्पा दाँत से जीभ दबउले करेजा थाम के बइठल साज मिले के घड़ी टकटकी लगाय के अंगोरत रहली। बाकी ई साज त भैरवी से मेल खातै नाही रहल। झलफलाह होबे लगल। नहवइया घाट पर आवे लगलन। बल्ली बाबू के निगाह तनी अँजोर में जब चम्पा के झुरायल मुँह पै पड़ल, त ओनके देह में जइसे बिजली दउड़ गइल। अब त ओनकर वार एतना तेज हो गयल कि बचऊ महराज के बचावै करे के फुरसत न मिलै। देखवइयन के अइसन बुझाइल कि अब मैदान बल्ली बाबू के हाथ में हौ। तब ले त चारो ओर हल्ला मच गइल। चम्पा के भाग फुटल। बल्ली बाबू के वार रोके बदे जइसहीं बचऊ महराज तलवार चलउलन, बल्ली बाबू के गोड़ गोबर

पै पड़के अइसन बिछलायल कि झटका से चलावल गइल बचऊ महराज के तलवार पर ओनकर गर्दन अपने–आपै लटक गइल।

बचऊ महराज झप से तलवार फेंक के बल्ली बाबू के दूनो हाथ में उठाय लेहलन। ओनके उठउले तुरते अपने घर पहुँचलन। चेला भेज के डाक्टर बोलउलन। तबले त कुल खतम हो चुकल रहल। चम्पा के जइसे काठ मार गयल। ऊ न त रोवलिन न कुछ बोललिन। बल्ली बाबू के पट्ठा रोय–रोय के चम्पा से घरे चले के समुझवलन, बाकी ऊ त जइसे पत्थर हो गइल रहलिन। न कुछ बोलें, न कुछ सुनें। दुइ घंटा बाद मनिकनिका पर चिता सजावल गयल। बचऊ महराज रोवत–रोवत लास के चिता पे सुतवलन। ओनकर रोवाई देख के पत्थर के करेजा पिघल जाय। अइसन बुझाय जइसे सग्गै छोट भाई के चिता में आग लगावे के होय।

चिता में आग लग गइल। चिता जल गइल। बाकी चम्पा अपने जगह से हिलली नाहीं। जब लोग चिता बहाय के चले लगलन त अइसन बुझायल जइसे झटके से चम्पा के नींद खुल गइल हौ। बल्ली बाबू के पट्ठा ओहीं रहलन। चम्पा चकपकाय के कह उठलीं– 'हमैं भैरवी गावे के रहल न। जगउला काहे नाहीं। देरी न हो गयल होई। बल्ली बाबू नराज न होइहें?'

चम्पा के देख के सुमेर के आँख से पानी झरै लगल। चम्पा उठलीं। धीरे–धीरे उहाँ गइलिन, जहाँ बल्ली बाबू के चिता जलावल गइल रहल। पलथी मार के बइठ गइलिन। कुछ गुनगुनइलिन। फिर अलाप लेहलिन। ओकरे बाद ओनके कंठ से फूट निकलल भैरवी–

"सैयाँ बेदरदी दरदिया ना बूझे, रहत नजरिया के ओट।" ••

गजल

आसिफ रोहतासवी

(एक)

फेड़न के औकात बताई
कहियो अइसन आन्ही आई।

घामा पर हक इनको बाटे
पियराइल दुबियो हरियाई।

पाँव जरे चाहे तरुवाए
चलहीं से नू राह ओराई।

मोल, चलवले के बा जांगर
रामभरोसे ना फरियाई।

नाहीं कबरी बिन हिलसवले
दिन–पर–दिन आउर जरियाई।

अपना खातिर चउकन्ना बा
तहरा बेर बहिर हो जाई।

माहिर बा चेहरा बदले में
सदियन तक असहीं भरमाई।

हक खातिर अड़ जइहें 'आसिफ'
धमकाई, मारी, गरियाई।

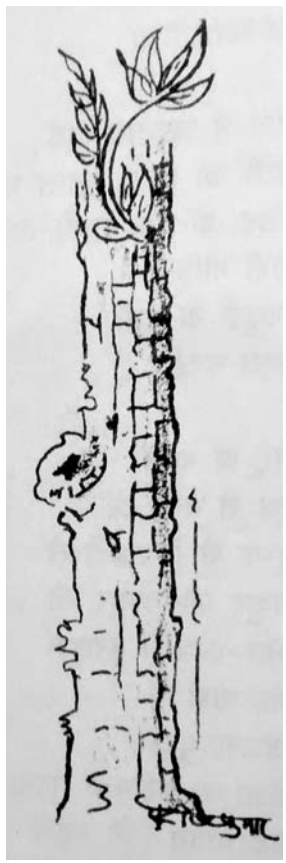

(दू)

जब ले मितवा मोर भइल बा
दुनिया–राजे सोर भइल बा।

हँसले बा अपना पर अतना
भर–भर आँखिन लोर भइल बा।

हमरे अँगना रैन–बसेरा
उनका सब दिन भोर भइल बा।

ऐनक में खुद के चुचुकारे
घाहिल चिरई–ठोर भइल बा।

जनहित, बस, अस्टंट सियासी
'सत्ता' ला गठजोर भइल बा।

'आसिफ' के फिकिरे दुबराइल
जब ले आदमखोर भइल बा।

v/;{k] fgUnh foHkkx]
iVuk lk;al dkWyst ¼iVuk fo'ofo|ky;½]
iVuk

बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया

गिरिजाशंकर राय 'गिरिजेश'

पाकिस्तान के मारि के हमार सिपाही ओकर छक्का छोड़ा दिहलनसऽ। चीन क कुल्हि चल्हाँकी भुला गइल। मिठाई खाइब... हो... हो। ईहे हई नगरी, जहाँ बाड़ी बनरी, लइकन क धइ–धइ खींचेली टँगरी। एगो बीड़ी बाबू साहेब, ना सिगरेट पियला से करेजा जरेला। हो... हो बेईमान.... हमरा के लूटि के कंगाल बना दिहलन सऽ। राधा तोहरा पर हम खुनसाइल ना रहलीं। हमके माफ क द राधा.... तोहरा खातिर जिनगी एही तरे बिता देइब। सेवक आ चाकर हम हईं राधा रानी के... बम बम भोले... या अली तोड़ पाकिस्तान की नली। अयूब खाँ क एगो दाल ना गली। बम... बम... भोले.... हा.... हा.... ही.... ही....–

बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर के ध्यान,

केथुवा चढ़ल सिवसंकर आवें, केथुवा चढ़ल भगवान, बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया...

हा.... हा.... हा.... हो.... हो.... संसार में सभी लोग चोर हैं..... आई मीन आल आर थीफ सम आर स्माल एण्ड सम आर बिग.... हा.... हा..... माई डियर मास्टर साहेब.... गुडमार्निंग।

हम चकचिहा गइलीं। लइकन क झुण्ड लिहले ऊ पागल हमरा कीहें आके बइठ गइल। दाँत का पीरा से परेसान रहलीं। कवनों खोढ़रा ना हमरा बुद्धि क दाँत जामत रहे एह बुढ़ौती में। सरकार रबी अभियान मनावे के आदेस देले रहे। एही में गाँव–गाँव घूमि के लइकन से खेती करावे के रहे। पचोखर में सिकुमार का दुआरे बइठल रहलीं। गाँव में केहू का दुआरे साइति सँजोगे कवनो मास्टर चलि जालें त ओनकर खूब आदर होला, ओहू में जब लइकाराम कवनो गलती में पकड़ा जासु त का पूछे के। सिकुमार ओही गलती में पकड़ाइल रहलें। सब खेत पर काम करे गइल रहे, ऊ रेडियो पर फिल्मी गाना सुनत रहलन। महतारी सुनलसि त गरम हलुआ भेजलसि कि मास्टर बबुआ के कम मरिहन। बाप पान के बीड़ा थम्हवलन। अबहीं खाये के तइयारी करत रहलीं तबले ऊ पागल आके बइठ गइल। सिकुमार के बाबूजी बतवलन कि ई पहिले बहुत बड़ आदिमी रहल हऽ। आसनाई में एकर ई दसा हो गइल। एकर दसा देखत बानीं– ईहे नऽ ईसर क मरजी हऽ। कमाला केहू खाला केहू। इनकरा कमाई पर भाई रंग लेत बाड़े स आ ई गली–गली के बहार लूटत बाड़न। ना त पचोखर में एक दिन मदन साहु क तूती बोलति रहे।

"ई राधा के हऽ?" हम टोकलीं।

"पानी पी लेईं त कुल्हि कहत बानीं।"

पानी पी के हम अहथिर भइलीं त सिकुमार क बाबू कहे लगलन।

ना.... ना.... ना.... अइसन मति करीं.... हम मेहरारू हईं.... रउरा के छोड़ि के हमार एह संसार में के बा? रउरा खातिर घर छोड़लीं.... माई–बाप छोड़लीं। अब हम कहाँ जाइब? सरग से नरक में हमें फेनु मति ढकेलीं। हमके जेतना चाहीं मारि लीं, बाकिर हमके छोड़ के जाईं मति। हम अपना कहला–सुनला क माफी माँगत बानीं। राधा मदन क गोड़ छानि लिहलीं। आँखि क लोर गंगा–जमुना की धारा नीयर मदन क गोड़ बाँधे लागल। मदन पत्थर नीयर खड़ा रहलन। उनुका बुझा कि अब ढेर देरी ले खिनुसाइल ना रहि सकेलन, बाकिर बेटी क सूनि माँगि, आँख में लोर भरलि सूरति नाचि जा ....ना ....ना बाप के कइल बेटी ना भोगी.... बाप अपना प्यार के बलिदान क देई। उनकरा ना बुझा कि राधा के सनेहि के कइसे झटकि के चलि जाईं। एक ओर भरल–पुरहर परिवार दूसरी ओरि राधा क लोर भरलि आँखि। राधा के लेके कइसे जा सकेलन? एगो मेहरारू रहते ई दूसर अनरथ? प्रेम उनुकरा आँख पर पट्टी बान्हि देले रहल।.... पचोखर क बच्चा–बच्चा उनुकरा पर थूके लागी। बड़की लड़की सयान भइलि बा। ओकर हाथ पीयर करे के बा। के करी बिआह? सब कही– एकर बाप कुजाति ह! ..... पतुरिया रखले हऽ। ई बात जेवन कुल्हि आज बा ऊ राधा क दिहल ह, बाकिर ऊ त कुल्हि छोड़ि के जात बानीं खाली अपना मेहनति क कीमत ले ले बानीं। राधा क जिनगी कटि सकेले। मदन क आँखि पर ऊ दिन आके अटकल जेवना घरी गाँव से एगो लोटा आ कमरा ले के झरिया टीसन पर उतरल रहलन। मदन क गोड़ छनले राधा क आँखि क लोर बीतल दिन क परछाहीं हो गइल।

झरिया में राधा बाई क चललि रहे। कोयलरी क कुल्हि मनेजर राधा बाई के मुँह माँगल धन देसुँ सऽ। आजु धनबाद... काल्हु कतरास गढ़.... परसों सिन्दरी.... राधा क रोज परोगराम बनले रहे। ओह दिन कोयलरी में नाचे गइल रहली। नाचि खूब जमलि। नोट से राधा तोपाइ गइली। खूस होके एगो कजरी कढ़वली– बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया, छूटल सिंवसंकर क ध्यान,

कथुआ चढ़ल सिवसंकर आवें,
कथुआ चढ़ल भगवान,
केकर जियरा हुलसल लागे,
केकर जिया मसान,
बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया....

गाना खतम होत–होत कोयलरी क एगो मनेजर उठलन आ कहे लगलन–"राधा बाई के गाना सुनि के हमार कोयलरी क मिठाई वाला मदन साहु एतना खुस बाटे कि आजु दिन भर क कमाई राधा बाई के भेंट करि रहल बा। एकरा अलावे ई एक महीना तक रोज क कमाई राधा बाई के देबे के निसचय कइले बा। गड़.... गड़.... गड़.... ताली बजली स अवाजि उठली न.... साबास जवान.... बाड़े तें कलाप्रेमी.... रण्डी का नाचि के सुरच्छा कोष बना लिहले। बाह रे राधा बाई.... एक नजर में कमाल करतारू।"

राधा बाई सोचली कि एगो बेवकूफ फँसल। बाकिर ओह राति मदन का नीनि ना परलि। पलक पर राधा खुमारी नीयर छवले रहली। सोचसु त बुझा कि राधा क कुल्हि हाव–भाव उनहीं खातिर रहल ह। ऊ मुसिकयाइल, ऊ दूध क धोवल दाँत... राधा इनरासन क परी ले कम मदन के ना बुझासु। रोज राधा का घरे जाये लगलन। दिन भर क कमाई हाथ पर ध के चलि आवसु। राधा बड़ा हरान भइली। कवनों कहानी नीयर उनकरा ई बुझा। भला ई कवन लति ह कि आवत बा आ पइसा थम्हा के चलि जात बा... न गाना सुने के, न कुछ। विचित्र आदिमी बा। पूरा बेवकूफ ई बा। पहिले त राधा बेवकूफ पर टारि दिहली बाकिर एही तरे पनरह , दिन बीतल त मन क दया उभरि आइल। ए राधा तोहके केहू के दिनभर के मजूरी सेतिहाँ लिहला के का अधिकार? राधा कान मूँदि लिहली। सोमार क दिन रहे। आजु घरे केहू ना रहे। छोटकी बहिन गीता एगो कोयलरी में गोमो नाचे गइल रहली। अम्मा ओकरा साथे गइल रहे। बुढ़वा बाबा रहलन ऊ बजारे गइल रहलन। राधा के दिन भर उदासी घेरले रहे। अकेल बितावे के परेला त दिन पहाड़ हो जाला। मन क उदासी तोरे खातिर उनकी ओठ पर गीत फूटल–

बैल चढ़ल सिवसंकर आवें,
गरुड़ चढ़ल भगवान,
पिया संग जियरा हुलसल लागे,
पिया बिना जिया मसान,

बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया।

राधा चिहुँकली.... केहू क गोड़ क आहट पाछे पवली। देखली मदन हाथ बढ़वले खड़ा रहलन। हथोरी पर दिन भर क कमाई हँसति रहे।

"ले जा रुपया हम ना लेइब। हम खटि के खाये जानींला, ई हराम क रुपया हम ना लेइब। हमरा के बेवकूफ बनावे के अच्छा उपाय सोचले बाड़ऽ।"

"गलत समुझत बानीं.... ई हराम क ना ह.... ई सुघराई के कीमत हऽ। ....एही बहाने कम से कम एक बेर देखि त लेत बानीं। ई बहुत बा.... ई पूजा क फूल भगवती का मंदिर में चढ़ावत आवत बानीं। बड़ा साधि से आईंला" – मदन मिनती कइलन।

"जा.... जा ई कुल्हि बेवकूफी हम ना करबि। अब मत कबो अइहऽ। घरे मेहरारू लइका खइला बिना मरत होइहन। एहिजा दिन भर के कमाईं रण्डी के लुटावत बाड़ें... जा बाबू साहेब.... जा मरद–मेहरारू के नाता बड़ा पवित्र होखेला, ओके एह तरे ना तोरल जाला।" राधा घर में चलि गइली। ना जाने काहें राधा का अपना जवार की ओर के लोगन के मोहि लागेले। अम्मा एह काम में ढीठ परेले। कहेले–मोह कइसन बेटी! पतुरिया केहू के ना जोरू, ना तबलची केहू क बाप। बाकिर राधा के ना जानी काहें ई कुल्हि ठीक ना लागे। अम्मा का सोझा कुछ ना बोलति रहली। आजु बड़ा नीक मोका मिलल रहे। घर में जाके केवाड़ी बन क लिहली। मदन भारी मन से लवटि गइलन।

साँझि क बेरा राधा क मन अउरी भारी हो गइल। सुनले रहली बिहार टाकीज में भोजपुरी खेला लागल बा। सोचली चलीं देखि आईं तबले त दस बजे वाली गाड़ी से अम्मा चलि अइहन। पहिर–ओढ़ि के तइयार होके जइसहीं घरसे निकलल चहली तब ले कोयलरी क मनेजर सोझा खड़ा हो गइलन।

"बाबू–साहेब एह घरी त फुरसत नइखे फिर कबो आइब"! – राधा कहली।

"राधा हम नाच देखे नइखीं आइल। हम बहुत जरूरी बात तोहसे कहल चाहत बानीं। मदन मिठाई वाला आज सबेरे से बेहोस बा। जब ऊ थोड़ी देर खातिर होस में आवत बा त तहार नाम लेके गीत गावे के बिनती करे लागत बा। तूँ जल्दी चलि के ओकर जान बचा लऽ। हम तोहके मुँह माँगल ईनाम देइब।" मनेजर साहब क चेहरा पर बदहवासी नाचत रहे।

राधा क जीव धक् से हो गइल.... एतना मदन उनुकरा के चाहत बाड़न। राधा ई कब्बो ना सोचले रहली। अब ले जानत रहली बेसवा से परेम कम, खेले अधिक लोग जानेलन। एकरा खातिर न कवनों दुख न सुख.... राधा कुछ कहि ना सकलीं। अइसन बुझा कि करेजा के केहू खींचत बा... मन क सबेरे वाला चेहरा आँखि पर नाचल। चुप–चाप आके मोटर में बइठ गइली।

मजूरन क भीड़ि लागलि रहे, हाथे–मुँहे करिखा पोतले। मनेजर आ राधा के गाड़ी से उतरते सब

हटि के रहता दिहल। एगो छोटीमुकी कोठरी में मदन सुतल रहलन। ओहिजे बगल में कुरसी पर कोयलरी क डाक्टर बइठल रहलन। डाक्टर बतवलन कि रोगी के कवनों बाति क अइसन सदमा पहुँचल बा, जेवना से ओकर दिमाग पर असर पड़ल बा। जदि ठीक से इलाज ना भइल त हो सकेला ऊ पागल हो जा.... राधा.... राधाा.... गीत ऊ चिचियात बा। राधा सोकता हो गइली। ई ना जानति रहली कि एह गरीब आदिमी का मन में उनुकरा खातिर एतना प्यार बा। करेजा मिमोरा उठल।

मदन बड़बड़इलन.... "राधा.... राधा... ऊ गीतिया सुना दऽ राधा।" राधा बेहोस मदन की ओर देखली.... लिलार पर हाथ धइली तावा नीयर जरत रहे। धीरे से गोहरवली..... "मदन.... मदन हम तोहार राधा गोहरावत बानीं बोलऽ.... बोलऽ ना....।" रोगी आँखि बन कइले सुतल रहे। राधा क लाजि से गाल लाल हो उठलन स। लिलार पर पसीना चुहचुहा गइल। कुरसी पास में खींच के ले गइली.... कान कीहें मुँह ले जा के धीरे से कढ़वली—/के रामा जेंवे सोने क थारी, के खाये मगही पान/पियवा जेंवे सोने क थारी, धनिया कचरे पान,/बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, छूटल...।

गीत जादू नीयर असर कइलन। मदन क आँखि खुललि। राधा के टुकुर—टुकुर देखे लगलन.... फेनु कुछ खियाल पारि के चकचिहा गइलन 'तूँ.... राधा.. ..।' राधा चुप करवली— "बोलीं मत हम राउर राधा हईं। आप के जवन कुछ कहले रहलीं ओहके माफ करीं.... आप रोज हमरा कीहें आइल करबि— राधा क आँखि लोर में ना जाने काहें डूबि गइली स।"

"राधा!" मदन राधा क हाथ ध लिहलन "राधा हम तोहरा बिना जी ना सकीं। ई साँच बा कि हमरा मेहरारू लइका कुल्हि बा, बाकिर तोहरा के छोड़ि हमरा ओंठन के मुस्कुराहट केहू ना दे सके... दिभर क थकावट केहू ना हर सके.... हम गरीब बानी बाकिर मन से ना.... देखिहऽ जइसे जिअवलू ओहसे निबहिहऽ। मदन क आँखि के लोर खरकि के गाल पर आ गइल। ई सब बात—चीत सुनि के डाक्टर मनेजर साहब का साथे भीतर अइलन। मदन क नाड़ी देखी के डाक्टर साहेब कहलन— हब कवनों खतरा क डर नइखे।"

मदन त नीक हो गइलन बाकिर राधा उनुकरा प्यार में बेमार हो गइली। दिन—राति क गाड़ी अपना गति पर रहे। दूनों एक दूसरा का पँजरा अइसन आ गइलन कि एगो का बिना दुसरका क जिनगी बेकार रहे। अम्मा से जब राधा मदन से बिआह करे क बाति कहली त खिनिस के ऊ लाल हो गइली— "सादी त हमनी क एगो मरद से होले... ऊ मरद ह रुपया.... दूसर कवनों मरद पतुरिया क बाँहिं ना थाम्हि सके। एही से हमनी का सदासुहागिन हईं जा। तूँ छोकरी बाडू। तूँ अबहीं का जनबू की कइसन धोखा ई समाज आ ई मरद हमनी के देलन सऽ"।

बाकिर राधा अपना कहला पर टस से मस ना भइली। कमरा में जाके उदासी तोरे खातिर रेडियो पर हाथ गइल त गीत क आखिरी लाइन कमरा में गूँज गइल—/आली रे मोरे नयनन बानि परी मोरे नयनन बानि परी/मीरा गिरधर हाथ बिकानी लोग कहे बिगरी/मोरे नयनन बानि परी।

राधा रेडियो बन्द क दिहली। आँखि गंगा—जमुना हो गइली स। ओही दिन राधा मन में निसचय कइली— "मदन क संग ना छूटी।" राति के मदन का घरे चलि गइली। नाँवें बैंक में पचास हजार रुपया रहे। जिनिगी क नाव खेवे खातिर काफी रहे। अम्मा सुनलसि त राधा का नाँव पर थुकी के गोड़ से दरि दिहलसि।

झरिया में मदन लाल क लकड़ी क गोला मसहूर हो गइल। राधा त उनका के मिलबे कइली, साथे एगो मोट संपति उनुकरा के मिलि गइल जेवन उनुकर गरीबी तोपि दिहलसि। पचोखर में हवेली उठि गइल। धूरि लपेटले जवन लइका उनुकर घूमें स, ऊ चिकन—चाकन लउके लगलन स। जवना घरी कमा के मदन पचोखर में गोड़ धइलन लोग माला फूल से उनुकरा के लादि दिहलन। गाँव क बड़कवा लोग उनकरा धन का आगे आँखि मूँदि ले। उमा साहु अँकवार दिहलन। गँगा साहु पीठि ठोकलन। मुनीर मियाँ जयहिन्द कहलन। लाखन क कारबार एह से गाँव में तूती बोले लागलि। मदन राधा वाली बात के मन में रखलन। केहू से ना बतवलन ना ओके सँगे के अइलन, बाकिर दुसमन जे रहे ऊ दाँव खोजे। दुसरी बेर झरिया से जब गाँवे अइलन, ओकरा ले पहिलहीं एगो गाँव क आदिमी झरिया कमात रहे ऊ आके कुल्हि बाति कहि देले रहे। बिरादरी क कान खड़ा हो गइल, काहें से कि एगो मोट असामी भेंटाइल रहे। कन्हई मास्टर मोंछि पर हाथ फेरलन— अब बच्चू पकड़इलन। लइकी सयान भइल रहे। भाई मदन के समुझवलस 'भइया! ई का कइलऽ हऽ बबुनी क बिआह कइसे होई? बिरादरी कुजाति निकाले के सोचति बा....' आ मदन साहु का आँखि का सोझा फूल नीयर बेटी माला क लोर से डूबल

चेहरा नाचि गइल। मदन साहु के आपन इज्जति घूरि में मिलति लउके लागलि। प्रेम के भूत उतरि गइल। समाज का आगे घुटना टेके के परल। लोग उनके समुझवलन– 'पंचों बिसवास करो हम अइसन काम नइखीं कइले... ई झूठ ह.... हमरा माला के बिआह होखे देईं जा।' बाकिर पंच ना मानल निरनय भइल– 'अगर तूँ नइखऽ कइले त सफाई खातिर गाँव पर आकें कारबार करऽ। झरिया छोड़ दऽ अब। मदन कपार पीटि लिहलन।'

मदन साहु बदलि गइलन। राधा के ना बुझा कि बाति–बाति पर काहें मदन अब खिनुसात बाड़ें। आजु त मारि दिहलन ह, जवन कबो ना कइले रहलन ह। राधा का ना बरदास भइल ह ऊ जबाब दिहली। एह पर मदन साहु झरिया छोड़ि के जात बाड़न। राधा कहाँ जासु। बैंक क कुल्हि रुपया बेपार में लागि गइल। आजु ले बेसवा सबके ठगली सऽ आजु ऊहे ठगा गइल.... राधा का सोझा अम्मा क मुसकियात चेहरा नाचि गइल। राधा, मदन साहु क गोड़ छानि लिहली– "दया करीं.... हम जेवन कहि देहलीं, ओकरा खातिर माफी माँगत बानीं.... हमरा अब के बा....खियाल करीं हम रउरा के कइसे अपनवलीं... रउरा के हम जिअवलीं। हमरा के मारीं मति।" मदन क करेजा मिमोरात रहे, बाकिर पत्थर बनल रहलन। आँखि का सोझा पंचन क आ माला क मुँह पारी–पारी से घूमि जा। जाके समान बान्हे लगलन। सबेरे गाड़ी जाति रहे। तय कइलन इहिजा क कुल्हि संपति छोड़ि दीहें। लोटा कमरा के बान्हि के ध दिहलन। राधा कमरा में जाके रोवति रहली।

सबेरे मदन हाथ–मुँह धोके जाये के तइयार होत रहलन तबले नोकर दउरल आइल आ कहलसि– बाबूजी, मलकिन पागल हो गइल बाड़ी। मदन भीतर गइलन देखि के जीव धक्क् से हो गइल। राधा कुल्हि सिंगार ओइसने कइले रहली जइसन क के कोयलरी में पहिली बेर नाचे आइल रहली। मदन के देखते नाचि के कढ़वली– / बैल चढ़ल सिवशंकर आवें, गरुड़ चढ़ल भगवान / पिया संग जियरा हुलसल लागे, पिया बिना जिया मसान, / बाजलि बैरनि हो बाँसुरिया।

राधा.... राधा... मदन क मन क बान्ह टूटि गइल। हम ना जाइब राधा.... हम ना जाइब। राधा रुकि कइली आ धाँय से गिरि पड़ली। मदन दउरि के उठा लिहलन। राधा.... राधा..... आँखि खोलऽ राधा! हम तोहरा बिना ना जी सकीं। सावन भादों नीयर आँखि चूवे लगली स।

राधा आँखि खोललली आ कहली– "खियाल करीं एक बेर आप हमरा खातिर मरत रहलीं बाकिर हम आप के जिया लिहलीं, बाकिर आज आप खातिर हम मरत बानीं, हो सके त जिया लेईं।" राधा क मूँड़ी एक ओर लटकि गइलि। माहुर क करियई ओंठ पर हँसे लागलि। मदन चिचिआये लगलन– राधा.... राधा.... अवाजि कमरा से लवटि आइल। के जबाब दे? जबाब देवे वाली राधा मदन क रास्ता दूर जाके खोजति रहे।

सिकुमार बाबू आँखि पोंछलन। फेनु कहे लगलन। ओहिजा क लोग मदन के घरे पहुँचावल, काहें से कि मदन क दिमाग ओही दिन फेल हो गइल। आजु देखते बानीं गाँव की गली–गली में घूमि के राधा के गोहरावत बाड़न.... घर क भाई जेवन इनहीं की कमाई पर धनी भइलन स, आजु बाति नइखन स पूछत।

पागल उठल। भागि चलल..... हा..... हा..... संसार में सब धोखा– विसवासघात.... बाबू दूधनाथ क जय.... सिपाही भइया राजनरायन, माखन दऽ.... राधा कीहें जाइब, लकड़ी बेचब.... हा.... हा.... ही..... ही... गावे लागल– 'बाजलि बैरनि रे बाँसुरिया, टूटल सिवसंकर क ध्यान.... ●●

कुछ पठनीय भोजपुरी किताब

हँसि हँसि पनवा खियवले बेइमनवाँ

(हास्य व्यंग्य कहानियन के संग्रह)

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

मूल्य-400/- एजुकेशनल बुक सर्विस, उत्तम नगर, नई दिल्ली-110059

"रसबोध के एने-ओने"

(निबन्ध संग्रह)

डा0 शारदा पाण्डेय

मूल्य-200/-प्रकाशक-तख्तोताज, इलाहाबाद

वरमाला

कामता प्रसाद ओझा 'दिव्य'

अन्हरिया..... घोर अन्हरिया.... भादो के अन्हरिया राति। छपनो कोटि बरखा जइसे सरग में छेद हो गइल होखे। कबहीं कबहीं कड़कड़ा के चमकि जाता त बुझाता जे अबकी पहाड़ के छाती जरूरे दरकि जाई। मातल पिअक्कड़ अस झूमि झूमि अन्हड़, गाछ–बिरिछि पर आपन मूँड़ी पटकत बा। जीये के आखिरी लालसा ले ले गाछ–बिरिछि लोग ममोराइ–दबोराइ के धरती तक ले चलि आवत लोग आ फेरू से सोझ होखे के कोसिश करता। जिनगी के मोह केकरा नइखे? जब ले साँस तब ले आस। जब–जब अन्हड़ तेज हो जाता, कुटिया बुझातिआ जे उखड़ि के फेंका जाई। छप्परि पर के खर–पात खड़–खड़ाए लागऽ ताड़े स। कबहीं बेआकुल जंगली जीव उजबुजा के चिकरि देत बाड़ें स। किसिम किसिम के, एके में मिलल–जुलल भेयावन आवाज काँपि के अन्हड़ के पागल हँसी में अमा जात बाड़ी स। चारों ओरि भय भरि गइल बा।

अचके में खूब जोर से गरजता जइसे असमान के जाल फाटि गइल होखे आ जाल में अतना दिन से अँटकल सब करह–नछत्तर धरती पर गिरि के टुकी टुकी होके छितरा गइल होखें स आ एने ओने मछरी अस छटपटात होखें स। कुटिया के कोना में पोसल हरिना के बच्चा.... 'सुकांति' डर से चिहुँकि जाता आ सुकन्या के देंहि में एकदम सुटुकि जाता। अतना गुल–गुल अतना मोलायम सुकन्या के देंहिं सिहरि सिहरि गइलि आ उनकर नींद एकदम टूटि गइलि।.... बरबस ऊ सुकान्ति के गरदन सुहुरावे लागतारी। ओह! एहमें कतना सुख.... एह छन के– सुख के बराबरी काठ–पथल के दसगो जिनगी भी ना करि सके। सुकन्या के मन उचटि गइल। ऊ उठि के कुटिया के दुआरी पर चलि आवतारी। अन्हड़ कम चलत बा बाकी बरखा पहिलहू से जोर हो गइल बा। रहि रहि चमकता–गरजता। अन्हरिया के चदरि पर कहीं कहीं भगजोगनी के फूल खिलि जाताड़ें स।

सुकान्ति के छुअला के सुख सुकन्या के भीतर से जात नइखे– जइसे ई सुख उनका हिरदेया में मरहम अइसन पेहम हो गइल होखे। लेकिन इहाँ त सभ ओरि कठोरता बा, पथल के कठोरता–सुकन्या सोचली। हँ, कठोरता बा.... सब चीज में कठोरता, जिनिगी के डेग–डेग पर सासन... सुकन्या ठठा के हँसऽ तारी। उनुका हँसी से छन भरि खातिर बुझाता जइसे ओह जंगल के पत्ता–पत्ता ठठा के हंस दिहल। महरसि च्यवन के आसरम के सभ कुटिया ओह हँसि से काँपि के रहि जातारी स।

कठोरता.... बारह बरस के कठोरता।... सुकन्या फेरू सोचतारी। उनकर भहूँ चढ़ि जातारी स– आँधि करोध से लाल–लाल। थोरे देरि खातिर उनका बुझाता कि उनकर उमिरि घटि के बारह बरिस पीछे चलि गइलि होखे। फेरू उनका अपना जिनगी के ऊ दिन किताब के पन्ना अइसन उघरि के सोझा चलि आवता, जवना दिन उनका जिनिगी में कठोरता के ई जहर सनाइल रहे।

सोरह बरिस के राजकुमारी सुकन्या ओह दिन कतना अठान डलले रही, अपना पिता राजा सर्याति से, सँगे अहेरि करे जाये खातिर। राजा सर्याति के ऊ एकलौता लइकी रही। एह से राजा के मन आखिर पसीजि गइल। लइकी अबहीं अनबूझ ठहरलि... सोचि के ऊ चले के हुकुम दिहलें। रथ सजाइल, सखी–दासी के लहबरि संगे चललि। राजा सर्याति हाथी पर असवार भइलन आ पाछा–पाछा उनकर लसकरि चललि। जंगल त रहबे कइल ओह दिन ओह जंगल में जइसे रितुराज के सदेह अवतार हो गइल। अहेरि के हाहाकार, हँसी–ठट्ठा, गीत आ ढोल–ढमका से बन के कोना–कोना गूँजि गइल। जंगल के गाँछि–बिरिछ् फल–फूल आ पसु–परिन्दा सभ में जइसे बसन्त खातिर एगो मोह आ भीतरे–भीतर एह हलचलि से एक किसिम के संका व्यापि गइल रहे। खाली तपस्वी च्यवन रिसी पर एह हल्ला–गुल्ला के कवनो परभाव ना परल। ऊ पहिलहीं अस अपना धेयान में मगन रहसु। तपस्वी च्यवन... जीयत हड़खारि... हाथ गोड़ बूझा जइसे अलगा से जोड़ि दिहल गइल होखे। .....सुकन्या सोचतारी आ च्यवन रिसी के ऊ रूप इयादि आवते उनकर रोआँ–रोआँ खड़ा हो जात बा।

सुकन्या ओह दिन सेकराहे सिंगार–पटार कके फूल तूरे निकललि रही, अकेले। जंगल के गाँछ–बिरिछ में जइसे खाली फूले–फल हो गइल रहे.... लाल–पीयर, गुलाबी.... डाढ़ि–पत्ता के नाम–निसान तक ले ना रहे। ऊ कवनो गीत गुनगुनाए लगली।.... कवन गीत रहे सायद बहुत मन परलो पर उनका ऊ गीत इयादि नइखे पड़त। तबहीं बगल के झूर में से एगो खरहा कूदि के भागल रहे ऊ डेरा के दू–तीन डेग पीछे हटि गइल रही। उनकर पवजेब झुनझुना गइल आ उनकर आँचर फूल के डेहुँगी से अझुरा गइल रहे। ओ घरी छन भरि खातिर उनकर जीव धक दे हो गइल रहे जब ऊ च्यवन रिसी के आवाज पहिले पहिल सुनले रही.... 'सुकुमारी ! तू के हऊ.... सुकन्या के बुझाइल रहे जइसे आवाज कवनो झुराइल कंठ से निकलल होखे। एकदम सूखल आवाज। आँचर छोड़ के ऊ घूमि के देखली। जीअत हड़खारि.... सिरजना पर खाली दूगो चमकत आँखि.... चमकत ना जरत आँखि। सुकन्या के छन भरि काठ मारि देलसि– पूछले रही– 'राँवा के हईं' तपस्वी महाराज?

तपस्वी के ठठरी थोरे कांपल आ एगो आवाज जइसे अपने आप निकलि आइलि– 'हम तपस्वी च्यवन हईं।'

फेरु च्यवन रिसी के चेहरा के कठोरता कुछ कम हो गइल रहे जइसे पथल पर माखन पोति दिहल होखे– सुकन्या देखली आ जबाब देले रही– 'हम राजा सर्याति के लइकी सुकन्या हईं।'

सुकन्या के रूप बसंत के रंग आ चारों ओरि किसिम किसिम के फूलन के गंध। च्यवन रिसी के मन के कठोरता पघिल गइलि। बुद्धि पर हिरदेया चाँप चढ़वलसि आ उनका सुकन्या खातिर मोह हो गइल– पूछले रहन 'सुन्दरी!.... तहार रूप, तहार जवानी हमरा सूखल मन में आज रस के नदी बहा देले बा। ऊ मन, जवना के ज्ञान आ योग से हम छोड़ देले बानी, आजु तहरा रूप पर डोलि गइल। आजु हमरा बुझाइल जे हमार पिआस अबहीं खतम नइखे भइल। हमार पिआस मेंटही के चाहीं। सुन्दरी सुकन्या तूँ हमार पिआस मिटावऽ। तू रिसी च्यवन के आपन पति बनावऽ।'

ई सुनि के सुकन्या लजा गइल रही, लेकिन नतीजा सोचि के उनका देंहि में आगि लागि गइल रहे– सुकन्या च्यवन रिसी के ओह दिन के बात इयादि कइके तनी गंभीर हो जातारी। मन होता कि अब एह बारे में ना सोचती। ऊ कुटिया के दुआरी पर से उठि के अपना आसन पर चलि आवतारी बाकि नींद नइखे आवत। फूही अबहिओं परता। अन्हड़–तूफान खतम हो गइल बा। कुटिया में उनका गरमी मालूम होता। थोरे देरी ले ऊ करवट बदलतारी आ आखिर में फेनु से कुटिया के दुआरि पर आके बइठि जातारी। बिचार के टूटल डोरा फेरू से जुटि जाता।

'माफ करीं, रिसिराज! सरम के बात बा कि अतहत बड़हन ज्ञानी होके बिना हमरा भविष्य के विचार कइले रावाँ अइसन बात कहतानीं। तनी अपना देंहि के बारे में सोचीं। मन कतनों सपना देखेवाला होखे बाकी देंह में सकती ना होखे त ऊ आदमी बेपांखि के पंछी अइसन होला जवन की असमान में उड़ला के मजा खाली अपना मन में सोचि–सोचि के लेत रहेला, उड़ि के ना। च्यवन अइसन लोक–वेद जाने वाला रिसी एतना बरिस के कठोर–तपस्या कइलो पर अपना पिआस के ना जीति सकल?'

हँसारत के बात बा.... आ सुकन्या ठठा के हँसले रही। सुकन्या के मन करता कि ऊ फेरू एक हाली ठठा के हँससु बाकी मन के ना जाने कवना कोना में कुछ अइसन बा कि खाली एगो लमहर साँस निकल के रहि जाता।

सुकन्या कुटिया के दुआरि पर से दूर तकले तेज नजरि से देखतारी जइसे अन्हरिया के पर्दा के चीरि के ऊ सभ किछु देखि लेवे के चाहत होखसु जवन अन्हरिया के ओह पार रहेला। दुआरि के सोझा वाला देवदार के मोटकी गाँछि पर दूगो भगजोगनी बड़ा तेज बरऽतारी स जइसे च्यवन रिसी के आँखि। सुकन्या के मन परता– च्यवन रिसी के आँखि! अपना सँउसे तेज के अपना आँखिन्ह में उतारि के क्रोध से काँपत रिसी कहले रहन.... 'सर्याति–पुत्री! जवानी के घमंड में च्यवन रिसी के अतहत बड़हन अपमान। हम छन भरि में आकास–पाताल एक करि सकीलें। तूँ अपना करम के रेख मिटकारे कोसिस मत करऽ। तहरा हमार पत्नी बनहीं के परी।

सुकन्या के ओकाई आ गइल रहे, ऊ जोर से थुकले रही– आक्....क्.... क्.... थू। आ अपना रावटी में लवटि आइल रही।

एकरा बाद सुकन्या के अपना बाप, राजा सर्याति के चेहरा इयादि परऽता। अहेरि पर आइल सभ दास–दासी, अमला–फैला आ सिपाही–सागिर्द लोग के रोग गरसि ले ले रहे। राति–दिन के बाप–माई आ जिअनी–मुअनी के रोअला–कलपला से राजा सर्याति एकदम निरास आ दुखी हो चुकल रहन। सुकन्या के ऊ छन् इयादि परता त उनका आँखि में से ना मालूम कब से बटोराइल लोर ढरकि जाता, जब उनकर बाप एकदम दीन–हीन होके सुकन्या से रिसी के संगे बिआह कइ के परजा के दुख दूरि करे के कहले रहन। सुकन्या पिता के बात चुप–चाप मानि ले ले रही आ परजा के भलाई खातिर च्यवन रिसी के पत्नी बनि गइल रही। दस के भलाई खातिर– परजा के सुख–सान्ति खातिर अपना देंहि के बलिदान जवानी के हवन.... अपना एह विचार से सुकन्या के हिरदया में बहुत सुख मिलऽता। ऊ सुकांति के गरदन पर दुलार से हाथ फेरे लागतारी। फेरू ना मालूम नींद कब उनका के अपना अँकवारी में भरि लेत बिया।

च्यवन रिसी खूब भिनसहरे पूजा पाठ करसु। सुकन्या के पूजा के सब सरजाम रातिए में ठीक क के राखे के परे। रिसी पूजा वाली कुटिया में सुतसु आ सुकन्या बगलवाली कुटिया में जवना में घर गिरहस्थी के दोसर जरूरी सरजामी धइल रहत रहे। ओह दिन सुकन्या बहुत राति गिरला ले जागल रही एह से उनकर नींद ठीक बेरा पर ना टूटलि। रिसी जब नहा–धोके अइलें आ पूजा वाला घर में ढुकलें त देखताड़े कि हवन–कुंड आ बेदी लिपाइल तक ले नइखे। ऊ करोध से काँप आ चिचिआइ के बोललें– 'सुकन्या!' लेकिन सुकन्या त ओंघाइल बाड़ी। रिसी के पुकार सुनसान जंगल में गूंजि के रहि जात बिया। हाथ में कमंडल लेले आ खीसी भूत भइल च्यवन रिसी लमहर डेग डालत सुकन्या के कुटिया का ओरि चलि आवताड़ें।

खंड़ाऊं के चटर चटर आवाज सँउसे जंगल में भय भरि देता। ऊ सुकन्या के कुटिया के दरवाजा जोर से भीतर ढकेलि दे ताड़ें आ अन्दर घुसि के खूब जोर से पुकार ताड़ें... 'सुकन्या!' दरवाजा के दायाँ कोना में सुकन्या निरभेद सूतल बाड़ी। उनकर एगो हाथ सुकांति के गरदन पर बा। रिसी के जइसे काठ मारि जाता। सुकन्या के अइसन रूप, अइसन कोमलता ऊ आजु तकले ना देखलें। जइसे कवनों अनबूझ बालक निरभेद सूतल होखे। भरल देहि, मुदाइल पलक, ओठ मुसुकात बा लिलार पर केस के दू–चारि गो घुघुरिआइल लट। रिसी क मन सिहरि जाता। ऊ निहुरि के अपना एगो अंगुरी से सुकन्या के लिलार पर के लट सोझ करताड़ें आ एकदम मद्धिम आवाज में नेह–भरल बोली में कहताड़ें– 'सुकन्या?' बाकी ओही घरी उनका आपन बुढ़ाइल– देंहि आ सुकन्या के जवानी मन परि जात बा। आजु से बारह बरिस पहिले सुकन्या कहले रहे– 'सपना मन देखेला, देंहि ना देखे।' रिसी उदास मन से अपना कुटिया में लवटि आवत बाड़ें। थकल, गते–गते आ चुपचाप।

ओह दिन पूजा में उनकर मन नइखे जमत आ एह घटना के बाद च्यवन रिसी हमेसा कुछ–न–कुछ उदास रहे लागताड़ें। अब ऊ सुकन्या के कवनों गलती पर डाँटत–फटकारत नइखन। विद्या–बुद्धि ओसहीं रहता, लेकिन अब ऊ अपना के बड़ा हीन समुझे लागऽताड़ें। सुकन्या के देखि के उनका मन में अनेरे एगो भय समा जाता जइसे चोरी कइले होखसु। सुकन्या के पति के सेवा में कवनो कमी नइखे आवे पावत सेवा, बे लोभ–लालच के – बेइच्छा अनिच्छा के।

कई महीना बीत जाता आ बे बोलवले तेरहवां बसंत आ धमकता। सुकन्या के मन में बसंत से अब कवनों प्रीति नइखे। सभ रितु अब उनका खातिर समान हो गइल बा। जइसे मसीन में तेल–पानी डालि दिया आ ऊ आपन काम करत रहे बिना कवनों फिकिर चिंता के। बाकी जब जब ऊ ताल में पानी ले आवे जासु आ कोइलरि के कूक सुना त उनकर करेज जइसे बाहर निकलि आवे। ऊ थोरे देरि किनारा बइठि के ईहे सोचत रहसु कि कोइलरि के बोली एक हाली अवरू सुनि लीं त पानी लेके जाईं। आजु फेरू सुकन्या ताल पर गइल बाड़ी। काफी देरी हो गइल आ सुकन्या ना लवटली। च्यवन जी के चिंता बढ़ति जाति बिया। ऊ आपन कमंडल उठावताड़ें आ ताल की ओरि चलि देत बाड़ें। ताल से कुछ दूरी पर रिसी का एगो मरदानी आवाज सुनाता–

"हमार नाँव अस्विनी कुमार रेवन्त ह। सुकन्या तहार सुन्नर रूप का त्याग के आगि में तपल जवानी देखि के हम इहाँ आइल बानीं। हमरो मन में ओइसने पिआस बा जइसन पिआस से तूँ पिछला बारह बरिस से तड़फत बाडू।" रेवन्त दू–चारि डेग सुकन्या के ओरि बढ़ि आवताड़ें।

च्यवन रिसी झटके से झाड़ी के अलोता लुका जाताड़ें।

"रउरी बात में सच्चाई जरूर बा लेकिन, हम च्यवन–पत्नी सुकन्या हईं। पति से धोखा... माफ करीं।" सुकन्या कहतारी।

"हँ, जानतानी तू च्यवन जी के मेहरारू हऊ, लेकिन च्यवन.... जीअत हड़खारि... ऊ मेहरारू आ जवान मेहरारू राखे के अधिकारी नइखन लोक बेद से भी नइखन।"

रेवन्त के बात सुनि के सुकन्या के मन मिरगी अस नाचि जाता। ऊ अपना पीर के समेटि के कहतारी– "अगर हमार पति च्यवन आजु जवान रहितें त तहार अइसन कहे के हिम्मति ना परित। तूँ उनका के बूढ़ आ अब्बर जानि के हमरा से ई बात कहताड़ऽ।" सुकन्या के आँखि में लोर उतरा जाता।

रेवन्त कुछ मद्धिम परि जाताड़ें, फेरू नरम आवाज में बोलताड़ें– "सुकन्या जी रोई मति! एह बात के हम रावां से छिपाइबि ना कि हमरा रावाँ से प्रेम हो गइल बा। हम रावाँ के आपन बनावे के चाहत बानी आ रावाँ खातिर हम सब कुछ दाँव पर लगावे के तइआर बानीं।" रेवन्त आगे कहताड़ें– "रावाँ तकलीफ मति मानी त हम एगो बात कहीं। हम च्यवन रिसी के जवान बनावे के दवाई जानत बानीं, आ हम उनका के फेरू से जवान बना देबि, लेकिन एगो करार करीं।"

सुकन्या के चेहरा अहगरि के चमकि जाता। ऊ जल्दी से कहतारी– "बताईं हमरा पति के जवानी कइसे लउटी। हम राउर बड़ा उपकार मानबि।"

रेवन्त के चेहरा पर कुछ कठोरता आ जाता, कहताड़ें– "हमार सर्त ईहे बा कि जब च्यवन रिसी जवान हो जइहें त रावाँ च्यवन चाहे, रेवन्त दूनों आदिमी में से केहू एक के बने के परी। बोलीं रावाँ मंजूर बा?"

सुकन्या हुँकारी में गरदन हिला देतारी। झाड़ी के अलोता च्यवन रिसी के बुढ़ाइल आँखि में दू ठोप लोर घुरचिआइल गाल आ लमहर लमहर सनई अस दाढ़ी के बार पर से टेघरि के करील के पात पर टप–टप गिरि परता।

सुकन्या रेवन्त के संगे ले के आसरम में लवटि आवतारी। थोरहीं पीछे च्यवन रिसी भी चहुँपऽताड़ें। सुकन्या रेवन्त के रिसि से जान–पहिचान करावतारी। रेवन्त, रिसी के ओह बन में के एगो पोखरा में नहाए के राय देताड़ें जवना में नहइला से बुढ़ापा जवानी में बदलि जात रहे।

बेरा ढरि गइल बा। रेवन्त रिसी के लेके ओह पोखरा पर जाताड़ें। कुटिया के आँगन में कुस आसन पर बइठलि सुकन्या सोचतारी– आखिर दुख के अन्त भइल। अच्छा मोका बा रिसी के, एह आसरम के कठोरता से छुट्टी ले लेबे के चाहीं। इहवाँ जिनिगी के कुछ मोल नइखे। मोल बा ज्ञान के, तपस्या के, आतमा के सुखवला आ सरीर के साँसति देखा के! रेवन्त कतना नेही बा, कतना दिलदार आ होसिला वाला। लेकिन.... लेकिन.... रिसी.... बारह बरिस... साँझि–सेबेरे.... जेकरा हवन–कुंड के राख फेंकत फूल तूरत समाधि साफ करत हो गइल... ना.... ना.... रिसी के पथल के करेजा में भी एगो मूरति बिआ.... जरूर बिआ.... अनगढ़ मूरति–सरूपहीन। सुकन्या निरनय नइखीं करि सकत।

रेवन्त आ नवजवान च्यवन पोखरा से लवटि के आसरम के आँगन में खड़ा बा लोग। दूनों एक दोसर से बढ़ि के सुन्नर गठल देंहि आ चमकत रंग! जवानी कूटि–कूटि के भरल बा।

रेवन्त कहताड़ें– 'सुकन्या! अब हमनी में से केहू एक आदमी के गरदन में बरमाला डालि द।'

"जवान तपस्वी च्यवन के कठोरता खतम हो गइल बा आ उनका सुकन्या के आतमा में टीसत बारह बरिस के पुरान घाव के अन्दाज लागि चुकल बा।" 'सुकन्या! बदला लेवे के मोका आ पहुँचल बा। चुकिहऽ जनि' – रिसी दरद में डूबल आवाज में कहऽताड़ें।

सुकन्या एक बेरि रेवन्त का ओरि आ फेरू छन भरि रिसी का ओरि देखतारी आ बे सोचले समझले वरमाला च्यवन रिसी के पहिरा के उनका छाती पर आपन गरदन ध देतारी।

चक्का डूबि रहल बा। सँउसे जंगल लाल हो गइल बा। आ चिरई चहकि रहल बाड़ी स। आसरम से पच्छिम, जेने आकस देवदार के पुलुई पर उतरि आवेला, रेवन्त धीरे–धीरे चलल जात बाड़ें आ उनका संगे संगे चललि जात बिआ उनकर परछाहीं। ●●

बतकुच्चन

डा0 ओम प्रकाश सिंह

पिछला बेर बँड़ेरी के चरचा पर बात खतम भइल रहे बँड़ेरी ओह लकड़ी के बीम के कहल जाला जवन कवनो छान्हि भा पलानी के बीच से थमले रहेला आ ओकर दुनू सिरा दुनू तरफ खँभा भा दिवार पर टिकावल रहेला अब देखीं कि कइसे तनी मनी का हेर फेर से दू गो शब्द अइसन सामने आइल, जवना के आपस में कवनो संबंध नइखे। कई बेर आपस में संबंध त रहेला बाकिर एक दोसरा से उलट जइसे कि लुकाइल आ लउकल दुनू के संबंध अंगरेजी के 'लुक' से जुड़ल कहल जा सकेला। बाकिर अंगरेजी आ भोजपुरी में कबो कवनो संबंध नइखे रहल, अंगरेजी के 'नियर' आ भोजपुरी के 'नियरा' का बावजूद भोजपुरी में नियर के एक मतलब लेखा होला। माने एक समान, एक जइसन जइसे कि दुनू चीज एके नियर लउकत रहल उहे लउकल तनी मनी का बदलाव से लुकाइल हो जाला लुकाइल, ऊ जे लउकत ना होखे अब एह लुकाइल के कतनो लुकारी भाँजीं, ऊ लउकी ना लुकारी के हिन्दी समानार्थी शब्द मशालो होला। लुकारी से लहोक निकलेला होली का समय होलिका दहन वाला आग से लुकारी जरा के गाँव का बहरी दोसरा गाँव का सिवान में फेंके के परम्परा रहल बा। अब ई परंपरा कवनो लुहेंड़ा बनवलसि कि लखेरा, ई सोचे के बाति बा। काहे कि एह लुकारी फेंके के मतलब इहे होला कि दोसरा के लुकारी देखावल जात बा, लहकावल जात बा, ललकारल जात बा। अब लुकाइल आ लउकल का फेर में लउकी याद आ गइल। कहे खातिर लउकी भा लौकी त सब्जी रहल आइल बाकिर एगो योग बाबा अपना योगमाया से एकरा के फल बना दिहलें आ लोग एह लउकी के रस बड़ा चाव से पिये लागल। हाल ई हो गइल कि लउकी सब्जी बाजार से त लुका गइल बाकिर फल बेचेवालन किहाँ लउके लागल। जबकि लउकी के रस पी के कई जने दुनिये से लुका गइले। सरकार के कहे के पड़ल कि लउकी के रस मत पीहीं सभे, खास कर के तब जब ऊ कडुआ लागे। बाकिर बाबा लोग के का? अपने बेमार पड़ी लोग त सीधे अस्पताल के राह धरेला बाकिर अपना चेला चाटी के सगरी रोग योगे से दूर करे के दावा ना छोड़े। अब एहसे कवनो मतलब नइखे कि योग्य के बिगड़ल रुप जोग जोड़े वाला योग से मिल के जोगाड़ बनि जाला। कवनो समस्या से निकले के गैर परंपरागत साधन जोगाड़ कहल जाला आ जे येन केन प्रकारेण आपन काम बना लेव ओकरा के जोगाडू कहल जाला। आ अइसने जोगाड़ अकसरहाँ सरकार चलावे के कामे आवेला। सरकार त जोगाड़ भिड़ा के बना चला लिहल जाला बाकिर एह जोगाडू सरकार का चलते आम आदमी के जिनिगी के जोगाड़ जोगाड़ल मुश्किल बनि जाला।

Hkkt ifjdk MkV dke

केकरा पर करबि सिंगार

रामवृक्ष राय 'विधुर'

जवार भर में केहू के मजाल ना रहे कि भोला पहलवान का सोझा खड़ा होखे। जब ऊ कवनो बाति पर खिसिया के सनकी हाथी नीयर खड़ा हो जासु त नीमन–नीमन नवहन के साँसि फूले लागे। मीठू ओस्ताद का अखाड़ा में बइठक करे लागसु त उनुका गोड़ का नीचे गड़हा हो जा, पसेना से जमीनि भींजि जा, बाकिर थाकसु ना। मीठू ओस्ताद भोला के होनहर देखि के, छाती फुला के कहसु– "ईहे एगो पट्ठा बा जे हमार नाँव उजागर करी।"

सचहूँ के भोला पहलवान ओस्ताद के नाँव चमका दिहलन। जब दसहरा मेला में भूलू पहलवान् जवार भर का पहलवानन के हाँकि दिहलन आ हाथ मिलावे खातिर केहू तइयार ना भइल त भोले पहलवान अखाड़ा में उतरलन। भूलू नवछेटिया पहलवान भोला के देखि के, हँसि के कहलन, "सुनले रहलीं हँ जे एह जवार में नीमन–नीमन पहलवान बाड़न स। हमरा ई मालूम ना रहल ह कि हमार नाँवें सुनि के सब लँगोटा धइ देईं।"

भोला अखाड़ा के माटी हाथ में लेके ओस्ताद के नाँव लिहलन आ छरकि के अखाड़ा में आ गइलन– "गुमान ना करे के चाहीं। गुमान दुनिया में केहू के नइखे रहल।" भोला पैंतरा बदलि के कहलन। "गुमान नइखीं करत, बाकिर बाघ–बकरी में लड़ाई कइसन।" भूलू के बाति सुनि के भोला के आँखि ईंगुर अइसन लाल हो गइली स। गम्भीर होके कहलन, "काहे, हाथी के मउवति चिउँटी का हाथ में होले, मैदान में आवऽ, तब पता चली। हम मीठू ओस्ताद के पट्ठा हवीं।"

भूलू आपनि देहि बटोरि के ताली ठोंकि के भोला से हाथ मिलवलन। हाथ मिलवते अँकवार में दबा लिहलन। बाकिर एहसे पहिले कि ऊ भोला के लेके नीचे गिरसु, लोग देखल कि ओह दइत जइसन पहलवान का नीचे भोला थोरे तिरिछा भइलन, आ उनुकर लँगोटा धइ के उठावे लगलन। भूलू के गोड़ उठि गइल। देंहि का भारी बोझ से भोला के मुँह लाल हो गइल। थोरही घरी में भूलू के अपना कान्हि पर उठा लिहलन आ ओइँजे से लंगी देके फेंकलन त भूलू चारू पाँवे चित्त हो गइलन। जवार में भोला के नाँव बाजि गइल। गाँव के मुखिया निहाल पचास रूपया इनाम दिहलन।

ठुमरी भोला के देखलसि, त देखते रहि गइलि। कसइली नीयर कसलि देंहि, कदली का खम्भा नीयर जाँघि, बीछी का आर नीयर अँइठलि–अँइठलि मोंछि, गर में गलबन्द नीयर लपिटाइल लँगोटा आ कउड़ी नीयर बड़ी–बड़ी आँखि जइसे ठुमरी का आँखि में गड़ि गइलि। ओकर मन लट्टू हो गइल।

मेला का दू–तीन दिन बाद निहाल का घर में डाका पड़ल। गाँव भर के आदमी बिटुराइल रहे। बाकिर केहू के फरह ना परे कि आगे बढ़ो। जइसे जना जे सभका थथमा लागि गइल बा। एही बीच में भोला के ललकार सुनाइल– "खड़ा का बाड़ऽ जा। तमासा देखे के आइल बाड़ऽ जा?"

भोला डाकुअन का गोल में पइठि गइलन। निहाल के माई छाती पीटि–पीटि रोवति रहली। ठुमरी एगो घर में कोठिला का आड़ में लुकाइलि रहे। डर का मारे ओकर कुल्हि देंहि पीपर का पतई नीयर काँपति रहे। मन धुँआ हो गइल रहे। भोला के देखलसि त जीव में जीव परल।

"अब का डेराइलि बाडू।" भोला ठुमरी का निगिचा जाके कहलन।

ठुमरी आँगन में आ गइलि– "बाप रे बाप! करिया–करिया भूत नीयर रहुवन स। देखि के रोवाँ ठाढ़ हो जात रहुवे।" ठुमरी भोला का आँखि में आँखि डालि के कहलसि, "तहरा के देखलीं हँ तब जीव में जीव परल ह।"

एह डकइती का बाद भोला के इज्जति अउरी बढ़ि गइलि। गाँव भर के नवहा उनुका के दिन भर घेरले रहें स। निहाल का दुआर पर साँझ–सबेरे दूनों बेरा बइठकी जमे लागलि। निहाल के कुल्हि लइका भोला से पतिया गइल रहलन स। ठुमरी एकदम मुँहलग्गू हो गइलि रहे। कहीं डहरी–डाँड़े भेंट होखे त 'बम भोला' कहि के रिगावे। बाकिर भोला कुछ बोलसु ना, मुसकिया के आगे बढ़ि जासु।

काँचे उमिर में भोला जवार का कुल्हि नवहन के पछारि के काफी नाँव कमा लिहलन। मीठू ओस्ताद के पगरी उनहीं का कपार पर बन्हाइलि। देहात का हर गाँव से नवहा उनुका अखाड़ा पर 'जोर' करे खातिर आवें स। भोला के लेके, खरहना गाँव के नाँव जिला में फइल गइल।

दूसरा साल फेनु दसहरा के मेला लागल। धान के पौधा माथ पर मउर बान्हि के हँसे लगलन स। जइसे जना जे धरती सोना के चादरि ओढ़ि लेले बा। गाँवन में जवना साल खेती सुतरेले, तिहवारन में रंग आ जाला। जइसे जना जे मेला में मये देहात उमड़लि आवतिया। आदमिन का मारे मेला में सावाँसुधि ना रहे। देंहि से देंहि छिलात रहे। दुकानो हरसाल से अधिका आइलि रहली स। चारू ओर धूम–गज्जर मचल रहे। कहीं नाचि होति रहे, कहीं कुछ आदमी बिटुरा के बिरहा गावत रहलन। चारू ओर मस्ती झरति रहे। बंजर भुँइ सुहागिन बनि गइलि रहे।

ठुमरी मेला देखि के लवटति रहे। भोला के देखि के लवटि आइलि 'एगो हमार काम करबऽ?' "एगो

ना सइ गो!" भोला ठाड़ हो गइलन– "कवन काम बा, कहऽ?"

"कुछऊ ना। अइसहीं टोकि दिहलीं हँ।" ठुमरी हँसि के कहलसि, "गाँव पर कब चलबऽ?"

भोला बिना कुछ जबाब दिहले आगे बढ़ि गइलन। सूरज डूबि गइल रहे। मेलहरू मेला देखि के लवटत रहलन स।

"आ दुर करु! चलत–चलत पाँव पिरा गइल। अबहीं केतना दूर गाँव बा" जोखनी बायाँ हाथ के कहँतरी दहिना हाथ में लेके कहलसि। "चलि आईं! अब निगिचा लेले बानीं जा कउवा खोंच के बगइचा लउकत बाटे।"

"के ह, ठुमरी?"

"हूँ।"

"तू निहाल के लइकी हविसि नू बचिया?"

"तोरे नू पर साल अतरवना बिआह भइल?"

ठुमरी हँ–नाहीं कुछ ना बोललि। कमला, जवन ओह गाँव का लइकिन वाला मदरसा में, मास्टरनी रहली– कहली, "हँ, इनहीं के बिआह पर साल अतरवना भइल रहे।"

बाची का करम में आगि लागि गइलि। कहाँ सोरह बरिस के कँवल का फूल नीयर सुघर–सुभेख लइकी आ पैंतालीस बरिस के बूढ़ झरनाठ बर! जोखनी के आँखि सलोर हो गइलि रहली स। लोर आँचर का खूँट से पोंछि के कहलसि, "जइसे जनाला जे निहाल का आँखि में काचा बइठि गइल रहे– रुपया ना रहे त केहू गरीबे आदमी कीहें जोड़–जुगुत के सुघर–सुभेख लइका देखि के बिआह कइ देले रहितन।"

"बेटी आदमी का कपार के बोझ हो गइल बाड़ी स। उन्हनी का जिनिगी का बारे में केहू नइखे सोचत।" सुघरी माथ पर लूगा ठीक कइके कहलसि "अपना कपार के बोझ हलुक होखे के चाहीं। लइकी खाला परो भा ऊँचा। एकर केकरा फिकिर बा।"

"हम त कहि देतीं जे बिआह ना करबि। जगरनियाँ बीचे में बाति लोकि के कहलसि। करिया–भूचेंग, जइसे जना जे भरि देहीं कोइला पोतल होखे! राम! राम! छी....।"

"एही के जरूरति बा। समाज हमनी का कमजोरी के नजायज फायदा उठावत बा। जेही कमजोर होला, दब्बू होला, ऊहे दबावल जाला, समाज का चक्की में पीसल जाला। समाज के देवालि पुरान हो गइलि बा अब ओमें पेवन लगवला के जरूरति नइखे। जोर से धक्का दिहला के काम बा जे ढहि जाउ।" कमला बोलति चलि जाति रहली, "जे अपना सुख–स्वारथ खातिर दुसरा का जिनिगी से खेलवाड़ करेला, ऊ हीत ना, दुसमन ह। पक्का दुसमन। निहाल जोन्हा के काहें खेदि दिहलन? एही से नूँ कि ऊ करिया रहे– कुरूप रहे। ओह घरी समाज कहाँ रहे– गाँव–गिराँव कहाँ रहे। का जोन्हिया निहाल के इज्जति ना रहे– पगरी ना रहे?" कमला के बाति खतम भइलि त बरहना गाँव के दिया लउकत रहे।

ठुमरी घरे पहुँचलि त दिया–लेसान के बेरा हो गइल रहे। दुआर पर आदमिन के जमवड़ा लागल रहे– "भाई, गजब हियाव के आदमी रहलन ह। मेला में जेतना आदमी रहलन ह, सभ उनुकर मुअल सुनि के रो दिहल ह। एक–दू आदमी के कहाँ हिम्मति रहलि ह जे उनुका पर हाथ उठाओ। सत्तरह गो गँड़ास लागल बानऽ स।" भोला के मुअल सुनि के ठुमरी के कुल्हि देंहि सुन्न हो गइलि। ओकरा लेखे दुनिया में अन्हार हो गइल। देंहि पर के गहना जइसे जना जे ओकरा खातिर बोझ हो गइल बा। हाथ के चूरी फोरि दिहलसि। दूसरे दिने सबेरे ओकर माई चूरी के खाली हाथ देखि के पुछलसि, "चूरी का हो गइलि? एहवाती मेहरारू के चूरी सुहाग ह। जाके पहिरि ले।"

ठुमरी के आँखि सलोर हो गइली स। दुसरी ओर मुँह फेरि के कहलसि, "का होई चूरी पहिरि के, अब एह दुनिया में हमार के बा जे देखी?"

जिरिया ठुमरी का ओर घूमि के देखलसि त ओकरा आँखि से सावन–भादो का बदरी नीयर पानी बरिसत रहे। ●●

प्रेम के सुभाव

रामदेव शुक्ल

मीतू हम दूनू जने उहाँ पहुंचि गइल बानी जाँ, जहाँ से लवटले के कवनो राहि नइखे बँचल। अगहीं बढ़े के बा, चाहे एहर बढ़ि चलल जा, चाहे ओहर। बोलऽ कवने ओर चलल जाव?

मीता के लिलार चमकि उठल। कहली– "तहार कहल आ हमार सूनल, ई कबसे हो रहल बा? बाकि एक बात पक्का बा कि हमार मतारी हमके जवन मंतर दिहले बाड़ी, ओकरा से हटि के हम कवनियो राह नाहीं धरबि। देबू कहलें– ऊ कवन मंतर हऽ?"। हमार माई कहलस– "ए बेटी बिना परेम के बियाह सबसे बड़का पाप।" हम पुछनीं– "माई, ई हमसे काहें कहत बाडू? माई एक चुप्प तऽ सौ चुप्प।" कुछ दिन बीति गइल तब एक बेर हम बाति के घुमा के पुछनीं– "तहार बियाह के करावल? माई फेरू चुप। हम पुछनीं– अगुवा के रहल?" माई के मौन टूटल– ई कुलि जानि के का करबू? हमन के जनमते इहे घुट्टी पियावल जा कि बेटी आन के घरे के बासन हई। जेतना जल्दी माई बाप के घर से अपने घरे पहुँचि जासु, ओतने नीमन। अब ई मति पूछऽ कि लइकी के आपन घर कहाँ बा? जँहवाँ मतारी बाप डोली में बइठा के भेजि दें, ऊ घर बेटी के आपन भइल। हम पुछनीं– "मतारी बाप कइसे जानें कि लइकिया के कहाँ भेजे के बा? माई बतवली कि नाऊ बारी बाभन, उपरोहित केहू बता दे कि फलाना गाँव में फलाना अदिमी के होनिहरगर बा। बेटी के बाप भाई भतीजा के साथे जाके लइका देखि आवे। दर दहेज, दिन बार धरा जाव। तब लइकनी का केहू से जानकारी मिले कि तहार बियाह फलाने दिन के होई। बेटी के हिम्मति नाहीं रहे कि मुँह खोलें। एतना लइकई में बियाह होखे कि कुछु बुझइबे नाहीं करे। केतना जनी ससुरा जाके नइहर कबो लवटबो नाहीं करें। कहत कहत माई के कंठ गहबर हो गइल।"

ना जाने केतना लइकी के दुखदरद माई की कंठ से रोवाई बनि के फूटत रहल आ आँखी से बहत रहल। बहुत मनवले पोल्हवले की बाद माई चुपाइल। अगिले दिने हमसे कहलसि अब जमाना बदलि गइल बा। लइकी पढ़त लिखत बाड़ी। बालिग भइले पर बियाह के बाति चलति बा। बाकि अबहिनो बियाह खोजल आ पक्का कइल बेटी के बाप–भाई–नातहित के हाथ में बा।

बोलत बोलत माई चुपा गइलि। एह बेर हम ओकरे आँखी में आँखि डारि के पुछनीं– "तें अपने बियाह से सुखी नाहीं भइले। बाबूजी से प्रेम नाहीं कइले? उनसे प्रेम नाहीं करेले?"

माई कहलसि– "सुखी भइनीं। अब्बो सुखी बानीं। तोहार बाबूजी से हमके का नाही मिलल? धन दउलत, मान मरजाद, बेटा बेटी का नाहीं मिलल? उनके एइसन पति पाके कौनो दुख कइसे होई?"

हम कहनीं– "तब काहें कहत बाड़े कि बिना प्रेम के बियाह पाप हऽ?" माई मुसुकइली। कहली– "हम तहनपाच खातिर कहत बानीं। नवका जबाना बा। पढ़त लिखत बाडू। नोकरी चकरी करबू त बियाह की मामला में पुरनका चाल कइसे चलबू? तहरी साथे पढ़े वाली लइकी लोग बियाह के बारे में का सोचेली, जनते होखबू। एही से कहनी हँऽ कि सोचि बूझि के चलिहऽ। तहार बाबूजी बहुत दिन से तहरी लायक लइका खोजि रहल बानें। हमसे कुछ कहेलें नाहीं, बाकिर भितरे फिकिर में घुलत रहेलें। हम अचक्के पुछि परनीं– तें लइकई में केहू से परेम कइले रहले?" माई हँसि के कहलसि– "हमन के बियाह प्रेम कइले की उमिर में नाहीं भइल, पुतरी खेले वाली उमिर में भइल। हमार माई बतावे कि हम त माड़ों में सूति के ढिमिला गइनीं, मेहरारू उठाके बइठवली सँ। तब सेनुरदान भइल।"

मीता के बात सुनि के देबू कहलें– "तहरी माई के मंतर सबकी जिनगी के मंतर होखे के चाहीं। आ हमरे तहरे जिनगी के मंतर त ई बटले बा। बाकि....।"

"बाकि का? मंतर बा त बाऽ। न पाछे लवटले के न जगह बा, न पाछा लवटले क जरूरत बा। आगे बढ़ऽ।" मीता देबू के ललकरली।

देबू कहलें– "एतना सोझ राहि नइखे मीता। तहार बाबूजी के जिनगी के सवाल बा।" मीता झमकि के बोलि परली– "उनके जिनगी के सवाल ओहर बा, त हमरे तहरे दूगो जिनगी के सवाल एहर बा। एगो जिनगी बचावे खातिर दूगो के आगी में काहें झोंकि दीहल जाव?"

"अबहिन किरोध में बाडू। एह् आगी से बहरा निकड़ि के सोचबू त समुझि जइबू कि हमरे तहरे आ बाबूजी के सोच में का फरक बा। बाबूजी के न एतना मानसिक विकास भइल बा आ न एतनी पढ़ाई लिखाई के सुविधा मिलल बा। उनके सोच ओइसने बा। जइसन उनके बाबूजी के रहल आ उनकऽ आजा परपाजा के रहल। ओह लोगन के विकास ईहे मानल जाई कि जनमते लइकनी के मुवा दिहले के अपराध मानल लोग। अब के धनीमानी माई बाप व गरभवे में बेटी के मरवा देत बा।"

मीता गहिर साँस छोड़ली। कहली– "अपने जिनगी के डोर अपने हाथ में न रहे, एइसन जियले से अच्छा त ऊहे रहल कि जियहीं ना दीहल जाव।"

"बस करऽ मीता। जिनगी से बड़हन, जिनगी से अनमोल कवनो चीज नाहीं बा। जिनगी बाचल रही त केतनों ऊँच उड़ान भरल जा सकेले। रहल बात एह समय के त हमन के का करे के चाहीं? हम चाहत बानीं,

एक बेर तहरी माई से बतियावल। उनसे बतियवले की बाद कुछ फरियाई।" कहि के देबू मीता के अँखिये से दुलारि दिहलें। कहलें– "माई से पूछि के बतइहऽ कि कहाँ हमसे भेंट होई। तहरी घरे हमार गइल ठीक नाहीं रही। बाबूजी के जीव दुखावल नइखीं चाहत।"

संजोग एइसन भइल कि बाबूजी दू दिन खातिर अन्ते गइलें। मीता देबू के अपनी घरवे बोला लिहली। मीता आ देबू के मन के बात उनके मतारी से जियादे के जानी। मनही मने ऊ गौरा पार्वती से मनावत रहें कि ई जोड़ी बिछुड़े ना पावे। बाकि ऊ अपने सवाँग के सुभाव जानत हई। उनके आन्हर परेम एतना दिन से सहि रहल बाड़ी। एक दिन बात चला दिहली– "एजी, बबुनी एतना पढ़ि लिहली। अब अपने लायक लइका से बियाह करे के सुविधा उनके मिले के चाहीं।" सुनते मीता के बाबूजी चिकरले "कवनो लइका खोजि लिहले बा का? माई बेटी मिलि के कवनो परपंच रचले बाड़ू सो का? एइसन होखे त सुनिले– हमरी मउवत के बादे हमरी बेटी के एइसन बियाह हो पाई।" कई दिन ले मरद–मेहरारू में अनबोलता रहल। हारि–पांछि के मीता के माई सब बात बेटी से बता दिहली। अपनी ओर से ईहो चेता दिहली कि तहन पाच अपनी मरजी से बियाह करे के सोचबऽ जा ओसे पहिलहीं तहार बाबूजी परान तेयागि दीहें। ओकरे बाद हमार का होई, सोचि लीहऽ जा। मीता सब बात देबू से बता दिहली। सब कुछ जानि समुझि के मीता आ देबू आपस में राय कइले रहलें कि माई से बतिया के कवनो रस्ता सोचल जाई। देबू मीता की माई से हाथ जोरि के कहलें– "तब आपे कवनो उपाइ बताईं। हमन के एतना दिन से एक दुसरे के जानत चीन्हत बानीं। बियाह कइल चाहत बानीं, बाकि एह सूरत में बियाह कइले के सोचियो नाहीं सकल जाला कि बाबू जी के जान चलि जाव। एइसन नौबत आवे ओकरे पहिले बियाह के बतिये भुला जाइल जाई।" तड़पि उठली मीता–एतना आगे बढ़ले का बाद तूँ का बूझऽ ताड़ऽ कि बियाह से पाछे हटल जा सकेला? देबू मुँह खोले, ओसे पहिलही मीता के माई बोलि परली– देबू बेटा। मीता त बउरा गइल बाड़ी। हमरा तहरी बुद्धि विद्या पर भरोसा बा। हम मरत दम तक तोहन लोगन के साथ देबे के तइयार बानीं। तू जानत बाड़ऽ कि मीता के एक जने भाई बाड़ें? उनके कब्बो देखले बाड़ऽ? देबू कहलें– "नाहीं माई, न उनके देखले बानीं, न उनके नाँव सुनले बानीं। मीता कबो बतइबो नाहीं कइली।"

मीता के बाबूजी जेसे परेम करेलें ओपर आपन एतना अधिकार मानेलें कि ओकर उठल बइठल व बोलल–चालल, खाइल–पियल, ओढ़ल–पहिरल, सोचल–बिचारल सब कुछ उनकी की मरजी से होखे। मीता के कपड़ा–लत्ता पर टोका टोकी नाही करें, इनके खाइल–पियल हमरी साथे होखे, बाकि बेटा के पलभर आँखि के ओट नाहीं होखे दीहल चाहें। लइकवा छोट रहल, तबले त बाप के इसारा पर नाचल। जब बड़ होखे लागल आ स्कूल के ओकर आपन साथी सँघाती बने लगलें त बाप से फरके रहे लागल। बाप चाहें कि बेटा अउरी केहू से न बोले, न बतियावे। उनही की लग्गे रहे, उनही के साथे खानपान करे, उनही के लग्गे बइठे सूते। लइकवा के जीव उबिया गइल त एक दिन स्कूले से भागि गइल। भगवान सोझ रहलें कि राही में हमरे भाई से भेंट हो गइल। मामा की साथे जाके ममहर में रहे लागल। हमार भाई आके हमसे बतवलें कि हमार बेटउवा अपने बाप से एतना चिढ़ि गइल बा कि उनके मुँह नइखे देखल चाहत। बाप सुनलें त खूब लालपियर भइलें, कहलें– हमार बेटा होके हमही से टेढ़ रही? हमार भाई समुझवलें– लइकन के अपने ढंग से सोचले समुझले के मौका देबे के चाहीं। कवनो लेखा बाप एह बात पर राजी भइलें कि बेटा सहर के स्कूल में पढ़ाई करो आ हास्टल में रहो। कई बरिस भइल छुट्टियो में हमार बाबू घरे नाहीं आवेलें। मामा घरे जालें चाहे कवनो साथी किहाँ चलि जालें। एतना बता के मीता के माई चुपा गइलीं। उनके आँखि ढ़बढ़िया गइल। कुछ देर केहू कुछ ना बोलि पावल।

देबू कहलें– बाबूजी के दुख बुझले के कोसिस करे के चाहीं। जवन अदिमी बेटा के एको पलछिन अलगे करे के तेयार न होखे ओही का जब ई पता चलल कि बेटा उनके देखल नइखे चाहत, त उनके जीवन कइसन भइल होई? ऊ कवने लेखा तीहा धरत होइहें? उनके दुख केतना बेथाह होई?

मीता के लेकार फूटल– "अच्छा, माई, तें बताउ, का तोहरो उप्पर बाबूजी के एइसने परेम रहल? एही लेखा अपनी मरजी के गुलाम बना के तोके रखलें? मीता के माई बेटी कावर ताकते रहि गइली। कुछ देर बाद पुछली– तूँ त पढ़ि–लिखि के एतना हुनरगर हो गइल बाडू। तहरा का बुझाला? हमार कवनो आपन इच्छा कबो देखले बाडू? हमन के ऊ बाछी रहनीं जेकर पगहा माई बाप जेकरे हाथ थमा दीहल ओही के पाछे पाछे जाके ओकरे खूँटा पर बन्हा गइलीं। एक बात अउर सुनिलऽ अगर कब्बो ऊ बाछी पगहा तुराके भागि के नइहर चलि आवें त भाई–बाप खरहरा उठाके मारत पीटत ओही खूँटा पर पहुँचा के दम लें।"

एकर मतलब कि "तूँ जनम भर अपनी ओर से कवनो इच्छा करबे नाहीं कइलू?" बेटी के बात सुनिके मतारी कहली– इच्छा भइबे नाहीं कइल ए बेटी। जवन तहरे बाप के इच्छा, तवने हमार।

"माई तूँ झूठ बोलि रहल बाडू।"

देबू मीता के मुँह देखत रहि गइलें। मीता अपनी माई की आँखि में झाँकत रहि गइली। माई के चेहरा पाथर के हो गइल रहल। ओह घरी बुझाइल कि तीनों जने साँसो लिहल भुला गइल रहलें। तीनोंजने के भित्तर केतना केतना हाहाकार उठत रहल, एकर लेखा जोखा केकरे बस के बात बा!

देबू ओह पाथर चेहरा के ताप सहि नाहीं पवलें। कहलें– "माई, आदमी इच्छा के मूरत होला। हर छन एक न एक इच्छा मन में उपजत रहेला। एइसन कइसे हो सकेला कि रउवाँ मन में कब्बो कवनो इच्छा उपजले ना होखे। मीता ठीक कहि रहल बाड़ी। रउवाँ आपन साँच छिपा रहल बानीं। साँच बात बताईं।"

"तू ठीक कहत बाड़ऽ। मरद होके जनमल बाड़ऽऽ नऽ?" बिना इच्छा के जीयल मरद का जानें? आ कइसे जानें? उनकर त पालन पोषन एह रूप में कइल जाला कि घर के सब लोग, बेटा के हर इच्छा के पुरावे खातिर काम करें। हमार बाप कहें– "लइकन के मन बादशाही होला। जबले लइका अपने से नीक बाउर चेते वाला ना हो जा, तबले ओकर बात टारे के नाहीं चाहीं।" त एइसन मयगर रहलें हमार बाप। बाकिर कब्बो हम उनके मुँह से ई ना सुनले रहलीं कि "लइकी के मन बादशाही होला। लइकी होके जनमले के मतलब होत रहे, आन की इच्छा के आपन इच्छा मनले के टरेनिंग। एही के संस्कार कहल जात रहल।"

माई के पाथर चेहरा पिघलि गइल। मुसुकइली आ कहली–हम अपनी मीता के एइसन संस्कार नइखीं दिहले। हम इनके ई सिखवले बानीं कि अपनी इच्छा के दूसरे पर लदले के कोसिस जनि करिहऽ, बाकि दुसरे के नजायज इच्छा के अपने उप्पर लदाए मति दीहऽ। तू इनके जानत बाड़ऽ। ईहो जानि गइल होखब कि "मीता न आपन इच्छा दुसरे पर लादेली, न दुसरे के इच्छा के गुलाम बनेली।"

देबू खुलि के हँसि पड़लें। कहलें– माई एतना त हमहूँ पढ़ले आ समुझले बानीं कि परेम के मतलबे होला, जेसे परेम होखे ओसे ओसही होखे, अपनी इच्छा के गुलाम बना के परेम नाहीं कइल जा सकेला, बाकिर व्यवहार में एइसन कहाँ लउकेला?

मीता बोलि परली– "काहें, लउकत नइखे? सोझहीं त बाड़ी हमार माई? एही से न हम कहनी हँ कि माई झूठ बोलि रहल बाड़ी। माई के तनाव हल्लुक हो गइल रहल। कहली– चुप रहु। अच्छा मान लेत हईं, झूठ कहनी हँऽ।" बाकि हम तोहके जवन सिखवले बानी ऊ त साँच बा नऽ? अब तू जा देबू मिलिके के सोचऽ जा कि कइसे तोहन लोग के बियाह हो जाय आ तहरी बाबूजी के जिनगी बाँचल रहि जा।

मीता जोर से साँस लिहली। बुझाइल कि बाबू जी के लवटले पर उनसे बतियावे खातिर साहस अपने भित्तर खींचि रहल बाड़ी। देबू कुछ नाहीं बोल पवले। चुपचाप गुनत मथत रहलें। माई पारापारी दूनू जने के मुँह ताकत रहली। अपनहीं चुप्पी तुरली– तहन पाच खूब पढ़ल लिखल बाड़ऽ जा। आपन ऊँच–नीच सोचे वाला त बटले बाड़ जा, अउरियो लोग के जिनगी राहि पर लगावे के लियाकत बा। बाबूजी के एगो अउरी पच्छ बा जवने के भुलाइल ठीक नइखे। देबू पुछलें– "ऊ कवन पच्छ हऽ? माई कहलीं– जे अदिमी बेटी के बियाह अपनी मरजी से न कइले पर जान देबे के तेयार बा, ऊहे बेटी के एतना पढ़ावल कइसे? देबू अचकचा गइलें। कहलें– "एह बात पर त हमार धेयान गइले नाहीं रहल। ई त घोर अचरज के बात बा। एइसन अजगुत कइसे हो गइल?" माई मीता की ओर देखि के कहली– "इनहीं से पूछि लऽ।"

मीता के उफान उतरि गइल रहे। कहली– "बाबूजी के चलित त हमार पढ़ाई ओतने रहि जाइत जेतना गाँव के मिडिल स्कूल में भइल। तकदीर साथ दिहलस। जूनियर हाईस्कूल में जिला में सबसे जियादे नंबर हमार रहल। हाईस्कूल में पढ़े खातिर हमके वजीफा मिले वाला रहल। बाबूजी कहलें– घरहीं पढ़ि के हाईस्कूल के परीक्षा देबू तब्बो फस्ट अइबू। माई की लगे रोवले से कौनो काम बने वाला नाहीं रहल। हम चिट्ठी लिखि के मामा के बोलवनीं। मामा अइलें। बाबूजी हठ नाहीं छोड़ें त मामा कहलें– "रउवाँ पूरा जिला में नाक कटवावे पर उतारू हो गइल बानीं। जिला में टाप करे वाली लइकी के नाँव सरकारी हाईस्कूल में लिखाई, ई सब जानत बा। जब प्रिंसिपल के मालूम होई कि एतना तेज लइकी के बाप एतना गँवार बाड़ें, त अखबारों में नाँव छपि जाई, ओकरे नीचे छपाई कि देखल जाव, एह जबाना में एइसनो लोग बा।" हम सब के जगहँसाई होखी। बेटी के जिनगी बरबाद होखी, तवन कलंक अलगे।

नकिये कटइले की डर से त बाबूजी घर से बहरा जाए नाहीं दीहल चाहत रहले। जब ई जनलें कि नाहीं पढ़वले पर अउर बेइज्जती होई तब शहर भेजे के तेयार भइलें। मामा ले जाके सरकारी हाईस्कूल में नाँव लिखवलें, हास्टल में जगहि दियवलें आ ओइजा की प्रिंसिपल से हमार कुलि हाल बतवलें। ऊ कहली– "इनके बाबू जी से कहि दीहऽ कि हम इनके अपने बेटी बना के राखबि आ पढ़ाइबि। प्रिंसिपल जवन कहली तवन एह लेखा पूरा कइली कि कुछुए दिन बाद हास्टल छोड़ा के हमके अपनी घरे में राखि लिहली। कवने लेखा हमरी साथे मेहनत कके हमके हाईस्कूल में बोर्ड परीक्षा में प्रदेश में तिसरी जगहि लेबे लायक बना दिहली, एकर लमहर कथा बा। एकर सुफल ई भइल

कि हमरे माई–बाबूजी के बोला के जिला के कलक्टर साहेब एतनी बुधि आगर बेटी जनमवले खातिर माला पहिरवलें आ शाल ओढ़वले। तब बाबूजी का बुझाइल कि बेटी के आगे पढ़वले से केतना फैदा हो सकेला। ओकरे आगे इंटर आ बीए तक ले पढ़ाई हम बिना घर से खर्चा लिहले अपनी दुसरकी महतारी ओही प्रधानाचार्या की देखरेख में पूरा कके यूनिवर्सिटी में आ गइनीं, कइसे एम0ए0 भइल, अब रिसर्च हो रहल बा, ई सब तोहरा से जियादे के जानी?"

एतना मान–सनमान हमरी वजह से बाबूजी के मिलल कि लोग से हमार बखान करत अघइबे नाहीं करें। माई जनली कि हमरे जोग दमाद खोजे खातिर बाबूजी परेसान बाड़ें। हमसे कहली तब हम अपने आ तहरे बारे में बतवनीं। माई समुझली कि बेटी के पढ़ाई लिखाई आ आदर सनमान से बाबूजी के मन बदलि गइल होई। एक राति बिना हमार तहार नाँव लिहले बाबू से पुछली कि बचिया अपने जोग पढ़ल गुनल अदिमी से बियाह कइल चाहे त कइसन रही? ओकरे बाद का भइल जानते बाड़ऽ। दूनू जने उनके हठ के आगि में झँउसात बानीं। हमने के नाहीं, अब त माइयो झँउसा रहल बाड़ी।

मीता बात कहि के चुपा कइलीं। बुझाइल कि अब कुछ कहे–सुने के रहि नाहीं गइल बा। देबू के चेहरा अउरी गम्हीर हो गइल। माई दूनू के चेहरा पढ़ली आ हुलसि के कहली– "ए धिया का गुनावनि कइले बाडू। हमरे बिसवास पर भरोसा करऽ। तहन के बियाह होके रही, हमार चाहे जवन गति बने।" मीता का बुझाइल कि माई छछात दुर्गा हो गइली।

मीता सचेत हो गइली। कहली– "माई तहार बिसवास हमन खातिर सबसे अनमोल बा। हमन के फिकिर दूसर बा। हमन के बियाह तब्बे कइल चाहबि जा, जब तहार आ बाबूजी के सोगहग असिरबाद मिलि जाई। एक दुसरे की देहि के लालच हमन के प्रेम के आधार नइखे। बियाह सबकी सनमति से होई, तब्बे होई। भागि पराके, बाबूजी के जीव दुखा के बियाह कइले की बदले हमन एसहूँ रहि सकीलें।"

गाँव में पोस्टमैन साहेब हफ्ता दस दिन में कब्बो एक दिन आवेलें। अइलें, आ मीता के नाँव के बड़हन लिफाफा रजिस्ट्री वाला ले अइलें। दुआर पर बाबूजी के हाथ में देके एगो कागद बढ़ा के कहलें– "हे पर दसखत कऽ दीहल जाव।" बाबूजी लिफाफा पर लिखल नाँव पता पढ़लें। चिट्ठी पावे वाला के नाँव लिखल रहल मीता। उनकर पता रहल, मार्फत श्री निवास शर्मा। ओकरे नीचे गाँव डाकखाना, जिला सब लिखल रहल। बाबू जी लिफाफा आ रसीद वाला कागद पोस्टमैन के थमा के कहलें– "ई हमरे नाँव के चिट्ठी नाहीं हवे। भित्तर से जनाना लोग के बोल के दे दऽ आ ओही लोग से दसखत करा लऽ।" लिफाफा लवटावत में लौछेड़े भेजे वाला के नावे पता पढ़ि लिहलें। बुझाइल कि उनके बेटा के नाँव लिखल बा। कई साल हो गइल बाप–बेटा के देखा देखी नाहीं भइल। मन में कचोट ऊठल बाकि भितरे घोंटि लिहलें। सोचि लिहलें कि कहीं रहे, भले रहे। चिट्ठी आइल बा। कवनो बतावे लाएक बात होई त मतारी बेटी बतइबे करिहें।

भित्तर के ई हालि कि लिफाफा खोलि के मीता भाई के बियाह के नेवता पढ़ली। दुबारा पढ़ली। तिसरी बेर पढ़ली। हर बेर उनके चेहरा के रंग बदलत गइल। उनके माई बेटी के मुँह देखत रहि गइली। बेटी अपनी ओर से कुछ नाहीं बतवली त माई पुछली– "कस रे, केकर चिट्ठी हवे आ एइसन का लिखल बा कि तोर बोलिए बन्न हो गइल।" मीता कहली– "जब जनबू कि एह चिट्ठी में का लिखल बा, त तहरो हालि ऊहे हो जाई, जवन हमार भइल बा।" माई कहली– "अच्छा, बताउ का लिखल बा। जवन हालि होई तवन होई। बात बताउ पहिले।" मीता कहली– "करेजा कस के सुनऽ, तहरी बेटा के बियाह हो गइल। ओही के नेवता हऽ।" बाबूजी के नाव से नइखे आइल, बाबूजी के मार्फत हमरे नाँव से आइल बा। बियाह कचहरी में भइल। तहरी पतोह के नाँव हऽ सोनी। ऊ कहाँ के हई, उनके माई–बाप के हऽ कुछ नइखे लिखल। तोहरे बाबू की ओर से ईहे लिखाइल बाकि सोनी से हमरे बियाह की खुशी में दस जून के जुहू बीच के सन एंड सैंड होटल में दावत में आके हमन के असीसल जाव। दस तारीख बितले पाँच दिन हो गइल। अब हम चहबो करीं त गइले के कवनो जोगाड़ नइखे।

मीता एक्के साँसे एतना बोलि के चुपा कइली। उनके माई कुछ देर चुपाइल रहली आ अचक्के ठठा के हँसे लगली। मीता चिहा के पुछली– "काहें हँसत बाड़े?" माई कहली– "हँसत बानी तहरी बाबूजी के बात सोचि के। अबहिन त तहरिये बियाहे की बात पर परान तेजत रहलें हा, अब बेटा के एइसन बियाह के बात सुनिहें तब उनकर कवन गति होई?"

मीता कहली– अपने बाबूजी के हम जेतना जानि पवले बानीं ओह हिसाब से बेटा के ऊ अपने मन से निकालि दिहले बानें। जब बाप–बेटा में कवनो लगाई छुवाई कब्बो नाहीं रहल त ऊ चाहे जवन करें, बाबूजी के ठेंगा से। खा–पीके सुता परि गइल त मीता के माई बहरे निकड़ि के पति के सिरहाने खड़ा भइली। ऊ सूतल रहलें त जगावे के परत। जागले रहलें। उठि के बइठि गइलें। पुछलें– "कुछ कहे के बा? आवऽ बइठि जा।" मीता के माई का बुझाइल कि मालिक के बोली पहिले जइसन कड़क नाहीं रहि गइल बा। एह

नरमी के कारन का हो सकेला? जवन कारन होखे, हम जवन बात कहे आइल बानीं ओकरे खातिर ठीके बा। कहली– "आजु ले कब्बो अपने के साथ दुआर पर खटिया पर बइठल बानीं कि बइठीं। रउवाँ जनलीं हँऽ भेजे वाला नाव उनहीं के रहुवे। का लिखल बा चिट्ठी में?" मीता बतवली हऽ कि बाबू के बियाह बंबई में कवनो सोनी नाव की लइकी से भइल बा। ओही की खुशी में दावत रहल पाँच दिन पहिले।

"एकर मतलब ई भइल कि तहार बाबू मीता के दावत में बोलावल नाहीं चाहत रहलें। एह चिट्ठी से हमके–तहके बतावल चहलें कि अपनी मनमरजी से ऊ आपन बियाह कऽ लिहले बाड़ें।" मालिक की बोली में न दुख बुझाइल, न सुख। अगिले छन मीता के माई अचरज से भरि गइली जब सुनली– "अब पतोहि उतरले के तेयारी आराम से करिहऽ। कब्बो न कब्बो त तहार बाबू तहरी पतोह के लेके अइबे करिहें। ईहो हो सकेला कि नाती भइले कि बादि आवें।"

मीता के माई अदकि गइली। ई सोचि के सका गइली कि बुढ़वा पगला गइल का? न त एतना नरमी से ई कबो बतियवले रहलें हँऽ, न एतना लमहर बतकही कइले के इनके आदत रहलि हऽ। ऊ धेयान से मालिक की आँखि में आँखि डारि के ताके लगली। मालिक कहलें– "काहें एतरे ताकत बाडू?" हम पगलाइल नइखीं। सोचबू त तुहँऊ बुझि जइबू कि आगे ईहे कुलि होखे वाला बा। लइका अपनी मरजी से जीएँ। मीता के माई के जीव थीर भइल कि मालिक के होसहवास ठीक बा। एह मौका के फैदा उठावे के खेयाल आ गइल। कहली– "अब मीता के जिनगी के सवाल पर सोचे के समय आ गइल बा। हमन के कुछ फरियावल नाहीं जाई त ईहो मामला अझुरा जाई। बोलीं, का सोचत बानीं?" मालिक के सुभाव त एह सवाल पर भड़कि जाए वाला रहल, बाकि आजु कुलि बात अजगुते हो रहल बा। तनिको रिसियइलें खिसियइलें नाहीं, "अब तूँ ही बतावऽ का करेके बा। कवनो लइका ओकरा पसन्न परि गइल होखे त बता देउ। ओसे पूछि के हमसे बता द। ईहे डर लागत बा कि कवनो लंपट लफंगा ओके न फँसा ले!" मीता के माई कहल चहली कि लइकवा त लाख में एक बा, उनसे मिल चुकल बा, बाकिर कुछ सोचि के बतवली नाहीं। कहली– "रउवाँ कहत बानीं त हम मीता से पूछबि।"

अगिले दिन मीता के खिया–पिया लिहले कि बाद उनके माई हुलसि के बतवली कि उनके बाबूजी के मन नरमा गइल बा। उहाँ का ओह लइका के बारे में जानल चाहत बानीं। जेके तू पसन्न कइले बाडू। अब ई सोचऽ कि कवने जुगुति से देबू के बारे में उनके बतावल जाव! मीता बाबूजी की नरमी पर बिसवास तुरंते नाहीं कइली। भितरे जीव धुकधुकात रहल। उनके मन में मैडम के खेयाल आइल। सोचली कि बाबूजी उनहीं पर पूरा भरोसा करेलें। माने लें कि मैडम की वजह से उनकी बेटी के जिनगी बनि गइल आ एइसन बेटी के बाप भइले के नाते उनहूँ के समाज में आदर सनमान मिलल। माई से कहली– "कवनो लेखा देबू के नाँव बाबूजी के कान में मैडम के मुँह से डरवा दीहल जाव। बाबूजी इनकार नाही करिहें।" माई पुछली– मैडम कहाँ बाड़ी आजकाल? मीता उदास हो के कहली– "ईहे त नइखे मालूम। दिल्ली से रिटायर भइले कि बाद मैडम केरल चलि गइली। ओइजा के पता ठेकाना मालूम नइखे।"

माई कहली– "पता ठेकाना मालूम नइखे, तब हमरा एगो झूठ बोले के परी।" मीता– "कइसन झूठ?" माई– "धरम झूठ।" मीता– बुझउवल मति बुझाउ। "धरम–अधरम में साँच–झूठ के फरक होला। जवन साँच ह तवन धरम, जवन झूठ, तवन अधरम। धरम झूठ का होला?" माई कहली– "हम तहन पाच की लेखा ढेर पढ़ल लिखल त नइखीं, बाकि एतना जानत बानीं कि जवने झूठ से केहू के नोकसान ना होखे, केहू के जान बचि जा भा केहू के भलाई होखे, ओह झूठ के धरम झूठ कहल जा सकेला।" मीता– "तब तहार धरम झूठ का हऽ?" माई– "हम तहरे बाबूजी से बताइबि कि राउर बेटी जवने लइका के पसन कइले बा, ऊ ओहू से जियादा जोगता वाला बा। उनकर महतारी ऊहे मैडम हई, जिनकी वजह से मीता के जिनगी बनि गइल आ मीता के माई–बाप के समाज में एतना आदर सनमान मिलल।"

मीता– "बाबूजी मानि जइहें बाकि देबू कइसे मनिहें?"

माई– हम देबू के मन पढ़ि लिहले बानीं। जवन अदिमी एतना पवित्तर प्रेम कऽ सकेला, ओसे अधिक धरम के समुझी? देबू के परेम देहि के लालच से उप्पर बा। हर तरह के लोभ लालच से उप्पर बा। ओके प्रेम कहऽ चाहे धरम कहऽ, एक्के बात बा। जवन मैडम बिना कौनो सवारथ के तहार जिनगी बनावे खातिर तन–मन–धन से एतना मदद कइली उनके बेटा रहतें त देबू जइसने रहतें। हमरे मन में देबू मैडम के बेटा बनि के आइल बानें त अकारथ नाहीं जाई हमार भाव। मीता के आँखि में उजास लउकल। उनके माई के बिसवास अउर बढ़ि गइल। कहली–"आ एक बात अउर। तहरे बाबूजी के हिरदय मोम काहें हो गइल! साइत परेम बिना बोलले आपन काम करेला।"

■ 'khry l;'k] jkIrh pkd] vkjkX;
efnj] xkj[kij] 273003

उपन्यास–अंश
दुसरकी कड़ी

बनचरी

अशोक द्विवेदी

स्नान–पूजा का बाद कुन्ती अनमनाइल मन से कुछ सोचत रहली। उनकर कुल्हि बेटा भीम का सँगे बाहर एगो फेंड़ का नीचे हँसी–ठहाका में रहलन स। हिडिमा के पास आवत देखि कुन्ती पुछली–

– 'बेटी ए स्थान के आसपास, कहीं तहरा राज का सीमा में कवनो साधु–संत रिसि लोग क आश्रम बा?'

– 'बा काहें ना माता? हमनी का सीमा पर बन का किनारे, एगो समतल मैदान में छोट आश्रम बाटे शालि ऋषि के। उहाँ एगो स्वच्छ सुन्दर जलाशय बा। बेर के बन बा आ आश्रम में ओह लोगन के लगावल कुछ फलदार फेंड़ो बाड़े स, बाकि ई सब काहें पूछत बानी माता?' निश्छल हिडिमा, जिज्ञासा में रहे।

– 'बेटी, हमहन आर्यवंशी हईं जा। तहरा कबीला का रहे वाला स्थान पर हमहन क ढेर दिन रहल उचित नइखे।'

– 'काहें माई? हमनी का भले अनार्य अशिक्षित आ बनवासी जाति क हईं जा, बाकि हमहनों में पुरोहित, पुजारी आ अनुभवी आचार्यों लोग बा, ऊ लोग हमहन के तरह तरह क मूल्यवान शिक्षा आ विचार व्यवहार सिखावेला! रउवाँ देखते बानी!' हिडिमा बिस्तार से बतावे लागल।

– 'जरूर बा बेटी! तबे त तूँ अतना विवेकवान, आ समझदार बाड़ू। बेटी, अच्छा आ बुरा त हर समाज में होला। ऊ सभ्य समाज वाला आर्य होखे भा जंगल–पहाड़ में रहे वाला अनार्य भा राक्षस आ दानव समाज। अइसन ना रहित त हमनी के सभ्य आ शिच्छित समाज में लाक्षागृह ना रचाइत। आजु हमनी का अपना ओही स्वार्थी, कुटिल आ ईर्ष्यालु लोगन क शिकार होइ के एह अवस्था में पहुँचल बानी जा...!' कुन्ती जइसे अतीत का खोह में ढुकल कवनो बुरा दृश्य देखत होखसु।

– 'आप लोगन का संगे का भइल माई कि सुन्दर सभ्य नगर छोड़ि के इहाँ जंगल में अतना कष्टकर जीवन खातिर विवश होखे के पड़ल? हमार संरक्षक आचार्य चांडक कहेलन कि आर्य कहाये वाला सिच्छित समाजो में कुछ लोग बहुत घृणित आ अमानवी काम करेला... लोगन के पीड़ा पहुँचावेला, अन्याय आ अत्याचार करेला... स्त्री के उपभोग के चीज मानेला... अउर न जाने का, का...'। हिडिमा का भोला भाला चेहरा पर चिन्ता के भाव आ गइल।

– 'छोड़ऽ बेटी, एह सुखद साइत आ आनंद का समय में हमहूँ का लेके बइठि गइलीं, कबो फुरसत में तहरा के बताइब। ए बेरा त आश्रमे के बात जरूरी बा। कुन्ती दुखदाई अतीत से मुँह फेरत सहज होखे के जतन कइली।'

– 'बाकि माई, हम अब राउर बानी... राउर संकट आ दुख अब हमरो बा... हम ना जानब त, कइसे रउरा सभ क अनुगामी बनब...? रउरा कुल पलिवार में अइलो का बाद जदि आप हमसे कुछ छिपावल राखल चाहत बानी त ई हमार दुर्भाग...' हिडिमा दुखा गइल।

– 'ना बेटी हिडिमा! अइसन मत कहऽ। हम अस्थिर होके सब कुछ बताइब... अभी अतने समझ लऽ कि हमहन के गोपनीय होके सुरक्षित रहल एह समय सबसे जरूरी बा... पता ना शत्रु कब, कहाँ, कवन माया रचि देव? उनहन का लगे भेदिया आ गुप्तचरन क कवन कमी बा?' कुन्ती का कहलो में अनजान शंका से भय उपजि आइल।

– 'एह खातिर निश्चिन्त रहीं माई। हमनी का भले बनवासी हईं जा, बाकिर इहाँ पतइयो खरकला के आहट हर बनवासी का हो जाला। हमरा राज में एक से एक चतुर जोधा, भट, मल्ल, फुर्तीला भेदिया गुप्तचर आ समाचार पहुँचावे वाला धावक बाड़ें। रउरा पर आँच आवे का पहिले, हमार समाज मर मिट जाई।' हिडिमा का चेहरा पर एगो अनुभवी दृढ़ योद्धा क तेज उभरि आइल।

– 'हम सब जानत बानी बेटी। तोहन लोग पर हमार पूरा विश्वास आ भरोसा बा। बाकि अपना जिये आ रहे के तौर तरीका आ आचार बिहार के नियम का कारने हम कवनो ऋषि आश्रम का लगे बास कइल चाहत रहनी हाँ।'

– 'ठीक बा माई, जइसन राउर इच्छा, राउर आज्ञा माथ पर बा... चलीं सभे, हम आप सबके शालि आश्रम ले चलब।' हिडिमा कुछ सोचत बिचारत उठ खड़ा भइल।

सबकुछ अतना अचानक आ तेजी से घटत गइल कि हिडिमा अपना मंत्री उत्तुंग आ गुप्तचर भेदिया दूतन से एक छिन खातिर बतियाइयो ना पवले रहे। आचार्य चांडक के उत्तर क्षेत्र का जात्रा से अइला क समाचार ओके मिलल रहे बाकि उनकर असिरवाद पावे क मोको अबले, ओकरा ना भेंटाइल रहे। ऊ बहुत तेजी से अपना अंतरंग सखी निरिमा का लगे गइल। ऊ अपना भाई निम्बा आ पति अंगुठ से धीरे धीरे कुछ बतियावत रहे। अपना प्रिय सखी, राजकुमारी हिडिमा के देखते, खुशी से धावल निरिमा लगे चलि आइल। मधुर मुस्कान का साथे पुछलस, 'हमार सुधि कइसे आइल सखि!' हिडिमा अपना प्रिय सखी के अँकवारी में भरत बोलल, 'सखि माई कुन्ती के आदेश बा कि ऊ शालि ऋषि का आश्रम में रहिहें, उनके अपना आहार–बिहार आ रहन सहन में सरलता होई।' अंतरंग सखी निरिमा

तुरंत समझ गइल, 'ठीक बा निम्बा भाई आ हमहूँ ओह लोगन के पहुँचावे चलब!'

– 'हम कुछ अउर समझदार साथियन के लेके आवत बानी।' निरिमा के पति अंगुठ उछाह में बोलल, "आखिर अपना राजकुमारी आ राजा वृकोदर के सेवा करे के कुछ त मोका मिलल।"

हिडिमा के विश्वास रहे कि ओकरा समाज क लोग ओकरा एगो संकेत पर, बहुत कुछ करे खातिर तत्पर हो जाई। ओकरा विकल मन के बहुत तोख मिलल।

हिडिमा अपना विश्वस्त बनवासी रच्छकन आ सखी निरिमा का संगे कुन्ती का लगे पहुँचते बोलल, "चलीं माई, आश्रम चलल जाव। अभी दूपहर बा, साँझ से पहिलहीं ई लोग पहुँचाइ के लवटि आई।" फिर का, कुन्ती अपना पाँचों पुत्रन के इसारा कइली। ऊ लोग महतारी के निर्णय पहिलहीं जान चुकल रहे। सब लोग महतारी का सँग हिडिमा आ निरिमा का पाछा चल दिहल। निरिमा क छोट भाई निम्बा मार्गदर्शक रहे। ओके बन का भीतरी राह के पूरा जानकारी रहे।

आश्रम में पहुँचला पर एह लोगन क जबर्दस्त स्वागत–सत्कार भइल। सखी निरिमा अपना भाई निम्बा आ दुसर बनवासियन का सँगे ओ बेरा लवट गइल, बाकिर लवटत–लवटत सुरक्षा खातिर दूगो युवकन के हिदायत देत, गहन बन से फिर लवट आइल। शालि ऋषि आ उनकर सहयोगी ऋषि परिवार के लोगन के कुन्ती के संक्षिप्त परिचय आ उनका पुत्रन का बारे में जान के खुसी भइल। ऊ लोग सहर्ष आश्रम में रूके के अनुमति दे हिदल। ओह लोगन का रात्रि–विश्राम खातिर एगो बड़हन परनकुटी खाली क दिहल गइल। जलपान आदि का बाद, ई जानि के कि अब कुछ दिन ई परिवार राजकुमारी हिडिमा का साथे एही आश्रम में निवास करी, ऋषि अपना शिष्य लोगन के दुसरा दिने अलग पर्नकुटी बनवावे आ ओह लोगन के भरपूर सहायता देबे क निर्देश दिहलन। फेरू युधिष्ठिर से कहलन, "अब आप लोग संध्या स्नान आदि से निवृत होखीं। इहाँ से निगिचे पुरुब ओर जलाशय बा!"

– 'जी राउर बहुत बहुत आभार!' जुधिष्ठिर सरधा से झुकि के प्रनाम कइलन, आ सब लोग शालि ऋषि का कुटी से बाहर निकलि आइल। माता कुन्ती के लेके हिडिमा जलाशय पर गइल। जलाशय के लगे सिमसिमाइल हवा चलत रहे। शान्त, सुरम्य वातावरन में जाते कुन्ती के सुखद अनुभूति भइल। हिडिमा बड़ पतई का दोना में जल भर के ले आइल। मुँह आँख धोवला का बाद कुन्ती के थकइनी जब कम भइल त हिडिमा प्रश्न कइलस, "स्नान कइल चाहत बानी माता?" 'ए बेरा ठंढा बहुत बा... अगर राउर इच्छा होई त हम बेवस्था करीं।'

– 'ना बेटी, हम खाली हाथ–गोड़ धोइ के वापस लौटब! हँ तोहरा के स्नान जरूर क लेबे के चाहीं, जा आपन ई भारी वस्त्र उतारि के नहाइ लऽ! तहार मन हलुक हो जाई।' कुन्ती हिडिमा पर मीठ चितवन क नेह उड़ेलत कहली।

हिडिमा तनिको देरी ना कइलस। मृगचर्म वाला लबादा लेखा वस्त्र उतारि के अपना कंचुकी आ अन्तःवस्त्र पर ठेहुनियाइ के कुन्ती के सामने सकुचात बइठि गइल, "हम माई के लाड दुलार से वंचित रहनी, शिशु अवस्था में कुन्दकी आ चान्या काकी के नेह छोह मिलल, उनहीं का पालन–पोसन में हमार इ काया बनल आ अब महतारी का जगहा तूँही न बाडू माई!" कुन्ती ओह निश्छल भोली बाकि विवेकी आदिवासी बाला के सुगढ़ गोहुँवाँ रंग क चिक्कन कमनीय काया देखि के मंत्रमुग्ध रहली, "अरे हमार पगली हिडिमा, अब जल्दी नहइबो करऽ, ना त हमार पुत्र आवत होइहें सऽ। मेहरारू, के नहाइल केहू ना देखे पावेला, काहेंकि ऊ पलक झपकावत नहा धोइ के वस्त्र पहिरि लेली सन। अब तूँहूँ ओह निहुरल मोट फेंड़ के लगे आपन ई कूल्हि वस्त्र धइके, जल्दी नहाइ लऽ।"

हिडिमा, चंचल भाव से झपटत आपन वस्त्र उठाइ के फेंड़ का जरी धइलस आ जलाशय में धीरे से उतरि गइल। कुन्ती ओकरा बालसुलभ चपलता पर मुँह फेरि के हँसि दिहली... "उनके अपना निर्णय पर खुसी भइल कि अइसन, निश्छल सुलच्छनी आ समझदार कुलवधू मिलल।" ऊ अब अपना परिवार पर छाया नियर दिन–रात मँडरात संकटन का प्रति कुछ समय खातिर निश्चिन्त अनुभव करत रहली। उनका एह नव संबंध से बनवासी आ बलवान आदिवासी समुदाय के निष्कपट सहायता मिलल। ऊ जानत रहली कि ई संबंध आगा चलके निराश्रित पाण्डवन खातिर बहुत काम के साबित होई। एह शक्तिशाली बनचर समाज का व्यवस्थित एकता आ निष्ठा भाव के त ऊ दुइये दिन में जान चुकल रहली। अब ओकर प्रत्यक्ष अनुभव आ परतीतियो होत रहे।

– 'चलीं माता, हम नहा धोइ के रउरा आज्ञानुसार तइयार बानीं।' हिडिमा के खनकत चपल बोली सुनते कुन्ती का ओठन पर एगो दुलार भरल प्रीतिकर मुस्कान उभरि आइल।

भोजन का बाद ओह दिन आश्रमवासियन का तरफ से दिहल गइल पर्नकुटी में विश्राम भइल। हिडिमा, माई कुन्ती का सँगही एकोर सूतल। पाँचों भाई दुसरा ओर।

भोरे–भोरे जब कुन्ती के नीन टूटल त अपना बगल

में हिडिमा के ना पाइ के चिहुँक उठली, उनका मन में तरह तरह के सवाल आ शंका उपजे लागल। ऊ चारू ओर नजर दउरवली। दुसरा ओर उनकर पाँचों बेटा सूतल लउकलन सऽ। ऊ घबड़ाइल उठि के पर्नकुटी से बहरा आ गइली, बाकिर हिडिमा के कुछ पता ना...। आखिर कहाँ चलि गइल भोरहीं–भोरे? कहीं अइसन त ना नऽ, कि ओकर इहाँ मने ना लागल... ऊ सोचली। फेर उनके, हिडिमा क भोला–भाला निश्छल चेहरा आ ओकर एक–एक बात–व्यवहार मन परल... ना इ होइये ना सके... एक छिन खातिर उनका मन में विचार आइल कि भीम के जगाइ के जलाशय का ओर भेजसु, फिर सोचली... कुछ देर अउर देखि लिहला के बाद ऊ भीम के जगइहें। उनकर दीठि निरभेद सूतल भीम पर गइल... त मने–मन उनका अपना उजबुजाहट पर खुदे हँसी आ गइल। ऊ अपना जगह पर ओठँघि गइली आ कर बदलत फजीर होखे क प्रतीक्षा करे लगली।

झलफलाहे ऊ उठली, त सबका से पहिले जुधिष्ठिर के बोली सुनाइल... 'प्रनाम माता।' फेरू पीछे से भीम, फेरू अर्जुन... सब एक्के सँगे उठि के पाँव लागल। ऊहो असीस देत उठ बइठली। हिडिमा का बारे में केहू का कुछ पूछे से पहिलहीं उनकर आदेश गूँजल... "चलऽ जा जलाशय का ओर, उहाँ से निवृत्त होके तब कुछ काम होई! तबले हिडिमो लवटि आई!"

– 'एकर माने कि भउजी सबका ले पहिलहीं चलि गइली! आदर्श बहू के कुल्हि लच्छन बा उनका में, भइया भीम उनके भले जंगली मानसु!' नकुल के बोल सुनते सब हँसि दिहल।

भीम बनावटी क्रोध देखावत उठसु, एकरा पहिले दूनों छोट भाई भाग के कुटी से बहरियाइ गइलन।

ऋषि–आश्रम का जलाशय से नहाइ–धोइ के लवटला पर, नव कुटीर निर्मान के काम देखि के सबका चेहरा पर अचरज के भाव लउकल। हिडिमा अपना कुछ आदिवासी युवकन का सँगे मोट मोट बाँस के थून्ही गाड़त रहे, दू गो युवक हाली–हाली चीरल बाँस बिछाइ के ओपर सरपत, मूँज आ नरकट बिछावत रहलन सऽ!

– 'अच्छा, भउजी त बड़ा तेज निकलली! एही बेरा परन कुटी छवाये शुरू हो गइल!' नकुल सहदेव अपना उछाह में फलगरे ओनिये बढ़ चलल लोग।

हिडिमा के निष्ठा आ काम का प्रति ओकरा लगन पर कुन्ती मने–मन पछताये लगली... ऊहो ना जाने का–का सोचि गइली, हिडिमा का बारे में। "अर्जुन, भीम तोहनो लोग के मदद करे के चाहीं, बेचारी के!" उनका मुँह से अचके निकलल, त अर्जुनो दउरि के अपना छोट भाइयन के हाथ बंटावे लगलन।

आश्रमवासियन से दाब, टाँगी आ हँसुआ माँगि के जब भीम आ अर्जुन आइल लोग त हिडिमा हँसत बोलल, "देवर जी, ऊपर मुँड़ेर बान्हे खातिर सीधा आ मजबूत डाढ़ि के थूनी आ बल्ली के जरूरत पड़ी आ बीच में दूनो ओर मोट मोट लमहर थून्ही के! भाई निम्बा! तूँ सँगे जाके सहायता करऽ!"

निम्बा अर्जुन का पाछा बन का ओर चलल त भीम आ अर्जुन ओकरा सँगे बढ़ल लोग। हिडिमा दुसरका कुटी क नाप जोख के अन्दाज करत मोट मोट थून्ही गाड़े लागल।

कुन्ती जब पूजा अर्चन का बाद जुधिष्ठिर का सँगे लइकन के बोलावे अइली, त नव कुटी निर्माण देखि के अचम्भा में पड़ि गइली। दू गो कुटी तइयार हो चुकल रहे... आ हिडिमा अब तिसरा पर्नकुटी छवावे में लागल रहे... सूरूज के घाम में श्रम का पसेना से भींजल ओकर देंहि अउर सुघ्घर सलोना लागत रहे। भीम आ अर्जुन बीच का बड़े–बड़े थून्ही पर कूटल मूँज के रसरी से बँड़ेर बान्हत रहे लोग, आ दू गो आदिवासी नवहा बान्हल पलानी के अंतिम रूप देत रहलन सऽ। कुछ दूरी पर माटी में जल डालि के गोड़ से सानल जात रहे।

– 'अब सब लोग, जलपान क लऽ जा बेटा खराई हो जाई! हिडिमा अब रहे द बेटी!' कुन्ती आगा बढ़त कहली!

– 'थोरकी देर अउर रुकि जाईं माई... देखीं हमरा हाथ में माटी लागल बा...।' हिडिमा निरिमा का सँगे गोबर, आ कवनो ललछाँह माटी मिलाइ के जल में सानत रहे। फेर कुन्ती खड़ा होके बिस्मित भाव से देखे लगली। छोट गड़हा खोनि के सानल ओह गील माटी में बनवासी युवक गेरू लेखा कवनो माटी डालि के, पानी डालत रहलन सऽ। हिडिमा अपना सखी निरिमा आ इंगुरी का सँगे, गील लेई बनल ओह माटी के दूनो हाथे उठाइ के कुटी के चारू ओर लगावल नरकुल आ पतई से बनावल टाटी के अइसे लेवरत लीपत रहली स, जइसे ऊ कवनो सुघर चिक्कन देवाल होखे। कुन्ती एह बुद्धिमत्ता वाला कलाकारी के देखि के मुग्ध रहली। बनवासी असभ्य आ अशिक्षित कहाये वाला एह जाति के श्रम, निष्ठा, हुनर आ फुर्ती के ऊ कायल हो गइली। कुच्छे घरी में तिसरकी कुटी तइयार हो गइल।

– 'ई तीन गो कुटी काहें बनत बा भउजी ?' अर्जुन चिकारी करत पुछलन...

– 'पहिली कुटी माता के रही आ दुसरकी बड़की कुटी आप सब खातिर रही... एम्मे सभे आँटि जाई.... हिडिमा मुस्कियात कहलस त सँगे सँगे ओकर दूनो सखी निरिमा आ इंगुरी का मुख पर अरथ भरल हँसी

छितराइ गइल।'

– 'आ हई तिसरी काहें भउजी?' सहदेव हँसत पुछलन... हिडिमा लजाइ के मूड़ी नीचे क लिहलस आ ओकर दूनो सखी खिलखिलाइ के हँसि दिहली सन।

– 'बस, बस बहुत मजाक भइल, अब चलऽ जा सब लोग जलपान करे!' कुन्ती गम्हीर होत जइसे आदेश दिहली।

सामूहिक जलपान में, बन से आइल उसिनल कंद–मूल का साथ मीठ–मीठ बइर क फल आ जंगली सेब लेखा कुछ फल रहे। कुन्ती बड़ा दुलार आ नेह सहित सबके जलपान करवली। घंटा भर विश्राम आ बतकही का बाद ऊ लोग कुटी बनावे में दूना उछाह से जुटि गइल। हिडिमा अपना अंतरंग बनवासियन का साथे सुरूचिपूर्ण ढंग से काम में जुटल रहे। अनुज भाइयन का साथे भीमो पूरा उछाह से काम में लागल रहलन। हिडिमा बीच बीच में मोहक मुस्कान आ हँसी का साथ स्रम से पसेनियाइल भीम आ अपना बिनोदी देवरन के देख लेत रहे। साँझ होत–होत तीनों परनकुटी तइयार हो गइल रहे। निम्बा आ ओकरा साथ के युवक बिछावन खातिर मोलायम खर–पतइयन आ पुअरा क मोट–मोट कई गो चटाई तइयार क चुकल रहलन सऽ। निरिमा ओके कूटल हरियर मूँज का बरल रसरी से बड़ा सलीका से बन्हवावत, बिनवावत रहे।

भीम गाछ–बिरिछ के बाँचल डाढ़ि आ झलांसी के घिसिराइ के एकोरा धरत रहलन आ उनकर दुलरुआ छोट भाई हँसि–हँसि के उनकर मनोरंजन करत रहलन स। भीम खुश रहलन। हिडिमा के लगन आ नेह–निष्ठा भरल श्रम उनका अन्तर में, ओकरा प्रति उनकर प्रेम आ सम्मान अउर बढ़ा चुकल रहे। ऊ कनखी से हिडिमा के अपना सखी निरिमा आ बनवासी नवहन का साथ जब जलाशय का ओर जात देखलन त अपना छोट भाइयन के निर्देश देत बोलि परलन, "चलऽ लोग, अब कुटी का चारू ओर फइलल खर–पतई आ कूड़ा कंजास बहारि के साफ सुथरा कइ दिहल जाव!"

जुधिष्ठिर का सँगे कुन्ती हिडिमा आ ओकरा सहायकन के मेहनत आ लगन से बनावल गइल परन–कुटी के चारू ओर निरीक्षन करत, मने–मने सराहत रहली। कुटी का भीतर घुसे खातिर बड़ा ढंग से दुआरी बनावल गइल रहे। मोट–मोट दू गो हरियर बाँस का बीच में, तीन जगहा से बान्हल बाँस का फट्टा के सटाइ के बीनल–बान्हल चाँचर। जुधिष्ठिर दुआरि से चाँचर हटावत कुटी का भीतर झँकलन– गोबर आ चिक्कन माटी से लीपल–लेवरल चिक्कन धरती का एक ओर बिछावन खातिर ताजा बीनल चटाई। ऊ हर्षित होत बोल परलन, "वाह! वाह हिडिमा, हमके आजु बहुत गर्व आ संतोष के अनुभव हो रहल बा! माता, हई आवास देखि के अनुजा के गुन–गिहिथान आ कलावंत सुरूचि के बड़ाई के ना करी? हमके विश्वास नइखे होत... माता कि हिडिमासुर के बहिन ओकरा अतना विपरीत, सुघर–सुलच्छनी, बुधिमान आ गुनी बाटे।"

– 'बेटा, हमरा एह कुलबधू का सरल निष्कलुष रूप, सहज व्यवहार आ नेह–निष्ठा से बहुत सुख आ तृप्ति मिलल बा। आचार–विचार आ व्यवहार में इ अबले हमके कवनो आर्यकन्या से तनिको कम नइखे बुझाइल।'

– 'हँ माता, बाकिर भीम आ हिडिमा के अब नया जिम्मेदारियो बढ़ि गइल बा। हमनी के अब एह लोगन के बन्धनमुक्त कइके, हिडिमा के राज के नया बेवस्था खातिर सलाह देबे के पड़ी! अस्थाइये सही, बाकि कम से कम बरिस भर तक हमहन के इहाँ रुकहीं के पड़ी, हँ आपन गोपन भाव बनवलो जरूरी बा पहिचान छुपावे खातिर।' जुधिष्ठिर कुछु सोचत–बिचारत धीरे से कहलन।'

– 'हँ, तूँ बिल्कुल ठीक सोचत बाडऽ! काल्हु सबेरे हम हिडिमा के समझा देइब कि अब ऊ इहाँ के चिन्ता–फिकिर छोड़ि के भीम का सँगे दिन भर घूमे फिरे खातिर सुतंत्र बाड़ी। भीमो के उनका सँगे आहार बिहार का साथ साथ इहाँ के राज–काज के जिमवारी उठावे खातिर हम कहबि।' कुन्ती निरनय पर पहुँचत कहली।

निरिमा आ ओकरा साथे आइल लोगन के बन में छोड़ि के जब संझा के हिडिमा लवटल त ओकर खिलल प्रफुल्लित चेहरा देखे लायक रहे। सरोवर में नहइला कारन ओकर गेहुँआँ रंग दमकत रहे। केश पानी से सिमसिमाइल रहे, बाकिर ओम्मे ताजा फूलन क गूँथल माला बड़ा सहूर से बान्हल रहे। ओकरा हाथ में पुरइन पात के एगो बड़हन दोना रहे, जवना में उज्जर, पीयर आ ललछौंहा पँखुरियन वाला सुगंधित फूल रहे। जलाशय से आश्रम में लवटत खा, ऊ जवन राह पकड़ले रहे, ऊ बन का ऊँचाई वाला हरियर घास भरल पथरीला राह रहे। थोरिके देर पहिले ऊ भीम के अपना अनुजन का सँगे जलाशय का ओर जात देखलहूँ रहे। मन में रंग विरंग क मीठ सपना बुनत, अपने में हेराइल उटपटांग डेग डालत खा, अचके भीम के ठठाइ के हँसल सुनि के उ चिहुँकि उठल रहे। हँसी का दिशा में जब ओकर दीठि गइल त ओकरो हँसी आ गइल... "अल्हड़ भोला भाला भीम बुझला छोट भाइयन का सँगे हँसत–ठठात नहाये–धोवे जात रहलन। धीरे धीरे आश्रम के कुटी लउके लागल रहे।"

"इ हाथ में का लेले बाड़ू बेटी हिडिमा?" कुन्ती

मूड़ी नीचे कइले आवत हिडिमा से पुछली।

– 'आप लोगन खातिर कुछ फूल चुन के लेले आइल बानी माता, एम्मे नीचे कुछ सुगंधित फूलो बा!' हिडिमा कुटी का भीतर चलि गइल।

कुन्ती नवबधू के अन्तर्मन के भाव समझ चुकल रहली। फूलन के दोना नीचे धरत हिडिमा का लगे पहुँचि के ओकरा माथ पर हाथ फेरत कहली, "बेटी, तूँ पहिले जाइके आपन कुटी ठीक–ठाक क आवऽ! थोरिकी सा पूजा क फूल इहाँ रखि के बाकी ले ले जा, आज भीम का साथ तहार पहिल रात हऽ, उहाँ के साज सजाव तोहरे हाथे होई त नीक रही।"

लजात, सकुचात, अगरात हिडिमा कुन्ती का कहला अनुसार कुछ फूल एगो पतई पर धइके बाहर निकलि गइल। तिसरका पर्नकुटी में पहिलहीं से नरम गलइचा नियर बड़हन बिछावन बिछावल देखि के हिडिमा मुस्कियइला बिना रहि सकल। बिछावन पर पहिलहीं से कुछ फूल छितरावल रहे... "जरूर ई सब काम देवर लोग कइले होई! ऊ अंदाज लगवलस आ एह सब खातिर माता क मौन स्वीकृति होई। ऊ दोना का फूलन से दुआरि पर बन्दनवार लेखा बनवलस; आ छोट छोट श्वेत सुगंधित फूल सेज पर छिटलस फेरू खड़ा होके सजावल कुटी के भर आँखि निहारत, एक छन खातिर आपन आँखि बन क लिहलस, ओकरा भीतर सुतल प्रेम के अगिन जइसे जागि उठल। ई दाह अब अपना प्रिय का अँकवारि में उनका दरस–परस से शांत होई... ओके लागल कि भीम ओकरा लगहीं खड़ा होके मुस्किया रहल बाड़न... लाज में ओकर दूनो हथेली अपना आपे पलकन के ढाँपि लिहलस। बाहर कुछ आहट मिलल, त चेतना लवटल। ऊ कुटी से बहरा निकलल आ दुआरि के चाँचर लगा दिहलस।

●●

अइसे त प्रकृति के एक से बढ़ि के एक अछूता, अनदेखा मनोहारी रूप ओह विशाल बनक्षेत्र में रहे बाकिर कई गो मुग्ध करे वाला जगह, हिडिमा घूमत–फिरत देखले–जनले रहे। सबेरे माता जब ओके भीम का सँगे खुला आहार–बिहार आ सँगे रमण करे के सुतंत्र कइली त ओके जइसे मन मांगल उपहार मिल गइल। अब ले नियम–अनुशासन आ बान्हन में बन्हाइल ओकर सुतंत्र अल्हड़पन आ खुला बात–ब्यवहार ओकर असली सुभावे छीन लेले रहल। प्रकृति आ जंगल–पहाड़ के बेटी, जइसे प्रकृतिये से बिलग हो गइल होखे। रात के लजात–सकुचात भीम का बलिष्ठ भुजपाश में समात खा ओके जीवन का ओह अकथ सुख आ आनंद के इयाद आइल, ओके बुझाइल कि अभी त ऊ ओ सुख के हीक भर भोगबे ना कइलस। ओकरा देह के भूख अउर बढ़ गइल रहे।

राह में भीम का सँगे चलत खा ओकरा मन के कूल्हि बान्हल बान्ह अचके टूटि गइल, ऊ उनकर बाँहि धरत उनसे लपटाइ गइल। भीम हक्का–बक्का। हिडिमा के ई खुला बेधड़क–भाव उनके अटपटाह लागल। ऊ हाथ छोड़ावत ओके झटक दिहलन। हिडिमा फेरू कामातुर लपटाये के कोसिस कइलस त ओके अपना से अलगियावत कहलन, "एतना बेचैनी काहें बा तोहरा? इ जंगली व्यवहार ह!"

– 'का, तहरा अच्छा ना लागल?' हिडिमा अचकचाइल पुछलस।

– 'ना, ई सबेर के बेरा, न नहाइल – न धोवल, ना कवनो अइसन जगह, हमनी का कवनो पसु थोरे हईं जा, आ ना राछसे हईं जा, हमहन का सभ्य मनुष्य हईं जा।' भीम समझावे के कोसिस कइलन।

– 'लेकिन एमे गलत का बा? हमनी किहाँ त युवक युवती एकान्त जगह में ई सब करे खातिर स्वच्छन्द बा! नारी पुरुष के आ पुरुष–नारी के निजी–प्रेम–बिहार पर कवनो रोक आ बान्हन नइखे।' हिडिमा फेरू भीम के बाँहि धरत कहलस।

भीम के समझ में ना आइल कि ऊ एह प्रेमाकुल कामातुर अल्हड़ युवती के कइसे समझावसु। ऊ मुस्कियात कहलन, "हमनी का समाज में एकरा खातिर एगो मरजादा बा। ए सबमें अतना बेचैनी आ आतुरता, ऊहो असमय, ठीक ना मानल जाला।"

हिडिमा रुकि गइल। ओकरा कुछ ना बुझाइल कि भीम का कहल चाहत बाड़न।

'अरे पगली, पहिले हमनी का कहीं नहाइ धो के इतमीनान से कुछ जलपान क लीं जा, फेरु आराम से कवनो सुन्दर आरामदायक स्थान पर बइठि के प्रेम–बिहार करीं जा।' प्रेम से हिडिमा के अँकवारी में बटोरत, भीम ठठाइ के हँसि दिहलन। हिडिमा प्रेम, उलझन आ खीसि का विचित्र भँवर में रहे, जब ओकरा भीम के बात बुझाइल त ऊ उनका बाँहि से छटकि के निकल गइल। भीम हँसि के पकड़े चहलन, त ऊ उनका छाती पर दूनो हाथे मुक्का मारत बोलल, "छोड़ऽ, हटऽ तूँ बहुत निर्दयी आ खराब बाड़ऽ! हम तोहसे ना बोलब!" बनावटी खीसि देखावत ऊ बोल त दिहलस, बाकिर ओकर मने जानत रहे कि एतने बात बोले में ओके, भीतर से कतना जोर लगावे के परल। फेर ऊ हँसत–खिलखिलात बायाँ ओर बन का भीतर भागे लागल। भीम ओकरा पाछा हँसत, दउरत त रहलन, बाकिर हिडिमा का चुस्ती–फुर्ती वाली चाल पर हरान रहलन। अइसहूँ अपना विशाल भारी शरीर के लेके, अनजान पहाड़ी–बनइला राह में भागे के उनका अभ्यास ना रहे।

– 'रुक जा हिडिमा! हम ना जानत रहलीं कि तूँ बन क हिरनी हऊ! हिरिमा, रुक जा!' हँसत खिलखिलात हिडिमा भीम के बिकल स्वर सुनि के थथमि गइल, ई सोचि के ओकर विहवलता अउर बढ़ि गइल कि 'ऊ जेके पागलपन का हद तक चाहत बिया ऊहो ओकरा खातिर अतना चाह राखत बा।' पाछा मुड़ि के तकलस, भीम धीरे धीरे ऊपरी राह के चढ़ाई चढ़त रहलन।

'बस कुछुए कदम अउर चले के बा जी। एकरा बाद हम आपके बन के अइसन अनोखा आ अनछुवल सुघराई देखाइब जवन आप कब्बो ना देखले होखब।' हिडिमा धीरे धीरे, आगा बढ़े लागल। भीम ओकरा पाछा चलत चलत जब एगो खुलल जलाशय पर पहुँचलन त छिन भर खातिर विस्मित–बिमुग्ध हो गइलन।

उज्जर, लाल कमलिनी का छोट–बड़ फूलन से गहगहाइल, बन–पक्षियन का चहचह से मनसायन ओह शान्त मनभावन जलकुंड का किनारे खड़ा होके हिडिमा प्रफुल्लित भाव में कहलस, – "लीं, आप खातिर सुन्दर बेबस्था हो गइल। अब मुँह हाथ धोईं, चाहे स्नान करीं। बाकि हमार एगो शर्त बा!"

– 'ऊ का?'

– 'सामने वाला बन में कुछ अच्छा फलदार फेंड़ बाड़न स। आप नहाइ–धोइ के फल तूरब तबले हमहूँ स्नान क लेइब। हिडिमा सहज भाव से मुस्कियात कहलस। भीम स्वीकार में मूड़ी हिलावत कवनो भोला भाला अल्हड़ युवक लेखा मुस्कियात अपना देंहि से धोती हटवलन आ अँगोछा पहिरि के जलकुंड में छपाक से कूदि गइलन। भीम का सुडौल चिक्कन देंह के मुग्ध भाव से निहारत, हिडिमा के मन कइल कि ऊहो अपना देह के मृगचर्म वाला वस्त्र खोलि के शीतल जल में कूदि जाव, बाकि अपना प्रबल होत इच्छा के दबावत दुसरा ओरि ताके लागल। अपना भीतर उफान मारत काम बेग के रोकल कठिन रहे, बाकि राह में भीम के देंहि झटकल इयाद अवते ओकर मन फेर उदासी से मरुवाइ गइल। अचानक ओकरा भीतर एगो बिनोद सूझल... आज ऊ अपना प्रानप्रिय के तब तक छकाई, जबले ऊ खुदे आतुर भाव से ओके अपना अंगे ना लगा लिहें... ई ठीक रही... बाकि का ई संभव होई? ओकरा भीतर उभरत काम के उद्दाम लहर कइसे काबू में आई? कुच्छू हो जाव, ऊ तबले समरपन ना करी जबले ऊहो, ओकरे नियर बेचैन आ आतुर ना हो जइहें।' धीरे–धीरे हिडिमा जलकुण्ड का दुसरा ओर ऊँचाई पर चढ़त चल गइल। ओकरा सामने जल चिरइन क एगो जोड़ा गर में गर सटवले जलकेलि में व्यस्त रहे। दोसर कवनो समय रहित त हिडिमा उन्हन के आखेट का बारे में सोचित, बाकि ओह समय ओकरा आँखि में उन्हनी खातिर एगो अपनाइत वाला नेह भाव उतरि आइल रहे... ओके लागल कि ऊहो हिडिमे लेखा प्रेम पियासल काम–केलि में भुलाइल बाड़न सऽ।

– 'हिरिमाऽऽ! ओय हिरिमाऽऽ!!' भीम धोती बदल के जोर से चिचियइलन त हिडिमा के तन्द्रा टूटि गइल...कतना अपार अनुराग के भाव फूटत बा एह नाँव का संबोधन में... उहो अपना प्रिय पुरुष के कइल संबोधन... आजु से पहिले त ओकर राछस भाई हिडिम ओके बनचर लउँड़ी ले ढेर मान ना दिहलस। बलुक अधिकतर तिरस्कार आ मारपीट के हरमेसा अपना अभिमान के पौरुष वाला अधिकारे जतवलस...। भीम का सँगे ओके पुरुष के एह मधुर रूप–साहचर्य के अनुभव भइल... इ अनुभव अनोखा आ मीठ रहे। ऊ भीम के ओही दिशा में जात देखलस, जेने फलदार बिरिछ होखला का बारे में ऊ बतवले रहे।

– 'अरी ओय हिरिमी... हम जलपान खातिर फल तूरे जा तानी, कहाँ बाड़ी तूँ?'

– 'बहुत अच्छा; लेके आईं! हम तबले कुछ अउर काम कर लेत बानी।' हिडिमा जलाशय का दुसरा छोर से खुस होत चिचियाइल। भीम के निश्छल ठहाका से पूरा जल क्षेत्र गूँजि गइल।

हिडिमा अपना प्रिय का एही लापरवाह उन्मुक्त ठहाका पर तऽ न्यौछावर रहे। भीम का एही निडर, निश्छल बीर रूप पर हजार बेर लुट जाए खातिर तइयार रहे। ई भीम का प्रति ओकर अछोर अनुरागे रहे कि ऊ आपन बनचर रूप, सोभाव आ बात ब्यवहार कूल्हि तेजी से बदलत रहे। ऊ किनार पर खिलल कुछ फूल जल्दी जल्दी चुनलस आ एगो बड़हने पात पर ध के मोरत अपना अंगवस्त्र में खोंस लिहलस।

हिरनी अस कुलांच मारत ऊ जलाशय का ओह छोर प' पहुँचल, जहाँ थोरिके देर पहिले भीम स्नान कइले रहलन। एक बेर एने ओने तकलस आ अपना छाती आ कमर से मृगछाल के बान्हन खोलि के निर्बसना जल में समाइ गइल। जल विचरन करत ऊ जलकुंड का किनार से कुछ अनोखा किसिम के घास नोचलस, माटी में मिलाइ के दूनो हथेलियन का बीच में रगरलस आ ओही से आपन देहिं माँजे लागल। थोड़ी देर तक मछरी लेखा जलाशय में पवँरला का बाद जब निकलल त ओकरा निखरल व्यक्तित्व में एगो नये दमक, आभा आ टटकापन रहे। किनार पर राखल आपन कपड़ा पहिरला का बाद ऊ बिचरत एगो अइसन पाथर का शिला प खाड़ भइल, जवन किनार से जलाशय का भितर तक ढुकि के उभरल रहे। थिर जल में आपन सोना नियर दमकत देंहि आ मुखड़ा निहारत ऊ अपना

केश के जल झरलस, ओके गूंथ के बेनी बनवलस आ तूरल सुगंधित टटका फूलन के खोंसत सोचे लागल। ओकरा एकर तनिको आभासे ना भइल कि ओह अद्‌भुत फूलन का सुगंध से व्याकुल भँवरा, कब दबे पाँव ओकरा निगिचा ले पहुँच गइल। साइत एकर कारन ओकर आपन मुग्धाभाव रहे– ऊ भाव, जवना में ऊ खुदे अपना देह के छिपल सुघराई के अचके देखि जान के अचंभित आ हैरान रहे।

आपन पदचाप दबवले पाछा से आवत भीम ई सुगन्धित टटका रूप–सुघराई देखि के निहाल रहलन। उनका बाँहि के घेरा जब पाछा से हिडिमा का सद्यःस्नाता देह के जकड़लस, त ऊ मुँह घुमाइ के भीम के देखलस। प्रानप्रिय के प्रेम बिकलता से ओकरा असीम सुख मिलल। ओकर पलक मुनाये लागल। ओकरा पूरा विश्वास होखे लागल, खाली ऊहे ना, ओकर पुरुषो ओकरा पर अनुरागल बा, ओके पहिल बेर ई बुझाइल कि ऊ जेके जान ले बढ़ि के चाहत रहे, आजु ऊ ओकरा पर हिया उँड़ेले के तइयार बा।

भीम के कसल आलिंगन भर से ओके अपना सउँसे जीवन के नया अरथ मिल गइल रहे। कुछ छिन मदहोस शरीर के ढील छोड़ला का बाद कुछू सोचि के ऊ चिक्कन मछरी लेखा उनका बाँहि का घेरा से छटक गइल, "अबे अतना अधीर काहें बानी आर्यपुत्र! चलीं पहिले बन विहार आ भोजन तऽ कऽ लीं, फेरू हम आपके अइसन–अइसन मनमोहक जगह आ प्रकृति क अइसन सुघर चमत्कारी रूप देखाइब, जवन आप कबो देखले ना होखब।"

– 'अच्छाऽऽ सही में?' भीम मुस्कियात ओकरा ओर बढ़े लगलन। बनचरी हिडिमा ओ बेरा उनके संसार क सर्वसुन्दरी प्रिया लागत रहे।

– 'पहिले भोजन जरूरी बा... आ आप त फल तूरि के लियावे गइल रहनी नऽ?' हिडिमा चपलता से पाछा पड़े घुसुकत, कुलाँच भरत दूर होत गइल।

– 'कुल्हि फल उहाँ बड़का फेंड़ का जरी धइल बा...।' भीम अँगुरी से देखावत चाल तेज कइलन, बाकिर हिडिमा त हिडिमा रहे, उनका पहिलहीं छलाँग मारत ओह फेड़ तक पहुँचि गइल।

भीम जब हिडिमा के पाछा लागल पहुँचलन त अचंभा में पर गइलन, उनकर धइल फल क गठरी गायब रहे। 'अरे, हम अबहियें फल क गठरी एही फेंड़ का नीचे धइले रहलीं हाँ!'

– 'कहाँ बा फल? हम जानत रहलीं हाँ कि आपसे ई सब ना होई। चलीं हमरा सँगे, अब हमरे कुछ करे के पड़ी।' हिडिमा चपलता से हँसत कहलस।

मन क भोला, बउराह भीम हरान रहलन। अचानक हिडिमा उनका के अपना दहिना हाथ का अँकवारि में धइलस आ ऊपर उछरि के उड़ि गइल। ऊपर से नीचे के बन, पहाड़, सुन्दर घाटी आ बनइला जीवन क समूह सब कुछ लउकत रहे। ऊ उड़त चिरई लेखा नीचे चारू ओर ताकत, भीम के एगो झरना देखवलस, जेकरा चारू ओर हरियर लतरन आ हरियराइल घास से तोपाइल, अनगिनत फूलन से भरल सुरम्य ढलान रहे। ऊ धीरे–धीरे झरना का लगहीं एगो पहाड़ी खोह का लगे चौरस जगह पर उतरि के चुहल करत खिलखिला उठल, "देखीं, राउर तूरल कूल्हि फल हेइजा मोटरी बान्हि के धइल बा!"

भकुवाइल भीम देखलन, सचहूँ उहाँ फल क मोटरी अस्थिर से धइल रहे। सामने उँचास पहाड़ के एगो हिस्सा आगा पड़े अइसे ओलरल रहे, जइसे प्रकृति आपरूपी केहु के रहे खातिर बइठका बनवले होखे। 'ई जगह बहुत बढ़िया बा... रउरा जलपान आ विश्राम लायक। अब मुँह का ताकत बानी, आईं इहाँ, आके निश्चिन्त भाव से बइठीं।' हिडिमा हँसत ओलरल पहाड़ का भित्तर ढुकि गइल।

बिस्मय से अचकचाइल भीम के हिडिमा का मायावी शक्ति के स्मरण भइल, "अच्छा, त ई बात हऽ!" ऊ फलगरे ओनिये बढ़ि गइलन।

बइठका नियर ओलरल पहाड़ का नीचे सुन्दर दुआरि वाला छोटे गुफा रहे। हिडिमा ओही का भीतर से निकलल, ओकरा एक हाथ में हरियर पतई आ घास के बिनल–बान्हल एगो चटाई आ दुसरा हाथ में जल पिये खातिर एगो सुन्दर बाल्टीनुमा कवनो सुखाइल बनलउकी क तुमड़ी रहे। भीम का लगे चटाई बिछावत बड़ा नम्रता आ आदर से बोलल, "क्षमा करब आर्यपुत्र! आप बइठीं, हम जल लियावत बानी।"

सभ्य संसार के नारी लेखा हिडिमा के ऊ आदर भरल विनम्र निहोरा ओघरी भीम का बहुत रुचल। ऊ चुपचाप चटाई पर पालथी मारि के बइठ गइलन। हिडिमा तुमड़ी लेले फलगरे झरना का ओर भागल। भीम बइठले –बइठल हिडिमा के झरना के स्वच्छ मीठ जल भरत देखत रहलन। निहुरल हिडिमा के मुखमंडल आ सुगढ़ देहिं ओ बेरा सुरूज का लाली में एगो नये गुलाबी आभा से भरल उनके न्योतत रहे।

बड़–बड़ पतइन का पत्तल पर जलपात्र से धोवल फल सजावत हिडिमा के सकुचाइल– ललाइल नेह–निष्ठा भीम के भूख अउर बढ़ा दिहलस।

– ''जलपान करीं!' हिडिमा कहलस। भीम एगो फल उठा उठा के खाए लगलन। हिडिमा बड़ा अनुराग से उनका ओर एकटक चितवत रहे। अचके भीम के दीठि उठल, हिडिमा के पलक एक छिन खातिर झुकि गइल।

– 'तुहूँ खा!' हमहन के ई आचार–बिचार तूँ कब आ कहाँ सीखि लिहलू?

– 'माता से! माई कुन्ती के आप सब के भोजन करावत देखले रहलीं, बाकि एकर सुख आ आनन्द उठावे क अवसर आज पहिली बार मिलल।' हिडिमा एगो फल उठा के भीम का मुँह तक ले गइल, 'एक बेर हमरा हाथे खा लीं... तबे हमहूँ खाइब...!'

भीम एह अपनत्व आ अनुराग पर निहाल हो गइलन आ हिडिमा का हाथ के फल काटत, अपना हाथ क फल, ओके खियावे लगलन। फेर त सँकोच के बान्हन अपना आपे खुलि गइल। जलपान का बाद हिडिमा उनकर बाँहि पकड़ले गुफा का भीतर ले गइल। नीचे ओइसहीं फूले पतइन क नरम मोलायम बिछावन। भीम जथारथ का एगो दुसरे लोक में पहुँच चुकल रहलन। पति–पत्नी का एह एकान्त–विश्राम के व्यवस्था हिडिमा का सुरूचि आ नेह के अउर बढ़ा दिहलस। ऊ ओकरा ओलरत देहिं के धीरे से अपना गोदी में खींचि लिहलन।

किरिन डूबे का पहिलहीं, जब सूरूज के ललाइल गोला पहाड़ का नीचे उतरे लागल, त हिडिमा के अलसाइल दीठि घूमल। भीम का सँगे पहिल दिन क सँकोच भरल, कबो ना भुलाये वाला आलिंगन आ निकटता से ओकर मन अबहियों ना अघाइल रहे। आज नेह–रस क कुछ घोंट भीतर गइल रहे। ओकरे खुमार में ऊ दूनों बाँहि–लता में भीम के बन्हले, ना जाने कवना अछोर आनंद का समुन्दर में डुबत उतिरात रहे।... 'हाय, अतना जल्दी साँझ हो गइल...! ओकरा कुन्ती के गम्हीर आदेश मन परल... साँझ के भीम के लेके जरूर चलि अइहऽ!' जइसे बिच्छी मरले होखे, ऊ भीम के बान्हन से छटक के खड़ा हो गइल, "चलीं चलल जाव ना त माई रुष्ट होइहें।"

अलसाइल अतिरपित भीम अपना मन पर काबू करत खड़ा भइले। "चलीं, नीचे चलि के झरना में हाथ मुँह धोइ लीं आ हिडिमा हँसत पहाड़ का ढलान से उछरि–उछरि के नीचे उतरे लागल।"

– 'अइसे मत भागऽ हिडिमा, कहीं गिरि जइबू?' भीम फुर्ती आ चपलता से नीचे उतरत हिडिमा के देखि के अचंभित रहलन। भारी भरकम देहिं से थाहि थाहि के ढलान उतरल उनका बहुत दुष्कर लागत रहे। उनका अचरज ए बात के रहे कि एगो कोमल कमनीय आदिवासी, लइकी लेखा लउकत ई हिडिमा बिना कवनो मायावी शक्ति के नट बनवासियन लेखा अतना फुर्ती से नीचे कइसे उतरि गइल।

– 'सम्हारि के उतरब जी...! अभी रउवा के इहाँ बहुत कुछ सीखे जाने के बा... आ हमरो राज का लोगन के रउरा से बहुत असरा आ उमेद बा।' हिडिमा साहस बढ़ावे वाला सुर में चिचियाइल। – "अच्छा भाई, हम समझ गइनी, धीरे धीरे हो जाई तहरा सँगे अभ्यास।" नीचे उतरि के भीम बहत झरना का जल का लगे पहुँचलन, त इठलात हिडिमा के फेरू अँकवारि में बान्हि लिहलन।

हिडिमा के अपना प्रियतम के ई अमरित ढारत प्रेम आलिंगन बहुत रसगर लागल बाकि, बनावटी खीसि देखावत बोलल, "रहे दीं, रहे दीं... रउरा कहले रहली कि भला इ कवनो बेरा हऽ! आ हमके त माता के आदेश माने के बा!"

– 'अच्छा भाई, माता के आदेश मानऽ, बाकि हम एह शीतल जल से तनी रुकल चाहत बानी।' भीम अपना बान्हन के ढील कइलन आ ओके लेले–देले कल–कल छल–छल करत जलधार में खड़ा हो गइलन।

बहे वाली धारा ठेहुना से ऊपर ना रहे, हँ पानी के बेग बहुत तेज रहे। हाथ मुँह धोवला का बाद ऊ लोग अँजुरी में भरि के शीतल मीठ जल पियल, फेरू किनार पर धइल, अँगोछा से हाथ मुँह पोछत भीम कहलन, "अब केने चले के बा? हमके त दिशा आ स्थान के तनिको ज्ञान नइखे। अइसे त पहुँचत पहुँचत रात हो जाई।"

हिडिमा हँसत भीम के कमर एक बेर फेरु अपना दहिना बाँहि में धइलस,"अब आपो हमरा के कसि के पकड़ि लेईं। हम राउर सहायता करब।" आ ओकरा संकेत पर भीम ओह पहाड़ी क्षेत्र में उगल बन के तेजी से पार करे लगलन।

इ रास्ता हिडिमा के चीन्हल–जानल, आसान आ सुगम रहे। बुझइबे ना कइल कि कइसे ऊ अतना जल्दी ओही ढलान वाला राह पर निकलि अइलन, जवना से उतरि के आश्रम के राह जात रहे।

कुन्ती अपना बेटन का साथे, भीम का अब ले ना लवटला से दोचित रहली। जुधिष्ठिर का माथ पर चिन्ता के रेख उभरे सुरू हो गइल रहे। अनुज परेसान रहलन स। अर्जुन जरूर अपना दहिना मुट्ठी के बायाँ हथेली पर बार बार पटकत रहलन।जुधिष्ठिर विश्वास जतावत अर्जुन के झुँझलाहट भाँपे के कोसिस कइलन, "भीम कवनो छोट, अजान लड़िका थोड़े बाड़न, ऊ आवते होइहें, उनका हमनी ले ढेर चिन्ता होई आ फिर ई काहें नइखऽ सोचत कि हिडिम के ई बन क्षेत्र अतना सुगम आ निरापद नइखे। अर्जुन तूँ काहें परेसान बाड़ऽ?"

– 'बात ई नइखे भइया... मँझिला भइया जरूर लवट अइहें, बाकि हम ई सोच रहल बानी कि हमनी का आखिर कब तक शालि ऋषि का ए आश्रम में चुपचाप बइठल दिन काटत रहब जा.. ई क्षेत्र अतना

दूर नइखे कि पापी दुर्जोधन आ कपटी मामा शकुनि क चल्हाँक भेदिया गुप्तचर ना पहुँचि जइहें सऽ...।' अर्जुन के उलझन आखिर खुलि के बहरिया गइल।

– 'सब सही बा... बाकि हमरा समझ से ई क्षेत्र एसे ज्यादा सुरक्षित बा, काहें कि हिडिम बन का रहस–भेद से सब भय आ आतंक का कारन अपरिचित बा आ हिडिमा का लोगन का कारन हमहन पर कवनो बिपदा आवे के संभावना नइखे। हिडिमो त अब भीम का कारन हमरा परिवारे क हो गइल बिया। ओह निष्कलुष सरल युवती के आचरन–व्यवहार आ निष्ठा तोहन लोग देखियो चुकल बाड़ऽ जा... हमरा बिचार में अभी अकुताइल ठीक नइखे।' जुधिष्ठिर सहज संयत भाव से ढाढस देत कहलन।

अर्जुन उठ के खड़ा हो गइलन। हाव भाव से इहे बुझात रहे कि जुधिष्ठिर से ऊ संतुष्ट नइखन, "ठीक बा बड़का भइया, जवन राउर निर्देश होखे।" आ कुटी से बाहर जाए लगलन।

– 'कहाँ जात बाड़ऽ? ठीके त कहत बा बड़का...' कुन्ती के आवाज से अर्जुन थथमि गइलन।'

– 'चलऽ लोग... भोजन के समय हो रहल बा... आज हम तोहन लोग खातिर, आश्रम से मिलल दूध आ साँवाँ का चाउर से मीठ खीर बनवले बानी।' कुन्ती माहौल के सहज बनावत कहली तऽ नकुल, सहदेव प्रफुल्लित होत कहि पड़ल लोग– "माई! तूँ हमन के केतना खेयाल राखेलू..? बाकि बिना भीम भइया के रहले, खइला के ऊ सवाद कहाँ?"

– 'अरे, हमहूँ आइए गइनी... हमके तनिकी भर देर का भइल तोहन लोग हमार भोजने गड़प करे का फेर में पड़ि गइलऽ जा...!' भीम हँसत कुटिया में ढुकलन।

कुन्ती समेत सब भाइयन के चेहरा प आइल तनाव खतम हो गइल। पाछा पाछा आइल हिडिमा निहुरि के कुन्ती के गोड़ छुवलस, त कुन्ती गदगद हो गइली... "कल्यान होखे बेटी सौभाग सोहाग बनल रहे तोहार।" हिडिमा ओह मधुर असीस का जादू में बन्हात गठरी बनल कुन्ती का लगे सटि गइल।

– 'तोहन लोग थोड़ी देर ले बात बतकही करऽ जा। तबले हम हिडिमा का सँगे दुसरा कुटी से खीर लेके लवटत बानी। चलऽ हिडिमा!' कुन्ती हिडिमा का कान्ह प हाथ रखली।

अनुजन के लेके भीम भोजन के बेवस्था करे लगलन। अर्जुन कमण्डल में राखल जल छिरिक के चारू ओर सबके बइठे के इन्तजाम कइलन त जुधिष्ठिर झोरी में टाँगल फल उतारि के नीचे धइलन। "भीम भइया, तोहके बन–बिहार करत खा हमहन क इयाद त आवत ना होई, त कम से भाभी से पूछि के हमन खातिर ए बन के कुछ स्वादिष्ट फल त लियाइये सकेलऽ।" नकुल हँसत भीम के छेड़े लगलन।

– 'अरे भला मझला भइया के ई सब छोट–छोट बात सतावे लागी त फिर उनका आहार–बिहार का होई?' सहदेवो पाछा पाछा तुक्का लगवलन।

– 'तूँ दूनू क दूनों जाना अब हमरा हाथे मार खइबऽ जा।' भीम आँख तरेरत लाड़ देखवलन... "तोहन लोग के त ना, बाकि बड़का भाई आ माता खातिर जरूर काल्ह फल ले आइब!" सब ठहाका मारि के हँस पड़ल।

माटी का एगो बर्तन में खीर लेले माता कुन्ती जब हिडिमा का साथ लवटली त अचरज में सबकर दीठि टँगाइले रहि गइल। हिडिमा सूती साड़ी पहिनले कवनो आश्रमवासी कन्या नियर स्मित मुस्कान छीटत उनका पाछा खड़ा रहे। ओकरा हाथ में धोवल–धावल केरा क दू गो बड़ बड़ पात रहे।

– माई, भउजी कहाँ रहि गइली? आ ई के हऽ?' नकुल सवाल कइलन त एक बरे फेर सबका होठे मुखर हँसी उभरि आइल। कनखी से देखत भीम हिडिमा का ओह नया रूप पर बिस्मित बिमुग्ध रहलन। हिडिमो अपना देवर लोगन से हँसत कहलस, "अगर आपो सबके हमरे नियर सहधर्मिणी चाहीं त हम काल्हुए एकर बेवस्था कर सकीलें।"

कुन्ती समेत जुधिष्ठिर आ भीम जोर से हँस पड़ल लोग। अनुज झेंपि गइलन सऽ। कुन्ती का हलुक अनुशासन पर सभ गोलाई में बइठि गइल। केला क बड़ पात के काट के सबका आगा हिडिमा धइलस, फेर फल आ खीर परोसि के कुन्ती हिडिमा का बगल में बइठली।

'खीर' का नाँव से परोसल, ए नया अनोखा मधुर खाद्य के चखत हिडिमा का भीतर इ प्रश्न बहुत तेजी से उठल कि ई कइसे पकावल–बनावल जाला। ओकरा मन में आइल कि ऊ माता से एकरा बारे में पूछो, बाकि फेरू ई सोचि के पता ना, एह लोगन पर एकर का प्रतिक्रिया होई, ऊ ना पुछलस। 'जाये द, काल्हु आर्यपुत्र से पूछब।' ऊ मने मन तय कइलस। खीर के मधुर सवाद से ऊ बिस्मय में रहे। आचार्य जवना अमरित के चर्चा करेलन अइसने त ना नु होत होई? ईहो तो मधुरे बा।

●●

शालि आश्रम का चारु ओर जम्बू, आम्र, कदम्ब, छीर आदि के वृक्ष लगावल रहे। जलाशय का निकट बहुत बड़हन क्षेत्र में कदली रोपल रहे आ जल पूरित क्षेत्र धान्य से हरियर लागत रहे। फजीर होते, भीम

आश्रम से निकलि के सीधे जलाशय का ओर चल दिहलन। माता के प्रातः दरस आ परनाम का बाद, उनसे कुछ सलाह निर्देश मिलल। माता कहली, "हम चाहत बानीं कि तूँ हिडिमा का सँगे अधिका से अधिका समय बितावऽ! ओकरा भाई हिडिम का ना रहला आ हिडिमो के तहरा सँगहीं दिन–रात रहला का कारन, बनक्षेत्र का राज आ बेवस्था में कवनो गड़बड़ी ना होखे।" ऊ ईहो संकेत दिहली कि हिडिमा जलाशय पर पहिलहीं से चल गइल बिया। उहें उनका से, ओकर भेंट हो जाई। भीम माता के सलाह के उनकर आदेश मनलन आ गोड़ लाग के जलाशय का ओर चल दिहलन।

खूब अस्थिर से मज्जन–स्नान कइला का बाद जब ऊ कपड़ा पहिन के तइयार भइलन त हिडिमा के ना पाइ के जोर से चिचियलन, "अरी हिडिमा तूँ कहाँ लुकाइल बाड़ू तूँ? हिरिमाऽऽ?

–'अधीर मत होईं महाराज, बस आइये गइनीं...।'

सजल–धजल, फुदकत, प्रफुल्लित हिरिमा... अँगौछी में कुछ लेले, किनार पर ओठँघल फेंड़ का पाछा से प्रगट भइल आ फुर्ती से किनारा का करिया चट्टान वाला सतह पर उछलत कूदत भीम का निगिचा आ गइल। दउरला से ओकर छाती तेजी से ऊपर नीचे होत रहे।

– 'तूँ तऽ सचहूँ बानरी बाड़ू! एतना तेज चपलता से दउरल कहाँ सिखलू हिरिमा?' भीम ओके हाँफत देखि, पुछलन

– 'स्वामी, हमनी का बनचर हईं जा। एही बन–पहाड़ वाला ऊबड़–खाबड़ दुरूह क्षेत्र में हम सयान भइलीं। ई अब हमनी का सुभाव में बा।' अरे, हम त भुलाइये गइनी, हई फल तूर के ले आइल बानीं, गमछा के मुँह खोलत हिडिमा उनके तूरल फल देखावत कहलस।

– 'अरे, अतना सुन्दर फल?' भीम कुछ हरियर आ ललछौंहाँ फल उठवलन। ऊ पहाड़ी सेब नियर लागत रहे।

– 'कुछ अउर ले लीं, तब तक हम बाकी फल अब्बे माता के देइ के आवत बानी।' ऊ खुदे तीन चार गो फल भीम का अँजुरी में धरत, आश्रम का राह पर दउड़ गइल।

– 'हुँह, पगली!' भीम अनुराग से ओके दूर जात देखत रहलन, जब ऊ आँख से ओझल हो गइल त चुपचाप किनार पर उठल शिला पर बइठ गइलन... 'हिडिमा का नित नया बदलत मानवी रूप आ व्यवहार पर उनका अचरज त होते रहे, भीतर कहीं ओकरा से लगाव आ अनुरागो प्रबल होत जात रहे। राच्छस कहाये वाला एक समाज में, ओकरा नरभक्षी क्रूर सुभाव आ ब्यवहार का बारे में बनल काल्पनिक पूर्वाग्रह खतम हो गइल त, कठोर आ जंगलीपन का भितरी छिपल सहज निष्कपट सुघराई आ प्रेम के छलकत जियत–जागत एगो अइसन अनचीन्ह खजाना मिलल, जवना में प्रकृतिये नियर सहज अल्हड़ता, बाँकपन, खुरदुरा आ कठोर चट्टानन के भीतरी से झरत शीतल मीठ झरना रहे। उनका ओठन पर एगो नया मुस्कान उभरि आइल... बिधाता के रचल एह दुनियाँ में भलहीं सभ्य दुनियाँ क साज सज्जा आ चमक दमक वाला साधन संपन्नता ना लउके, बाकि ऊ सब कुछ बा, जवना में आदमी प्रेम आ आनन्द से जी सके। प्रकृति के ई अनुपम शिल्प–संजोग आ संरक्षण ना रहित त अइसन–अइसन बनस्पति, फेड़–पौधा, फूल–फल, गुफा–घाटी, झरना–जलाशय आ एम्मे रहे वाला जिया–जंतु आ बनप्रानी कइसे जियतन स?'

– 'अरे, अबहीं बइठले बानी आप आर्यपुत्र! हमार दिहल कूल्हि फलवो जस क तसे परल बा... का सोचे लगनी? कवनो बात बा?' हिडिमा के घबड़ाइल बोली सुनि के भीम के तन्द्रा टूटल...

– 'हिडिमी, तूँ सचहूँ बहुत सुन्दर बाड़ू! बाहरे से ना, भितरो से।' भीम मुग्ध भाव से हिडिमा के ताकत, ओके अपना लगे खींचि लिहलन।

– 'अच्छाऽ??' हिडिमा अपना प्रिय का ओह लसोर दीठि में बन्हाइ के उनका लगे सटत चलि गइल, 'चलीं, इहाँ से चलल जाव, आश्रम के जलाशय ह; केहु न केहु आवते रही इहाँ।'

भीम चिहुँकि के सजग हो गइलन। दू गो फल दूनो हाथे उठाइ के कहलन, 'बाकी तूँ ले लऽ हिडिमा, राह में खात चल चलल जाई।' हिडिमा ओइसहीं कइलस। सघन बन में समात भीम जब दूनों मीठ फल खा चुकलन त हिडिमा उनका तरफ अउर फल बढ़वलस।

– 'माता के आदेश बा कि आज से हम तोहरा राजबेवस्था आ सुरक्षा आदि के इन्तजाम देखीं।' भीम हिडिमा से कहलन।

– 'हमार राज? महाराज बृकोदर ई राज आ बेवस्था त आपके हऽ, आप इहाँ के महाराज बानी! आपके देखहीं के चाहीं, कहीं हम राउर का सहजोग करीं?' हिडिमा उनके सम्मान देत आपन भाव अइसे प्रगट कइलस, जइसे ऊ भीम के अनुचरी होखे। भीम समझ गइलन कि हिडिमा बुद्धिमत्ता से उनका के गौरवान्वित कइला का साथ–साथ, उनके उकसावतो बिया।

– 'अच्छा, ठीक बा। चलऽ आजु मंत्री उत्तुंग आ राज के सेनानायक का साथ साथ उहाँ के अउर पदाधिकारियन से हम भेंट करब आ समझे के कोसिस करब कि इहाँ बेवस्था के कइसन स्थिति बा।'

– 'काका उत्तुंग, हमरा जनम के पहिले से एह राज के मंत्री बाड़न। उनकर लमहर अनुभव आ चतुर बेवस्था का चलते सगरे बनक्षेत्र के स्थिति सम्भारल जा रहल बा। सेनानायक दांडी आ उपसेनानायक पुण्डरक अपना सीमित सेना का बावजूद हर विपत्ति में सक्षम रहल बा। आपके एह लोगन से मिलि के नया सुधार करे के चाहीं, बनवासी समाज के खुसहाली आ बदलाव के उपाय करे बनावे के चाहीं। भाई हिडिम के कुछ दुष्ट संगी साथियन के काबू कइके, उनहन के माथे नया जिमवारी डाले के चाहीं। हिडिमा एकसुरिये बोलत चलि गइल...'

– 'अच्छा, अच्छा, सब होई, जब तूँ सँगे रहबू त कूल्हि अपना आपे ठीक हो जाई!' भीम हँसत, हिडिमा के अपना अँकवारि में ले लिहलन।

– 'हमके पूरा विश्वास बा स्वामी। आप जवन करब, हमनी खातिर ठीके होई।' भीम का अंक में समात हिडिमा के स्वर मीठ आ आर्द्र रहे। थोरिकी देर खातिर ऊ भुला गइल कि भीम आ ओकर साथ स्थायी नइखे।

भीम जब बनवासियन का आवासी क्षेत्र से गुजरे लगलन त कुछ कुटियन का आगा उनके कुछ पालतू जानवर लउकलन सऽ, जइसे भेंड़, बकरी, गाय, कुक्कुर। ऊ अचरज में हिडिमा से पुछलन, 'का तोहन लोग पशुपालन करेलऽ जा? कि ई सब मांस भक्षण खातिर पशु लउकत बाड़न सऽ।'

– 'ना महाराज, हमहन में ज्यादातर परिवारन के जिये के मुख्य आधार बनस्पति, फल, फूल आ वन का पशु–पक्षियन के शिकार, जलक्षेत्र से मछरी आदि बा। ई सब पशु छोट लड़िकन के दूध आ रच्छा आदि खातिर बाड़न सऽ!'

– 'ई गाँवन से चोरा के लियावल बा या माँग के?'

– 'ना कुछ जानवर भटक के बन में आ जालन स, त हमहन पकड़ लेनी सऽ। कुछ दुधारू पशु त निकट क्षेत्र का हाट में, मूल्यवान पत्थर जंगली फल, दुर्लभ दवाई वाला वनस्पति आदि से अदल–बदल के ले आवल जाला, बाकि एह काम खातिर हमरा राज से कुच्छे लोग जाला, जे एह गाँव आ हाट का बात–ब्यौहार आ लेन–देन से पूरा परिचित बा। हिडिमा भीम के अइसे समझावत रहे, जइसे ओके बनक्षेत्र का लोगन के एक एक गतिबिधि आ क्रिया–ब्यापार के पता होखे।'

अब भीम ओही स्थान पर आ चुकल रहलन, जहाँ कुछ दिन पहिले उनकर स्वागत भइल रहे। सामने ऊ जटाधारी देवतरु बटवृक्ष लउकत रहे, जेकरा नीचे सिंहासन नियर ऊँच पाथर शिला रहे। ओकरा अगल बगल, पत्थल के लम्बा आ चाकर पटिया धइ के बइठे खातिर ब्यवस्था कइल गइल रहे। धनुषबाण आ लम्बा लम्बा नुकीला भाला आ खड्ग लिहले कुछ रच्छक जब अपना राजकुमारी के महाराज बृकोदर के सँग आवत देखलन स, त उनहन का चेहरा पर खुसी के एगो नया चमक उभरल आ फेरू ऊ मूड़ी नवावत ठेहुना मोरत झुकि के सादर अभिवादन कइलन स।

'उत्तुंग काका कहाँ बाड़न?' हिडिमा एगो रच्छक से पुछलस, ऊ संकेत करत दूर लउकत एगो एकपलिया पर्नकुटी का ओर अँगुरी देखवलस...।

भीम ओकरा सँगे आगा बढ़ते रहलन, तबले पर्नकुटी से वृद्ध उत्तुंग दू गो रच्छकन का साथ तेजी से बहरा निकललन।

– 'स्वामी, देखीं उतुंग काका आ रहल बाड़न। उनका बायाँ आ दायाँ ओर खड़ा इहाँ के सेनानायक दांडी आ पुंडरक हवे लोग। पुंडरक नवजुवक हऽ, आ आपके परम प्रशंसक। ध्यान से बात करब... महाराज।'

– 'अच्छा कइलू, पहिलहीं बता दिहलू!' भीम धीरे से फुसफुसइलन, फेर ओह लोगन का तरफ बढ़े लगलन।

– 'महाबली महाराज बृकोदर के जय!! मंत्री उतुंग के आवाज निकलल, त उनका बगल क दूनो नायक ठेहुनियाइ के मूड़ी नीचे क दिहलन सऽ। आपके कष्ट करे के का जरूरत रहल, हमहन रउरा संकेत पर उपस्थित हो जइतीं महाराज!' वृद्ध मंत्री विनम्रता से कहलन त भीम आपन हाथ जोड़ के ओइसहीं नम्रता क परिचय देत कहलन, "ना ना आप हमहन के संरक्षक हईं आ हिडिमा का कारन हमरो काका भइनी!" उतुंग के सिकुरल आँखि डबडबा उठल।" भीम का ओह विनम्र व्यवहार प ऊ भीतर से हुलसि उठलन बाकि मरजादा क ध्यान राखत कहलन, "चलीं महाराज, आसन पर बइठीं, फेर जवन कहे के बा तवन कहीं आ निर्देश देईं। हमहन आपसे मिल के कुछ जरूरी बिचार कइल चाहत रहलीं जा।"

भीम चुपचाप ओह लोगन का साथ बढ़े लगलन त हिडिमा कहलस, "आप सब चल के बइठीं, हम तनी काकी मां आ निरिमा से मिलल चाहत बानीं। महाराज के जदि अनुमति होई तऽ...।"

– 'हँ, हँ, काहे ना? बाकि कुछ देर बाद चल जइहऽ।' भीम झट से कहलन।

– 'महाराज हई दक्खिन–पूरब बनक्षेत्र क सेनानायक 'दाण्डी' हउवन, रच्छक–जोद्धा लोगन में सबसे वरिष्ठ, अनुभवी आ बुद्धिमान।' उतुंग परिचय करवलन तऽ भीम बुढ़ाइल दाण्डी का ओर ताकत हर्ष

प्रगट कइलन, फेरू दुसरा ओर ओइसहीं तकलन।

– 'ई पच्छिमी–उत्तर वाला क्षेत्र के रच्छक सेनानायक पुंडरक हउवन।'

– 'कबो हमरो के अपना रच्छक सेना आ ओकरा तइयारी से परिचित कराईं सभे सेनानायक दाण्डी जी आ पुण्डरक जी।' भीम दूनों नायकन में आपन विशेष रुचि देखवलन। पुण्डरक के हाव–भाव से उनके बुझा गइल कि ऊ भीम के अतने रुचि पर अति उत्साह में आ गइल रहे।

उतुंग, भीम का साथ सिंहासन नियर बनल शिला तक गइलन आ उनका बइठ गइला का बाद, बायाँ ओर नीचे का स्थान पर हिडिमा के बइठाइ के अपनहूँ बइठ गइलन। उनका संकेत पर पुण्डरक कुछ दूर पर खड़ा रच्छकन का कान में कुछ कहलस। दूनों जाके दुसरा रच्छकन से कहलन स। पुण्डरक लवट के महाराज बृकोदर का बायाँ ओर खड़ा हो गइल।

– 'महाराज ! हमहन का बनक्षेत्र का बाहरी जगत क सूचना समाचार देबे वाला कुछ गुप्तचरन से बाहरी गतिविधि के पता चलत रहेला, एही तरह हमन के अपना पारंपरिक वन–सम्पदा आ संसाधन का बूता पर अपना भरण–पोषण आ रच्छा के इन्तजाम करत रहीला... बाकि आर्यकुल के शिक्षा–सभ्यता के अधिक ज्ञान जानकारी त आपके पास बा। एह व्यवस्था में राउर सुझाव आ प्रशिक्षण हमहन का बहुत कामे आई।' उतुंग धीरे धीरे भीम के आपन योजना बतवलन।

– 'मंत्री जी, हम पहिले ई जानल चाहब कि रच्छकन क कतना संख्या बा, उनहन के जुद्ध–प्रशिक्षण के का बेवस्था बा?'

– 'महाराज इहाँ जरूरत भर रच्छक बाड़न। संख्या नौ सौ के आस पास होई। अइसे इहाँ बच्चा से लेके बूढ़ तक हर बनवासी अपना रच्छा भर व्यावहारिक युद्ध कला जानेला, काहेंकि हमहन बनवासी हईं जा। इहाँ कब कइसन संकट आई एकर अनुमान आ सटीक अनुमान करे के योग्यता सबके दुरूह जीवन के अनुभव से अपना आपे आवेला। जइसे शिकार कइल, हिंसक जानवरन से बचाव कइल आदि सब केहू बचपने से सीखे जाने लागेला।' सेनानायक दाण्डी बतवलस।

– 'ठीक बा, बाकि हम आपका रच्छकन के जुद्ध–कला एक बेर देखल चाहब। एक दिन अइसन आयोजन करीं, जेमे पचास गो चुनल रच्छक रहन स... हँ एह पचास में पूरा बनक्षेत्र का हिसाबे से चुनाव करीं, ई काम दू दिन बाद राखीं... ताकि हम अपना धर्नुधर भाइयो क सहजोग ले सकीं।'

भीम कुछ सोचत कहलन। फेर मंत्री का ओर ताकत प्रश्न कइलन। आचार्य जी से कइसे भेंट होई? सुनले बानी कि उहाँ का हमनी का शिक्षा–सभ्यता आ ज्ञान से पूरा परिचित बानी।'

– 'महाराज, आचार्य चाण्डक रमता जोगी ठहरलन... हम संपर्क करे के कोसिस करब आ दू दिन बाद का आपका निरीक्षण का समय बोलावे के बेवस्था करब।' उतुंग आचार्य जी का प्रति महाराज बृकोदर के झुकाव से बहुत उत्साहित लउकलन। हिडिमा का आँखिन में एगो नया चमक उभरि आइल, जइसे ऊ भीम का एह चतुराई भरल संवाद के अपना भविष्य से जोरत होखे।

– 'ठीक बा, मंत्री जी! आप लोगन के धन्यबाद।' अब हम हिडिमा का साथे घूमि के, इहाँ का लोगन से मिलल चाहत बानी, अगर आप सब क'अनुमति होखे, तऽ हम हिडिमा का बतवला अनुसार इहाँ के भ्रमण करीं...'। भीम के एह प्रस्ताव पर हिडिमा मने–मन रीझि गइल।

– 'जइसन आपके इच्छा महाराज, ई सभ राउर अपने हऽ। आपका एह प्रेम भाव से सभे खुश होई।' मंत्री उतुंग उठ के खड़ा हो गइलन।

भीम हिडिमा के सँगे बनवासियन का रहे वाला क्षेत्र का तरफ चल गइलन। "हम आपका बुद्धि आ व्यवहार पर बहुत प्रसन्न बानी स्वामी, कुच्छे दिन में आप इहाँ के लोगन क दिल जीत लेइब, ई हमके विश्वास बा!" हिडिमा भीम कावर नेह दीठि डालत कहलस।

काकी मां हिडिमा के देखते धधाइ के मिलली, भीम खातिर उनका आँख से प्रेम झरत रहे... "आवऽ, आवऽ हमार प्यारी हिडिमा, आपो आईं महाराज...!" कुटी का भीतर ढुकत काकी बोलली।

– 'काकी तहरा हाथ के पकावल खइले कई दिन हो गइल, आपके जमाई जी के भूख लागल होई।' हिडिमा दुलरात काकी के अँकवारि में बान्ह लिहलस।

बाँस का छीलन से बीनल छोट चटाई बिछावत काकी कहली, 'तूँ जमाई जी के इहाँ बइठावऽ, हम झट से कुछ बनावत बानीं!'

भीम पालथी मार के इतमीनान से बइठ गइलन, जइसे उनकर जानल पहिचानल घर होखे। हिडिमा काकी का पीछा दउरि गइल, फेर हाथ में एगो बड़हन पतई पर उसिनल कंद लेके लवटल। भीम का आगा धइ के बोलल, "हम अब्बे जल लेके आवत बानीं...! काकी आप खातिर एगो मधुर पेय बना रहल बाड़ी! बस कुच्छे घरी में तइयार हो जाई।" ऊ वापस भितरी लवट गइल आ तुमड़ी में भरल जल लेके लवटल, ओकरा पाछा माटी के एगो बर्तन थमले काकी माँ लउकली... बर्तन से हलुके–हलुक भाप निकलत रहे, "बेटा, पता ना, आपके कइसन लागी, बाकि हिडिमा के ई पेय बहुत रुचेला।"

हिडिमा कोना में पत्थल का पट्टी पर सजावल कुछ माटी के कोर बर्तन उठवलस आ तुमड़ी का जल से ओके जल्दी–जल्दी धोइ के भीम का आगा ध दिहलस, "काकी ई सब बर्तन खासकर आपे खातिर, बनक्षेत्र का पूर्बी गाँव वाला हाट से मँगा के रखले रहली।" ऊ भीम के बर्तन का सफाई पर निश्चिंत करत दूगो बर्तन में पेय ढार दिहलस। ओकरा भाप से निकलल सुगन्ध बहुत प्रिय लागल। भोला भाला भीम के, काकी के वत्सलता आ नेह ओ घरी बहुते अच्छा लागल।

– 'वाह! अद्‌भुत, ई कइसे बनेला काकी ?' भीम चुस्की लेत कहलन, "स्वाद त कुछ–कुछ मधु लेखा बा!"

– 'हँ एमे मधु डालल बा। बन में मधुमाछियन का छत्ता से निकलवाइ के काकी बहुत जतन से एके राखेली। एकरा अलावा कुछ खास बनस्पति आ फेंड़ के छाल मिला के पकावल ई पेय, शरीर में नया स्फूर्ति पैदा करेला...!' हिडिमा बिधि के बरनन कइलस, भीम कन्द खात मीठ नजर से कबो हिडिमा के त कबो काकी के देखत रहलन।

– 'बौरी हियऽ ई! बेटा, ई जेतने भोली रहे ओतने चंचल! हम तऽ एक्के बचपने से सेवले–पलले बानी.... बहुत कष्ट में...।' काकी माँ के आँख के सामने कवनो अदृश्य, दृश्य टँगा गइल, उनकर आँख सजल हो उठल रहे।

– 'हँ... एगो भयानक शीतलहर वाला आन्ही–बरखा आ बज्जर पात में हमार बाप–महतारी सँग ना जाने केतना लोग...' हिडिमा के वाक्य ओकरा रुन्हल गर में अटक गइल।'

– 'बेटा, ओह आन्ही बरखा आ बज्रपात में सबकर कुटिया तबाह हो गइल। पहाड़ के कंपन में अइसन जल–परलय कि ना जाने केतना जीवजंतु आ बनवासियन के झुंड बहि–बिला गइल। ओही अंधड़ वाला परलय में हमार...' काकी माँ के दूनों आँखि से झर–झर लोर टपके लागल।

– 'भाई हिडिम्ब, हम आ कुन्दु बस तीन गो लड़िकन के अपना गोदी में लेके काकी माँ, बिशाल बट वाला गुफा में छिप गइल रहली।' डबडबाइल आँख से हिडिमा अपना बचपन के इतिवृत्त खोललस।

अवाक् भीम का भीतर सहानुभूति आ करुना के ज्वार उठल, "हम समझ गइनी काकी, हिरमी के पालक माँ आपे हईं, बाकि ई कुंदु के हऽ? आपके लइका?"

– 'हँ, ऊ हमार भाई ह...। बहुत संवेदनशील, नेही–छोही आ परिश्रमी। कुटिया में धइल ई सब चीज ओकरे मेहनत क फल हऽ। आप त ओसे मिलल बानी आर्य? हमहन का बियाह का दिन ऊ बहुत मेहनत कइले रहे। आ आश्रमों में कुटिया बनावे का समय बाँस, सरपत आ मूँज ओकरे तीव्र परिश्रम से जुट गइल रहे। ऊ बहुत कम बोलेला स्वामी, बाकि हमरा से अपार नेह करेला। भाई हिडिम्ब से हमके हमेशा दुतकार, झिड़की आ गारी मिलल। भाई के वास्तविक प्रेम त हमार अनुज कुन्दुये देत आइल।' हिडिमा कुन्दु के बखान करत ना अघात रहे। भीम अपना आप पर झुंझलात दुखी होत रहलन कि अतना प्रिय आ समर्पित व्यक्ति के आजुले ऊ ना जान पवलन। उनके क्षोभ एकर रहे कि अपना प्रिया भार्या के प्रिय अनुज, जवन हर मोका पर उनका आगा–पाछा तत्पर रहल, कइसे उपेक्षा हो गइल? ऊ बेकली में कहलन, "ए बेरा कहाँ होई कुन्दु?"

– 'हम आ गइनी महाराज!' कुटिया में घुसत चुस्त–फुर्तीला नवजुवक उनका आगा झुकि गइल, ओकरा पाछा निम्बा आ निरिमा पहुँचलन सऽ।

भीम उठि के खड़ा हो गइलन आ अपना आगा झुकल कुन्दु के दूनों कान्ह धइ के सीधा करत अपना छाती से लगा लिहलन। उहाँ खड़ा सब लोग, इहाँ तक कि खुद कुन्दु का समझ में ना आइल, बाकि हिडिमा अपना प्रिय का हृदय के भाव समझ गइल। निरिमा आ निम्बा के अभिवादन के उत्तर भीम मूड़ी हिला के दिहलन आ कुटी से बहरा निकलि अइलन। उनका पाछा–पाछा कुन्दु आ निम्बा बहरियाये लगलन स त हिडिमा टोकलस, "महाराज के अकेल मत छोड़िहऽ लोग।"

–'हँ भाई, बड़ा मुश्किल से ए बेरा उनके सखी हिडिमा छोड़ले बाड़ी।' हँसत निरिमा हिडिमा से अइसे लपटाइ गइल जइसे बरिसन के बिछुड़ल होखे, फेरू चुहल करत फुसफुसाइल, "का सखि प्रेम–जर उतरल कि ना तहार?"

– 'अभी कहाँ, ऊ उतरते फिरू अवरू चढ़ि गइल!' हिडिमो ओइसहीं जबाब दिहलस।

– 'अरे बावली, देखऽसन कि जमाई जी कहाँ गइलन, काकी घबड़ाइल टोकली।'

निरिमा दुआरि का ओट से झाँक के देखलस, ओकर दूनों दुलरूआ भाई महाराज सँगे हँस हँस के कुछ बतियावत रहलन सऽ।

कुछ देर बाद हिडिमा, निरिमा का सँग बाहर निकलि आइल, आ दूनों अनुजन के टोकत बोलल, "आजु महाराज इहें विश्राम कइल चाहत बानी! कुछ विशेष बेवस्था करऽ लोग, जेसे इहाँ के सुख आ प्रसन्नता मिले!"

– 'ना भाई, ई का कहत बाडू? माता आ बड़ भाई हमके खोजी लोग। आ हमार ऊ दूनो नटखट – छोट भाई भोजन ना करिहें स!' भीम अचकचाइ के कहलन

त हिडिमा खिलखिलाइ के हँस दिहलस, "हम जानत बानी महाराज!"

– 'ठीक बा, त अब आपके का बिचार बा? थोरिके देर में दिन ढरी, आप चाहीं त इहाँ कुछ अउर देर घूम–फिर सकीलें!'

– 'तूँ बतावऽ; अउर कहाँ घूमल जा सकेला?' भीम चुहुल भरल दीठि से हिडिमा का ओरि ताकत उल्टे सवाल कइलन।

– 'देखीं महाराज हमनी का त आपके पछलगुवा अनुगामी हईं जा! ई हमहन के रहे वाला सुरक्षित क्षेत्र हऽ। एकर घेरा लगभग दू–तीन कोस में बा। बीच में कुछ खाली जगह छोड़–छोड़ के बसल एह पूरा क्षेत्र में, आपके बहुत कुछ अइसन मिली, जेके देखि के आपका मन में जिज्ञासा होई, आप ओके जान–समझ के अउरू ठीक करे खातिर आपन सुझाव आ निर्देश दे सकीलें।' हिडिमा अपना बनवासी समुदाय के अन्दरूनी स्थिति आ बेवस्था समझावत कहलस।

– 'ठीक बा, चलऽ चलीं जा आ जल्दी–जल्दी एक चक्कर मारि आईं जा। फिर साँझ होखे से पहिले आश्रम लवट चले के।' भीम सबका ओर ताकत अइसे कहलन, जइसे सबके साथ ले गइल चाहत होखसु।

फिर त हिडिमा आ ओकर दूनो अनुज भीम का सँगे ओह अन्तर्क्षेत्र का भ्रमण पर निकल पड़लन सऽ। राह में कुछ जगह पर लकड़ी आ बाँस के मिलाइ के बाड़ा लेखा घेरल क्षेत्र लउकल। हिडिमा ओमे से कुछ के प्रशिक्षण स्थल, कुछ के रच्छक–निवास, कुछ के दवा–दारू निर्माण स्थल बतवलस, भीम हर बाड़ा का भीतर एक ओर छाजन वाला कुटी अइसन पलानी देखलन। लगभग कूल्हिन का मुख्य दुआरी पर एगो–दूगो रच्छक लउकलन स, जवन उनके आवत देखि के फुर्ती से झुकि के दूनों बाँहि फइला के अभिवादन कइलन सऽ।

एकदम खुला जगह में कहीं–कहीं जामुन, बइर आ अनचीन्ह बिचित्र प्रकार के फलदार वृक्ष लउकलन सऽ... एक जगह जहाँ ऊ अचंभित होके रुकि गइलन, एगो बड़हन जल–कुन्ड रहे जवना में पहाड़ी से निरंतर बहत जल धीरे–धीरे आके गिरत रहे। तीनों ओर से शिला खण्ड आ मिट्टी–पत्थर से मजबूती से बान्हल ओह जलकुंड के पानी एकदम साफ रहे। कुछ औरत माटी के बड़–बड़ बर्तन में पानी भरि भरि के ले जात रहली सऽ। हिडिमा बतवलस कि ई जलकुंड ओ लोगन के संचित आ सुरक्षित जलकुंड हऽ। एमे नहाये आ बस्त्र धोवे के मनाही बा। बरसात का समय जल अधिका भइला पर एकर बंधा दू तरफ तनी सा खोल दिहल जाला, जवन खाली क्षेत्र का पेड़–पौधा आ खाये जोग बनस्पतियन का सिंचाई का काम आवेला। इहाँ से कुछ दूर एगो अउर जलाशय बा – बाहरी किनारा पर। ऊ बहुत बड़ बा।'

ऊ भारी अचरज में रहलन कि जवना समाज के ऊ अबले उटपटांग जंगली आ असभ्य बूझत रहलन, ओकर कतना सोचल–समझल अनुशासित बेवस्था बा। अपना अल्प–ज्ञान आ प्राकृतिक संसाधन का बूता पर खड़ा कइल गइल एह बेवस्था में राज–बेवस्था के अनुशासित आ समर्पित सहजोग साफ–साफ झलकत रहे।

सुरुज पछिमाह होत रहले। बेरा नवत रहे। हिडिमा का कहला पर भीम का साथे सभे लवटि आइल। भीतरी क्षेत्र के पूरा–पूरा, ठीक से, निरीक्षण ना हो पावल... बाकि भीम सोचत रहलन कि कवनो दुसरा दिने, ऊ जरूर अपना–अनुजन का साथ इहाँ घुमिहन। ओहू लोग के इ पता चली कि बन प्रान्तर में रहे वाला कोल–भील आ अन्य बनवासियन में अपना समाज आ परिवार का भरण–पोषण आ रहन सहन के कतना सहज गढ़ल नैसर्गिक ब्यवस्था बा। बाहरी संसार के मैदानी भू–भाग वाला लोग अगर कृषि, पशुपालन आ बागवानी पर निर्भर बा त इहाँ खुद प्रकृतिये अपना से सटल रहे वालन खातिर आपरूपी नैसर्गिक सुबिधा से संपन्न बनवले बिया।

●●

ऋषि शालि का आश्रम में रहन–सहन आ स्नान ध्यान क समुचित ब्यवस्था रहलो पर पता ना काहें भीम का अनुजन के कबो–कबो ई लागे कि ऊ इहाँ आश्रमवासियन पर बेमतलबे बोझ बनल बाड़न स। धनुषधारी युवक जवना के नाँव अर्जुन रहे, ज्यादा क्षोभ में रहे। कुन्ती ढेर देरी से, चेहरा का उतार–चढ़ाव से, अर्जुन के मनःस्थिति भाँपत रहली। आखिरकार उनका पुछहीं के पड़ल, 'का बात बा बेटा, तूँ कुछ दोचित आ बेचैन लउकत बाड़ऽ!'

– 'माता, अब हमसे इ चोरन नियर छिप के, आश्रम वाला साधु–सन्यासियन पर बोझ बनल उचित नइखे लागत।'

– 'काहें भाई, इ जगह सुरक्षित बा आ नकुल, सहदेव आश्रम में रहे वालन का साथ, उनहन का काम में सहजोग करते बाड़न सऽ, तुहूँ जलावन के लकड़ी आदि के प्रबन्ध करते बाड़ऽ! फिर बोझ के प्रश्न कहाँ से उठि गइल आ ऋषि भा आचार्य लोगन में से केहुओ हमन का रहला प असुबिधा अनुभव ना कइल...' जुधिष्ठिर, अर्जुन के असहजता दूर करे क कोसिस करते रहलन कि अर्जुन क्षुब्ध होके बोल पड़ल, 'आपके बात कुछ अउर बाटे भइया! आपमें असीम धीरज बा

आ इहाँ आचार्य लोगन का साथे धर्म–चर्चा में आपके समय कट जाता बाकि हमार...'

– 'अइसे काहें बोलत बाड़ऽ बेटा, का जेठ भाई से बतियावे के इहे तरीका हऽ?' कुन्ती बिच्चे में टोकली।

– 'ई बात नइखे माता हम सत्य कहत बानी बड़का भैया का रुचि का मुताबिक इहाँ वातावरन बा, भैया भीम हिडिमा का सँगे भ्रमण आ राजकाज में बाझल बाड़न, नकुल–सहदेव इहाँ आश्रम का गायन के देखे भाले में रमल बाड़न, हमार मन पता ना काहें नइखे लागत... रह–रह के दुष्ट दुर्योधन पर क्रोध जागऽता। वारणावत के आगि में जइसे हमहन के शौर्य–पराक्रम भरल तेजस्विता वाला अस्तित्व के खतम करे के नीच कोसिस भइल, अब गोपनीय होके मुँह लुकववले पहिचान छुपावत भागत परात हमार ई छिपल जीवन निष्क्रिय होके इहवें ठहर गइल बा! आशंका में, आपन पीड़ा अउर बढ़ जाता ई सोच के कि काका विदुर क कवनो सनेस ना आइल आ हमहन के अनिश्चित भविष्य के का होई?' अर्जुन नरम होके धीरे धीरे अपना भीतर के द्वन्द प्रगट कइलन।

– 'बेटा हमहन कवनो जान बूझि के इहाँ नइखीं रुकल। समय आ परिस्थिति एकरा खातिर विवश कइले बिया। का जाने बिधि के कवन लेख बा... कि नियति हमनी के इहाँ ले आइल आ एगो नया समाज से जोरलस। साइत एम्में हमहन का भविष्य खातिर कवनो नीक भा भले छिपल होई। हिडिमा का कारन, एगो संगठित शक्तिशाली समुदाय के समर्थन त मिलल।' कुन्ती समझावल चहली।

– 'आ हमहन कवनो स्थायी रूप से इहाँ थोरे बानीं जा, कुछ दिन का बाद हमनी के इहाँ से चलहीं के बा।' युधिष्ठिर अपना अनुज के सहज बनावे क प्रयत्न कइलन।

– 'कुछ दिन के कवनो सीमा त होला?' अर्जुन, जेठ भाई से फेरु सवाल कइलस।

– 'सीमा बटले बा... कम से कम हिडिमा के पुत्रवती भइला तक रुकहीं के पड़ी! हम ओके बचन आ संरक्षन देले बानी... त बेटा का तहार फरज नइखे कि अपना माता आ मझिला भाई खातिर...'

– 'अइसन नइखे माता! आप लोगन खातिर हम आपन प्राण दे सकत बानी, बाकि हमार क्षोभ अपना खालीपन आ निष्क्रियता पर बा आ एहू पर बा कि हम कुछ करियो नइखीं सकत...' अर्जुन बिकल भाव से माता का ओर तकलन।

– 'एगो उपाय बा एके दूर करे खातिर। मझिला इहाँ हिडिम्ब का बाद अब महाराज वृकोदर बा। एह राज के आपन रच्छक सैनिक बाड़न सऽ। तोहके भीम का सँगे जाके, इहाँ के व्यवस्था के अपना अनुकूल बनावे में, अपना अनुजन का साथ जथाजोग सहजोग करे के चाहीं। अइसन प्रशिक्षित सैन्य बल तइयार करे के चाहीं, जवन आगा अवसर अइला पर तोहन लोग का पक्ष में निष्ठा से लड़ सको!' माता धीर गंभीर होके अर्जुन के समझवली।

नकुल आ सहदेवो अचके उहाँ आ गइल लोग। ऊ माता के वचन कुटी का दुअरिये पर सुन चुकल रहे लोग। नकुल हँसत बोलल, "हँ भइया हमनी के मझिला भइया के सहजोग करे के चाहीं!"

– 'हमहूँ माई का बिचार से सहमत बानी!' सहदेव उछाह में भरल महतारी का पक्ष में आपन राय दिहलन।

– 'ठीक बा आज हम भीम आ हिडिमा से एकरा बारे में बिचार करब। हमरा समझ से अब कुछ समय खातिर, एह दम्पत्ति के पूरा–पूरा छूट मिले के चाहीं। तोहार का बिचार बा बेटा?' कुन्ती जेठ का ओर तिकवत पुछली।

– 'ठीके बा माता! आपका बिचार से हमहूँ सहमत बानीं। एह तरे भीम के अधिक से अधिक स्वतंत्र भाव से काम करे क अवसर मिली! बेर–बागर हमनियो का चलके, अपना शक्ति भर सहजोग करे के।' जुधिष्ठिर खुल के महतारी का सुझाव क समर्थन कइलन।

अर्जुन अब पहिले से अधिक सहज आ शान्त हो चुकल रहलन। अइसहूँ परिवार के हरेक सदस्य के इहे इच्छा रहे।

कुन्ती खातिर ऊहो एगो विकट क्षण रहे। पता ना काहें ऊ एको घड़ी खातिर अपना लड़िकन में आपुसी बिरोध आ उनहन के कहासुनी बरदास ना कर पावस। उनकर अब तक के जीवन खाली अपना बेटन में आपुसी प्रेम आ एकता बनावहीं में बीतल रहे। बड़ा नेह से ऊ सबके आपुस में जोड़ के रखले रहली। एक तरह से ईहो उनका ओह तप के अंग रहे, जवन ऊ अपना पति महाराज पाण्डु आ नकुल–सहदेव के माता माद्रि का बिछुड़ला का बाद व्रत लेके प्रारंभ कइले रहली। अपना ए लमहर साधना में तनिको बिघिन उनके बेचैन क देव।

– 'का भइल माता! आप त सुरुवे से बन आ जंगल में साधु–सन्यासी आ तपस्वियन का साथे जीवन बितवले बानीं, इहवाँ आश्रम में आपके मन काहें बिकल बा?' सहदेव माता का लगे सटके बइठत, सोच में पड़ल कुन्ती के ध्यान तुरलन। कुन्ती अपना दुलरुवा बेटा के मीठ चितवन डालत एक छिन खातिर निहरली फेर अपना के संयत करत कहली, "बेटा, हमरा खातिर त

गृहस्थ जीवन खाली तोहने लोगन का चलते बा। ना त हम कबो राजसी जीवन के कल्पना कइनी, ना कबो ओमे हमार मन रमल। महाराज का रहला पर जरूर एह सुख के कुछ घरी अनुभव भइल रहे। हस्तिनापुर का ओह बिखइल मायावी वातावरन में, जहाँ हमेशा कवनो न कवनो छले–परपंच रचल जात रहेला, हमरा रहला के एकमात्र कारन बस तोहन लोग बाड़ऽ जा... उहाँ बहिन गान्धारी, महात्मा बिदुर आ तातश्री भीष्म के अपनापा का अलावा दोसर बटले का बा?" कुन्ती जइसे कवनो बिसरल समय में डूबि गइली।

– 'माता हमनी का जानत बानी जा, तूँ खाली हमहने का कारन ई सब संताप सह रहल बाडू, ना त तूँ जरूर बानप्रस्थ ले लेले रहितू। बाकिर माता ई काहें नइखू सोचत कि तहार नकुल, तहरा छतरछाँहे में संजीवनी पावेला।' माता के अपना अँकवारी में लेत छोटका पुत्र छोहात आपन अनुराग प्रगट कइलस।

थोड़िकी देर खातिर उदासल कुन्ती का मरुआइल शान्त मुख पर वात्सल्य के नेह छलकल। ऊ हँसत कहली, 'बेटा, महतारी कबो निश्चिन्त ना होले... ओके जब तक पूरा भरोस ना हो जाव कि ओकर सन्तान आपन लक्ष पा लेले बा आ ऊ अब आगा सुख–शान्ति से रह सकेला।'

– 'बाकिर माता, हमके त लागेला कि माता ओकरा बादो निश्चिन्त ना रह सकेले!' नकुल मुस्कियात फेरू तर्क कइलन।

– 'ऊ काहें?'

– 'ऊ एसे माता कि पहिले बेटा के सुख के चिन्ता, फेर ओकरा घर गिरस्थी सम्हारे खातिर पत्नी के चिन्ता.. फेरू नाती पोता के मोह, फेर...' सहदेव हँसत कुन्ती के अंतरंग कुरेद दिहलन।

कुन्ती खिलखिला के हँस दिहली... सभे हँस दिहल। कुटिया में भरल क्षोभ आ आकुलता के तनाव भरल असहजता, एक्के छन में जइसे बाहर निकल गइल।

'तूँ नटखट शैतान, बस तोहनी का एही निश्छल मातृभाव आ असीम प्रेम का कारने त हमार सब दुख अलोपित हो जाला!' कुन्ती अब सँचहूँ शान्त आ सहज हो गइल रहली। उनका चेहरा पर ओइसहीं मन्द मुस्कान उभरि आइल रहे, जवन अक्सर अपना पुत्रन के भोजन करावत खा, उनका वात्सल्य का कारन उभरि आवत रहे।

साँझ हो चलल रहे जब भीम हिडिमा का साथ आश्रम में लवटलन। उनका हाथ में, अँगोछा में बान्हल कुछ फल रहे, जवन राह में लवटत खा हिरिमा कुछ फेंड़न से जल्दी–जल्दी तुरले रहे। ओकरा हर तरह का फेंड़–पौधन के पहिचान रहे... आ इहो पता रहे कि बनक्षेत्र में कवन फल कहवाँ मिली।

– 'आ गइले मझिला भइया, हमनी का भोजन खातिर कंद मूल आ फलो ले आइल बाड़े।' सहदेव भीम का हाथ से गमछा में बान्हल फल क गठरी लेत बोललन।

– 'अरे भइया के कहाँ मालूम फल का बारे में? ई त भउजी के देन हऽ!' नकुल हँसत चुटकी लिहलन।

भीम अपना अनुजन के मनोबिनोद पर हँस के रहि गइलन, बाकि हिडिमा कहाँ चुप रहे वाली रहे। सँग सँग रहत ऊहो अब मुखर हो गइल रहे, "कवनो बात ना देवर जी, काल्ह हम आपो लोगन के सँगे ले चलब आ बन का फेंड़न से चीन्हा परची करा देबि! आखिर आपो सबके ई सब जाने–चीन्हे के चाहीं नऽ?"

– 'अरे भाभी जी, भइया आपके छोड़िहें तब नऽ?' नकुल पलट के जबाब दिहले।

– 'ना, हिडिमा ठीके कहत बिया। तोहन लोग के अब साथे चलहीं के पड़ी।' भीम बीच में कूदि परलन। अनुज मझिला भाई के हस्तक्षेप से बौखलाइ गइलन सऽ। उनहन के ई आशा ना रहे कि इहो स्थिति आ जाई।

– 'अरे भाई, तोहन लोग कवना सोच में परि गइलऽ जा। हम अपना अनुजन के इहाँ के भीतरी व्यवस्था देखवला का साथ, जुद्ध–कला का प्रशिक्षण खातिर सहजोग लिहल चाहत बानी।' भीम स्पष्ट कइलन।

– 'ई त बहुत अच्छा बा। हम इहाँ के आदिवासी युवकन के धुनर्विद्या सिखाइब।' अर्जुन कहलन उनके ओ समय इ तनिको खेयाल ना रहल कि बनवासी धनुर्विद्या में पहिलहीं से निपुन रहेलन सऽ। भले उनहन का लगे दिब्यास्त्र ना होखे बाकि बिखइल तीरन का अचूक वार से ऊ खतरनाक आ प्रचण्ड बन्य पशुअन के अचेत करे में माहिर होलन स... अचानक उनके एकलब्य मन परल, जवन बिना गुरुवे के अपना अचूक धनु–संधान से आचार्य द्रोन तक के चमत्कृत क देले रहे। आखिर ऊहो त कोले भील समुदाय क युवक रहे। उनका अपना कथन पर अब पछतावा होखे लागल।

– 'ठीके त बा! हमनी का ज्ञान से इहाँ के जोद्धा कुछ नया सीखि जइहें स!' भीम अर्जुन समेत अपना अनुजन के उछाह बढ़ावत कहलन।

– 'हँ, देवर जी...एह बिखरल राज का संचालन खातिर आप लोगन के जुद्ध कला देखि के हमनी का रच्छकन के बहुत बल मिली!' हिडिमा भीम के समर्थन करत कहलस।

माता कुटी से बहरा निकलि आइल रहली। ऊ अपना बेटन के आपुसी संबाद सुन चुकल रहली। पैर छुवत हिडिमा के कान्हि पर हाथ धरत कहली, 'सही तऽ

कहत बाड़ी हिडिमा! महाराज बृकोदर के राज व्यवस्था में भाइयन के जरूर साथ देबे के चाहीं।'

एकायक अर्जुन समेत नकुल, सहदेव के माता कुन्ती के ऊ कथन स्मरण हो आइल, जवन कुछ घड़ी पहिले का बतकही में ऊ कहले रहली... 'भीम का सँगे जाइके इहाँ के बेवस्था अपना अनुकूल बनावे में सहजोग करे के चाही... आ अइसन सैन्यबल तइयार करे के चाही, जवन आगा अवसर परले कामे आ सको!'

– काल्हु से हम हिडिमा के पूरा–पूरा स्वतंत्र करत, ई आदेश देत बानी कि ऊ लोग कुछ दिन तक अपना बन–क्षेत्र के बेवस्था बनावे में लागो लोग। भीम उचित समझ के हमहन से मिले आवल करिहें आ उनका इच्छानुसार सब उनकर सहजोग करीं।' कुन्ती के ई स्पष्ट आदेश सुन के हिडिमा आ भीम एक छन खातिर अचकचाइल लोग, बाकि अर्जुन, नकुल आ सहदेव खातिर एकर अरथ साफ आ खुलल रहे।

नदी से सागर आ सागर से बादल बनल एगो रहस्य लागेला। जल के भाप बन के उड़ल आ बटुराइल ना लउके, बाकि ऊहे जब बादल के रूप आकार ले लेला त लउके लागेला। उहे बादल जब अनगिन जल–बूनन का रूप में बरिसे लागेला त बरखा का ओह सतत क्रम के सुघराई लउके लागेले आ जल का शीतलता के अनुभूति होखे लागेले। प्रकृति के बदलाव आ नवजीवन खातिर सिरिष्टि के रचना–चक्र अइसहीं अपना चलत रहला के आभास करावत रहेला। ऋतु बदलेले त प्रकृतियो बदलेले आ प्रकृति पर आश्रित पसु, पंछी आ मानव, ओकरे मुताबिक अपना जीवन–प्रक्रिया आ आचार व्यवहार में बदलाव करेला।

वर्षा ऋतु का आगमन के बेरा आ चुकल रहे त पर्ण–कुटियन आ छान्ही–छप्पर के फेर–बदल आ पुनर्निर्माण होखे लागल रहे। भीम आ हिडिमा जब अनुजन का साथ, बनवासियन का ओह निवास–क्षेत्र में पहुँचल त, कटाइल बाँस आ देवदारू, सागौन के सोझ बल्लियन क ढोवाई चालू रहे। सैकड़न का संख्या में पुरुष–औरत अपना शक्ति–सामरथ का मोताबिक छान्ह–छप्पर के सामान ढोवत लउकल। मूँज आ जंगली नरकुल के सुखावल बान्हल बोझा ढोवत औरतन के झुंड निष्ठा से अपना काम में लागल रहे त उघारे देंह बनवासी जुवक बाँस आ बल्ली ढोवत लउकलन सऽ।

– 'ई सामूहिक ढुलाई काहें खातिर होता?' अनुज सहदेव पुछलन।

– 'वर्षा ऋतु आवे से पहिले छान्ही–छप्पर बदले आ नया बनावे के काम अब इहाँ कुछ दिन तक लगातार चली। ई सब मंत्री उत्तुंग काका का सुझाव आ संकेत पर हो रहल बा।' हिडिमा समझवलस।

एगो छायावाला फेड़ का नीचे कुछ बूढ़ स्त्री पुरुष पत्थर का टुकड़ा पर हरियर हरियर मूंज आ पतलो कूटत रहे, आ थोरिके दूर पर कुछ लोग ओह में से एक–एक पाँजा उठाइ के रसरी बरत रहे। "सचहूँ ई सामूहिक प्रयास सराहना करे लायक बा!" भीम निरीक्षण करत मने–मन बुदबुदइलन।

– 'आप कुछ कहलीं हाँ महाराज?' हिडिमा तुरते उनका मनःस्थिति के भाँप गइल।

– 'ना हिडिमा, हम खाली सोचत रहलीं कि तोहनो लोग, हमहन का गाँव–नगर में रहे वाला नागरिकन लेखा व्यवस्थित ढंग से काम करे में निपुन बाड़ऽ जा! हमके ई ना पता रहे कि शाखामृग लेखा रहे वालन के एतना ज्ञान होई!' भीम मुस्कियात चुटकी लिहलन। त अनुज हँस पड़लन स।

– 'का मतलब?' हिडिमा का समझ में ना आइल बाकि सबका हँसला से ऊ एतना जरूर समझि गइल कि ऊ लोग ओकर हँसी उड़ा रहल बा। ऊ फेरू पुछलस, "साखामिरिग माने का?"

– 'बानर भाभी!' अनुज हँसलन स 'बानर फेड़ का डाढ़ि–डाढ़ि कूदत–फानत रहेलन स, एही से उनहन के शाखा के मृग कहल जाला।'

–'अच्छा? त आप सब हमहन के हँसी उड़ा रहल बानी!' हिडिमा खिसियाइल, ओरहना देत मुँह घुमा लिहलस। भीम खिलखिलाइ के हँस पड़लन। उनका ठहाका से आस–पास काम में बाझल बनवासी अचकचाइ के देखत, बे समुझले आपन दाँत चियार दिहलन सऽ। सामने से आवत दू–तीन गो रच्छक ओह लोगन का लगे आइ के आदर से शीश झुकावत धीरे से बोललन सऽ, 'महाराज वृकोदर के जय! आचार्य चाण्डक जी, मंत्री जी का सँगे आप सबके राह देख रहल बा लोग।'

हिडिमा आचार्य काका का आगमन का सूचना से प्रफुल्लित हो उठल रहे। भीमो रच्छकन का सँगे, उनहन का बतवला अनुसार, तेज गति से चले लगलन। एगो लमहर चाकर, चारू ओर से घेरल बाड़ा का भितरी घुसला प ऊ लोग देखल कि उहाँ काफी साफ सुथरा बरोबर कइल मैदान रहे। जेने–तेने दस बारह का संख्या में, रच्छक खड़ा रहलन सऽ, जवन ओ लोगन का घुसते आपन मूड़ी झुकाइ के विधिवत अभिवादन कइलन स। पच्छिमी छोर पर एगो बड़हन एकपलिया छाजन का नीचे आचार्य चाण्डक से मंत्री उत्तुंग कुछ बतियावत रहलन। ओ लोगन के आवत देखि, ऊ लोग झट से बहरा निकलि आइल आ ओइसहीं आदर से शीश झुकाइ के अभिवादन कइल।

'आचार्य चाण्डक आ मंत्री उत्तुंग जी के हमहन के प्रणाम!' भीम हाथ जोड़लन त आचार्य लपक के उनकर हाथ पकड़ लिहलन, 'आईं आर्यपुत्र महाराज वृकोदर, हमहन क धन्य भाग कि आप अइसन बलशाली आ पराक्रमी नायक के नेतृत्व मिलल।' भीम का साथे साथ अनुज अर्जुन, नकुल आ सहदेव चौंक परल, ओ लोग का भीतर एगो अनजान आशंका उठल... कहीं ओ लोग के पहिचान त ना लिहल गइल।

–'ए जंगली बनवासी समाज के भहराइल राज–बेवस्था में सुधार आ बिकास खातिर हम कई बरिसन से लगातार प्रयास करत आइल बानी, बाकि नया आशा जगावे वाला कुशल नेतृत्व त अब मिलल हा महाराज। आप आ आपका योग्य भाइयन का ज्ञान से ईहो समाज बहुत कुछ जाने–सीखे के असरा लगवले बा।' आचार्य चाण्डक के धीर गंभीर सभ्य बोली – बानी आ ब्यवहार से अर्जुन चमत्कृत रहलन।

–'आपन सभ्यता–संस्कृति आ परंपरा के आदर्श सबका प्रिय होला, बाकिर दोसरो के जाने के चाहीं, तबे न बिकास के नया राह मिली। 'ज्ञान' त असीमित बा, मनुष्य जतना अधिक से अधिक अर्जित कर सके। हम खुदे निरंतर यात्रा से सीखत–जानत आ समझत आइल बानी।' आचार्य कहलन।

– 'इहाँ रहे सहे आ जीवन शैली में जवन कुछ आज आपके लउकि रहल बा, ऊ सब अनुभवी तात आचार्य चाण्डके के देन हऽ।' मंत्री उत्तुंग आचार्य का प्रति आपन सरधा प्रगट कइलन।

– 'ना महाराज, समय आ परिस्थिति आदमी के सब कुछ सिखा देले। कालचक्र जइसे जइसे घूमेला, मनुष्य खातिर नया संभावना आ अवसर देला। एही के देन हऽ कि आपलोग के इहाँ आगमन भइल आ नियति देखीं कि आप हमनी से जुड़ि गइनी। अब एह अवसर के लाभ दूनों पक्ष के मिली।' आचार्य चाण्डक बड़ा सहज भाव से अपना दूरदर्शिता के परिचय दिहनल।

सब लोग बतियावत धीरे–धीरे एगो छायादार पिप्पल बृक्ष का लगे गइल जहाँ छोट–छोट पत्थर के सरिया–सजाइ के एगो बड़हन गोलाकार बेदी बनावल रहे। ओपर पहिलहीं से आठ–दस गो छोट छोट आसनी बिछावल रहे।

– 'आसन प बइठीं महाराज।' उत्तुंग कहलन भीम का बइठला पर बकियो सब गोलाई में उनका दूनों ओर बइठ गइल।

– 'त अब असली विषय पर चर्चा शुरू कइल जाव।' आचार्य कहलन।

– 'महाराज हमहन से, रच्छक सेना के तइयारी देखे के इच्छा प्रगट कइले रहनी। सेनानायक दाण्डी आ पुण्डरक से इहाँ क परिचय हो चुकल बा।' मंत्री आचार्य के जानकारी दिहलन।

– 'निश्चत रूप से इहाँ के देखाईं सब। इहाँ सब का ज्ञान–अनुभव आ जुद्ध कला से हमहन का रच्छक–सेना में निपुनता आई, यदि महाराज प्रशिक्षण देबे खातिर कुछ समय निकालीं।' आचार्य चाण्डक आपन प्रसन्नता आ उत्साह देखावत कहलन फेरू प्रश्न भरल दीठि मंत्री पर डालत पुछलन, "हिडिम्ब के उदण्ड आ निरंकुश ब्यवहार से बिगड़ल युवकन के मति ठेकाने आइल कि ना? उनहन का रहन–सहन आ आचार–बिचार में बदलाव क चीन्हा लउकत बा कि ना मंत्री उत्तुंग?"

– 'अइसे त एघरी ऊ निराष आ चुप बाड़न सऽ। उन्हनी के स्वच्छन्दता आ उच्छृंखलता में कमी आइल बा। हम अपना भेदियन से हर दिन जानकारी लेत रहनी हाँ आचार्य । एघरी, ओमे से कुछ त ज्यादा से ज्यादा समय बन आ पहाड़न में आखेट करे में बितावत बाड़न सऽ...'

– 'ना मंत्री जी, उनहन पर कड़ा दृष्टि रखला से कुछ ना होई। उनहन के बटोरि के, कवनो न कवनो जिम्मेदारी देइ के आँकुस में ले आवे के परी... कि ना महाराज?' आचार्य के सिकुड़ल आँखि जइसे भविष्य का प्रति चिन्ताकुल लउकल।

– 'निश्चन्त रहीं आचार्य हम जल्दिये ओह लोगन के सही रस्ता पर ले आ देबि।' भीम आत्मविश्वास से कहलन ।

– "एगो अउर बात कहे के बा... हमनी किहाँ भोजन के समस्या हल करे खातिर अलगा से कुछ राजकीय बेवस्था पर काम करे के चाहीं... जइसे ज्यादा बरसात भा ज्यादा हिमपात भा ठंढ़ा समय खातिर कुछ विशेष इंतजाम" आचार्य सुझाव दिहलन।'

– 'एकरा खातिर अधिका से अधिका पशुपालन, जइसे, भैंस, बकरी, गाय, भेंड़, श्वान आदि एकट्ठा कइ के पोसे पाले के जरूरत बा... बन का हिंसक जीवन से उनहन का सुरक्षा खतिर विशेष चौकसी बढ़ावे के चाहीं... आ ओह पालित पशुअन खातिर कुछ दिनन के संचित चारा वगैरह राखे के चाहीं।' भीम कुछ सोचत आपन सुझाव दिहलन, त आचार्य का आँखिन में एगो चमक उभरल।

– 'सुझाव त बहुत बढ़िया बा... बाकि सुबिधा आ समय कम बा, मंत्री जी, बन का बाहरी गाँवन आ हाट से दूध वाला पशु खरीद करे खातिर अपना बुद्धिमान लोगन के प्रेरित करीं आ जइसन महराज के इच्छा बा, सुरक्षा आ संचित चारा भण्डारण क व्यवस्था करीं।.... वास्तव में, ई आगा आवे वाला समय में हमनी खातिर

लाभकारी होई... दूध, दही आ घृत हमरा कबीला–समाज का रुचि का अनुकूल आज भले नइखे, बाकि धीरे धीरे सबका एकर महत्व समझ में आ जाई।'

– 'एही तरह से हमहन के राजकीय ब्यवस्था में अन्न–भंडारण आ ओकरा सुरक्षित रखरखाव खातिर बल देबे के पड़ी। आपदा काल भा प्रतिकूल परिस्थितियन में ईहे बहुत कामे आई!' भीम दूसर सुझाव दिहलन।

अनुजन के विस्मय भइल कि मझिला भइया एगो कुशल शासक का रूप में इहाँ का लोगन के एतना सरलता से कइसे राजी क लिहलन। हिडिमा का आँखि में भीम खातिर प्रशंसा आ गर्व के भाव छलके लागल रहे।

– 'बस आज के चर्चा अब रोकल जाव! महाराज आ उनका अनुजन के अल्पाहार क कुछ इंतजाम बा कि ना मंत्री उत्तुंग?' आचार्य एकदम सहज हो गइलन। उनका दीठि में एगो वात्सल्य के भंगिमा आ गइल रहे। हिडिमा का ओर ताकत धीरे से अपनत्व जतवलन, "तोहार का हाल बा बेटी हिडिमा? तूँ सुखी आ खुस बाडू नऽ? अइसन गुनी आ दिव्य परिवार का बीच जरूर तोहके सुख आ शांति के अनुभूति होई!"

हिडिमा भावाकुल हो उठल। आचार्य का ममत्व से अपना वर्तमान जीवन के आह्लाद ओकरा चेहरा प चमक उठल आ आँख का कोरन पर खुशी के जल बून टँगाइ गइल। आचार्य आगा बढ़ि के ओकर पीठ थपथपवलन। जलपान आदि का बाद सबसे पहिले ऊ लोग मंत्री उत्तुंग आ आचार्य चांडक का साथ ओह जगह पहुँचल जहाँ पशुपालन करे खातिर बाँस बलियन से बाड़ा बनावल रहे। दू गो रच्छक उहाँ पहिलहीं से खड़ा रहलन स। आचार्य आ मंत्री सँग खुद महाराज वृकोदर आ हिडिमा आदि के आवत देखि ऊ सावधान हो गइलन सऽ। बाड़ा के भीतर पन्द्रह–सोलह गो अच्छा नसल के भइंस, गाय आ बकरी बान्हल रहली स। उन्हनीं का आगा हरियर काटल डाढ़ि आ सूखल घास डालल रहे। कोना में एकोर एगो गहिर गढ़हा खोनल रहे, जवना में पानी भरल रहे।

– 'पशुपालन का बारे में हमार छोट अनुज ज्यादा जानकारी आ अनुभव रखले बाड़न। ऊ आप सभे के एकरा बारे में बतइहें।' भीम अपना अनुज सहदेव का तरफ इशारा करत कहलन। उनका संकेत पर सहदेव बाड़ा का भीतर चारू ओर गहिर नजर डालत देखलन फेर बतावे शुरू कइलन, "एह पशुअन के बइठे सुस्ताये के ब्यवस्था, ओह कोना, हो फेड़ का लगे होखे के चाहीं – ओह किनारा अगर एक तरफ थून्ही गाड़ि के छाजन डाल दिहल जाव त उहाँ जाड़ा आ बरसात का समय पशु आराम से रह सकेलन स। बाकी मौसम में फेंड़ का आसपास खूँटा गाड़ के बान्हल जाव। एकरा उल्टा दिशा, याने ओह तरफ पशुअन के खाये पिये के इन्तजाम कइल जाव। पाथर का छोट छोट टुकड़न के माटी का गील लोना से चिपकाइ के भीतर से लेवरि के, बड़े बड़े चरन भा नाद बनावल जाव, ताकि इनहन के हरियर चारा भा पतई डालल जाव, त ओही बनावल चरन भा नाद में। पशुअन का गोबर आदि के सबेरे–साँझ सफाई कइ के ओह तिसरा कोन में राखल जाव, ओके या त इंधन आ जलावन खातिर पाथल जाव, भा बरसात का समय उहाँ एगो बड़हन गड़हा खोनि के ओम्मे डालल जाव।" सहदेव कुछ छन खातिर रुकलन, सब बहुत ध्यान से उनका बात सुनत रहे। खासतौर से उहाँ पशुअन के देखभाल करे वाला दू गो पुरुष एक एक सुझाव पर कान लगवले रहलन स।

– 'अच्छा मौसम में रच्छक रखवालन का साथ एह पशुअन के दुपहरिया में तीन–चार घड़ी जरूर घुमावल आ चरावल जाव, ताकि इनहन के आहार का साथ–साथ मनबदलाव हो सके। पशु जब प्रसन्न आ खुसहाल रहिहन स त दूधो अधिक मात्रा में दिहन सऽ। पशुअन में दुधारू पशु खासकर गौ के सेवा पुण्यकारी मानल गइल बा, गौ–दुग्ध सबसे पवित्र आ पूर्ण आहार हवे। एही से ऋषि आ ब्राह्मन इनहन के विशेष महत्व देलन सऽ।' दुसरका अनुज नकुल आपन विचार प्रगट कइलन।

– 'आप सब सुन के समझ गइल होखब कि आगा कवना तरह से पशुपालन कइल जा सकेला!' भीम सबका ओर ताकत कहलन। बाँस बल्लियन का घेरा से बहरा निकलत खा, मंत्री उत्तुंग के समझावत आचार्य चांडक भीम का अनुजन के सराहना कइलन, "आप देखनी नऽ! महाराज के ई छोट भाई कतना ज्ञानी बाड़न सऽ, एह लोगन का मूल्यवान सुझाव के तत्काल पालन शुरू हो जाव त अति उत्तम होई!"

– 'जी, जरूर; हम आजुये साँझ खा कुछ लोगन के समझाइ के ए काम में लगाइब।'

उहाँ से कुछ दूर चलला का बाद बिपरीत दिशा से आवत सेनानायक दाण्डी लउकलन, "लीं आचार्य जी। सेनानायक दाण्डी ई सूचना देबे खातिर आ रहल बाड़न कि रच्छक–छावनी में सब तइयारी पूरा हो गइल बा।"

आचार्य चाण्डक भीम का ओर देखत कहलन, "लड़े–भिड़े वाला काम योद्धा के हऽ! महाराज आ संभवतः इनकर तीनू अनुज लोग ए काम में दक्ष बा लोग!"

अब तक चुपचाप चलत अर्जुन के कान सतर्कता

से आचार्य चाण्डक के एक–एक शब्द सुनत रहे। ऊ एक बेर फेर शंकित हो गइलन। कहीं ई अनुभवी चालाक वृद्ध ओ' लोगन के पहिचान त ना लिहलस... ऊ लापरवाही से मूड़ी झटकलन... 'धनुष धारण करे वाला व्यक्ति, सफल लक्ष–सन्धान में अधिक जानकार होला, अपेक्षाकृत अन्य अस्त्रन के। ओके अपना धनुर्विद्या पर पूरा भरोसा होला। तबे नऽ ऊ अन्य अस्त्र शस्त्र का बजाय धनुषे वाण के अपना साथ राखेला।' आचार्य एक बेर फेरू अर्जुन के उद्विग्न कइलन।

सेनानायक दाण्डी सबके आदर से शीश नवावत छावनी कहाये वाला जगह पर ले गइलन जेकरा चारू ओर ऊँच बाड़ लगावल रहे। मुख्य फाटक पर पुंडरक दू गो रच्छकन का साथ अगवानी करे खतिर खड़ा रहे। ओ लोगन का उहाँ पहुँचते ऊ ठेहुना का बले बइठि के पूरा आदर का साथ शीश नवाइ के अभिवादन कइलस।

– 'उठऽ पुंडर। आज हम तोहन लोग के जुद्धकला देखि के मल–जुद्ध के कुछ दाँव सिखाइब।' महाराज बृकोदर पुंडरक के कान्ह ठोकत हँसलन।

– 'महाराज बृकोदर के जय! महाबली, महाजोधा बृकोदर के, जय!!' रच्छकन के जयघोष गूँजल। एक्के जगह बटुराइल लगभग पाँच सौ का संख्या में रक्षा–सैनिकन के समूह अभी जयकार करते रहे कि भीम हाथ उठा के उनहन के शान्त करत संबोधित कइलन, 'भाई लोग! आज हम तोहन लोग का बीच तोहन लोग का समरपन आ निष्ठा खातिर धन्यबाद देत, ई कहे आइल बानी कि हम पूरा मन से तोहन लोग का साथे बानीं, हमरा साथे आइल हमार ई भाई लोग, तोहन लोग के जुद्धकला देखल चाहत बा! तोहन लोग भाला, तलवार आ धनुष–बान जवन चाहऽ आपन मनपसंद हथियार का साथ प्रदर्शन करऽ लोग।'

– 'रच्छकन के भीम के भाव समझ में आ गइल। अपना खातिर भाई शब्द का संबोधन से उन्हन में नया उछाह बढ़ गइल।'

कुच्छे देर में सेनानायक दाण्डी का संकेत पर कुछ धनुषधारी रच्छक एक तरफ हो गइलन स। दाण्डी कुछ रच्छकन का साथ एक तरफ खड़ा हो गइलन। ओ लोगन का हाथ में एगो विशेष तरह के खड्ग रहे। तिसरका टोली भाला का साथ अलगा खड़ा हो गइल। पुण्डरक बाकी रच्छकन के संकेत कइलस, ऊ मैदान का घेरा में तीन तरफ फइल गइलन सऽ।

ऊँच चारदीवारी का भीतर अभ्यास खातिर उहवाँ भरपूर जगह रहे। पूरुब ओर वृक्ष पर टाँगल कुछ विषेष लक्ष पर धुनषधारियन के सटीक संधान करे के रहे। अर्जुन धनुर्धर टोली का सँगे उनहन का शरसंधान के कला देखे चल गइलन। नकुल आ सहदेव खड्ग आ भाला वाला दल का साथे पच्छिम ओर चलि गइलन।

आचार्य चांडक आ मंत्री उत्तुंग भीम का सँग धनुर्धर दल का तरफ बढ़ गइल लोग। हिडिमा पुण्डरक का साथ पच्छिम ओर बढ़ि गइल। आज ऊ अपना देवरन के जुद्धकला देखे खातिर ढेर उत्सुक रहे।

कुछ रच्छकन का आपसी जुद्ध–प्रदर्शन का बाद नकुल आ सहदेव तलवार आ भाला का साथ प्रशिक्षण स्थल पर उतरल लोग। नकुल तलवार का अलावा बायाँ हाथ में एगो कुल्हाड़ी लेले रहलन। सेनानायक दाण्डी का साथ जुद्धाभ्यास करत नकुल एगो अउर तलवारधारी रच्छक के आमंत्रित करत अपना पर आक्रमण करे क इशारा कइलन। दाण्डी आ बिपरीत दिशा के तलवारधारी रच्छक से जुद्ध करत नकुल के बचाव, आ पैंतरा मारत प्रहार देखे लायक रहे। ऊ आगा भा पाछा हर प्रहार के कबो अपना कुल्हाड़ी, कबो अपना खड्ग पर रोक लेस। सेनानायक अनुभवी आ चतुर जोधा रहे ऊहो नकुल के हर वार से आपन बचाव क लेत रहे। अभ्यास का बिच्चे अचानक नकुल अपना जगह से एक ओर छलाँग लगावत, दांडी के खंग अपना कुल्हाड़ी से गिरावत अपना खड्ग से अचूक वार ओकरा गर्दन पर करत रुकि गइलन। सेनानायक अचंभित, ऊ नकुल का चुस्ती फुर्ती के कम आँकत रहलन। हिडिमा अपना देवर का जुद्ध कला से प्रसन्न थपरी बजावे लागल। थोड़ी देर का बाद सहदेव भाला से रच्छकन का साथ अभ्यास करे लगलन। गोलाई में उछरि – उछरि के बिरोधी के वार बचावे आ तुरन्ते पलटवार करे क उनकर कौशल रच्छकन में जोश भर दिहलस। फेर एक तरफ एगो फेड़ का मोट तना में बान्हल एगो गोलाकार लक्ष पर भाला फेंक के लक्ष बेधे के अभ्यास में, नकुल आ सहदेव भाला के अचूक वार से लक्ष भेदन कइला का बाद रच्छकन के भाला–पकड़े आ फेंके के बिधि बतावल लोग। हिडिमा अपना देवरन का एह हिस्सेदारी से बहुत खुस रहे। पुंडरक खुद ओह लोगन से प्रभावित रहे बाकिर ओकर रुझान अपना महाराज बृकोदर में रहे। ऊ उनका से मल्लजुद्ध सीखल चाहत रहे। ओकर देह गँठीला, आ बल संपन्न रहे। तलवार, खड्ग आ धनुष कूल्हि चलावे जानत रहे बाकिर ओकर विशेष रुझान, एगो खास ढंग का गदा में रहे। मूठ का तरफ पतील आ ऊपरी सिरा पर चारू ओर से नोकदार कील जड़ल रहे। ओह गदानुमा वजनदार अस्त्र के तेज गति से चारू ओर घुमावल कवनो शक्तिशालिये जोद्धा का बश के बात रहे। हिडिमा जब अपना देवरन का साथ ओ क्षेत्र में पहुँचल, जेने

अर्जुन के धनुर्विद्या के अभ्यास चलत रहे।

अर्जुन आदिवासियन का तीक्ष्ण बाण चलवला आ चुस्ती–फुर्ती से अचंभित रहलन। लक्ष भेदन में, कई गो रच्छक अचूक बान चलवले रहलन सऽ। अर्जुन उनहन के धनुष से बान का संयोग का साथ प्रक्षेप का विधि का बारे में नया ढंग से जानकारी देत रहलन। लक्ष पर ध्यान बटोरि के मन एकाग्र कइला के महत्त्वपूर्ण बतावत, ऊ धड़ाधड़ तीन गो बाण छोड़लन, जवन लक्ष का ठीक बीचोबीच एक्के छेद का आसपास लगल। अतना सहजता से धड़ाधड़ लक्ष भेदन देखि के आचार्य चाण्डक आ मंत्री उत्तुंग का साथ रच्छको हैरान रहलन सऽ।

भीम जब रच्छकन के लगातार अभ्यास करे के प्रेरित करत रहलन, तबे धीरे से हिडिमा उनका लगे जाके कुछ कहलस। भीम ठठाइ के हँसलन, त सब अचकचाइ के उनका ओर ताके लागल।

– 'अच्छा, त पुण्डर हमसे जुद्ध अभ्यास के इच्छुक बा? आवऽ भाई पुण्डर अपना मनचाहा हथियार का साथ। पहिले तूँ अपना हथियार के कला देखावऽ, फेरू हम तोहके मल्ल–विद्या सिखाइब!' भीम पुण्डरक का ओर ताकत कहलन।

सब पुण्डरक का एह प्रस्ताव प हैरान रहे, खासकर ओकर साथी रच्छक आ दाण्डी समेत मंत्री उत्तुंग; बाकि अनुभवी आचार्य चाण्डक का मुख पर एगो मीठ रहस भरल मुस्कान रहे।

मैदान का ठीक बीचोबीच एगो बड़हन गोला खींचल गइल आ पुण्डरक आपन प्रिय कीलदार गदा लेके गोला में प्रवेश कइलस। भीम सेनानायक से एगो मोट सूखल लकड़ी के डंडा मँगलन। एगो रच्छक दउड़त गइल आ मुगदर लेखा लकड़ी के एगो मोट कुंदा उठा लियाइल। भीम ओके देखि के हँस दिहलन। डंडा लेके जब ऊ गोला का भीतर ढुकलन त पुण्डरक के ललकारत जुद्ध का मुद्रा में खड़ा हो गइलन– 'पुण्डर, तूँ बिना हमरा बारे में सोचले, आपन शत्रु मान के भरपूर प्रहार करऽ! सावधान जदि प्रहार करे में चूक जइबऽ त हमार डंडा तहरा पीठि पर होई। देखते बाड़ऽ कि ई कतना भारी बा। पुण्डरक आव न देखलस न ताव, उछरि के गदा चला दिहलस, भीम फुर्ती से बगल में हटत सँचहूँ ओकरा पीठी प एक डंडा जमा दिहलन। पुण्डरक सावधानी आ चल्हांकी से उनका बाएँ–दाएँ, नीचे ऊपर प्रहार करत गइल बाकि हर बेर भीम डंडा से ओकरा वार के रोक लेस।' अब ऊ पूरा शक्ति लगा के प्रहार करे लागल रहे। भीम सतर्क होके पैंतरा बदलत ओकरा हर वार के बचावत ओकरा बायाँ भा दायाँ अलँग पर डंडा जमा देत रहलन। पुण्डरक भीम का बचाव आ प्रहार करे का फुर्ती पर अतना खुस रहे कि अपना देंह प लागल डंडा के चोट भुला गइल, ऊ आपन गदा नीचे भूंइ पर टिका के खड़ा हो गइल। फेर भीम डंडा फेंकि के ओकरो के आपन हथियार जमीन पर धरे के कहलन आ ओके कुश्ती के कुछ सामान्य बात समझावत, मल्ल जुद्ध करे क न्योता दिहलन। कुछ देर जोर आजमाइश का बाद पुण्डरक का बुझाइल कि महराजा बृकोदर के लगे असीम बल रहे। अपना भारी भरकम देंह का बादो, उनकर विशेष पैंतरा मारल, झटका से झुकल आ स्थान–परिवर्तन के फुर्ती अद्‌भुत के रहे। भीम ओके शान्त चित्त कके, साँस पर काबू करे आ ओकरा बाद अपना दोहत्थड़, केहुना आ ठेहुना से विपक्षी पर जोदार हमला बोले क तरीका समझावत कहलन, "नियमित अभ्यास, देंह आ मन पर नियंत्रण आ व्यायाम से तूँ अच्छा मल्ल बन सकेलऽ पुण्डर!"

अपना के खाली पुण्डर नाँव से बोलावल पुण्डरक के अब प्रिय लागे लागल रहे। ऊ अपना दूनों ठेहुना का भरे बइठि के भीम के चरण छुवलस... जइसे मने मन उनके आपन गुरू आ आदर्श मानत होखे। भीम एह भाव के अनुभव करत प्रेम से ओकर कान्ह थपथपवलन फेरू खींचल गोलाई से हँसत बाहर आ गइलन। आजु खाली आचार्ये आ मंत्री ना बलुक सेनानायक आ सउँसे रच्छक अपना महाराज आ उनका अनुजन के शक्ति सामरथ आ योग्यता के अपना आँखी देखल। रच्छकन में नया जोश आ उछाह के देखि के आचार्य चाण्डक कहलन, "हमके पहिले से ई विश्वास रहल कि आप सबका योगदान आ सहायता से एह बन क्षेत्र के सौभाग्य लवटि आई! महाराज बृकोदर! अइसहीं समय समय पर आपके आ आपका भाइयन के मार्गदर्शन मिलत रही, एकर हम आशा करत बानीं।"

सुरुज पच्छिमी छोर पकड़ लेले रहलन। गर्मी आ उमस बढ़ि गइल रहे, एसे सब वापस लवटि आइल। फेरू अनुजन के आश्रम तक छोड़े खातिर भीम आ हिडिमा सबसे बिदा माँगल लोग। बनवासी रच्छकन का साथ सेनानायक ओ लोगन के छोड़े बहुत लम्मा ले सँगे–सँगे आइल।

●●

ई एगो बिडंबने न कहाई कि बनवासी एक ले बढ़ के एक खतरनाक जीवन का बीच प्रकृति का हर विषम रूप में, दुर्गम अरण्य में अपना के जादा सुरक्षित अनुभव करेलन सऽ, जबकि बाहर के सभ्य कहाये वाला शिक्षित संसार, उन्हनी का मन में हमेशा एगो अनजान भय आ असुरक्षे पैदा करेला। बाहरी संसार के अपना बनक्षेत्र में प्रवेश आ दखलंदाजी इनहन के ना रुचेला।

जबरदस्ती हड़पे, दूहे आ शोषन करे वाली प्रवृत्ति से ई हरमेस सशंकित रहेलन स। अपना बन आ ओकरा रहस भरल संपदा का सुरक्षा का प्रति इनहन क जागरूकता आ एकता का पाछा साइत इहे कारन रहे।

दूर–दूर ले फइलल, ऊँच परबत श्रेनियन का अरियाँ–अरियाँ विरल आ सघन बन क्षेत्र में बसल ओह बनवासी कबीलन में, समानता का कारन बनल एकता आ तालमेल का पाछा हिडिमा का आचार्य चाण्डक आ मंत्री उतुंग के बुद्धि विवेक के सराहनीय जोगदान रहे। कबीलन के बुजुर्ग आ बड़–बूढ़ अनुभवी सहजोगियन का साथ, उत्तुंग आ आचार्य चाण्डक नियमित चिन्तन आ बतकही करत रहस लोग। सबका भोजन, चिकित्सा आ रक्षा–सुरक्षा खातिर तुरन्त उपाय कइल ओ लोगन का सोचल–बिचारल क्रियाशीलता के दरसावत रहे।

बाहरी घुसपैठ आ हस्तक्षेप के ना बरदास करे वाला ओह बनवासी समुदाय में, भीम आ उनका परिवार के स्वीकार अचंभो के बात रहे। दरसल भीम के स्वीकार बड़ा विषम परिस्थिति में भइल रहे। एकरा पाछा कारन खाली भीम आ उनका अनुजन के बल पराक्रम के डर–भय ना रहे, बलुक उच्छृंखल–अराजक नायक हिडिम्ब के स्वेच्छचारो रहे, जेमे सबका हित–चिन्ता का बजाय, बल–प्रदर्शन से पूरा बनवासी समाज में भय–आतंक आ असुरक्षा क वातावरनो रहे। एह स्वीकार का पाछा बड़ कारन इहो रहे कि राजकुमारी हिडिमा आ बड़–बुजुर्ग संरक्षक एह स्वीकार के राह बनवलस। हिडिमा का प्रति लगाव आ संरक्षकन का लगाव आ सहानुभूति का कारन, बन समाज आश्वस्त भइल कि ई बाहरी लोग उनहन के कवनो हानि ना पहुँचाई बलुक सहायता करी।

हिडिमा का प्रेरना पर, आचार्य चाण्डक समेत राज के मंत्री उत्तुंग, सेनानायक दाण्डी आ पुंडरक का अलावा बड़–बूढ़ आ नवजुवकन से मेल–जोल वाला संबाद से महाराज बृकोदर का रूप में भीम के सकार आ विश्वसनीयता बढ़ल। फेरू जब ऊ अपना अनुजन का साथ एक बेर फेर उहाँ का ब्यवस्था में आपन अपनत्व भरल हिसदारी कइलन त भरोसा अउर बढ़ि गइल। खास क के रच्छक सैनिक आ सेनानायकन में। हिडिमा इहे चाहत रहे। ऊ भीम पर रीझिके पहिले, भलहीं काम–पिपासा वश उनका के भोगल चहलस, बाकि भीम का अनुराग में उनका सँगे–सँगे, उनका पूरा पलिवार से जुड़ला का बाद ओकरा एकर भान भइल कि ओकरा निरनय से ओकरा समाजो के, ए भलमानुसन का ज्ञान आ समझदारी भरल संयमित जीवन–शैली के लाभ मिले के चाहीं। हालांकि एहू क प्रेरना ओके माता कुन्तिये से मिलल रहे। ओकरा अनुशासन, मरजादा आ लेहाज त उनहीं का कारन आइल।

भीम के निकटता आ प्रेम पाइ के निम्बा, पुण्डरक आ कुन्दु निहाल हो गइल रहलन सऽ। हर घड़ी आपुस में महाराज बृकोदर का कवनो न कवनो अच्छाई क चरचा करत लउकि जाँ सऽ। ओह दिन जब मंत्री उत्तुंग का निर्देश पर छान्ही–छप्पर का मरम्मत के काम चलत रहे, अपना काम में लगल रहला का साथ उनहन क बतकही चालू रहे– 'आज महाराज अइहें नऽ?' पुण्डरक एगो बाँस उठावत निम्बा से पुछलस।

– 'पता ना। साइत कुन्दु कुछ जानत होई। ईहे बहिन हिडिमा का सँगे ओ लोगन के पहुँचावे गइल रहुवे।' निम्बा कुन्दु का ओर देखत कहलस।

– 'बहिन हिडिमा सबेरहीं निकल गइल होई महाराज का साथ, ओकर इच्छा होई त इहवाँ जरूर आई।' कुन्दु कुछ सोचत आपन अन्दाज लगवलस।

– 'इहाँ क काम खतम क के हमहन के काकी कुन्दकी क छान्हीं छवावे चले के पड़ी।' निम्बा कहलस।

– 'ऊ काहें? कुन्दु क सवाल रहे।'

– 'अरे भोलू, महाराज अइहें त काकी कुन्दकी से जरूर मिले जइहें। अगर हमन का मिल के महाराज आ बहिन हिडिमा खातिर एगो नया कुटी बना दिहल जाव त ऊ लोग बहुत खुस होई।'

– 'हँ... हँ... ई सुझाव अच्छा बा, बाकिर इहाँ से कई गो बाँस–बल्ली ले जाये के पड़ी, फेरू घास–फूस, मूँज सब...' पुण्डरक उछाह में भरल बोलल।

– 'ना, ना, पहिले माई से पूछे के पड़ी, का ई उचित होई कि हमहन बिना मंत्री काका का अनुमति के अपना इच्छा प ई काम कइल जाव?' कुन्दु घबड़ाइल आपन असहमति जतवलस।

– 'हूँ, बात त सही बा... बिना मंत्री काका आ कुन्दकी काकी से पुछले हमहन के, अपना मन से कुछ ना करे के चाहीं...' निम्बा एह साँच के अनुभव करत मुँह लटका लिहलस।

– 'बाकिर महाराज का स्वागत खातिर हमनी का मिल के आखेट त कर सकेनी जा... बहुत दिन भइल, हरिन के शिकार कइले। बरखा आवे से पहिले कुछ न कुछ बढ़ियाँ होखे के चाहीं... महाराज से पुछिहऽ कि ऊ का पसन्न करत बाड़ें... हमनी का ऊहे कइल जाई।' पुण्डरक कुन्दु का ओर ताकत कहलस।

– 'तोहन का खाली बतकहिये में रहबऽ सन कि कमवो होई। एक हफ्ता में, हर कबीला के छान्ह–छप्पर ठीक करे के बा। आचार्य चाण्डक के निर्देश बा आ मंत्री जी के आदेश।' सेनानायक दाण्डी कुछ रच्छकन के लिहले अचके आ धमकलन।

निम्बा आ कुन्दु त चुप होके पुण्डरक क योजना सुनत रहलन स, बाकि पुण्डरक जरूर सकपका गइल। कुछ अनमनाइल उठल आ, छप्पर बान्हत रच्छकन किहाँ पहुचि गइल, 'तोहन लोग क काम खतम हो गइल होखे त चलऽ जल्दी एके उठाइ के कुटीर का ऊपर राखल जाव, हमहन का ठाट बान्ह चुकल बानी जा।'

दाण्डी अपना साथ आइल रच्छकन के, उहाँ क बचल–खुचल बाँस–बल्ली आ छान्ह छप्पर के फूस उठवा के दोसरा कुटीरन का तरफ ले जाए के कहत, तेजी से वापस चल गइलन। छान्ह धराये लागल।

आचार्य चाण्डक ओह विशाल बाड़ वाला चहरदिवारी का एकदम पुरुब अलँगे बनल एकलौता कुटीर में, मंत्री उत्तुंग, राजपुरोहित आ कबीलन का कुछ बूढ़ मुखियन का साथ बिचार बिमर्श में बाझल रहलन। ऊ महाराज बृकोदर का सलाह का मोताबिक, हर बस्ती में एक–ए–गो अइसन बाड़ा बनावे के कहत रहलन, जवना में पशुपालन कइल जा सके, एह खातिर बरसात का तेजी पकड़ला से पहिले ज्यादा से ज्यादा, घास–फूस आ सूखल चारा संचित करे का बारे में समझावत रहलन।

उत्तुंग उनका कहला का अनुसार राजकोष से, कुछ मूल्यवान पत्थर आ मृग बाघ चर्म आदि निकलवाइके, पशु बिनिमय खातिर विश्वस्त लोगन के दे चुकल रहलन। ऊ लोग कुछ तेज तरार रच्छकन का साथ, अपना अपना चीन्हल जानल गाँव आ विशेष हाट का तरफ जा चुकल रहे। सेनानायक दाण्डी का कुटीर पर पहुँचते, दुआरी प खड़ा आचार्य का खास सेवकन में से अधिक आयु वाला एगो सेवक कुटीर का भीतर जाके आचार्य के सेनानायक दाण्डी का अइला के सूचना दिहलस। आचार्य का संकेत पर उत्तुंग तुरन्त उठ के बाहर आ गइलन।

दाण्डी का सँगे कुटीर का बहरा चुपचाप चलत मंत्री, अचानक पूछ बइठलन, "आज केतना लोग छान्ह–छप्पर का निर्मान में लागल बा?"

– 'बीस–पचीस लोग सबेरे से पच्छिमी क्षेत्र में, बीस आदमी उत्तर–पच्छिमी बस्ती में आ दस आदमी मध्य क्षेत्र में लागल बा।'

– 'अइसे त काम पूरा ना हो पाई। आपके तुरन्त संख्या दूना क के बाकी बस्तियन में जल्दी भेजे के चाहीं। इहे ना, बलुक कुटीर के निर्माण सामग्री क कमी पूरा करे खातिर कुछ रच्छकन का अलावा हर बस्तियन का युवकनो के लगावे के चाहीं। सामूहिक काम क मतलब सामूहिक मेहनत होला!' मंत्री उत्तुंग, दाण्डी के उकसावत, पुचकरलन, "आप जइसन अनुभवी पुरान सेनानायक, तनिको सुस्त पड़ी, त आजकल के युवकन का भरोस पर त काम पूरा ना हो पाई।"

आचार्य चाण्डक, कुटीर से बाहर आ चुकल रहलन। उनका पाछा मंत्रना में शामिल बकियो लोग निकलि आइल रहे। दाण्डी उनके प्रणाम कइलन।

– 'आज महाराज बृकोदर क कवनो सूचना नइखे न?' ऊ दाण्डी से पुछलन।

– 'समय हो गइल बा; ऊ आवते होइहें। हमार अनुमान अगर गलत ना होई त ऊ अब लगातार अपना सुझाव आ निर्देश के अनुपालन देखल चहिहें। दाण्डी, तूँ मुख्यद्वार का आसपास रह के ब्यवस्था देखऽ। हम अपना कुटीर में रहब। जदि महाराज आवस आ हमसे मिले क इच्छा प्रकट करस त जरूर सूचना भिजवाइ दिहऽ लोग!'

सब आचार्य के प्रणाम क के लवट गइल। मंत्री उत्तुंग–दाण्डी से बतियावत मुख्य द्वार का ओर चल दिहलन, उनकर कुटीर ओनिये राजकुटीर का लगे रहे। "राजकुटीर में महाराज आ राजकुमारी हिडिमा के विश्राम वाला भाग के छान्ह–छप्पर क मरम्मत त हो गइल होई? हमार विचार रहे कि उनका खातिर नया आ अच्छा विश्राम–कक्ष बने। उहाँ क जलपात्र आदि के बदल के नया राखल जाव... दू दिन पहिले हम एकर निर्देश देले रहलीं। आज ऊ काम हो चुकल होई।"

– 'जी; राजकुटीर का मरम्मत में अलगा से आठ लोग लागल रहे।' दाण्डी कहलन।

– 'ठीक बा, हम खुद चल के देख लेत बानी तूँ मुख्य द्वार का पहरा वालन के बता के, शेष काम पर ध्यान दऽ!' मंत्री उत्तुंग राजकुटीर का ओर घूमि गइलन।

राजकुटीर के छान्ह–छप्पर बदलल जा चुकल रहे। उत्तुंग के संतोष मिलल; बाकि भीतर के पूरा ब्यवस्था देखे खातिर ऊ उहाँ काम करत लोगन से पुछलन, 'काम पूरा हो चुकल बा मंत्री जी, बाहरी साज–सजाव आ माटी–गोबर क पोताई बाकी बा।' एगो युवक बतवलस। तब तक माटी के कोर घड़ा आ, माटी के कुछ अउर बर्तन लिहले उनकर सहायक लउकल।

– 'मुलुण्ड! महाराज के विशेष कुटीर के काम पूर्ण भइल कि ना?' उत्तुंग अकुताइल पुछलन।

– 'जी ऊ पूरा हो चुकल बा। दुआरि का चाँचर, खिड़की सब लग चुकल बा, भीतरी भाग लीप–पोति के चीकन हो गइल बा। ई घट आ बर्तनों आ गइल, आप खुद चल के देखि लीं।' सहजोगी तत्परता से जबाब दिहलस। उहाँ पहिले से गोबर आ गेरूआ रंग क माटी सानत युवक अपना काम के अंतिम रूप देबे में लाग गइलन स।

मंत्री उत्तुंग विशेष कुटीर का भीतर घुसलन।

चाँचर आ खिड़की के पट खोल–बन क के देखलन आ पाथर का पटिया से बनल बेदिका पर बरतन राखत सहजोगी मुलुण्ड से कहलन, 'साँझ से पहिले एह कक्ष में विश्राम खातिर शय्या–बिछावन आदि के इन्तजाम हो जाय त अच्छा रही।' फेरू ऊ कुटीर से बहरा निकलि अइलन।

उत्तुंग अपना विशेष मंत्रना–कुटी में अभी घुसहीं जात रहलन कि पाछा से दउड़त आइल रच्छक महाराज वृकोदर के आगमन क सूचना दिहलस। आचार्य चाण्डक का निश्चित अनुमान पर उनका सुखद अचरज भइल। 'भला कइसे आचार्य जी हर चीज के अतना सटीक अनुमान लगा लेलन?' ऊ मने मन सोचलन आ मुस्कियात मुख्य द्वार का ओर बढ़े लगलन।

महाराज बृकोदर का सँग हिडिमा सामने आवत वृद्ध मंत्री के हाथ जोरि के दूरे से अभिवादन कइल लोग, त उत्तुंग पहिले शीश नवा के आपन विनय देखवलन, फेर उछाह से बाँह फइला के ओह लोग क स्वागत। 'हम अबहियें सोचते रहनी हाँ कि महाराज के काहें देर हो गइल?' ऊ कहलन।

– 'काका, आज महाराज आश्रम का रिसि–परिवारन से, खेती आ अन्न उपराजे का बारे में जानकारी लेत रहलन, एही से देर भइल!' हिडिमा भीम से पहिलहीं बोल पड़ल।

– 'अच्छा महाराज के एही बुद्धिमानी आ सहजता से काम करे का शैली पर त हमनी का अभिभूत बानी स, आचार्यो जी इहाँ के प्रशंसा करत इयाद करत रहनी हाँ।'

– 'का, आचार्य काका इहाँ आपका कुटी में बाड़न?' हिडिमा भीतर से प्रफुल्लित होत पुछलस।

– 'ना ना बेटी, उहाँ का अपना कुटिया में विश्राम करत बानी... हम अब्बे उहें से लवटलीं हाँ!'

– 'ठीक, तब हमनी का पहिले उहें के प्रनाम करे चलत बानी जा!'

– 'रूकऽ हिडिमा, पहिले महाराज के जलपान आदि क लेबे दऽ, फेर हम इहाँ के विश्राम आ मंत्रणा वाला राजकुटीर देखाइब ओकरा बाद चलल जाई। तब तक आचार्य जी कुछ आराम क लिहें।' उत्तुंग समझावत, हिडिमा का तरफ स्नेह भाव से देखले। भीम ओह वृद्ध मंत्री का वाक्पटुता आ व्यवहारकुशलता पर आज विस्मय ना कइले... कुछ दिन का अइला–गइला आ अक्सरहा उनसे होखे वाला बात बतकही से, उनका एकर परिचय पहिलहीं मिल चुकल रहे, ऊ हिडिमा का ओर ताकत, कहले कि उत्तुंग जी उचित कहि रहल बाड़े आ फेरू हँस दिहले... 'हमके वइसहीं भूखल लाग गइल बा आ काका जी ई हिडिमा नऽ, हमेशा हमरा भोजन में रोड़ा अँटकावत रहति बा।'

उत्तुंग खिलखिलाइ के हँस पड़लन। हिडिमा अब भीम के आँख गुड़ेरत उलाहना देत रहे जइसे कहत होखे... अइसन डिठार झूठ? चलीं बाद में बतावत बानी... ऊ आँखिये–आँखी भीम के धिरवलस।

मोनक्का आ उत्तुंग अपना कुटी में, जलपान के पहिलहीं से इंतजाम कइले रहले। उहाँ बाँस–कइन से बिनल एगो छोट खँचोली में ताजा फल आ माटी का डलिया नियर बरतन में कुछ छोट–छोट सूखल फल धइल रहे। साइत ऊ दाख (छोहाड़ा) जइसन कुछ रहे।

जलपान करवला का बाद उत्तुंग एगो रच्छक से आचार्य किहाँ महाराज के अइला के सनेस भेजले फेर हिडिमा से नेह सनल बानी में कहले, 'बेटी अपना बियाह का बाद तूँ एक्को दिन इहवाँ ना रुकलू। ना त अपना राजकुटीर में, आ ना अपना कुन्दकी माँ किहाँ। अगर महाराज क इच्छा होखे त तोहके उनका सँगे कुछ समय इहवाँ जरूर रुके के चाहीं।' लागत रहे जइसे ओ' समय मंत्री का जगहा प हिडिमा के संरक्षक पितृ–नेह से व्याकुल कवनो बाप बोलत होखे, "ई तोहरे घर हऽ आ तहरे राज, राजकुटीर कब्बो सँचहूँ राजकुटीर रहे, जब तोहार पिताजी हमहन क मुखिया आ अधिपति रहलें... आज कई बरिस बाद हम ओने गइल रहलीं हाँ छान्ही–छप्पर सजवावे। अच्छा होई अगर तूँ खुद महाराज बृकोदर के राजकुटीर आ ओने के संपूर्ण क्षेत्रो घुमाइ अइतू!"

– 'जरूरे काका, जइसने आपकऽ आदेश!' हिडिमा गम्हीर हो गइल।

– 'जब तक महाराज ओने से घूम–घाम के लवटिहें, हम कुछ जरूरी काम निबटाइ के आचार्य जी किहाँ चले खातिर तइयार हो जाइब।'

हिडिमा भीम का ओर चले क संकेत करे, एकरा पहिलहीं ऊ राजकुटीर जाये खातिर उठ खड़ा भइलन। मंत्री उत्तुंग से ऊहो सहमत हो चुकल रहलन।

मंत्री उत्तुंग का कुटीर से राजकुटीर लगभग पचीस तीस डेग आगा रहे। भीम हिडिमा का सँग जब उहाँ पहुँचलन तऽ। गोबर माटी आ गेरू वाला बनावल लेप से कुटीर क बाहरी भीति क लिपाई चालू रहे। कुटीर लगभग तीस हाथ बाड़ का भीतर रहे। भीतर जाये खातिर लकड़ी–बाँस क एगो बड़ फाटक पार करे के रहे।

– 'ई फाटक आ छरदेवाल त पहिले ना रहे। लागत बा उत्तुंग काका नया खड़ा करवलन हा।' हिडिमा फलगरे फाटक का भीतर घुसत, अचरज से

नजर घुमवलस, 'इहाँ बहुत कुछ नया आ बदलल लागत बा!'

– 'जइसे?' भीम पुछलन।

– 'जइसे इहाँ खाली दू गो कुटी बनल रहे। अब तीन गो बा आ पहिले से ज्यादा बड़ आ सुन्दर लागत बा।' हिडिमा पहिला कुटीर क फाटक खोलत भीतर घुसल, "अरे एम्मे पाछा खुले वाला एगो पल्ला काहें?" चाँचर वाला पल्ला खोलत ऊ पिछवाड़ा झँकलस "ई त खुला बा"।

भीम कुटीर के भीतरी सजावट देखत रहलन। ओमे एक ओर का बजाय दू ओर बइठे क बेवस्था कइल रहे जइसे मंत्रणा कक्ष होखे। दुसरा कुटीर बुझला सूते आ विश्राम खातिर बनावल गइल रहे ओकर भीतरी क्षेत्र पहिलके कुटीर लेखा रहे। कुटीर में एक ओर एगो खास ऊँचाई पर पाथर क बड़े–बड़े पतील पाटी एक में एक सटाइ के माटी–गोबर–गेरू वाला लेप से अइसन लीपल रहे कि पटियन में कवनो फाँफर जगह ना रहे। कोना में एगो मोट चटाई मोड़ के खड़ा कइल गइल रहे दुसरा तरफ कोना में जल के घट आ कुछ माटी क बनल आ पत्थर छील के बनावल बरतन राखल गइल रहे। हिडिमा तिसरका कुटीर खोल के देखलस ऊहो काफी बड़ आ लगभग दुसरका कुटी अइसन रहे, बाकिर ओकरा पछिला भाग में खुलल दुआरी से सटल दुसरा हिस्सा में, भोजन पकावे क कुछ बरतन आ कइन क बिनल छोट, बड़ चार–पाँच गो खँचोली रखल रहे। 'कहीं, महाराज, आपके ई रहे वाली बेवस्था कइसन लागल? हमार त इहाँ मन ना लागी।' हिडिमा नटखट भाव से पुछलस।

– 'काहें? ई त तहरे रहे वाला पुरनका स्थान ह!'

– 'ना हम कुन्दकी माँ आ अपना अनुजन का सँगे रहल पसन करतीं, बाकिर अब आपके छोड़ के जाइयो त ना सकेलीं।' ऊ मुँह बनावत कहलस। फेरू भीम के देंह से सटत खिलखिलाइ के हँस पड़ल।

– 'अरे हिरमी, हम तोके एतना आसानी से छोड़ते कहाँ बानी?' भीम हँसत ओके अपना बाहुपाश में जकड़ लिहलन। हिरिमा बनावटी खीस देखावत उनका छाती पर मुक्का मारे लागल, "छोड़ीं ना त... अभी बाहर रच्छक बाड़न स.. अउर आपके आचार्यो जी किहाँ त जाए के बा।"

भीम के अचके याद आइल। ऊ अपना बाँहि के बान्हन ढील क दिहलन, बाकि हिडिमा अलगा भइला का बदला, उल्टे आपन बाहुलता उनका गर में डालत बोलल, "वइसे आपके छोड़ के हटलो त दुखकारी बा..." ऊ उनका चौड़ा छाती पर आपन माथ सटा दिहलस। अपना मन प' नियंत्रण करत, भीम ओकरा के अपना से अलगा करत ओकरा प्रेम भरल कामातुर आँखिन में झाँकत कहलन, "रात होखे दऽ, हम कहीं भागत नइखीं हिडिमा!" फेर झटका से कुटीर का बहरा निकलि अइलन।

हिडिमा पाछा–पाछा बहरा निकलि आइल आ सामने से आवत रच्छक से बोलल, "आज इहाँ सब कुछ ठीक हो जाये के चाहीं, अउर सुनऽ महाराज के रात्रि विश्राम खातिर बिछावन आदि का साथे जल आदि कुटीर में रखवा दिहल जाय।"

– 'जी, अच्छा! बस कुछ घड़ी का भीतर सबकुछ ठीक कर लिहल जाई।'

मंत्री उत्तुंग अपना कुटीर का बाहर अपना सहजोगी मुलुन्ड से बतियावत रहलन। भीम आ हिडिमा के अपना ओर आवत देखि तुरन्त घुमलन, "चलीं महाराज, आचार्य श्री किहाँ चले खातिर हम तइयार बानीं!"

हिडिमा आचार्यश्री के निहुरि के जइसे चरन छुवे चलल, आचार्य ओकरा माथ पर नेह से हाथ फेरत भावुक हो उठलन, "उठऽ बेटी, अब तूँ हमरा राज के महारानी बाड़ू आ तोहरा ऊपर इहाँ का लोगन के जीवन–स्तर सम्हारे आ उठावे क जिमवारी बा, महाराज बृकोदर अइसन बुद्धि–बल वाला नायक के साथ पाइके तूँ इहाँ का लोगन के नया दिशा देबू, एकर हमके भरोसा बा।"

– 'आचार्य चाण्डक के हमरो प्रनाम।' भीम हाथ जोरलन त चाण्डक उनका हाथ के अपना हाथ में थामत आदर से पीठिका पर बइठे के निहोरा करत, मंत्री उत्तुंग आदि के बइठे के कहलन।

– 'का हमनी का आचार्यश्री का कुटीर का दहिना तरफ का भूमि–क्षेत्र प' खेती के अनुमति माँग सकीले जा?' भीम आचार्य का ओर ताकत पुछलन।

– 'इहो पूछे क बात बा महाराज, ई सबकुछ त आपे के बा! खुसी से आप ए भूमि क उपयोग करीं।'

– 'दरसल आचार्य, हमके रिसि आश्रम से ज्वार, बाजरा आ मक्का के कुछ बीज मिलल बा। हम उहाँ ओह लोगन से एके बोवे आ उपराजे के बिधि सीख चुकल बानी। एही बरखा का मौसम में एकर बोआई हो सकेला!' भीम आचार्य के आपन इच्छा बतवलन।

– 'ई त आपके उपकार बा महाराज। हम बहुत प्रसन्न बानीं, आपका एह बिचार से; बाकिर बोवाई से पहिले, एह भूमि के सफाई खुदाई आ बरोबर कइल जरूरी होई! अइसे इहाँ अपना क्षेत्र में, कुछ बनवासी अपना कुटीर का सामने का खाली भूमि में कुछ खाये वाला अनाज बोवेलन स।' आचार्य भीम का राय से सहमति जतावत कहलन।

– 'आचार्य जी आपका कुटीर का दहिना ओर बहुत ज्यादा बड़हन क्षेत्र बा, जवन समतल बा; हमरा बिचार में, ओने पहाड़ी ऊँचाई का वजह से बरसात के पानी आवत होई। ए भूमि के विषेषता ई बा कि समतल भइला का बादो आगा का ओर ढालुआँ बा; ई बरसात का समय खेती लायक बनावल जा सकेले।'

– 'अवश्य! मंत्री जी कुछ युवकन का सहजोग से एह काम के आगा बढ़ा सकेलीं। हम जब गंगा के किनारे किनारे उत्तर–पूर्व क्षेत्र का यात्रा पर पहिला बेर क्वार महीना में गइल रहलीं, तब एह फसल के उपराजल देखले रहलीं। ओ क्षेत्र में एह तरह के अनाज जइसे जुन्हरी, बजड़ी, मकई भा मक्की के बालियन के आग में भून के खाइल जाला। सुखा के दाना अलगा कइला का बाद आटा पीस के रोटी पकावल जाला आ कहीं, कहीं एके दल के भात बनावल जाला। एह तरह के भोजन दूध, दधि आ मथल छाँछ–मट्ठा से अउर ज्यादा स्वादिष्ट हो जाला।' आचार्य चाण्डक का एह कृषि–जानकारी पर भीम, हिडिमा आ मंत्री उत्तुंग सभे चकित रहे।

– 'आपका ए अमूल्य कृषि ज्ञान के फायदा उठावे के इहे उचित समय बा आचार्य जी।' मंत्री उत्तुंग अति उछाह में रहलन... 'फिर महाराजो के इच्छा बा। इहाँ का कुछ बीजो के प्रबन्ध कइले बानीं.. हम दू चार दिन का भीतर एह योजना के पूरा करे पर आपन पूरा धेयान देबि, काहेंकि अभी सब लोग छान्ही छप्पर आ कुटीर निर्मान में बाझल बा।'

भीम अपना कटि में बान्हल गमछा में बान्हल ज्वार आ मक्का क बीया वाला गठरी निकललन आ आचार्य चाण्डक का सामने रख दिहलन। "आचार्य, आप एके सुरक्षित रख देईं! बरखा भइला का बाद आपका देखरेख में, हम स्वयं हाथ बँटाइब।"

आचार्य स्नेह से अपना महाराज के देखत रहलन। उनका मोहखरि (मुख) पर एगो संतोष के भाव रहे। हाथ में अन्न क गठरी उठावत धीरे से कहलन, "ई अनुमानतः सवा सेर होई! काल्ह इहे सवा मन हो जाई। हम एकरा के सुरक्षित रख देत बानी ताकि जब एके बोवे के शुभ समय आवे, त ई अइसहीं मिल जाय!"

बरखा के बूनन के भूइं पर गिरते ठंढा सोन्ह हवा के लहरदार झोंका, उहाँ के गरमसल वातावरन के अइसन बदललस कि लड़िका गोल बनाइ के दउरे शुरू क दिहलन सऽ। ओने पियासल धरती के सुखाइल–फेफरियाइल ओठ नम भइल त टप्पा–टोइंया खड़ा फेंड़न के धुरियाइल पतई ता–ता थइया का ताल प' नाचे लगली स। झरझराइ के बरिसत पानी में, दूनों हाथ फइला के दउरत नंग– धड़ंग लड़िकन क हुलास देखि के, आपन–आपन काम करत बनवासियन का चेहरा प' उल्लास सहजे उमगि आइल।

भूवर आ करिया बादर घेर–घुमड़ि के पहाड़न का ऊपर अइसे बिलमि गइल रहलन स, जइसे बस्ती से उठल धुआँ के थक्का बटुराइ के, उपरवार के पहाड़न पर जम गइल होखे। बरखा के फुहार वाला लहरा, अइसन लागल कि तनिके देर में नीचे पानी बहे लागल। बाकि उहाँ क पथराइल जमीन ढालुवा भइला का कारन बरखा बन होते, अइसे निखरि गइल जइसे कुछ भइले ना होखे। अइसे ओह ताजा नमी से एगो आनंद देबे वाली सीतलता आ सोन्ह सुगंध त उहाँ आइये गइल रहे।

भीम का अकेले शालि आश्रम चल गइला का कारन हिडिमा कुन्दुकी काकी किहाँ रुक गइल रहे। कुन्दु आ निम्बा सबेरहीं बन का भितरी क्षेत्र में शिकार करे आ फल लियावे चल गइल रहलन सऽ। बरखा पटइला का बाद जब निरिमा कुटिया में घुसल त हिडिमा, कुन्दकी माँ से भीम का पाक कला का बारे में बतावत रहे, "माई कुछ भोजन त ऊ अतना बढ़ियाँ आ सवदगर बनावेले कि खाइ के, अँगुरी चाटे क मन करेला।"

–'ठीक बा, ठीक बा! त अकेलहीं अकेले खाइल–पकावल जाई कि हमनियो के कबो चीखे क मोका मिली!' निरिमा, हिडिमा के चिढ़वलस... "अइसे महाराज के त हर बतिये निराली बा...तबे न हमार ई जिद्दी अँकड़इल सखी उनका प' रीझि गइल!"

– 'चुप करू निरिमा, एक त ई बिचारी काल्हु से इहाँ अकेले, परेसान बिया आ ऊपर से तूँ...!' कुन्दकी माँ बिचवे में ओके झिड़िक दिहली। निरिमा, हिडिमा के बाँह पकड़ि के उठावत कहलस... "चलऽ सखी चलऽ! आज हम तहरा नया कुटीर में घूमि आईं। आज उहें हमनी का बतकही कइल जाई!"

निरिमा का उठवले हिडिमा उठि त गइल, बाकिर अनमनाहे। उहो जब कुन्दकी माँ उकसवली "हँ हँ जा बेटी, जा बाहर घूम आवऽ! निरिमा का सँगे तहार जीउ आन–मान होई।" हिडिमा अलसाइल, मेहराइल निरिमा सँग कुटिया से बाहर निकल आइल। बहरा अकास में बदरी ओइसहीं घेरले रहे, जइसे दोहरउवा बरिसे खातिर घोरियाइल होखे।

– 'आज त खूब बरखा भइल। काल्ह कतना उमस रहे... चलऽ कुछ त ठंढई आइल। अच्छा भइल पावस जल्दी आ गइल!' निरिमा छेड़लस।

– 'हँ निरिमा, तूँ ठीक कहत बाडू! रात खा ऊखम–उमस का वजह से, नीन ना आइल त हम कुन्दु से कहके बहरा चटाई बिछउवीं!'

– 'उमस का वजह से कि, उनका साथ ना रहला से? सच बतावऽ सखी, नीन काहें ना अउवे?'

– 'तूँ त बस!' हिडिमा आँख तरेरलस।

– ''.... .... अरे रे रे... जल्दी भागऽ सखी! कुटी का भीतर भागऽ!!'' निरिमा कहत अचके दोहरउवा आइल तेज बरखा का डरे भागल। हिडिमो पाछा दउरत ओही कुटीर में पहुँच गइल, जवन भीम का विश्राम खातिर हालहीं तइयार कइल गइल रहे।'

– 'इ कुटीर त लागत बा, खाली महाराज का बइठकी खातिर बनल बा... साइत बगल में बनावल बड़का कुटीर तोहन लोगिन के सूते–बइठे खातिर होई... बाकि एकरा अलावा एगो अउरी कुटीर काहें खातिर हऽ?' निरिमा केहूँ तरे हिडिमा क ध्यान अपना ओर खींचल चाहत रहे। ओकरा बहुत पहिलहीं अपना सखि हिडिमा का भीतर अकुलाहट आ बेचैनी के कुछ कुछ अनुभव हो चुकल रहे।

– 'बरखा... रुके दऽ त चल के दूनो कुटीर देखाइ दे तानी... तिसरकी कुटी भोजन आदि खातिर बनल बा। ओही से जुड़ल रसोई क जगह बनल बा। अइसे ओमें आवश्यकता परला प रहलो जा सकेला।' हिडिमा कुटी का बहरा बरखा के थाह लेत धीरे से कहलस, फेरू ओरियानी से गिरत बरखा के पानी अपना अँजुरी में रोपे लागल।

– 'अच्छा हिडिमा, तहरा ऊ दिन इयाद बा, जब अइसने बरखा में, हमनी का पच्छिम वाली पहाड़ी से लवटत खा बन में घेराइ गइल रहनी जा... आ भीजल देंहि लेले फेड़ का जरी देर ले खड़ा रहे के पड़ल रहे। तूँ अचके पाछा से चिकोटी काटत हमरा आ अंगुठ का प्रेम–संबंध के लेके हँसी कइले रहलू...?' निरिमा कुछ पुरान सुधि उटकेरत कहलस।

– 'हँ हँ हमके इयाद बा' हिडिमा मुस्कियाइल।

– 'तूँ कहले रहलू... ऊ कवन आगि हऽ... जवन बरखा में भिंजलो पर देंहि रह–रह के लहकत रहेला?'

– 'हँ हँ कहले त रहलीं, तूँही न ओ बेरा अँगुठ से भेंट करे खातिर अकुताइल रहलू!' कहे के त कहि गइल हिडिमा बाकिर आज ओके निरिमा के आकुलता छछाते अनुभव होत रहे।

– 'एह सुहावन बरसात में, महाराज का ना रहला प' तहरा ओह आगि के लहकला के अकुलाहट बुझाता नऽ?' पाछा से चिउँटी काटत निरिमा हँस दिहलस।

– 'उइ! त तूँ ओह दिन क बदला लेत बाड़ू?' हिडिमा कउँचत बहरा निकल गइल।

– 'अच्छा... अच्छा हमार प्यारी सखी हिडिमा, आकुल मत होखऽ, देरिये से सही, ऊ लवटबे करिहें। आखिर एह सोना नियर दमकत चिक्कन गुदगर देहिं के इयाद से, उनहूँ का नीन ना आइल होई। इहे अगिया उनहूँ के लेसले होई।'

बहरा झर–झर झर बरिसत जल में भींजत हिडिमा जइसे एह छिन खातिर बेल्कुले भुला गइल रहे कि ऊ अपना अंतरंग सखी से आज कई दिन बाद बतिया रहल बिया... ओ बेरा ओके भीम के कठोर चौड़ा छाती आ बाँहि के कसल घेरा के सुधि अतना अधीर क देले रहे कि ऊ ऊपर से गिरत शीतल जलधार का बादो ठंढाये क नाँव ना लेत रहे।

– 'चलऽ भितरी, पगलाइल बाड़ू का, आज का हो गइल बा तोहरा, का हम अतना आन हो गइल बानी?' निरमा, हिडिमा के कुटी का भीतर खींच ले गइल। हिडिमो का अब बुझाइल कि निरिमा दुखाइ गइल बिया। अपना भींजल केश से पानी झटकारत कहलस, "इहाँ त कवनो दूसर कपड़ो नइखे कि बदलीं हम!"

– 'बरखा रुकहीं वाला बा... पटा जाये दऽ त कुन्दकी काकी किहाँ चल के एके बदल दिहऽ।'

बरखा थमते निरिमा कुटीर के चाँचर लगा के चलते रहल कि सामने से कुन्दु धवरत आइल, "बहिन हमहन के संजोग बहुत नीक रहल कि आज चीतल मिल गइल एकरा अलावे एगो भारी जलचिरई। कुन्दकी माई जल्दी बोलवलस हा, हम आ निम्बा शिकार छील के भूने के, तब तक तहन लोग अउर सब तइयारी कर लऽ जा।"

– 'महाराज के कुछ पता बा?' निरिमा, हिडिमा के ब्यग्रता कम करे खातिर पुछलस।

– 'अरे अभी ऊ ना पहुँचलन? पुण्डरक त कहले रहुवे कि ऊ आश्रम से निकल चुकल रहुवन।'

– 'तब आखिर कहाँ रहि गइलन आर्यपुत्र...?' हिडिमा अउर व्याकुल हो गइल... 'तूँ सब काम छोड़ि के पहिले उनकर पता लगावऽ कुन्दु, कहीं कवनो संकट में ना नऽ फँस गइलन?' हिडिमा आशंका आ भय से बिहवल हो उठल।

– 'अरे नाहीं, महाराज त खुदे संकट न खातिर बड़का संकट हउवन।' अउर पुण्डरक, उनके साथे ले आवे बदे एगो रच्छको के लगवले बा.. तब्बो बहिन हम पता लगावे जात बानीं। हिडिमा के मनःस्थिति समझत, कुन्दु आज्ञाकारी अनुज लेखा, मुख्य फाटक का तरफ दउड़ गइल।

– 'दुपहर हो गइल आ तूँ अबले कुछ ना खइलू हिडिमा। अरे ई कइसे अतना भींजि गइलू तूँ?' कुन्दकी माँ परेसान होत कुटी पर टाँगल हिडिमा के वस्त्र उतारे धवरली।

– 'कुछ ना, बस इहाँ से जात खा, बरखा में घेराइ के भींजि गइनी हाँ!' हिडिमा के मन अबहियों भीमे प टँगाइल रहे, "पता ना, ऊहो कुछ खइले होंइहें कि

ना?" ऊ सोचलस।

हिडिमा कुन्दकी माई का कुटिया में आपन भींजल बस्त्र बदलते रहे कि कुन्दु के बोली सुनाइल। 'महाराज त आ चुकल बाड़े, बहिन, पुण्डरक बतावत रहल कि ऊ उत्तरी बन से बहुत फल–फूल लेके आइल बाड़े। मंत्री काका का कुटी में बइठल बाड़े अभी, थोरिके देरी में आ जइहें। हम निम्बा का सँगे अउर काम करे जात बानीं।'

– 'ठीक बा, जा तूँ!' दुअरिये प खड़ा निरिमा कहलस,।

हिडिमा का जान में जान आइल। केस क पानी सूती कपड़ा से सुखवला का बाद ऊ ताक प धइल कंघा से केस सझुरावत निरिमा से कहलस।

– 'ऊ कुछ खइले–पियले ना होइहें। अतना सोझबक आ भोला हउवन कि भूख लगलो पर जब, केहू उनके खियाई त खइहें। तूँ कुन्द से खबर देके उनके बोला काहे नइखे लेत निरिमा?' हिडिमा अकुताइले बोलल।

– 'ठीके कहत बिया ई बावली; जबले उनके खिया ना ली, अपने ना खाई। जो निरिमा तूँ कुन्द से कहि दे।' कुन्दकी काकी, हिडिमा के मन के हाल भाँपत कहली। निरिमा हँसत बहरा निकलि गइल। ओकरो कुन्दकी से सहमति रहे। प्रेम का गहिर झील में कूदल अपना सखी का प्रेम आ समर्पन प ऊ गर्व से भरि गइल रहे। आज ऊ अपना राजकुमारी के नया रुप आ ब्यवहार प मगन रहे।

अइसन ना कि भीम, हिडिमा के लेके बहुत निश्चिन्त रहलन, उनको भीतर, जल्दी से जल्दी ओकरा से मिले के बेचैनी रहे। साइत एही से, ज्यों ही, कुन्दु आके उनके भोजन खातिर, कुन्दकी माई के बोलावा दिहलस ऊ मंत्री उत्तुंग से अनुमति लेके उठि गइलन। उत्तुंग का कहला पर कुन्दु भीम के ले आइल फल के गठरी ले लिहलस।

कुन्दकी माँ, पहिलहीं से भोजन क पूरा बेवस्था क चुकल रहली। भीम आ कुन्दु का पहुँचते उनका ओर वत्सल–भाव से ताकत ओरहन दिहली, 'बेटा, आपका ना अइला से हिडिमा एह बेरा ले कुछ नइखे खइले, कुन्दु आ निम्बा सबेरहीं से शिकार पर गइल रहलन सऽ। ऊहो दूनो अइसहीं बाड़न सऽ। अब जल्दी हाथ–मुँह धो के कुछ खा–पी लऽ बेटा!'

भीम स्नेह–सिक्त दीठि से हिडिमा के देखत कहलन, 'हमरो के बहुत जोर से भूख लागल बा काकी।'

– 'एही से, एतना इतमीनान से मंत्री काका का पास बइठ गइल रहनी हाँ नऽ?' हिडिमा के ओरहना देत खीसि बाहर आ गइल।

भीम ठठा के हँस दिहलन। एगो माटी का बर्तन में जल लेले, निरिमा मुस्कियात दुआरी प खड़ा रहे। आ सोचत रहे, सखि हिडिमा साँचे कहत रहल, एह सिधवा का उन्मुक्त ठहाका प' केहू क खीस उतर जाई।

भोजन का बाद जब भीम के निम्बा से ई मालुम भइल कि आज, साँझ के ऊ सब उत्सव क आयोजन कइले बाड़न सऽ त ऊ खुस होत, हिडिमा से पुछलन, 'ओमे, नाचो गाना होई नऽ!'

– 'हँ, होइबे करी, ढोल–डफ़, चित्कोरा, सिंगही, कामड़ी कुण्डी सब बाजी... आपो के ओम्मे नाचे के पड़ी!' हिडिमा चुटकी लिहलस।

– 'हमके त नाचे ना आवे, पर अगर तूँ नचबू त हम तोहरा नाच पर झूमब जरूर...।' भीम का कहते सब हँस दिहल।

– 'महाराज खातिर, इहाँ के सबसे खास मदिरा क इंतजाम करे खातिर पुण्डरक पच्छिम बस्ती गइल बा, उहाँ से युवक–युवतियन के नर्तक समूह एह उत्सव में भाग ली! एकरा अलावा इहाँ के नया जोड़ा अपना मिरदंग, कामड़ी रोहली–बाँसरी का साथ समूह में नाच करी।' निम्बा बतवलस।

– 'हँ। लगभग पचास–साठ लोगन के खाये–पिये के इन्तजाम एह उत्सव में बा। कुछ इन्तजाम हमन का कर चुकल बानी, कुछ पच्छिमी बस्ती क लोग आ कुछ उत्तरी बस्ती क लोग करी।' कुन्दु पूरा ब्यौरा दिहलस।

अशिक्षित आ पिछड़ा कहाये वाला बन पहाड़न के आदिवासी, अपना नृत्य आ प्रकृति उपादानन से बनावल बाद्य यंत्रन का साथ भावविभोर होलन स त उनहन क ताल लय आ नृत्य कूल्हि प्रकृति से एकाकार हो जाला। भील, भारिया, मुड़िया नृत्य में प्रकृतियो उनहन क साथ देत लागेले। कुटीर में विश्राम करत भीम का मन में आदिवासियन के उहे उन्मत्त नृत्य चलत रहे। हिडिमा उनका बगल में बइठल उनका चेहरा प' उभरत भावन के पढ़े के कोसिस करत उनकर देंह सुहुरावत पुछलस, 'का सोचत बानी आर्यपुत्र?'?

–'हमके पहिल दिन क, बियाह वाला उत्सव के दिन तोहन लोगन क नृत्य इयाद आ गइल रहल, युवक–युवती ओह दिन कइसे एगो खास लय ताल में नाचत रहलन सऽ हालांकि बाद में ऊ एकदम उन्मत्त अवस्था में पहुँच गइल रहलन स। माता ओह समय बिकल हो गइल रहली, आ हम पूरा नाच ना देख पवलीं।'

– 'हूँ...' हिडिमा पहिला दिन का उत्सव क इयाद करत कहलस, 'साँच कहीं त, खुद हमहीं आप लोगन का चिन्ता में विकल रहनी, हमहूँ ओकर आनंद ना

लिहनी, दरसल नृत्य आ संगीत दूनों मन के जुड़ले आ डुबले का बाद आनंद देला! जाये दीं, आज आप देख लेइब।'

– 'तोहन लोग बजावे वाला संगीत के वाद्ययंत्र कइसे बनावेलऽ जा, हम समझल चाहत बानी।'

– 'कुछ विचित्र बिधि–बिधान बा बनावे कऽ। हमहन का बाप दादा का समय से लोग एके बनावत–बजावत आइल बा। हम ढोल आ नगाड़ा बनावल देखले बानी। सीवल (सेमर) आ आम का मोट लकड़ी के बाहर–भीतर छील–खुरच के खोखला कइल जाला, फेर ओकरा एक ओर भा दूनों ओर बकरा भा कवनो जानवर के पातर नरम चमड़ा मढ़ल जाला। पहिले गील लसलसा आटा या मसाला पोत के चपकावल जाँतल फेर बाँस के रस्सी से खींच खींच के दूनों ओर से कसल जाला। अइसहीं माटी के बड़ आ छोट घड़ा के आधा भाग पर चमड़ा मढ़ के मसाला लगा के धीम आँच में सेंक के, छेदल–नाथल जाला आ चमड़ा के रस्सियन से कसल जाला। तुमडू काका के ई सब बनावत हम देखले रहलीं।' हिडिमा चुप हो गइल, ई सोचि के कहीं भीम ओकर हँसी मत उड़ावस।

–'हँ..हँ. अउर बतावऽ। तोहरा त एकर बहुत ज्ञान बा हिडिमा! आ ई ढप आ चितकोरा का हऽ?'

– 'इहो कवनो, मोलायम, गोल आ मोट लकड़ी के खोंखर कइके बनावल जाला। एम्में एक्के ओर चमड़ा मढ़ल जाला। ई पातर, लमहर आ घेरावदार होला। चमड़ा मढ़ के एकर आवाज तेज करे खातिर आग पर दूर से सेंकल आ रसरी से कसल जाला। ई हलुक होला एसे एक हाथ में पकड़ के दुसरा हाथ से ताल देके बजावल जाला। इहाँ के औरत अपना नाच में, नाचत खा खुद बजावेली सऽ। चितकोरा पलास भा सागुन (सागौन) का डंडी नियर लकड़ी में एक ओर घुंघरू बान्ह के बनावल जाला। डंडी में बीचोबीच एगो रसरी क गोल फंदा बना के बान्हल रहेला हमनी का ओही में कलाई डाल के भा अँगुरियन के फँसा के ओमे बान्हल घुंघुरुन से, ढोल भा डफ का थाप का ताल से ताल मिलावेलीं जा।'

– 'अद्भुत! तूँ त बहुत जानत बाडू हिडिमा! हमके त तूँ हर दिन अपना नया जानकारी से एगो नया अचरज में डालेलू।' भीम हिडिमा के प्रशंसा करत, अपना अँकवार में खींच लिहलन। अपना प्रिय से आपन बड़ाई सुनि के पहिले त हिडिमा लजाइल फेरू उनका कान्ह से चिपट गइल, "बस करीं, अब झूठमूठ बड़ाई जिन करीं।

– 'अच्छा, छोड़ऽ अउर बतावऽ इहाँ अउरो किसिम के कवनो दोसर बाजा का बारे में।' भीम हिडिमा के छेड़त पुछलन।

– 'का बताईं? इहाँ पुरुषन में प्रिय कई तरह क अउर मधुर बाजा बा आ ढम ढम, बम बम करे वाला त बटले बा। जानवरन का सींग से बने वाला सिंगी या टुड्डी का अलावा खोंखर बाँस से भित्तर छील सेल्हि के बने वाला पाँवली आ सुकही बा।'

– 'ई पाँवली आ सुकही का हऽ?'

–'एक तरह के बंसरी भा बांसुरी हऽ। मोट बाँस में आड़ी रख के फूँके वाला 'रोहली' कहाले, हरियर बाँस में छव छेद वाली पाँवली दूसर होले आ कभी कभी दू गो पातर पातर बाँस के फोंफी जइसन बना के एके में जोर के बान्हल जाला, ओहू के फूँक मार के धुन निकालल जाला, ओही के सुकही कहाला। पच्छिमी बस्ती में दू–तीन लोग पाँवली अउर सुकही बहुत सुन्दर बजा लेला।

– 'वाह, वाह! त का आज हमके ई सब बाजा सुने के मिली?'

– 'जरूर!' हिडिमा जोर देके कहलस।

– 'तोहार नाचो देखे के मिली?'

– 'धत्!' हिडिमा हँसत भीम का छाती पर मुक्का मारे लागल।

– 'अरे, पगली मारिये डलबू का? ई हथौड़ी काहें चलावत बाड़ी तूँ?' भीम ओकर दूनो कलाई जोर से पकड़ लिहलन।

– 'छोड़ीं अब बहुत हो गइल, साँझ होखे वाला बा!' ऊ एने–ओने ताकत छटपटाए लागल त हँसत भीम ओकर कलाई छोड़ दिहलन।

आपन कलाई सुहरावत, हिडिमा आँख तरेरत बोलल, "आपके तनिको दया ना आवे, एगो कमजोर औरत के हाथ एतना कठोरता से कलाई ममोरत खा!"

– 'कमजोर औरत ऊहो तूँ?' एक बेर फेर ठठाइ के हँस परलन भीम।

बदरी का बावजूद साँझ खा, बरखा ना भइल। राजकुटीर का आगा खुलल चौरस मैदान में अपना–अपना बिचित्र भेख–भूसा में जुटल नर्तक वादक, आदिवासियन के झुंड पहिले महाराजा बृकोदर आ उनका सँग खड़ा हिडिमा के अपना–अपना बस्ती का तरफ से माला पहिरा के कुछ न कुछ उपहार दिहलस, जइसे कउड़ियन आ चमकदार पत्थरन के माला, कबीला के खास हथियार आ भेड़ आ हिरन के खाल से बनल सुघर पहिरावा आदि। एगो अधेड़ आदिवासी, अपना चेहरा पर– गेरू–खड़िया अउर हरियर रंग के लकीर खिंचले रहे, माटी का एगो छोट मेटा में मधु ले आइल रहे। भीम उनहन क प्रेम आ उछाह देखि के अभिभूत रहलन।

चारू ओर बाँस का खम्हा में रचि के बान्हल माटी का दीया वाला गहिर दीवट मशाल का अँजोरा, जवन साइत कोइना के तेल में कपड़ा बोर के जरावल रहे नाच शुरू भइल। पहिले बहुत धीमा बाद्य, फेर तेज धुन आ ओमें कमर में घूंघर बान्ह के आ ढोल का थाप पर कूदत नर्तक। चपलता, गति आ अभ्यास के अद्‌भुत तालमेल रहे, नर्तकन का ओह नट नृत्य में। थोड़ी देर बाद युवक–युवनियन के सामूहिक युगल–नाच होखे लागल। कबो धीम, कबो तेज आवाज में बाजत संगीत में थिरकत, निरिमा हँसत हिडिमा के खींच ले गइल। ओकर पति अंगुठ आ निम्बा भीम के खींचे लगलन स। अचकचाइल भीम ए नया परिस्थिति में असहज रहलन।

अनुरागल मन, संयोग–भाव में भितरी से फूटल हुलास सउँसे देह के तरंगित कऽ देला। शरीर के थिरकन, भितरी से फूटल एही तरंगन के रूप–आकार गति आ भाव–भंगिमा से नृत्य के पूरित करेले। समूह में नृत्य करत युवा स्त्री के जब ई आभास होखे कि ओकर प्रिय पुरूष चाहना से ओके देखि रहल वा त संगीत का लय–ताल में ईहे थिरकन, देखि का लोच–लय का तरंगन के अउर तीव्र कऽ देला/लास्य भाव में लसियाइल भीम के दूनो आँखि, हिडिमा का थिरकत देह के लोच भरल तरंगन में डूबल रहे। ढोल डफ आ चित्कोरा का थाप आ ताल पर हिडिमा के नृत्य देखे में मगन उनका कुछ बुझात ना रहे। हिडिमा पूरा तन्मयता में नाचत रहे। रूप आ यौवन के हिलकोरा में दहात उनकर मन उन्मत्त भाव धइले रहे कि अचके जइसे हहाइल भुखाइल आदिमी का आगा से परोसल थरिया खिंचा गइल। नाच में, एक दुसरा से बन्हाइल जोड़न में, हिडिमा कब, केने दो, अलोत हो गइल। भीम के कब युवक किनारा खींच ले गइलन स, उनके पता ना चलल। समूह में मदिरापान करत युवकन का बीच, उनकर ऊ विशेष–मदिरा जवन पच्छिमी बस्ती से पुण्डरक ले आइल रहे, पियावल गइल। झोंक में ऊ पी लिहलन। कुच्छे देर में मदिरा आपन रंग देखावे लागल। ऊ चारू ओर तकलन। उहाँ से कुच्छे दूरी पर, का मरद का औरत कूल्हि पीयत लउकलन। दूर हिडिमा के लरजत देंहि के थिरकन के हेरत डँउड़ियात उनकर आँखि अधीर होके कुछ खोजत रहे।

– 'महाराज त इहाँ बइठ गइल बानी हिडिमा! पूरा मंडली बा इहाँ।' निरिमा, हिडिमा का सँग कब आ गइल भीम का ना पता चलल। निम्बा आ पुण्डरक धीरे से उठ के खसकि गइलन स।

– 'अरे हिडिमा! तूँ अतना सुन्दर नाचत बाडू कि हमार तऽ टकटकी बन्हा गइल हा...।' भीम, हिडिमा के फेरू अइसे देखे लगलन, जइसे अइसन मोहिनी सुघराई कबो देखलहीं ना होखसु। उनका आँख का उभरत लाल डोरन में हिडिमा अपना प्रति उमड़त अइसन बान्हे वाला खिंचाव...? ऊ बहुत कुछ समझ गइल आ उनका हाथ से मदिरा वाली तुमड़ी छीनि के गटागट अपनहूँ पीये लागल।

– 'अरे अरे, अभी त हम थोरिके पियले बाली। तहार मन होखे तऽ तुहऊँ चीख के देखऽ लऽ!' भीम एक हाथ से हिडिमा के हाथ धरत कहलन। दूगो प्रेमियन का बिच्चे अपना के रोड़ा बनल देख निरिमा हँसत भाग गइल। हिडिमा, भीम के आँख गिड़ोर के तकलस, "अतना चढ़ गइल बा त चल के नृत्य के आनंद उठाईं ना त चलि के भोजन करीं।" ऊ भीम के बरियाई खींचत एकोरा ले गइल, बाकिर भीम कहाँ मानसु हाथ का तुमड़ी से गटागट मदिरा पिए लगलन। हिडिमा उनकर हाथ फेर पकड़लस आ तुमड़ी छीन लिहलस।

खान पान आ नाचे के उत्सव अपना चढ़ाव पर रहे। केहू मदिरा त केहू प्रेम, केहू नृत्य त केहू खइला में मस्त रहे। एही बिच्चे बूनी बाना..... बरखा आवते अफरा–तफरी मच गइल। हिडिमा के भितरी से उमड़त काम क बेग जब ना अड़ाइल त जबरदस्ती मदमस्त भीम के अपना अँकवारी में धइले खींचत ओही विशेश कुटीर में ले आइल, जहाँ उनका सूते के ब्यवस्था रहे। ओकर प्यारी सखी पहिलहीं से दीवट पर दीया जरा के रख देले रहे। दिया का मद्धिम अँजोर में, भीम एक बेर हिडिमा के नख से सिख ले भरपूर दीठि से निहरलन। अधोवस्त्र से झाँकत हिडिमा के माँसल देह पर पसेना चुहचुहा आइल रहे, उनका देह में चिउँटी रेंगे लगली सऽ। ऊ आतुर होके हिडिमा के देखलन,

– 'बस, अब बहुत भइल हिरिमी, तूँ हमके सँझिये से ढोर लेखा हाँके में लागल बाड़ी!' ऊ अपना बलिष्ठ– भुजबन्ध में हिडिमा के बान्हत कोरा में उठा लिहलन।

– 'अरे रे.... दुआरी त बन्न कऽ लेबे दीं।' हिडिमा के भीम के प्रेम भरल लसोर आलिंगन बहुत नीक लागत रहे बाकि झूठमूठ उनका बन्धन में कसमसाइत हिडिमा उनके चूमे लागल।

भीम अपना एगो पैर से दुआरि के चाँचर सटावे लगलन त ऊ उचकि के उनका गाल प दाँत गड़ा दिहलस। भीम तऽ मत्त रहबे कइलन, ऊपर से हिडिमा के गर्म देह के आँच, ऊ ओके बिछावन पर फेंकत, अपनहूँ ओकरा देह पर ओलरि गइलन। हिडिमा हाली–हाली आपन ऊपरी वस्त्र खोलि के एक ओर फेंकलस आ बरजोरी करत भीम का छाती से कस के

चिपट गइल। कुटीर का बाहर होत तेज बरखा का संगीत में जलराग छिड़ल रहे आ भीतर प्रणय–उत्सव का चरम पर हिडिमा के कामातुर सिसकारी, स्त्री–पुरुष का एह शाश्वत रतिक्रीड़ा के नया–नया सुर गढ़त रहे। प्रकृति आ पुरुष एकाकार होखे खातिर तन्मय हो चुकल रहे।

●●

पता ना का हो गइल रहे हिडिमा के। भीम के आँखी से ओझल होते, ओकर करेजा करके लागे। माता आ अनुजन से मिले ऊ आश्रम जाये लागसु त पाछा–पाछा दउरत जाय, 'साँझ तक लौट के आ जाइब न?' भीम के आश्वासन दिहलो का बाद ओकरा चैन ना परे। सँगहूँ रहला पर, राज का आदिवासी युवकन का सँगे ओकरा अपने राज–बेवस्था में जदि भीम के देरी हो जाव त ऊ अकुलाए लागे... कबो उनका नइहला–खइला आ विश्राम का बहाने, कबो कवनो दोसरा बहाने ओकरा मुँह से अइसन कुछ निकलिये जाव, कि अनुभवी कुन्दकी आ ओकर सखी निरिमा, ओकरा बेचैनी आ बिछोह का कसक के महसूस कइये लँ स। अभी काल्हुये, जब भीम आचार्य चाण्डक का कुटी वाला क्षेत्र में खेती क बेवस्था करावे चल गइलन त दूपहर होते ओकर बेचैनी बढ़े लागल, 'पता ना इनका का हो गइल बा, न नहइला के होस ना खइला क चिन्ता।' ऊ ज्योंही भुनभुनाइल, कुन्दकी हँसत समझवली, 'बावली हो गइल बाडू तू प्रेम में! अरे ऊ लड़िका थोरे बाड़न, फिर कहीं दूर नइखन गइल, आचार्य आ मंत्री उत्तुंग केहु न केहू उनके जलपान जरूर करा देले होई।' फेरू हिडिमा के कान्ह आ पीठ प हाथ फेरत कहसु, 'अरे इ कुन्दुओ उनहीं का पाछा–पाछा लागल रहत बा, निम्बो नइखे कि केहू के भेज के हम महाराज के बोलवा लीं। तूँ कुछ खा–पी ले बेटी, अइसे ना करे के!' बाकिर हिडिमा क बेचैनी घटे का बजाय अउर बढ़ते चल जाव, ऊ फोंफियात या त कुटिया का भीतर चहलकदमी करे लागे, या बहरा निकल के बड़बड़ाये सुरू कऽ देव, 'पता ना आज निरिमा कहाँ रहि गइल ? रहित त कुछ उपाय सुझाइत।' फिर सोचे लागे कि ऊ कहाँ से कहाँ उनके एह राज–काज में अझुरा दिहलस... 'जवन बोअले बाडू ऊ काटऽ।' ऊ अपने के झहियावे लागे।

कभी–कभी अचके ई डरावना बिचार आ जाव... कहीं उनकर मन हमसे भर ना न गइल? ना ना इ कइसे संभव बा। उनका बात–ब्यवहार आ प्रेम भरल आलिंगन में ओके अइसन कबो लगबे ना भइल। अतना भोला आ अगड़धत्त हउवन ऊ... बौड़म जइसन कुछ कहते ठठाइ के हँस पड़िहन, उनका का पता कि उनका से एको छिन बिलग रहला पर ओकर प्रान कइसे तड़फड़ाये लागेला?

प्रेम में आपन सुध कहाँ रहेला? ओमे त चौबीसो घरी दोसरे क सुधि सवार रहेले। ऊ अगर साथे बा त चैन, बिलग बा त बेचैनी। का इहे प्रेम ह? ओह! अतना कसक, अतना पीर? अब्बे त ऊ सँगहीं बाड़न, पता ना सचहूँ के जब बिलग होइहें तब ई बिछोह कइसे सहाई? ऊ बेर बेर अपने से सवाल जबाब करे लागे। बिधाता क दिहल हमार ई जीवन कतना बेकार आ निरर्थक रहे पहिले? कबो कबो त बोझा लागे। निरदय भाई के डाँट–डपट आ मार–पीट में ऊ अपना बारे में भुलाइये गइल रहे कि ओकरो कवनो आपन पहिचान, आपन चीन्हा आपन देह आ आपन मन बा। ना दोसरा युवतियन लेखा साज–सिंगार, ना इ कोमल कल्पना, ना कवनो सपना ना कवनो उद्देश्य! बस कइसहूँ कुछऊ खा–पी लऽ आ भाई के पछलगुई बनि के जंगल–पहाड़, शिकार का लालच में ऊँच ऊँच फेंड़न का डाढ़ि पर टँगाइल रहऽ। कबो कबो त ऊ फेंड़वे पर सुतियो जाव। ओकर निनियो ओकरा निर्दयी राछस भाई का ना रूचे, निकम्मा, कामचोर आ एक नंबर क आलसी! आपन भूखि मेटावे खातिर आखेट आ शिकार हिडिमा से करावे... ओकरा चेहरा प अचके आक्रोश, घृणा आ क्षोभ एक्के साथ उभरि आइल!

आह! कइसन ऊ छिन रहे, जब ऊ पहिले–पहिल भीम के देखलस.. जइसे उनके पावे आ आपन बनावे खातिर जनम–जनम क भूखि आ पियासि एक्के बेर जागि गइल रहे। आज ऊ उनके पाइये ना अपनाइयो लेहलस... बाकि एह पवला आ अपनवला का ललक में ओकर सबकुछ बदलि गइल। नया नया भाव जागे लागल, उनका प्रति संवेदन आ सहानुभूति होखे लागल। अतना लगाव कि अब अलगाव क एको घरी, एक बरिस लेखा लागे लागल... 'हाय रे हिडिमा, तोरा का हो गइल? तूँ त अपनहीं हेराइ गइले, अब एसे ज्यादा तोरा का चाहीं?' हिडिमा कुटीर का बहरा कोना का फेंड़ तर चुपचाप बइठल अपने से सवाल कइलस फेर मने–मन जबाव खोजलस... ''जवन बा आ जेतना बा, तूँ ओही के पूरा–पूरा जी ले, अपना के उबिछ के सरबस उनहीं के दे दे... फेर अपना–आपे ऊहो पूरा के पूरा तोरे में समा जइहें। 'हँ ई सही बा साइत, एकदम सही बा ई! हम अब ईहे करब।'' ऊ जइसे निश्चय कइलस...।

प्रेमे से सुरू आ प्रेमे पर खतम! जिनिगी के अथ से इति... इहे हऽ बुझला जिनिगी के साँच। अब एम्मे जतना हरख–विषाद, उछाह–उमंग, अनुराग आ पीर मिले... साइत एही के सहेजत हिडिमा अपना 'प्रेम' के

पावे, प्रेम के बचावे आ प्रेम के उत्सव लेखा जी के ओकरा अकथ आनन्द के अनुभव कइलस, आ अब ऊ ओही आनंद के थिर राखे का कोसिस में, संसार क हर दुख उठावे खतिर तइयार रहे। ओकरा इयाद रहे कि भीम के साथ ओकर ई साथ अधिका से अधिका सन्तान भइले तकले क बा। आ ई अवधि ऊ खुदे निर्धारित कइले रहे आ माता कुन्ती के बचन दे देले रहे। आज ई जान के कि ऊ पगली अपना मूर्खता आ अपना प्रेमी के जल्दी से जल्दी पवला का बेसबरी में ई बचन देले रहे, ओकरा बारंबार पछतावा आ खीझ होता। तब ऊ प्रेम का एह बान्हन आ ओकरा पीरा से अनजान रहे। अब ई लगाव एह कदर बान्ह लेले बा कि भीम से एको घरी क बिछोह ओके भितरे–भीतर बेधे लागऽता। त ओकर ई निश्चय कि 'जवन बा' आ 'जेतना बा', ओके ऊ पूरा क पूरा जी लेव, अपना के उबिछ के सरबस भीमे के देइ के एकदम भारहीन हलुक हो जाव' एसे महत्वपूर्ण हो गइल रहे काहें कि ओकरा एह साँच के कुछ–कुछ परतीति हो गइल रहे कि 'प्रेम' बन्हला के बजाय मुक्त करेला। ई मुक्ति पूरा समर्पण का बादे मिलेले। आ समर्पन कवनो प्रयास से कइल कृत्य ना बलुक मनःस्थिति हवे।

वासना में ललसा, हिरिस आ अधिकार करे के कोसिस होला। वासना के पूर्ति ना भइला से क्रोध आ हिंसा जागेले, प्रेम त्याग आ बलिदान माँगेला। प्रेम में समर्पन बा, ओमे पवला के कोसिस ना, लेबे के पूरा अधिकार बा। प्रेम, निज का अहं से मुक्त करेला काहेंकि ओमें विश्वास रहेला। आ हिडिमा के विश्वास अडिग रहे। भीम के कवनो दायित्व भा जिमवारी में अवरोध बनला आ रोकला का बजाय, ओमे उनकर सहायता कइल, ओकरा सुभाविक समर्पने क नतीजा रहे। ओकर समर्पित मन के स्थिति, भा भाव में, भीम का हर दायित्व पूरा कइला के समर्थन रहे बाकि तब्बो हृदय पर आँकुस आ मन पर नियंत्रण सरल ना न हो सके।

दुपहर का बाद, बेरा नवे लागल त निरिमा कवनो रच्छक से निम्बा के बोलवाइ के हिडिमा क मनोदशा समझावत भीम के बोलावे खातिर भेजलस। भीम जब भोजन करत रहलन त कुन्दकी माँ हिडिमा का बहाने, राह सुझवली, 'अरे बेटी हिडिमा, तू महाराज के कहाँ राज व्यवस्था में फँसा देले बाडू? उनका से काम–धाम आ बेवस्था बहुत करा लिहलू। अब अपनो खातिर कुछ समय निकालऽ बेटी आ कुछ दिन खातिर एकान्त–प्रवास में कवनो मनोरम जगहा पर चल जा। इहाँ के भा कहीं के चिन्ता कुछ दिन खातिर छोड़ दऽ!'

– 'कुंदकी काकी, हमहूँ त इहे चाहत रहनी, बाकिर ई तहार बेटी हिडिमा नऽ हमके महाराज बनवा के बान्ह देले बिया।' भीम मुस्कियात चुटकी लिहलन।

हिडिमा, भीम का एह चुटकी प कउँचि गइल, 'ई तइयार होखस तब न काकी, इनका त अपने एने ओने घुमला से मन नइखे भरत!'

– 'अच्छा–अच्छा अब कहासुनी खतम! काल्ह तूँ इनके लेके सबेरहीं पहाड़ पर केनियो एकान्ता निकल जा। आज हम दस बारह दिन खातिर खाये–पिये क सामान आ तोहार वस्त्र बान्ह के रख देब। महाराजो के वस्त्र आदि रखा जाई। मंत्री उत्तुंग आ आचार्य जी के हम कुन्दु से, तोहन लोग का एकान्त प्रवास के खबर भेजवा देइब!' कुन्दकी काकी ओही घरी निरिमा आ निम्बा के हिडिमा का राय से, प्रवास के बेवस्था करे के कहलस, फेर भीम से बोलल, 'बेटा अपना माताजी आ भाइयन से एक पख खातिर हिडिमा संग प्रवास के आज्ञा माँग लऽ आ एके लेके एकोरा चल जा।'

भीम सकार में मूड़ी हिलावत हिडिमा से कहलन, 'तहरो चल के काकी कुन्दकी के अनुरोध माता के बतावे के पड़ी, हमरा विश्वास बा माता अनुमति दे दिहें।'

माता कुन्ती से भेंट कइला का बाद ऊहो खुस होके भीम आ हिडिमा के एकांत प्रवास खातिर अनुमति दे दिहली। हिडिमा अपना निगिचाह लोगन का सँगे भीम के लेके, बन का ओ क्षेत्र में पहुँचल जहाँ ऊ दू बरिस पहिले एक हाली निरिमा आ निम्बा का सँगे आइल रहे। ओघरी, ओकरा बेर–बेर बरिजलो का बाद पाछा–पाछा कुन्दुओ आ गइल रहे। दुसरा दिने बस्ती में लवटला पर हिडिम बहुत उत्पात मचवले रहे। ऊ ओकर झोंटा पकड़ के मारे सुरु क देले रहे। अगर निम्बा आ कुन्दु ओघरी बीच में कूदि के बचाव ना कइले रहितन स; त पता ना ओघरी ओकर का हाल भइल रहित। भाई रहे कि कसाई? हिडिमा के ओकर दुर्गन्ध भरल विकृत रूप आ लाल–लाल आँख इयाद परल आ ओकर आँख फेरू छलछला उठल। ऊ भीम के बाँह– जोर से पकड़ लिहलस। 'का बात ह हिडिमा, तूँ अतना बिचलित काहें लउकत बाडू? तोहार तबियत ठीक बा नऽ?' भीम ओके अपना दहिना अँकवार में समेटत पुछलन।

– 'ऊँऽऽ ना ना.... आज, हमके पुरान दिनन के कुछ बात इयाद परि गइल हा।' हिडिमा भीम का आँख में आपन ढबढबाइल आँख डालत कहलस। ओके तोख भइल कि ओकर प्राणप्रिय ओकरा लगहीं बाड़न। भीम का प्रति ओकरा भीतर जतना प्रेम रहे, साइत ओसे बेसी विश्वासो रहे। ई विष्वास कब दूनी अतना ढेर हो गइल, ओकरा पता ना रहे। झींसी परे लागल रहे।

पावस ऋतु के अइसन सुखद, अइसन मधुर –मीठ आ ना भुलाये वाला अनुभूति एकरा पहिले हिडिमा कबो ना कइले रहे। झिर–झिर झरत एह बरखा का फुहार

में भीम का सँग एह एकान्त प्रवास में, स्वतंत्रता से अपना प्रिय का सँग लपटाइल रहला के ई अन्तरंग छिन कवनो सपना से कम ना रहे। अइसन मीठ आ प्रीतिकर सपना, जवना के ओर–छोर ना रहे। भीम का भींजल उघार देह से बँवर अस लपटाइल, तेज धीम आ झकोरा मारत बूनी में ऊ जब जब भींजल तब–तब ओकरा प्रणय आ रति के एगो अलगे जुड़वावे वाला आनंद भेंटाइल। ओघरी तेजी से बीतत हर पल, हर घड़ी इहे लागल कि ऊ पूर्ण हो रहल बिया, ओकरा भीतर के अधूरापन मिट गइल बा। अब सगरो बस ऊहे बिया...अपना प्रिय का साथ एकाकार।

अइसहूँ उहाँ एकोराँ फाँफर आ बींड़र बन का एकान्त में भीम का अलावा ओकरा लगे दूसर केहू ना रहे। बन से सटल एगो दूर ले फइलल ऊँच पहाड़ पर आपरूपी बनल गुफा के ऊ अपना निवास आ आश्रय खातिर चुनले रहे। गुफा का बहरी, ऊपरी सिरा प, अपना आपे कटल एगो विशाल चट्टान छतरी अस टँगाइल, छाजन बना देले रहे। तीन ओर से घेराइल, एक ओर खुला ओह लमहर चाकर ओसार के देवदार वृक्ष के डाढ़ि आ बाँस के आपुस में फँसा के बान्हल–बनावल छरदेवाल ओकरा के सुरक्षित घर अस बना देले रहे। कुन्दु आ निम्बा जंगली लतरन से बान्हि गूँथ के बाँस का छोट–छोट टुकड़न से एगो फाटक नियर बना देले रहलन सऽ। पइसार का बाद बइठे–सूते आ खाये–पिये के इन्तजाम कइला का बादे ऊ बस्ती लवटल रहलन सऽ। पतई का बीनल चटाई पर ओठँघल भीम बहुत बारीकी से एक –एक चीज के निरीक्षण करत रहलन।

– 'अब लागत बा हमरो के रिसि–मुनि लेखा एही कन्दरा में तपस्या करे के पड़ी।' ऊ हँसत कहलन। हिडिमा के बाँकी भौंह–भृकुटी तन गइल, ऊ उनके तिरिछा ताकत गुरेरे लागल त भीम ठठा के हँस परलन। हिडिमा दउरि के उनका देहिं पर लोटिया गइल। एह भोला हँसी पर त ऊ बावली हजार बेर लुटे–लुटाये खातिर तइयार रहे। भीम के अपना बाँहि का घेरा में लेत, ऊ उनका चाकर छाती पर आपन गाल सटा दिहलस; फेर सलतंत से आपन आँखि मून के निश्चिन्त परि गइल।

सचहूँ ऊ जगह रहबे कइल अइसन रमणीक आ मनभावन। ना ढेर नीचे ना बहुत ऊँच। पहाड़ का कटान पर एगो झरना के पातर धार, धीम सुर में झिर–झिर झरत रहे। पानी का ओह निरन्तर झरत सोत का कारन, अगल–बगल के बन–बनस्पतियन में हरियाली आ टटकापन रहे। ऊपर से पावस का फुहार से धोवाइल नहाइल नीचे के, हरियर पथराइल भूमि साफ–चिक्कन, छोटी–छोटी पतइन वाली बेल आ दूबि–घास का वजह से मोट बिछावल गलइचा लेखा लउके। कुछ दूर आगा फेंड़न का झुरमुट का बीचो बीच खलार जगहा पर एगो छोटहन जलकुन्ड रहे। हिडिमा, ओम्मे निर्बसना पँवरत रहे। गुफा का ढलान प, अपना आपे उगल एगो घन छाँह वाला फेंड़ के धइले खाड़ भीम, सरल सहज भाव से जल में किलोल करत हिडिमा के, मुग्ध भाव से निरखत रहलन। पता ना काहें, ओह मुग्ध भाव में कवनो कामातुर भाव भा उत्तेजना वाली मनः स्थिति ना रहे। उनकर आँखि भले हिडिमा पर टकटकी बन्हले रहे बाकि मन, हिडिमा का व्यक्तित्व के भितरी–बहरी तेजी से होत बदलाव के लेके चिन्तित आ बेचैन रहे। प्रवास में रहत आज नौवाँ–दसवाँ दिन रहे। एहर, का जाने काहें हिडिमा के उछाह आ चपलता खतम होत लउकत रहे। ऊ थाकल–थाकल, अलसाइल आ निरुत्साहित लेखा लागे। खाहूँ–पीये में ना–नुकुर करत, महटियावे लागे।

भीम का लग्गे हर घरी सटल, अलसाइल थिराइल हिडिमा, नहाये धोवे खातिर उठबो करे त भीम का टोकला आ इयाद दियवला पर। एको छिन खातिर भीम जब गुफा का बहरा जाये लागसु त एकदम बेकल आ बेचैन हो जाव। 'आखिर का हो गइल बा हिडिमा के?' असुरक्षा के अइसन भाव काहें?' भीम सोचलन। उनकर दीठि अभी हिडिमे का ओर जमल रहे....'कहीं कवनो असुरक्षा आ अकेलपन के स्थिति रहित त कहलो जाइत। हम दिन–रात एकरा सँगहीं रहत बानी तब्बो कवन कारन बा, हिडिमा का हाव–भाव में अइसन बदलाव के?'

जलकुंड से निकलत खा हिडिमा आपन दूनों हाथ मोरि के अपना उघार उभरल छाती के तोपत, एक हाली दूर खड़ा ताकत भीम के देखि के मुस्कियाइल आ जल्दी से भाग के फेंड़ का आड़ा हो गइल। हाली–हाली कपड़ा पहिरत, ऊ आपन केष मुट्ठी में पकड़ि के झटकरलस, फेरु फहराइ के झरलस आ फेंड़ का आड़ से बहरा निकलि आइल। शीतल जल स्नान से देहिं में फुर्ती आ नया ताजगी आ चुकल रहे। ऊ ऊपर खड़ा भीम के देखे का ललक में, अउर खुला जगह प आ गइल। भीम फेंड़ का जरी बइठल, एकटक ओकरे ओर तिकवत रहलन। अपना प्रानप्रिय के एह अधीर प्रतीक्षा पर ओकर मन मसोसे लागल। भीम अब उठि के ओकरे ओर बढ़ चलल रहलन। ओकरा ओठन प उभरल मुस्कान अब गहिर हो गइल रहे।

– 'जाईं, अब आपो नहाइ–घोइ लीं। तब तक हम जलपान के बेवस्था कऽ लेइब!' हिडिमा मुगध भाव में उनके तिरिछे ताकत कहलस

– 'जाते बानी,....अरे, हँ हो, आजु निम्बा आ कुन्दु आवे वाला रहलन स नऽ?' भीम नीचे उतरत पुछलन।

– 'हूँ, कहले त रहलन सऽ...., अइबो करिहें सऽ बाकिर आज हमार मन जाये के नइखे कहत'...हिडिमा अनमनाहे उत्तर दिहलस आ मुस्कियात पाछा तकलस। भीम ओकरा भीतर के अस्थिरता के अनुभव करत हाली–हाली ढलान से नीचे उतरे लगलन

– 'बन में, ढेर भितरी मत जाइब!' हिडिमा चिचियाइल ''कुछ फल आ कन्द मूल अभी बाँचल बा। साइत कुन्दु कुछ अउर फल आ कुन्दकी काकी के बनावल भोजन लेके आई।" भीम सोचत रहलन हिडिमा काहे अतना बिचलित आ अधीर बिया? ऊ फेरु सोच में परि गइलन। उनके माता कुन्ती क इयाद आइल। उनसे मिलले एक पक्ख बीति गइल रहे। ऊ ढेर अनुभवी आ जानकार बाड़ी, हिडिमा का भीतर आइल बदलाव आ बेचैनी के जरूर जान जइहें। ऊ अपना के थोरिकी दिलासा दिहलन। झींसी फेर झरे लागल रहे। ऊ तेजी से डेग डालत जलकुंड का किनारे पहुँचलन। एगो घन फेंड का डाढ़ि प आपन धोती–गमछा टँगलन आ शीतल जल कुण्ड में उतर गइलन। भीतर के जल कुछ गरम रहे। ओमे डुबकी मारि के हाथ मुँह धोवत उनका कुछ राहत भेंटाइल।

बेरा नवत रहे। परबत षिखर बादर आ कुहा के मोट रजाई ओढ़ि चुकल रहलन सऽ। बदरियाइल दिन में उजास त रहे, बाकि सूरुजनरायन क कतहीं झलक ले ना रहे। भुवराह कुहा आ धुआँ के उड़त फाहा चारु ओर फइल चुकल रहे। भीम हाली–हाली धोती बदललन आ गमछा ओढ़ के आपन भींजल धोती पानी में कचरलन। जल्दी –जल्दी गारि–निचोरि के ऊ धोती कान्ही प धइलन आ फलगरे गुफा क चढ़ान चढ़े लगलन। रहि–रहि झरत जल बूनन से देह सिमसिमा गइल रहे। पुरुवा हवा का हलुको झोंका से सिहरन होत रहे।

गुफा का छाँहाँ ढुकते दुसरा अँगौछा से उनकर पीठि आ कान्ह पोंछत हिडिमा उनका हाथ के गील धोती आ गमछा ले लिहलस, आ दूनो ओर बान्हल मूँज का रसरी से बनल रेंगनी पर पसारत बोलल,'ठंढा आ सिहरावन लागत बा नऽ? आज फेर हवा चले लागल। हम जल रख देले बानी। आप मुँह हाथ धोइ के बइठीं। बस दुइये छिन में हम भोजन लगावत बानी।' भीम पहिलहीं से बिछावल चटाई प बइठत, गमछा ओढ़लन आ हिडिमा के अपनाइत के अनुभूति करे लगलन। ऊ अब हर तरह से बदल चुकल रहे। एगो आदर्ष प्रिया सहचरी, भीम का बे बोलले, बे कुछ कहले, बहुत कुछ समझ लेबे वाली गृहस्थिन भार्या बन गइल रहे।

पुरइन–पात के बिछा के ओप्पर फल आ मूल धरत हिडिमा कुछ अनसाइल–असहज लागल,'आज बूनी बरखा का कारन कुछ इन्तजाम ना करे पवलीं। सूखल लकड़ियो खतम हो गइल, कुन्दुओ एबेरा ले ना आइल। जवन कुछ बा, इहे सब बा।' मरूवाइल फल आ सुखाइल दाख के कुछ दाना खँचोली से निकालत हिडिमा बोलल।

– कवनो बात ना, हमहूँ त कवनो फल ले आवे ना गइनी, जवन बा बहुत नीक बा। अब आवऽ तुहूँ हमरा सँगे बइठऽ!' भीम, हिडिमा के सहज करे क कोसिस कइलन।

हिडिमा के मन कइल कि ऊ अपना एह सोझिया मोहगर पति के मुँह चूमि लेव। हर कमी के दोष अपने पर ओढ़ लेबे वाला एह प्रेमी पुरुख पर ओकरा भीतर से छोह उमड़ि आइल। ऊ फल उठाइ के उनका मुँह तक ले गइल– 'खात काहें नइखीं, अइसहीं आज बहुत देरी हो गइल बा।'

भीम एक बेर फल काट के, ओकरा हाथ से ले लिहलन आ हिडिमा के खियावे लगलन। हिडिमा ओके मुँह में लेत उनका कान्ह प' ओलरि गइल। जइसे एही मिठास से साइत ओकर क्षुधा तृप्त हो गइल होखे। भीम खुद खइला का बाद बाँचल फल ओकरा मुँह का लऽ ले जाके टोकस, हुरियावस त ओकर मुनाइल आँखि खुले आ थोर–बहुत खा लेव। एने तीन चार दिन से इहे क्रम बन गइल रहे। ना ओकरा भूख लागे न पियास। अगर भीम के भोजन के चिन्ता ना रहित त साइत ऊ अपने खइबो ना करित।

साँझि होते कुन्दु आ निम्बा आ गइल रहलन सऽ आ भीम का निर्देष पर गुफा में धइल सर–समान के बान्हत– सरिहावत रहलन सऽ। भीम के मन जानि के हिडिमो वापस लवटे खातिर तइयार हो गइल रहे। जब सब कुछ बन्हा–बटुरा गइल त हिडिमा सबका सँगे बहरा निकलल। सबके नीचे चले के कहि के, दुआरि के चाँचर बन्न करत ओकर आँख छलछला आइल, "प्रिय के मिलन का इयाद में तर–ऊपर सराबोर हे गुफा, तूँ एक–एक छिन के साखी रहलू। हम निहाल भइनी तोहरा छत्रछाया में, सरग–सुख भोगनी। एह खखुआइल हिया के पूरा शान्ति मिलल! हे गुफा ए' अनुपम स्मृति के सइँचले रहिहऽ!" चाँचर के बान्हन कसि के बान्हत खा ऊ फफक के रो परल। भीम अपना पाछा हिडिमा के ना पाइ के ऊपर तकलन। ऊ दुआरी का ओर मुँह कइले बइठल रहे। 'का भइल हिडिमा? आवत काहें नइखू? तबियत ठीक नइखे का?' ऊ चिचिया के पुछलन। भीम के मनःस्थिति भाँपत

हिडिमा जल्दी–जल्दी आपन आँख पोंछलस आ खड़ा हो गइल। फेरु चाँचर के थपथपवलस, जइसे ओसे कौल–करार करत होखे कि 'हम जल्दिये लवटब!' फेरु जल्दी–जल्दी ढलान प उतरे लागल।

कुन्दकी काकी जब भीम से हिडिमा का बारे में सुनली त उनहूँ का ओकरा बिगड़त स्वास्थ क चिन्ता भइल। ओकर बाँहि पकड़ के बरियाई भीतर लेके चल गइली। लगली खोदिया खोदिया के एकेक बात क जानकारी लेबे। हिडिमा निष्छल भाव से अपना भीतर बाहर का दषा का बारे में बतवलस। कुन्दकी काकी ओकरा उदर प हाथ फेरत मुस्कियइली 'ई कुल लच्छन से त इहे बुझाता कि...',उनकर मुस्कान अउर गहिर हो गइल।

– 'का भइल बा काकी? हमरो के बतावऽ ना। का बात ह? तूँ काहें मुस्कियइलू हा?' हिडिमा एकसुरिये कई गो सवाल कइलस

– 'बैद जी से सवाचे के पड़ी। तूँ अब ढेर एने ओने मत कूदऽ फानऽ!' कुन्दकी काकी गम्हीर रहली

बहरा निकल के ऊ भीम से कहली, बाबू घबड़ाये के कवनो बात नइखे। हम अब्बे बैदजी से देखाइ के दवा बीरो पूछ लेत बानी। तहरो अपना माताजी आ भाइयन से भेंट मुलाकात क लेबे के चाहीं। एक पखवारा से बेसिये हो गइल। ऊहो लोग घबड़ाइल होई।' फेर कुन्दकी काकी लकड़ी चीरत कुन्दु के बोलवली,'तनी दउर के बैदजी के बोला ले आवऽ।'

हाथ के टाँगा फेंक के कुन्दु दउर गइल। हिडिमा भितरी से कुल बतकही सुनत रहे। ऊ बहरा निकलत भीम के रोकलस,"ना आपके अकेल नइखे जाये के, हमहूँ माता से भेंट करे चलब, दवा–बीरो बाद में होत रही। हमरा कुछ नइखे भइल।" भीम असमंजस में परि गइलन

– 'महराज तबले आप मंत्री काका से भेंट क आईं। बैदजी अवते होइहें। ऊ हिडिमा क नबुज नटिका देख के तुरन्ते बता दिहें। फेरु जवन आप चाहीं तवन होई। हिडिमा जिद्दी हऽ, ई मानी ना। ना होई त सबेरहीं आश्रम जाइब।' कुन्दकी काकी बीच के राह बनवली

– हँ इहे ठीक रही। हम तबले मंत्री काका से मिल लेत बानी। हिडिमा तूँ पहिले बैदजी के देखाइ लऽ, फिरु बाद में सँगहीं चलल जाई शालि आश्रम।' भीम हिडिमा के समझवलन आ उठ के मंत्री उत्तुंग का कुटीर का ओर चल दिहलन।

थोड़िके देर में बैदजी के लेले कुन्दु आ गइल। कुन्दकी काकी बैद जी के आसन प बइठावत, धीरे–धीरे हिडिमा का बारे में बतावे लगली। ओकर चित एघरी सहज नइखे, खात–पियत नइखे, अलसाइल मेहराइल रहत बिया, ओकर कुल्हि चंचलता ना जाने कहाँ बिला गइल बा। हिडिमा के कलाई क नटिका अपना अँगुरिन से दबावत, बैद जी कहले, घबड़इला के बात नइखे। ऋतु बदलाव आ सरद गरम से मन भारी हो जाला। फेरु का जाने काहें आँख मूनि के कुछ गुने लगले। थोड़ी देर बाद उनकर आँख खुलल। कहले, "हम कुछ जड़ी–बूटी भेजवा देत बानी, इनके रोज सबेरे आ साँझ पियावे के बा। समय से खियावे–पियावे का बारे में रउवा खुद जानकार बानी। कवनो भारी मेहनत वाला काम मत करसु।"

निकलत खा बैद जी कुन्दकी काकी के बहरा बतवले,'हमरा समुझ से हिडिमा बिटिया के गोड़ भारी बा, ई मंगलसूचक बा। हम कुछ ताकत आ फुर्ती वाली जड़ी–बूटी भेजब, काढ़ा बना के, मधु डाल के पियाईं।' बैद जी कुन्दु के संकेत से लगे बोलवले आ सँगे लेले चल गइले। हिडिमा दुआरी प खड़ा कुन्दकी काकी के अगोरत रहे, निगिचा अवते सवाल दगसल,'का कहत रहले हा बैद जी? का भइल बा हमरा?'

काकी कुछ ना बोललली। भितरी ढुकत कहली 'हमहूँ बूढ़ भइनी। उमिर गिरत बा। अब त तोहरे कुल्हि देखे सम्हारे के पड़ी। सबसे पहिले अपना के, अपना अनुज के अपना राज के सगरो भार उठावे खातिर ठीक–ठाक रहे के पड़ी। फेरु आगा तहरा आपनो बेटा बेटी होई?' काकी भितरे–भीतर हँसत रहली आ ऊपर से चेहरा गम्हीर बनल रहे।

हिडिमा भावुक हो उठल,'अइसे मत कहऽ काकी। अभी त तोहरा बहुत कुछ देखे सम्हारे के बा। तुहीं सोचऽ, अब हमार के बा इहाँ आपन रहि गइल? देखे सम्हारे के कूल्हि संस्कार तोहरे दिहल हऽ काकी। खुल के काहें नइखू कहत कि का भइल बा हमरा?'

– 'बताइब, जरूर बताइब। अहथिर से नऽ बताइब। पहिले तूँ ठीक–ठाक हो जा।' कुन्दकी काकी हँसली,'तूँ अब चुपचाप बइठऽ, हमके कुछ पकावे दऽ। कन्द उसिने के बा आ काढ़ा बनावे के बा। महाराज अवते होइहें। उनहूँ का भूख लागल होई।'कुन्दकी काकी कुटीर का भितरी घुस गइली। हिडिमो के जथारथ क बोध भइल। सँचहूँ, हमरा चक्कर में, केहू जलपान तक ना कइल। ऊ मुँह लटकवले जाके चटाई पर बइठ गइल।

ओघरी माता कुन्ती ओकरा अनासे इयाद आवे लगली। कतना संतुलित जीवन बा उनकर आ कूल्हि से ऊपर उनकर ममता भरल महतारी वाला रूप! ओके लागल कि उनका मयगर हाथ के परस पवले ढेर दिन भइल।

Øe'k vfxyk vad e---

लाल निशान

बिन्दु सिन्हा

किर्र.... दरभंगा सकरी रोड पर सन्नाटा भइला से बस आउर ट्रक के चाल अइसहीं तेज हो जाला। झटका से ब्रेक लेला से खूब तेज चलत ट्रक एक–ब–एक किरकिरा उठल। ट्रक का डाला पर बइठल खलासी बीड़ी पीयत कवनो फिल्मी धुन गुनगुनात रहे। ट्रक रूकल त बींडी फेंक के उ नीचे कूद गइल, भद्दा गारी बकत– "तोरी...."

सड़क पर चारों ओर खून फइलल रहे। आउर एगो बकरी के बच्चा ट्रक का पहिया के बीच दबाइल रहे। खून देखते ओकरा मुँह से फेर निकलल, "हे राम! इ का भइल?"

ड्राइवर भी आपन सीट छोड़ के नीचे उतर आइल आ पूछे लागल– "का भइल रे?"

लक्खी एक ओर बइठल खजूर के पत्ता से चटाई बीनत रहे। ट्रक का रुके के आवाज सुनलस आ बकरियन के भागत देखलस त घबरा के सड़क पर चल आइल। बकरी का बच्चा के पहिया का नीचे देख के ओकर त होस हवास गायब हो गइल। ड्राइबर ओकरा के देखलस त कड़क के पुछलस–

"का रे छौंड़ी, इ बकरी के बच्चा तोरे ह?"

लक्खी का समझ में ना आइल कि का कहो। सड़क पर चारों ओ खून फइलल रहे। ओकरा ओह खून के धार में अपना काका के मुँह लउके लागल। ताड़ी के नशा में धुत्त, ओड़हुल का फूल जइसन लाल लाल आँख "बाप रे...." घबरा के उ आपन आँख बन्द क लेलस, "अब का होई.... काका सुनी त जाने मार दीही। मारे में ओकरा कवनो देर ना लागे।"

लक्खी जनम के टुअर ह। मतारी बाप केहू के नइखे देखले। अब काका काकी के मार गारी ना सहाय त चुपचाप गगरी उठा के बउली के ओर चल जाले। का करी बेचारी, कइसहूँ दिन त काटहीं के बा। बउली का किनारे बइठ के घास फूस तूर के गहना बनावेले, अपने पहिनी, गगरिओ के पहिनाई। गगरी का गरदन में गलबहियाँ देके बइठल बइठल ओकर मन के दुख भुला जाला, गगरी जइसे ओकर सखी सहेली होखे, आपन सब दुख ओकरा से बतिया जाले, "जान ताडू न आज सीतलवा चोरा के गुड़ के भेली खा गइल ह आ मार पड़ल ह, हमरा.... पीठ छिला गइल बा आ बचनुआ क देखलू ह, कइसन चोरा के बकरी दुह लेलस हऽ...।"

ऊ निहुर के बकरी के बच्चा के उठावे लागल त खलासी हरभज ओकर हाथ झटक देलस आ अपने बचवा के टांग पकड़ के एक ओर क देलस। ड्राइवर चिचिया के कहलस, "अरे हरभजवा जल्दी चल, देर होई त ठेकेदरवा लाल पीयर होवे लागी।" हरभज उचक के ट्रक पर चढ़ गइल।

भर्र.... ट्रक खुल गइल तबो लक्खी उहाँ से हटल ना, चुपचाप ओइजे खड़ा रहे। ओकरा आँख में हरभज क सांवर चेहरा, हृष्ट पुष्ट देंह आ लापरवाह नजर घुमत रहे। ओकर सउँसे देह अकड़त जात रहे। आउर बकरी कहाँ गइली स, उ एकदमें भुला गइल। घर के सब काम धाम करके रोजे दोपहरिया में बकरी चरावे निकलेले, अइसन कबहूँ ना भइल। ओकर काकी बकरी का बच्चा क मरल सुनलस त दउड़ल आइल आ लागल लाते मुक्के ओकर खबर लेवे, "हरामजादी, एही खाती तोहरा के पालपोस के एता बड़ कइनी कि तू हमरे गला में छूरी लगाव, आज तोरा जीअत ना छोड़ब, चल घरे, त बतावतानी। सेतिहा के खा–खा के दिमाग बउरा गइल बा।"

काकी के हाथ तनी ढील भइल कि लक्खी सीधे भागल उहाँ से बउली के ओर। दुनिया जहान में आउर ओकरा कहीं जगह ना रहे। बउली का किनारे बइठ के पानी में गोड़ लटका देलस। पानी में काई जमल रहे, ओकरा गोड़ में लपटा गइल तबो उ हटल ना, ठण्डा पानी बड़ा अच्छा लागत रहे, देह में लागल घाव क पीरा एकदमे भुला गइल।

सउँसे बउली मखाना के पत्ता से भरल रहे। ओकर मन करत रहे कि गर्दन तक पानी में उतर जाईं, खूब डुबकी लगाईं बाकिर मखाना के काँट वाला पत्ता देख के डेरा गइल बाप रे... डुबकी लगवला पर त सउँसे देह छिला जाई, खून बहे लागी। खून के इयाद परल से फिर ओकरा सड़क पर के बात इयाद आ गइल, हरभज के साँवर चेहरा आँख का सामने घूम गइल।

डुबकी लागवे के इरादा छोड़ के उ पीछे मुड़ल त रधिया पर नजर पड़ गइल। रधिया मखाना के एगो बड़का डाढ़ तुरले भागल जात रहे। उ पुकरलस, "अरे रधिया, सुन त, कहाँ भागल जा ताड़े।"

रधिया रूक के ओकरा के सन्देह से देखे लागल त उ फेर कहलस, "अरे भाग मत। आव इहाँ बइठ के मखाना के फर खाइल जाव। दू चार गो आउर डाड़ तूर ले आव।"

"ना बाबा, रधिया एने ओने देख के कहलस, सुन्दर काकी देखीहन त चाम खींच लीहन इहाँ ना बइठब।"

"अरे मजाल बा चाम खींच लेबे के.... ....आव आज मन भर मखाना खाइल जाव।"

अन्हार भइला पर लक्खी लुकत छिपत घरे लौटल, उहँ.... काकी देखबो करी त का करी, केतना डेराईं, जेतने डेराइला ओतने काकी आँख देखावेले। उ चुपचाप आके एगो कोना में बइठ गइल। रात भइल। घर के सब लोग खा पी के सूत गइल। ओकरा के केहू खाये

के ना पूछल। सीतलवा के उ एतना मानत रहे, अपना मुँह के कौर निकाल के दे दी बाकी आज उहो ना पुछलस। लक्खी अईंठ के रह गइल, खाली पेट भला नींद आवेला? ओकरा रह–रह के इयाद पड़े, ड्राइबर कहत रहे, जल्दी कर हरभज, देर होई त ठीकदरवा के लाल पीअर आँख देखे के परी, त इ ट्रक इ राहे रोज जाला माटी ढोवे। ट्रक के हरियर डाला पर बइठल.... ओकर खेयाल भटके लागल। हरभज रोज ओह रास्ते जात होई। कहीं फेर कोई दिन एगो बकरी के बच्चा ट्रक के नीचे आ जाई त ट्रक रूक जाई, उ हरभज के फेर देख सकी। ड्राइबर गारी बकी त का, काका मारी पीटी त का, हरभज त फेर उतर के ओकरा सामने आ जाई, ओकर हाथ झटक दीही। ओकर सउँसे देह सिहर उठल।

बकरियन के चरे के छोड़ उ अपना खेयाल में डूब जाय। सड़क पर चले वाला सब ट्रक ओकरा हरियरे रंग के लउके, बुझाय सब पर हरभज बइठल बा। सांझ हो जाय, बकरी सन मिमियात घरे पहुँच जाय तबो ओकरा होस ना होखे। अब ओकरा केकरो से डर ना लगे। काकियो से ना, उहँ का करिहें काकी।

सड़क पर आवत ट्रक देख के ओकर करेजा धड़के लागे, हाथ गोड़ फूलें लागे। कहीं अइसन ना होले कि ट्रक रुक जाय आ हरभज उतर के ओकरा सामने चल आवे। अइसन भेस में ओकरा के देख के उ का कही, फाटल साड़ी, लट्टा भइल केस, बेवाय फाटल गोड़। रसोई में से तेल लेके चुपचाप माथा में लगा लेवे, पाटी चोटी कर के अयना में आपन मुँह देखे त मन करे, तनी टीका लगालीं, लाल टीका लगवते मुँह भक–भक करे लागी अंजोरिया अइसन। फाटल साड़ी के सीपुर के चिकन बना लेबे।

काकी के नजर में कुछ छिपल ना रहे। लक्खी के बदलत रंग–ढंग देख के ओकरा माथा ठनकल, "बाप रे, छऊँड़ी कहीं कुल में दाग ना लगा दे, अब जल्दिये बिआह सादी कर देबे के चाहीं?"

काका कहले, "हम बइठल नइखीं, बर खोज लेले बानी, हरिहर के त देखलहीं बाड़ू, खेती बारी त बड़ले बा, दुआर पर दू तीन गो लगहर बा, लखिया का कवनो दुख ना होई। हरिहर के त बहुत उमिर बा, चार–चार गो लइका बाड़े स।" काकी कहली त काका हँसे लगलें, "अरे का भइल बहुत उमिर बा त, कहाउत ह जब साठा तब पाठा, कइसन हट्टा–कट्टा देह बा, देख के मन जुड़ा जाला.... आ सबसे बड़ बात बा कि बियाह में एको पइसा खरचो ना पड़ी कुल खरच हरिहर करीहें, ऊपर से पाँच सौ रुपयो देवे के कहलन ह।"

काकी सुन के फुला गइली। पाँच सौ रुपया मिली त अपनो दुआर पर एगो लगहर हो जाई। जे सुने से कहे, काका काकी होखे त अइसन, लक्खी घर में रानी बन के रही, ओकरा कवनो दुख ना होई।

लक्खी सब के बात सुने लेकिन बोले ना। ओकर एगो अलगे दुनियां रहे, जवना में हर घड़ी हँसी छितराइल रही। लाल लाल गुलाब... अब हरभज के इयाद आई चारों ओर गुलाबे गुलाब महक उठी, बुझाई कि गुलाब के फूलवारी में भुला गइल बा।

अपना खेयाल में मगन लक्खी के होस ना रहल कि उ का कर देलस। बकरी के बच्चा सड़क पर दम तूड़त रहे। चारों ओर खून फइल गइल रहं। ट्रक रुकल त डाला पर से कूद के हरभज ओकरा सामने आ गइल, आ कस के एक चांटा मरलस ओकरा गाल पर, "काहें रे डाइन, इ बचवा तोर दुसमन रहे का कि जान के एकरा के ट्रक के नीचे डाल देले? अब जे अइसन करबे त झोंटा पकड़ के तोरो के एही चक्का के नीचे पीस देब, बुझले ह का?"

लक्खी के चेहरा लाल हो गइल। गाल पर अंगुठी के लाल निशान उग आइल। ड्राइवर ऊपरे से बोललस, "अरे छोड़ हरभज, का बात के बतंगड़ बनवले बाड़े, अबेर होता।"

"ना डरेवर साहेब, बात के बतंगड़ नइखीं करत, इ डाइन जान के बचवा सबके ट्रक के ओर हूरपेट देले, आज हम अपना आँखि देखनी ह।"

हरभज फेर चउक के डाला पर चढ़ गइल। लक्खी एकटक ओकरा क देखत रहे। ओकर सउँसे देह अकड़ गइल। ट्रक आँख से ओझल हो गइल तबो ओकरा होस ना भइल, बुझाय गाल पर कुछ चिन्गारी अइसन बर रहल बा....। हरभज के चाँटा के लाल निशान आउर लाल हो गइल, गाल जइसे सेनुरिया आम होखे।

आज लक्खी के बिआह ह। दुआर पर सहनाई बाजऽता। लाल चुनरी पहिरले लक्खी बइठल बा आ अँचरा के लाल छोर में खोज रहल बा लाल खून, लाल गुलाब, लाल निशान। हरभज के थप्पड़ के निशान जइसे गाल ना करेजा पर उग गइल होखे, ऊ अब कबहूँ ना मिटी।

पोखरा, हाजीपुर (वैशाली), बिहार

कबहुँ न नाथ नींद भरि सोयो

कमलाकर त्रिपाठी

बाँके बिहारी घर से दुई–तीन कोस चलल होइहँ कि ओनकर माई चिल्लइलिन, "रोका हो गड़िवान, दुलहिन क साँस उल्टा होय गइल।"

बाँके लपक के लढ़िया के धूरा पर गोड़ राखि के ओहार हटाय के तकलन–

"का भइल रे?"

"होई का ए बाबू, अब अस्पताल गइले का फायदा, दुलहिन बचिहें थोरो!"

"बँचल–बे बँचल अपने हाथ में बा! अरे आपन काम करे के चाहीं, बाकी भगवान पर छोड़ा। चला हो बुझावन। बरधन क तनी अउर बढ़ाय के हाँका। बखत थोरै बा।"

बाँके लढ़िया से नीचे उतरि अइलैं। बुझवना पैना लेके खोदलस "ओ–ओ तत्–तत् चल रे...।" चिर्र–चिर्र चोंय–चोंय... लढ़िया फिर उहै चाल। आधी रात क समय। आगे–आगे बाँके बिहारी लालटेन लेके राह देखावत। पीछे बुझावन, बैलगाड़ी हाँकत। कबो–कभार तिवराइन क कँहरब, साँस के घरर–घरर आ बाँके के माई के ओरहन–समुझावल।

"अब बस करतिउ दुलहिन। तोहरे रहले कवन सुख, गइले कवन दुख। बीस बरिस होइ गइल, जोगवत बीतल। कगजै के दोना लेखिन। आज साँस, परसों बोखार। लगबे ना कइल कि हमरहूँ घरे पतोह आइल। सोचलीं कि बुढ़ौती कवनो किनारे लगि जाई। केहू एक लोटा पानी त देई। इहाँ त नाती–पतोह के पिसाब–पखाना में बुढ़ौती तरत बाय।"

बाँके के काने में कुछ सुनाई परल, कुछ नाहीं। लेकिन मेहरारू के एह समय पर महतारी क बोलल नीक नाहीं लगल। पिछउँड़ होइके डपटलैं, "करे माई, तोके एही टाइम भुनभुनाए के मौका मिलल! कहलीं घरहीं कि रहे दे। लेकिन मनले नाहीं। जतनै करबै ओतने बोलबै। एसे त न करते, तबै नीक रहत। अब बइठि के परान निकरल अगोरीं कि दवाई–बिरो करीं।"

"का करब बोलि के बाबू! के सुनी! जेके सुने के रहल ते त कब्बै चलि गइल। अब बइठि के आपन दिन अगोरत रहलीं त पतोहे क समय देखत हईं। तोहरे जइसन पूत जौन न देखावैं बाबू! अरे ई कुल्ह लिखल नाहीं होत त का करेके बइठल रहतीं!"

बाँके चुपाय गइलैं। ढेर बोलतैं त बाति बढ़त। मेहरारू त मेहरारू, माई के कइसै छोड़ैं! दुनिया भ के अकिल, पोथी–पुरान कुलि ई दूनो मेहरारू के सामने दुई कौड़ी के। माई त माई हौ, सत्तर–बहत्तर से बेसीअ होई, के जानै अउरो ज्यादा, बाकिर जांगर हाथी के। न कब्बो सर्दी बुखार छुअलस न कौनो चोट–चपेट। बोली टाँय–टाँय, जवान का बोली! लरिकाई से जबसे बाँके होस सम्हरलै तब से महतारी क ईहै बोली। बाप सुतलै रहैं कि माई कूचा–झाड़ू लेके अँगना बहारत ओसारे पहुँचि जाय। कुछ खुसुर–फुसुर बताउ आवे। कुछ काल्हि के ओरहन, कुछ आज के काम सँउपल। दादा कब्बो–कब्बो घुड़कैं त माई पटाय जाय आ कब्बो माई डपटि के ओनहीं के चुप कराय दे। बाँके सोचैं कि ओके डपटले, जुलाब होइ जाला का कि दादा तुरंते लोटा ले सिवाने चलि देलें! अब जो निपटले के जोर न रहे त गोरू के सानी–पानी करे लगें नाहीं त लवटले के बादै। कान पर जनेव तउधिक चढ़लै रहै, जब तक दूनो लुलुहा सानी में न बोरि उठै। माई तउधिक नहाय धोय के पाठ करे बइठ जायँ।

सुनि जननी सोइ सुत बड़भागी।
जेहि पितु बचन राम अनुरागी।।

– "बाँके, उठबो करबा कि सुतलै रहबा!"

बाँके गुड़िआइल–मुड़िआइल उठैं। चादर ओढ़िके बइठले–बइठले एकाध झोंका फिर मारि लें, किताब खोलले। आधा पढ़ाई, आधा रामायण में बाझि जायँ। अंग्रेजी साइंस कठिन लागै। अँखिया बंदो रहै त चौपाई पढ़ाय, खुललो रहै त चउपइए पढ़ाय। माई कब्बौ न डँटलस न डपटलस। बाकिर बाँके के नीके–बउरे पर ओकर अहकल बाँके के ऊपर अइसन असर कइलस कि बाँके फुरै बाँके होय गइलन। जेही देखै तेही कहै "अरे ई सुन्नर तिवारी के भाग में कहाँ! ई त कुल्ह बाँके के महतारी क तपस्या ह बाबू, जौन फरत–फूलत बाय।" जेस–जेस बाँके बढ़लै वइसै–वइसै ओनकर त कम, ओनके महतारी के नाव गाँवै–गाँव महकल। गाँवै गाँवै घूमै हाथी जेकर हाथी, तेकर नाँव।

गाँव के कंकड़हिया राहि ओराइल त चाकर बड़की सड़क मिलल। लढ़िया के चुर्र चूँ कम भइल। बरधन के कुछ चालि तेज भइल त बाँके रहि–रहि के पिछड़ जायँ। बाँके के माई से नाहीं रहि गइल। पतोहे के कहँरल छोड़ि के लइका के ओर चिरउरी कइलिन, "बाबू कतना पैदल चलबा, ललटेनिया जुअवा में बान्हि द आ अपने बुझवना लग बइठि जा। हाली–हाली चलबा त गोड़वो पिराई।"

बाँके सोचले कि कहीं कि करे, तोर हमरे गोड़ पिरइला के एतना चिन्ता बाकिर पतोह हाँफत–हाँफत

अधमुअलि हो गइल, तब्बो ओके घर से बहरा नाहीं निकरे दिहले! लेकिन सोचते मन दहलि गइल। माई फेरू रोवे–सरापे लगी। दुलहिन बिहोसियो में अगर सिसके लगिहें त अउर जौन जियले क दुइ–चार पइसा भरोसा बाय ऊहो कम होइ जाइ। बाँके लपक के लढ़िया के बाँस पकरि लेहलें। अब ललटेन क कौन जरूरत। पक्की सड़क पर त पहिया अपने आपे ढुरकत चलि जाला। आ स्टेशनों त दुइए कोस रहि गइल। ललटेन पटिया में लटकाय के बाँके लम्मा–लम्मा परग डारे लगलै। दुलहिन क कहँरलो कम हो गइल। हचका–गड़हा क जब कुछ आराम बुझाइल त माइयो के आँखि लग गइल।

आधी रात क समय। दू बजे रात वाली गाड़ी पकड़े के रहल, जवन बिहाने गोरखपुर पहुँचि जाय। बाकिर अबहीं बैलगाड़ी के कम–से–कम दुइ घंटा के राहि। एक एक मिनट पहाड़े जस बीतै। दुलहिन क साँस जोर से चलै त डर लगै कि अबै खतम न हो जायँ आ पटाय जायँ त डर लगै कि जान बाय कि नाहीं। बाँके के लगल कि दुलहिन कुछ कहति बाटिन। पटिया पकरि के कमरा फाँफर कइलैं, "का हो, कुछ कहति हऊ का?"

"ऊपर चलि आईं महराज, केतना पैदल चलब, आ कौन अब जियले के लच्छन बाय कि ई लहासि ढोअत हईं! अरे अब गइले के समय त गोड़ हमरे लगे रहे दीं!"

बाँके बूझि गइलैं कि माई करेरे सूति गइल बाय, नाहीं त दुलहिन क हिम्मत नाहीं परत कि एतना बोलि पउतिन। कुछ थकल, कुछ मोह, कुछ अमरख। बाँके रोकि ना पउलैं, "अच्छा चला। कहति हऊ त बइठि जात हईं। बुझवना, तनी आगे दब त। कहा, का कहत हऊ?"

आगे जूआ पर बुझावन, बीचे में बाँके, बाँसे के खपाची पर ढकल ओहार, ओमें दुलहिन, दुलहिन के अउर पीछे थकल–हकसल महतारी। बाँके तिरपाल हटाय के दुलहिन क हाथ पकरि के पुछलैं, "कइसन बा तबियत?"

का बोलै दुलहिन? जेतना दम बचल रहल ओतना लगाइ के त बोलय लेहलिन। बाकी बचल–खुचल साँस आँखि में उतरि आइल। बड़हन आँखि अउर निथरि गइल। एक त अन्हियार, दुसरे चकवा लेखा फइललि पुतरी। कुलि लोनाई–सुकुअरई गलि के अँखिए तक रहि गइल रहल। कुछ लालटेन के अँजोर जब आँखि पर चमकल तब बाँके के लगल कि लोर ढरकल बा। गाले पर से पानी पोंछि के बाँके पुछलै, "का हो रोअत हऊ! कहूँ दुखात–पिरात बा?"

कइसो जोर लगा के गटईं हिलवलिन, बाकिर ऊ हिलल नाहीं। खाली अँखिए नाचि के रहि गइल। मुँह से कुछ कहतिन लेकिन ऊ एस फइलल कि बुझाय ढेर दिन पर भेट भइले वाली हँसी होय। महतारी क डर आ लाज छोड़ि के बाँके मूड़ी उठाय के जाँघे पर धइ लेहलैं। दुलहिन क साँस जेतने जोर से आगे भागत रहल, बाँके क मन ओतने पीछे खसक गइल। बीसन साल पीछे। अइसहीं बाँके लौटत रहलैं घरे, गवन कराइ के, इहै बुझवना तब्बो गाड़ी हाँकत रहल, अइसनै हँसत–रोअत–लजात दुलहिन, अइसैं डरात– लजात बाँके। तब पीछे नउनिया रहलि, आज ओंही माई सूतलि बा। तब बाँके पढ़े देस–दुनिया, दुलहिन पढ़ै चउका अँगना। तिवराइन करैं पूजा–पाठ, महीनन चन्द्रायण व्रत। कौर–कौर बढ़ावै, कौर–कौर घटावैं। जइसे चन्द्रमा बढ़ैं, जइसे चन्द्रमा घटैं। सुनि के गाँव–जवार आहि–आहि करै। अइसन तपस्विनी के होई! तिवारी बाँचे कथा–भागवत, लेकिन घर में अस दरिद्रै के बास कि कब्बो डेउढ़ी न लाँघै। जेस–जेस तिवराइन क पूजा–पाठ बढ़ै, तिवारी क चेलाही कमजोर परत गइल। चेलन के लड़िका सब पढ़िलिखि के शहर गइलैं, बूढ़–ठूँढ़ मरि–हरि के छुट्टी। के सुनै पोथी–पुरान, के चढ़ावै भागवत पर रुपया–पइसा। टूका–टटका जोरि–जोरि के कुर्ता–ब्लाउज के जुगाड़ होय इहै बहुत रहै। कभी–कभार सालि भर में केहू बड़का घर के मरनी करनी पड़ै तब सज्जा–छूअल पर काम बढ़ै, नाहीं त उहै पितरपख कै कमाई, बीस आना घर, अब चाहैं एक तिथि पर चार घर निपटै चाहे एक्को नाहीं। तिउराइन चउकठे पर अगोरतै रहि जायँ कि तिवारी क पुरनकी बगली कान्हे पर से लदल उतारीं, बाकिर तिवारी मुँह लटकउले पसीने पोंछें–

"यस्यामि अहं अनुग्रहणामि हरिष्यामि तद् धनै शनैः"

हर बाति के जबाब पंडित लगे रहै। दुखो में मगन। सुखो में मगन। न तिउराइन सुदामा के मेहरारू लेखा रटिके जजमान किहाँ दउरावै, न तिवारी हहक के दुर्वासा क्रोध पुजावैं। दरिद्रई आ संतोष, जइसे गोड़ तूरि के दुआरे बइठ गइल होय। अइसने में सासुओ से बढ़ि के बीस गुना संतोषी पतोह। एकै पतोह, उहो एस सोहावन कि डेउढ़ी में गोड़ परतै बाँके के नोकरी लागि गइल। तिउराइन जवन पवलिन तवन

लुटवलिन, न आगा देखलिन न पाछा। अपनो गइल बिटउओ क गइल आ पतोह से का पूछैं कि कवन चीज रखीं कवन चीज बाँटी। झाँपी बँटल, गहना बँटल, खेलवना बँटल, धोती बँटल–अइसन बँटल जइसन कि पार्वती जी कुरमिन–खटकिन के सोहाग बाँटै। बाँके कइसों एके राति रह पउलैं। छोट घर, ढेर नाता–रिस्ता वाले, न उठे क जगह न बइठे क जगह। कइसों–कइसों पूजा के कोठरी अलगिआवल गइल। आधा में सामान, आधा में भगवान। कोने अँतरे सकपकाइल–डेराइल दुलहिन आ ओसे चौगुना चिहुँकल बाँके। कब अइलैं, कब भोर भइल, जानिउ नाईं पउलैं। कुल्हि मान–मनउअल मने में रहि गइल। इनके बोली के ऊ तरसैं ओनके बोली के ई। गाँव भर में मेहरारू हल्ला कइलिन, का ए बहिनी, दुलहिन त अइसन ठस्स कि मुँहे ना खुलल। जब धान–पान कुटलैं में गइबे–बजइबे ना कइलिन तब का जानीं कि गाँव टोला में पतोह आइल बाय।

तिउराइन छेंके लगलिन। "भागि नाहीं देखतू ओकर। अउते बाबू क नोकरी लगि गइल। गउले–बजउलै से पेट चली! जनम त बीति गइल दुसरे के दुआरे ओर ताकत, अब जा के भगवान सुनलै। अबहिन तक बनवास भोगलीं, अब त दिन फिरल।"

बाकिर तिउराइन क सपना सपने रहि गइल। बाँके आधा गुन माई के त आधा गुन बापे के पउलैं। जौन बिगड़े तौन अपना चलते जौन बनै दुसरे के। न महतारी के सुख पउलैं न बापे के। बाप क जाँगर खसकल, आँखि गइल, अब पोथियो–भागवत बाँचे लायक ना रहि गइले। अधिया–बटइया खेती, पेट भरे के हो जाय उहै बहुत। तिवारी–तिउराइन लइके के भजत दिन बितावैं, कब हमार सरवन अइहैं, कब हमार दिन फिरी। दुलहिन क कुल आस मनहीं में रहि गइल। दुइ चार महीना पर बाँके आवैं, एक दुई दिन खातिर। न माई निहारत अघाय न बाप बतिआवत। बचलिन दुलहिन, त टुकुर–टुकुर ताकैं, चउका–बरतन सम्हारैं आ अगोरत–अगोरत खटिया पर ढुरुक जायँ आ फेर तिउराइन के खोंखलहीं प जागैं। बाँके रातिभर कबों बापे के गोड़ दबाइ के मन जीतैं त कबौ माई के मूड़ दबाई के तरैं। जबतक दुलहिन क सुख–दुख जाने क फुर्सत मिलै तबतक गइलै क दिन आइ जाय। साल क साल बीतल। मुँहदुब्बर बाँके तिउराइन के दुख आ बापे के उमिर देखि के कबौं ना कहि पउलन कि माई, दुलहिन के शहर भेजि द। कुछ जनलैं, कुछ नाहीं। दुइ–दुइ लइका नुकसान भइल। दुलहिन क मान घर में न कम रहल न बेसी, लेकिन तिवारी–तिउराइन नाती क मुँह देखे के तरसि गइलैं। किरिया खाए के शहर में जो दुलहिन गइबो कइलिन त माई के डरे आ बाप के लिहाजे बाँके महीने बीस दिन में वापस पहुँचाय दें। नौकरी के कमाई पढ़ाई के करजे भरे में रहि गइल। जौन बचल–खुचल ऊ कच्चा मकान क पक्का बनावै में लगल। तिवराइन मोहायँ त बहुत, बाकिर दुलहिन क बेमारी पर पइसा फूँकब उनके हरदमे अखरे। "का बताईं भागि के! भगवान के लइका के दुइ पइसा कमइयो नाहिं देखि जात बाय। एतना उमिर होय गइल। केतना बार मरि के जियलीं बाकिर अस्पताले क मुँह ना देखलीं। एकठे पतोहो आइल त उहो रोगे क घर। लइका त लइका गइल देंह दसा अलगे। रहे द दुलहिन, अपनै देखा। बुढ़वा–बुढ़िया भ के हम कइ लेब। का कहीं बाबू क भागि! देखा कब भगवान लिलारे चन्नन लगावैलैं।"

दुइ तीन लइका के नुकसान भइले के बाद कइसों एक ठो बेटी बँचल। तिवराइन क कुलि हौसला पस्त। तिवराइन आपन करिहाँव सोझ करैं, कि तिवारी क मूड़ दबावै! आपन लइका सम्हारि नाहीं पवली, ई चिरई क बच्चा कहाँ पोसैं? टोला जवारे के मेहरारू तिउराइन के परवचन सुनैं, तिवारी दुअरे पर कथा बाचैं, लगे–लगे गाँव क जजमानी संभारै आ बाँके बाप–महतारी के अज्ञा अगोरैं। दुलहिन क देह जौन गिरल तौन उठल नाहीं। तिवारी पतोहे कै कँहरब सुनैं त पंडिताइन के ऊपर कोहराम मचाय डारैं। तिवारीइन करैं त बहुत, लेकिन बोलैं ओतनै। कुछ खर–बिरैया दवाई भइल, कुछ गाँव के वैद क काढ़ा चूरन, बाकिर दुलहिन जौन गिरलिन तौन उठलिन नाहीं। बाँके कबो मौका ताकि के पूछैं, "कहतिउ त सहर चलि चलतीं, कब तक इहैं खर–बिरैया दवाई के सहारे परल रहबू?"

"अब कहाँ ले चलब महराज। अगोरत–अगोरत त उमिर बीति गइल। केतना करवा चौथ आइलि चलि गइलि। बरिस–बरिस क बट–सावित्री बरत बीतल, नया पंखा से हम कब्बो आपकै देहि नाहीं हाँकि पउलीं। दुनिया तीरथ धाम कइलस, हमरे करम में काशी परयागो नाही लिखल बाय। भगवान चुनरी पहिरले एही घरे ले अइलैं, अब चुनरियै ओढ़ाय के आपके कान्हें पर घाटे भेजि दें, अउर का चाहीं।"

बाँके बोलें का? आँखि क कमजोर बाप। करिहांइ

के निहुरल, गटई थमले कहँरत महतारी। केकरे सहारे केके छोड़ैं। बियहले के बाद नौकरी लगल। सोचलैं दुई–चार पइसा जुटि जात, कहे सुने लायक दुई क घर किराया पर ले पउँतैं तब दुलहिन के ले जातैं, बाकिर बापे के पुरनके कर्जा से उबरैं तब न। गाँव जवार क खातिर। नात–रिस्तेदार क आइब–जाब। कुल सोचल जइसै क तइसै धइलै रहि गइल। इहो जीअब कौनो जीअब ह। कौने काम क मरदई, कौने क अकिल। बिआहे में गाँठि जोरि के केहूँ के आसरे कहू क बिटिया ले के चलि दे आ ओकरे मरले जिअले क खोजो–खबर न ले पावै! सबसे नीकै बनी के का होई जब अपनै कुलि बिगड़ जाई। बापे–महतारी क सरवन कुमार, गाँव–जवार क दुलरुआ अपने मेहरारू खातिर एक ठे लुगरिओ न जुटाय पावैं, अइसन पढ़ल–लिखल कौने काम कै!

राहि ओराय गइल त सोचिओ ओराय गइल। बैल गाड़ी स्टेशन के राहि पर घूमि गइल। बुझावन पगहा तनलैं त दहिनवारी बरध पीछे गोड़ धरे लागल। शायद चक्का के आगे कौनो बड़ा ईंटा पड़ि गइल। बुझावन चिल्लइलैं "बाबू तनि उतरल जाय चक्का कहूँ बाझि गइल बा। तनि पीछे से धक्का लगाय देईं।"

बाँके हाथ खींचि के उतरल चहलैं बाकिर हाथ दुलहिन के गाले तरे दबाइल रहल। दहिने जाँघि पर दुलहिन क माथ, उठैं कइसे!

"दुलहिन तनि माथ उठावा। चक्का फँसल बा। धक्का देबे के खातिर उतरल चाहत हई। दुलहिन के दम रहै तब न सुनै।" अबहिन तक कुलि सुनतै रहलिन, मनतै रहलिन, बाकिर अबकी जइसै कुल मान, कुल रूप अँखियै में उतरि आइल। अइसन रूप बाँके जनम भर न देखलैं। लगल कि 'नाहीं' कहत बाटिन। चिल्लइलैं "बुझवना, लालटेन त ले आव। माई के जगाव त तनीं।"

लढ़िया खड़ी होय गइल। बुझावन "काकी उठल जाय" कहि के पीछे से लपक के पीढ़ई पर खड़ा होय गइलैं। दुलहिन क साँस जतने खिंचाय, जेतने लम्बा होय मुँह पर वइसै–वइसै हँसी बढ़त जाय। बिना आवाजै कै हँसी। दूनो कोना धीरे–धीरे फइलल, उभरल आँखि, अब का दुलहिन हाथ छोड़ें! जइसै हाथ पकरि के सबके सामने मड़वे में किरिया खाय के पंडित बिआह करउलै वइसन संजोग आजै मिलल। तब आवेके रहल, आज जाय के बाय। अइसन केकर भागि होई! सत्यवान सावित्री के जाँघी पर माथ धई के चलि देहलैं, सावित्री आपन परताप–तपस्या से सत्यवान के जमराज के हाथे से छोरि लेहलिन, इहाँ त उल्टा होय गइल। सावित्री के खातिर अब कौन बरत सत्यवान करैं! कौंनो अइसन बरत न पोथी पुरान में न गाँव के कहाउत में। बाँके क कुल देंह कनमनाय गइल। करेजा में हूक उठलि, बुझाइल कि चिल्लाय के रौइतैं छाती पिटतैं कपार फोरि देतैं तबो हूक न मिटत। लेकिन जे खुलि के हँसलस नाहीं ओकर रोअब कस!

साँस रुकि गइल। आसो रुकि गइल। तिउराइन चिल्लइलिन "कहत रहली बाबू, एह हालत में न घर से चला। कौनो बचे क उम्मीद थौंरे रहल, बाकिर तू मनबा काहें! अब त राहि में परल निकरल न।"

सीवाने में गाड़ी क घरघराइल सुनाइल। गाड़ी टीसन से खुलि गइल, एह जनम से दुलहिनो के छुट्टी मिलल। तिउराइन कुछ रोअत रहलिन, कुछ कोसत रहलिन, कुछ आपन भागि कुछ बेटवा क भागि। बाँके कान में कुछु न सुनाई परै। करेजा के हूक करेजा में रहि गइल। भगवान एतने के साथ लिखले रहले पूरा भइल। के जानो कबो कवनो सत्यावानों सावित्री कऽ परान यमराज से छोड़ाय पावैं। तब कउनो दूसर बरत होई, कौनो दूसर पुरान बनी आ गाँव–गाँव कथा कहल जाई। ●●

जहँ तुहूँ अइतऽ!

प्रेमशीला शुक्ला

काम–कजिया बीति गइल रहे। अब सबका जाये के जल्दी रहे। के फुरसताह रहे कि महीना–दू महीना रुकित? ओइसहीं सबका जुटले बारह–तेरह दिन हो गइल रहे। दूनूँ पतोहि एकवटि के राय–बात कइल लोग– अम्मा जी के बक्सा काल्हि खुलि जाये के चाहीं।

बात जेठ भाई तक गइल।

ऊ कहलें– "अरे अम्मा रखते का रहे? जवन ओकरा लगे रहे, सबके बाँटि देले रहे। का बक्सा–बक्सा कइले बाडू लोग?"

"हँ, ई बाति त सही बा। उहाँका त पोता–पोती तक खातिर देके गइल बानी। तब्बो बक्सा, बक्सा ह, ओके त सबका सामने देखिये लेबे के चाहीं।" – जेठरी पतोहि टोकली। तब भइल कि, "काल्हि बक्सा खुली।"

खुले के का रहे? ताला तऽ लागल ना रहे। बक्सा खोलि दिहल गइल। बेटा–पतोहि, पोता–पोती–दूनूँ जरोह समेत आठ लोग। सब देखे लागल। सबका चाव रहे– का बा? का बा?

सुकन्या अनमना होके खड़ा रहली।– "हम त सब देखलहीं बानीं। पहिनल–ओढ़ल कपड़ा–लत्ता, कुछेक नया गँठिआवल परसादी आ एगो बटुआ में कुछ रुपया।" सुकन्या बोलली।

"हँ भाई, तुहीं त अम्मा के मलिकाइन रहलू ह।" हर्ष कहलन।

उहे सामान निकालत रहलें। तवले एगो साड़ी का तह में से पुलिन्दा गिरल। बक्सा में बिछावल साड़ी का नीचे ई साड़ी तहिया के रखल रहे।

"ई का हऽ?" सुकन्या झट से उठवली।

"ई त हम आजु ले नइखीं देखले। अम्मा कब्बो एके ना देखवली।"

"देखवती का? तहके रोकले रहली? तूँ देखि लेतू।"

अम्मा का पोता–पोती में नोक–झोंक चलत रहे। अम्मा सबके अम्मा रहली। बेटा पतोह, पोता–पोती, आस–पड़ोस।

भाई–बहिन का झीना–झपटी में पुलिन्दा के कागज छितरा गइल।

सब समझ गइल कि चिट्ठी हऽ, समय–समय पर अपना माई–बाप, भाई–भतीजा, बेटा–पतोह, सखी–सलेहरि के भेजल चिट्ठी। कई चिट्ठी अइसनो रहे जवन अम्मा खुदे लिखले रहली, बाकी बुझाता पोस्ट ना कइली आ कि का जानी काहें, एही में पड़ल रहि गइल।

बक्सा में के गँठियावल परसादी सब के बँटा गइल। बटुआ हर्ष का मिलल।

साड़ी–कपड़ा पतोहि लोग बाँटि लीहल। पुलिन्दा सुकन्या सहेज लिहली।

ई सब बाकया हमके सुकन्या सुनवली।

सुकन्या दूर का रिश्ता में हमार बहिन लागेली। सुकन्या कहली– "दीदी, तूँ त जानते बाडू अम्मा आपन–आन करेके हालिये ना जानत रहली। बहुते संवेदनशील मन उनुका मिलल रहे। उनुकर लिखल चिट्ठी एह् पुलिन्दा में दुइये चार गो बा। ओहू में एके सार्वजनिक कई दिहल अनुचित ना होई।" ई चिट्ठी अइसे बा–

हे!

जहुँ तुहुँ अइतऽ हमरी दुअरिआ, हम लहालोट होइ जइतीं।

चउथेपन में आके महसूस होता कि जिनिगी अकारथ गइल। धरती पर आके सुख आ दुःख दूनूँ पवनी। सुख में उतिरा गइनीं, दुःख में छितिरा गइनीं। कवनो सम्हरल ना। कमरा अँगना में मिलन–बिछोह दूनूँ उतरल। मिलन में बिछोह के डर सतावत रहे, बिछोह में मिलन के इच्छा मारत रहे। जवना में रहनीं, ओमें रहेके ना जननीं। हम पइया, अन्न नीयर एहर–ओहर जनम भर उधियात रहनीं।

सुनऽ ई शोभना जब बहुते छोट रहे, तब्बे से अपना आगा–पीछा माई के पवलसि। शोभना माई का अँचरा लागल अँगना–ओसारा घूमल करे। छन भर माई ना लउके त ओकरा दुनिया अन्हार लागे।

शोभना रसोई में गइली, घर देखली, दलान देखली।

माई कहाँ बाड़ी?

माई कहाँ गइली?

माई! माई!!

शोभना रोवे लगली।

चाचा सुनलन।

शोभना रोवऽताड़ी। माई कहाँ गइली?

माई हो। माई हो।

चाचा हँसत कहलन– "माई के सियार ले गइल।"

तब ले माई खिड़की का ओर से हाथे में पुतरी थमले झटकल अइली।

"लऽ तूँ पुतरी माँगत रहलू नऽ। देख, सुन्नर बा?"

माई का अइला में आ चाचा का कहला में बहुते–बहुते कम देर के अन्तर रहे, बाकी ओतने देर में बुझाइल शोभना के साँस बहरिया जाई।

पुतरी देखि के शोभना के उमगल पुलक भय के भितरा दिहलस।

माई शोभना के गोदी में सहोरत चाचा के झिड़कली– "रउरा काहें हमरी बेटी के डेरवाईलें?"

–"सियरा का शोभना के माई पसन्द ना पड़ली तऽ छोड़ि गइल। नीके भइल ना तऽ ई राउर दुलरूई जीअती कइसे? भउजी, राउर बेटी एक अँगछी हो गइल बा। एके आपन आँगछ छोड़ाईं। केतना दिन अँचरा तर सटल रही?"

"जब आपन होई तऽ बुझाई कि सन्तान के माया का होला? धीरे–धीरे समुझि होई तऽ अपने आप सब ठीक हो जाई। गाइ के बछिया ना ह कि जनमते ठाड़ हो गइल आ महीना–दू–महीना में अलगे चरे लागल। आदमी का बच्चा का सीखत–समुझत समय लागेला। देंहि बढ़ि गइल, राउर बुद्धि ना बढ़ल।"

चाचा से कहत–सुनत माई शोभना का पुतरी के सिंगार करत रहली।

कवने रंग के घघरी रही, कवने रंग के चोली?

माई–बेटी में राय मसविरा होखे लागल। तय भइल– लाल रंग के घघरी–चोली।

ओपर पीयर रंग के ओढ़नी। गोटा लाल पर पीयर आ पीयर पर लाल।

गोटा लागत–लागत तनी एसा घटि–घटि गइल।

शोभना दूसरे गोटा के झट उठवली– "माई हइहे लगा द।"

शोभना का पुतरी सँवरले के जल्दी रहे।

माई टोकली– "कइसन लागी? पेवन अस तनी सा दोसर का जोड़ाई? धीर धरऽ खोजि लिहल जाई, दुसरा डिब्बा में धरा गइल होई।" "बेमेल के चीज फबे का?"

चाचा फेर अझुरइलें– भउजी केतनो सिखइबू, बेटी नीक–बाउर बूझी ना। रउरे नमवें जवन शोभना रख देले बानीं।

चाचा एही से शोभना का तनिको रुचें ना।

जब देखऽ तब उल्टे बोली।

माई हाथ के गोटा धरत चाचा के देखली– "एँऽऽ का कहनी हँ? फेर–फेर कहब मत। हमार बेटी जहें जाई तहें शोभा आपरूपे खाड़ हो जाई। एसे दोसर शोभायमान होई। एकरा में ऊ खासियत बा।"

"आवऽ बेटी, तबले हमन का एकर गहना बनावल जा। सबसे महीनकी सूई उठावऽ, हमके हउ गुरिया दऽ देखीं ओकरी छेद में सूई जाता कि ना। आ सुनऽ, सुई में डोरा डाल के दीहऽ। सियाई–फराई करत आँख जल्दिये साथ छोड़ दिहलस।"

शोभना सुई में डोरा डालिके माई के दे दिहली।

एतने से माई के आँखि दप–दप चमकि उठल।

"देखनीं बबुआ जी, तनि मुक के लइकी कइसे फट् से डोरा डललसि। हमार बेटी बहुते गुनवन्ती होई।"– माई चाचा से कहली।

सुई गुरिया का छेद में जात रहे। पुतरी के गहना माई–बेटी मिलिके गढ़ली।

सुन्नर, केतना सुन्नर। गोटा खोजाइल। घघरी–ओढ़नी पहिरले, गहना झमकावत शोभना के पुतरी दमकि उठल।

माई का हाथ में करिश्मा रहे, अइसन गढ़ाउर गढ़ें कि जिउ जुड़ा जाये।

का माई अपनी पुतरी के अइसहीं गढि पवली?

उनुकर पुतरी। शोभना, उनकर बेटी!

संझा–बाती के बेरा रहे।

रोज अइसन माई तुलसी चउरा दीया बरली, देउकुरी बरली। रसोई के तइआरी कइला में लगली। सब कऽ धऽ के माई बने की ओर गइली।

थोड़े देर बितला पर ओहि दिनों शोभना कहलीं– माई लवटि के अइली ना। माई कहाँ गइली? शोभना जानत रहली चाचा का कहिंहे, एसे अपनहीं जवाबो दिहली– "जानतानी, सियरा माई के पसन्द ना करी। माई अब्बे अइहें।"

माई अइली। साथे पड़ोस वाली चाची रहली उनुकर बाहिं पकड़ले। दुआरे से पीछे–पीछे पिताजी अइलें।

"देखीं ना, शोभना की माई के सियार काटि लेले बा।" चाची माई के बइठावत कहली।

"का?" चाचा दउड़ल अइले।

ओही दिने शोभना सेयान हो गइली।

शोभना गुनवन्ती हो गइली।

बने की ओर सियार हुआँ–हुआँ करत रहें सन।

माई के दवा–दारू सुरू भइल। जेही आवे उहे कहे कुकुर–सियार के काटल कवन अजगुत बाति बा? सुई–दवाई होई, ठीक हो जाई। सुई–दवाई चलते रहे बाकी माई ठीक ना होत रहली। उनुकर चलल–फिरल मुस्किल हो गइल। पिताजी, चाचा, शोभना सब उनुकी सेवा टहल में लागल। सबसे ढेर चाचा करें। पिताजी का ऊपर बहरा–बहरा के जिम्मेदारी बहुत रहे। सबसे कम शोभना करें। शोभना के औकाते केतना?

बूढ़–पुरनिया अस शोभना मनौती मनली– "हे काली माई! हमरी माई के नीक क द, तोहके जोड़ा धार चढ़ाइब।"

माई का पलंग का चारू ओर तीन बेर घुमरिआ के कहली– "अल्ला ताला! हमरी माई के बेमारी हमके दे दऽ, हमके दे दऽ, हमके दे दऽ।"

शोभना के दुआ कबूल ना भइल।

शोभना के माई ना रहली।

सब माई के घेरले रहे। डॉक्टर अइलन। माई के हाथ धइलन, छोड़ दिहलन। चाचा शोभना के हाथ धइके रोवे लगलन– बेटी रे, शोभना रे, सियरा माई के पसन्द क लिहलसि। शोभना की माई के सियरा

ले गइल।

शोभना का दिमागे में सियरा हुआँ–हुआँ करे लागल।

चाचा का जइसे हतियारी लागि गइल होखे। उनुका बुझाये कि ऊ हमार कसूरवार बाड़ें। चाचा कहें– आगि लागे हमरा मुँहें में। एही मुँहें से निकसलि कुभाखा भउजी के ले गइल। शोभना, ऊ तोहरे माई ना, हमरो माई रहली। आपन माई तऽ हमरा मनें ना परेली। हमके त भउजिये पोसली–पलली। हम उनुका अइसन तऽ ना बनि पाइब बाकी अपना जनते कवनो दुःख तुहके ना होखे देब।

"दुःख ना होखे देब तऽ चलऽ रोटी बनावऽ। बड़ी जोर से भूखि लागल बा।" शोभना बिच्चे में बाति काटि के बोले।

रोटी बनावत में चाचा भतीजी में बहस होखे लागे। के रोटी बेली, के रोटी फुलाई। शोभना कहें'– "हम दूनूँ कऽ लेब।"

चाचा कहें– "तूँ बेलऽ हम फुलाइब, तूँ जरि जइबू।"

शोभना जीति जाये– "हमके माई सब सिखवले बाड़ी। पहिले खेल–खेल में झुट्ठो–मुट्ठो के बनावत रहनीं, अब सच्चो–मुच्चो के बनाइब। कइसन जरल आ कइसन खोरल?"

चाचा दंग रहि जायें। शोभना गोल–गोल, फूलल–फूलल रोटी बनावत रहली।

जेतना देर में शोभना रोटी बनावें, चाचा पलखत पा के घर झारि दें, शोभना के कपड़ा साफ क दें।

चाचा माई के केतना सेवा कइलें।

चाचा शोभना के केतना खयाल करेलें।

चाचा का आगे शोभना का सिर झुकावे के मन करेला।

सबका नजर में शोभना सेयान होत रहली। बड़–बूढ़ लोग पिताजी के टोके लागल। पिताजी विरोध कइले। जबसे शोभना के पढ़ाई पूरा न होई, बिआह ना होई। एक दिन तऽ पढ़ाई पूरा होखहीं के रहे। एम0ए0 कइला का बाद शोभना के बिआह हो गइल।

बिदा करत के पिताजी बेटी लगे अइलें।– "बेटी हो, पढ़ल लिखल बाडू। ऊँच–नीच समुझिहऽ।"
बेटी के आँखि ऊपर उठल ना। आवाज में पिताजी के चेहरा लउकल।

आँसु के रोकला का कोसिस में ललाइल नाक, लिलार पर चमकत पसीना के चिन्हासी आ काँपत ओठ।

चाचा दामाद लगे गइलें– "आपन मणि देतानीं जा। भउजी के पोसल पुतरी सउँपतानी जा।" दामाद के हाथ धइले चाचा फफक–फफक के रोवत रहले।

"एतना बड़ घरे बिअहनीं सभे। बेटी रानी–रउताइन बनि के रहिहें।" लोग–बाग दुनूँ भाई के तोख देत रहे।

ससुरे आके शोभना सांचो रानी–रउताइन बनि गइली।

गाँव–सहर–दूनूँ जगह हवेली अस मकान, घर भर नोकर–चाकर, सबका पर हुकुम बजावत साहब–वकील साहब–सबकर ऊ साहब रहलें। शोभनो के ऊ साहब भइलें।

"अचिको ईस्–बीस् साहब का बरदास का बाहर हऽ। सब काम फिट्–फाट्।"– सासु बतवली।

ई बाति शोभना से अधिका के जानीं?

जब शोभना का जूड़ा के बन्द खुलि गइल, शोभना अपना अस्तित्व के सब बन्द खोसे खातिर प्रस्तुत हो गइली।

पुरुष गंध से शोभना अस मतली कि तन के सुधि ना रहल। मन करे कि ई मतवना एतना चढ़े, एतना चढ़े कि उतरि जाये। इहे भइल।

जब सुधि लवटल शोभना आपन सिर साहेब की पीठी लाग सटल रहली।

मन कइल, ऊ सूतल मुखड़ा निहरतीं जवन जादू कऽ दिहलस।

ऊ सब निहरतीं जवना के आपन सब दे दिहलीं।

मुँहे से बोल ना फुटल।

बाहिं लफा के मनमाफिक मुद्रा में कहल चहली।

"ऊ हूँ, अबका? सूते दऽ।"

– बोली सटाक से लागल।

दोसर खेल रहित तऽ शोभना उठि बइठिती आ कहिती– "हमार दाँव खेलावऽ हम हारल बानीं, हम जीति के रहब।"

आ ऊ दाँव खेलिती जवना के गारी कहल जाला। असभ्य समाज से लेके सभ्य समाज तक जवना के सुनत लइकी औरत बनेले आ फूंकि–तापि दिहल जाले।

कवन नाम दिआइत ओ खेल के?

गारी आ कि बलात्कार?

बाकी जवन दाँव शोभना खेलली ओमें तऽ हारले चहली, अपना हार का सुख के मनें–मने पीयल चाहत रहली, देखल चाहत रहली, जेसे ऊ हरली ऊ केतना बड़ा धुरन्धर बा।

हे विधाता! कवन आन्ही चऽलि गइल?

शोभना का आगा देवाल अस पीठि रहे ओही से सटल, कपार पीटत शोभना पटा गइली।

सबेरे साहब का घर में सब फिट–फाट रहे। शोभना का इस्–बिस् के कवनो जगह उहाँ ना रहे।

ठीके तऽ। आखिर शोभना चाहत का रहली?

शोभना अपने आप से सवाल कइली। ई तऽ नाक पर गुस्सा भइल। पिछउड़ कइला के एतना मान? ऊ कवनो कोरवँसुहा लइका तऽ नइखी कि पिछउड़ कइला से दोष लागी। गलती शोभना में बा। तृप्ति के घूंट पिअला का बादो ऊ पति के कसूरवार मानऽ ताड़ी। जवना आदमी का साथे जनम के गृहस्थी चलावे के बा, ओ आदमी खातिर अइसन सोच? कइसे निबही। शोभना का ऊँच–नीच सोचे के चाहीं। बेमतलब बात के बतंगड़ बना के आपन मन खराब कइला से का लाभ?

रात–पर–रात, रात–पर–रात अइसे अनिगन रात बीत गइल, बीतत गइल। शोभना के सेज उनुकी देह आ मन का एकतानता के गवाह ना बनल।

कदाचित सेज पर मौन के भाषा में जवन सन्देश भेजल जाये ओमे मन खातिर कुछ रहबे ना करे। देह आपन सन्देश पाके झंकृत हो जाये, मन उदास अलगे खड़ा रहे। विचित्र विसंगति रहे।

एपर शोभना के कवन जोर चलित?

एपर शोभना काहें जोर चलवती?

शोभना का लागल साहब का साथे जिनिगी सफल होई बाकि सार्थक नाहीं।

शोभना का सोचे के चाहीं कि साहब का पास आलतू–फालतू बाति में दिमाग खपावे के समय नइखे। मन, मन, मन के लेके दुनिया चलि भइल। साहब की बात–ब्यवहार का बारे में ठीक से विचार कइला पर शोभना का सामने ई बात साफ भइल कि शोभना का इहे सोचहीं के चाहत रहल। एसे अलग होके सोचल शोभना के नासमझी रहल।

अपना मरीज माई के खेती–बारी की देखभाल खातिर गाँवे राखल, छोटका नोकर रघु के दिन–रात खटावल, धूरी में जेंवर बरि के मुवक्किलन से पइसा लिहल– साहब का दिनचर्या में सामान्य बाति रहे।

सोचत–समुझत शोभना जान पवली कि केतना–केतना मलिनता, धूसरता में उनुकर पति लिपटल बाड़ें, केतना कुत्सित कालिमा उनुके घेरले बा। उन्मुक्त, उदार वातावरण में पलल–बढ़ल शोभना, रचि–रचि गढ़ल पुतरी शोभना के मेल इहाँ कइसे मिलित? बेमेल चीजु कब्बो फबे का?

शोभना निश्चय कइली।

शोभना आपन मेल बनइहें। ऊ सावित्री बनिके मरणरूपी मनोभूमि से अपना पति के खींच लीहें।

अइसे गिरत–उठत जिनिगी आपन राहि बनावत जाति रहे। शोभना दू लइका के, एक लइकी के महतारी बनली। रज्ज–गज्ज गृहस्थी में कवनो कमी ना रहे। शोभना अपना निश्चय के डोर पकड़ले आगे बढ़त रहली। उनुका पता ना रहे कि डोर अब्बे कट से कटी। ओके जोरते में उनुकर मरण दिन आ जाई।

रात के आठ बजत होई। सबेरे के कॉलेज निकलल बेटी अबहिन ले आइल ना रहली। बेटा दूनूँ हॉस्टल में रहले। के खोजे, के पूछे? साहब कब्बो छत पर टहलें, कब्बो पानी पीयें।

"तुहरे बिगाड़ल बेटी हऽ। कहनीं, एहू के हॉस्टल में डाल दऽ तऽ ना अपनी लग्गे राखि के पढ़ावल जाई। अब पढ़ावऽ। गइल न इज्जत।" – साहब एतना बाति कहत हाँफि उठलें।

तबले फोन बाजल।

"हलो!"

ओने से बेटी के आवाज रहे।

शोभना की आँखि में गंगा बढ़िया चललीं। बोली ना निकलल।

"अम्मा, हम ठीक बानी। दुःखी मत होइहऽ, परेशान मत होइहऽ, विश्वास बा तूँ हमके समझबू। हम बिआह कऽ लेले बानीं।" – एके सांस में एतना बाति।

फोन हाथ से छूटि गइल।

"हम जानत रहनीं। हमारा अंदाज कब्बो गलत ना होखे। जइसन काँकर ओइसन बीआ, जइसन माई ओइसन धीया।" – साहब के आँख अंगार बरसावत रहे। सुनते शोभना पाथर हो गइली।

का कहलन साहब? केसे जोड़लन?

कई नाम हवा में तैरल।

केसे? केसे??

"हे धरती माता। फाटऽ। सीता लेखा हमके गोदी में लेलऽ!"

शोभना असती ना रहली। शोभना सावित्री ना बन पवली।

शोभना सीता ना बन पवली। शोभना, शोभना रहली।

शोभना केकरा खतिर रोवें? अपनी खातिर कि बेटी खातिर?

शोभना जान पवली–साहब अयोग्य नाहीं असार बाड़े, अश्लील बाड़े, यमरूपी विचार इनके घसीटले जाता।

शोभना जोर देके कहली– "बेटी अपना विवाह के सूचना देले बा। ऊ कुछ कहल चाही कुछ सुनल चाही। माता–पिता का रूप में बिचार कइल उचित रही।"

"बिचार हो गइल। ओसे अब कवनो रिश्ता ना रही।" साहब के साहबी जवाब मिलल।

शोभना खातिर जवाब एकबारगी अजूबा ना रहे। ऊ तऽ जनते रहली।

हँऽ, शोभना खातिर पटाक्षेप अब्बे बाकी रहे।

दुइये साल बाद सुनाइल– बेटी–दामाद में तलाक हो गइल।

का इहे प्रेम रहे?

का इहे तूँ रहलऽ?
हे सत्य! ढाँपल बा सोने के पेहाने से,
तूँ कइसन पेहाने से?
उघरऽ!
केकर हूब बा कि उघार देव तोहके
उघरऽ कि चहुँ ओर अँजोर होइ जाये।
धारऽ कवनो रूप, कवनो भेख।
उतरऽ कि खाली होके
पूरमपूर भर जाईं हम। – शोभना

हाथ में चिट्ठी लिहले सुकन्या कुछु सोचे लगली। तनी रूक के कहली– “अम्मा जो उनुके देखले रहती तऽ एगो फोटउवो रहित।”

हम पुछनीं– “केकर? मर्दाना के कि जनाना के? माई के, कि बहिन के? पिता के कि पति के? भाई के कि सखा के।”

सुकन्या कहली– “ऊ जेकर होखित, होखित तऽ। ऊ के कहले बा?

चन्द तस्वीरे बुतां, चन्द हसीनों के खुतूत।
बाद मरने के मेरे घर से ये सामां निकला।”

■ iinf{k.kk] nf{k.kh mek uxj] lh- lh- jkM] nofj;k] 274001

गीतिका

हीरालाल ‘हीरा’

नाँवे के बा गाँव, इहाँ अइसन परिवर्तन आइल बा
कुइयाँ पोखर, ताल, तलइया सभकर सोत झुराइल बा।

छाइ–छोपि के, बीनि–बान्हि के, टाँगसु जवन पलानी
ओकरा जगहा टीन पलासटिक, घर–घर आजु टँगाइल बा।

बात के ढोवल, बचन निभावल, जहवाँ के पहिचान रहे
बिना बात के, बात का पाछा, उहे गाँव अझुराइल बा।

मीत, पड़ोसिहा अउर भवद्दी, रहे सम्हारत उत्सव के
आज त सगरी जग्य परोजन, ‘वेटर’ के सँउपाइल बा।

उपरी तड़क–भड़क बा अब तऽ, शहर ले बेसी गाँवें में
देखा देखी में कतनन के, ‘रेहन’ खेत धराइल बा।

अइसन भइल कि डाहे इरिखा, फरल–फुलाइल खा लिहलस
बुझला अकिलमन्द एही से, गँउवें छोड़ पराइल बा।

कहाँ गइल रस कोल्हुवाड़ा के अउर सोन्हाई भेली के
कई बरिस पर ‘हीरा’ काहें, बरबस मन लुलुआइल बा।

■ HkkOLV0cd] ncgj] cfy;k

हँ!

बरमेश्वर सिंह

गनउड़ी तमाशबीनन के खूब हँसावेला। अपना उटपटांग आ हँसोड़ करतब से ऊ देखनिहारन के अँतरी तक गुदगुदा देबेला। बाकिर, ई लीला खाली थिएटर के शो तक। थिएटर के शो खतम होखते ऊ जोकर ना रहि के, एगो चुप, उदास आ अपने–आप में डूबल, बलुक कठुआइल काठ लेखा नीरस मनई हो जाला। अतना उदास आ चुप–चुप रहे वाला गनउड़ी थिएटर के स्टेज पर अतना चुलबुला, हँसोड़ आ रसिक कइसे हो जाला, ई अचरज के बात बा।

गनउड़ी रुमाल से आपन चेहरा पोंछलस। फिर गवें उठि के अपना टीन के बक्सा में से आईना निकालि के आपन मुँह देखलसु। ठिगना कद–काठी पर करिया–कलूटा, बदसूरत, बलुक डेरावन चेहरा देखि के ओकर मन बइठि गइल। जइसे मोर आपन गोड़ देखि के झँवान हो जाला, ओइसहीं उहो झँवान हो गइल। हो सकेला कि ओकरा दुखित आ उदास रहे के कारण ओकर इहे रंग–रूप, कद–काठी होखे? काहें कि, ओकरा अलावा एह थिएटर के अउरी कुल्हि मरद सुन्दर–सुभेख बाड़ें, कुल्हि लइकी आँख में बिजुरी लेखा चमक जाये वाली बाड़ी।

एक त गनउड़ी के चेहरा डरावन सपना लेखा, आ ऊपर से जब ऊ अपना नाक पर चूना, आँख पर काजर, होठन पर लाल टहकार लिपिस्टिक आ गाल–लिलार पर बनावत स्टेज पर उतरेला त देखनिहारन के धरनिहार लागि जाला। गनउड़ी नकलो उतारे में माहिर बा। कुकुर के रोवला के, कुकुर के भूँकला के जब ऊ नकल उतारेला तब अनमन कुकुरे के भरम हो जाला। जब ऊ बकरी के मेमियइला के नकल उतारेला तब के कही कि बकरी नइखे मेमियात? सबसे मजिगर त ई कि जब ऊ स्टेज से लालू जी के बोली के नकल उतारे लागेला, तब देखनिहार ताली पीटि–पीटि के हँसत कहि उठेलन– 'वाह, गनउड़िया, जीउ पट्ठा!'

स्टेज पर नाचत कउनों लइकी के अपना अँकवार में भरि लेवे खातिर जब ऊ धधा के टूटेला, आ ऊ लइकी गरई मछरी लेखा छटकि के, ओकरा के आपन ठेंगा देखावे लागेली, तब ओकर मन अरुआ जाला, ओकर चेहरा रोवाइन हो जाला।

बाकिर, सवाल ई बा कि गनउड़ी ई सब कउना पेंचे करेला? खाली अपना पेट खातिर? कि पलामू के जंगल–पहाड़ का बीच बसल गाँव में अकेल रहे वाली अपना बूढ़ी–बेवा माई खातिर? पाँच बरिस होखे के आइल। गनउड़ी अपना माई से चुप्पे गाँव से भागि आइल रहे। ओ घड़ी ओकर उमिरे का रहे? इहे उनइन–बीस के रहल होई। बाकिर, ऊ अकारण ना भागल रहे। ओकर कारण रहे। गनउड़ी का पाले दादा–बाप के समय के पाँच बिगहा जोतन जमीन रहे। कुल्हि जमीन एक फसिला रहे। खाली मोटांजा होखत रहे। ओही के सहारे केहू तरी माई–बेटा के सालों जिनिगी के ललटेन जरत रहे। बाकिर, एने आके 'मउआर' अपना दर्जन भर गाय–गोरूअन के छुट्टा छोड़े लागल रहे। जब गनउड़ी के फसल बर्बाद होखे लागल रहे, तब ऊ मउआर का आगू गिड़गिड़ाइल रही। बाकिर, मनशोख मउआर के मुँह से कुकाठ बोली निकलल रहे– "जो–जो, रखवारी कर, मउआरो के गोरुअन के अब चरवाही लागी का?"

गनउड़ी के मन पितपिता गइल रहे। ओकरा देहि के कुल्हि नस धेनुही के डोरी लेखा तना गइल रहे। फिर ऊ आपन मुट्ठी बान्हत मने–मन बुदबुदाइल रहे– 'लाल सलाम!'

ओही राति खा गनउड़ी अपना माई से चुप्पे गाँव छोड़ि दिहले रहे। दरअसल, ओकर मंशा मउआर के सबक सीखावे खातिर नक्सली हो जाय के रहे। बाकिर, कैमूर के पहाड़ियन में पुलिस के घेरा होखे का चलते ओकर योजना आगे खातिर सरकि गइल रहे। एह बीच ऊ कुछ घूम–फिर लिहल चहले रहे। एही क्रम में ऊ घूमत–घामत सोनपुर मेला में पहुँचि गइल रहे। बाकिर, पेट जे ना करावे? दू दिन तक मेला में डोलत रहला के बाद ऊ मेला में आइल 'सारदा थिएटिकल कम्पनी' में कुली के काम करे लागल रहे। फिर त कम्पनी का संगे एह मेला, ओह मोला, एह शहर ओह शहर में घूमत–खटत ऊ साल लागत–लागत ओह कम्पनी के जोकर हो गइल रहे।

गनउड़ी आईना रखे खातिर बक्सा खोललसु। तलुक बक्सा के खोली में से एगो तस्वीर नीचे गिरि गइल। मनउड़ी ओह तस्वीर के उठावत मुसकाइल। ई तस्वीर कम्पनी के सबसे सुन्दर, सबसे चुलबुली लइकी चम्पा विश्वास के बा। ई तस्वीर ओकरा चम्पा के तम्बू के बाहर गिरल मिलल रहे। तबे से ई तस्वीर ओकरा बक्सा में बा। हालांकि, ऊ जबे–तब बक्सा में से निकालि के एह तस्वीर के देखत रहेला। चम्पा गनउड़ी के हमउमिरिया बाड़ी। ऊ बंगालिन बाड़ी। बाकिर भोजपुरी बोले के सीखि लिहले बोड़ी। सिरी फरहाद में सिरी, लैला–मजनू में लैला, सोहनी–महिवाल में सोहनी बने वाली चम्पा जतना बढ़िया नाचेली, ओतने बढ़िया गइबो करेली।

गनउड़ी तस्वीर के गौर से देखलसु। ऊ जब–जब एह तस्वीर के देखेला, ओकर मन मोर हो जाला। तस्वीर में चम्पा ओइसहीं हँसि रहल बाड़ी, जइसे ऊ स्टेज पर गनउड़ी के कौतुक देखि के हँसेली। बाकिर, गनउड़ी के एक बात के मलाल बा। जब ऊ स्टेज पर लचकत चम्पा के अपना अँकवार में भरि लेवे खातिर धधा के टूटेला, तब चम्पा कतरा के ओकरा माथ पर एगो हलुकाह चपत लगावत हँसे लागेली, आ गनउड़ी

एगो अबोध बुतुरू लेखा चम्पा का ओर टुकुर–टुकुर ताके लागेला। इहे चम्पा का ओहू दिन रही, जब स्टेज पर कौतुक करत गनउड़ी गिर पड़ल रहे? गनउड़ी के बेसी चोट ना लागल रहे। तइयो चम्पा कतना मोहाइल रही, ओकर फिल्ली, जहवाँ चोट लागल रहे, ऊ कतना देर तक सुघरवले रही?

आखिरी शो एगारह बजे रात के खतम होला। तब गनउड़ी कम्पनी के मेस में खा–पीके अपना तम्बू में चलि जाला। कम्पनी के लइकी कुल्हि एगो बड़ तम्बू में सुतेली। कम्पनी के मरद लोग शामियाना में सुति जाला। रात के साढ़े बारह बजे सभे के हाजिरी होला। सभे अपना–अपना जगह पर बा कि ना, ई देखल जाला। कम्पनी के मलकिनी, सारदा बाई, ए सब ममिला में बड़ा कड़ेर बाड़ी। बाकिर, ऊ गनउड़ी के खूब मानेली। गनउड़ी में गुणों बा। ऊ कम्पनी के हर आदमी के सेवा–टहल करत रहेला। बीमारन के गोड़तारी त ऊ रात–रात भर बइठल रहि जाला। चम्पा के जब बोखार लागल रहे त उनुका सेवा में लागल गनउड़ी के भूख–पियास तक मरा गइल रहे। एकरा अलावा गनउड़ी कम्पनी के कुलियन के जरूरत पड़ला पर दस–पाँच रूपया देत रहेला। ओकर एह दरियादिली पर चम्पा ओकरा के एक बार टोकलहूँ रही– "तोहरा ढेर पइसा हो गइल बा का, जोकर भाई!"

चम्पा जब ओकरा के जोकर भाई कहेली तब ओकर मन निहँसि जाला। ओहू दिन ओकर मन अरूआ गइल रहे। तबो ऊ मुसकाए के कोशिश करत कहले रहे– "तन ढके खातिर गज भर कपड़ा आ खाए खातिर मुट्ठी भर अन्न, ए से बेसी आदमी के अउरी का चाहीं, चम्पा!"

"ना!" – चम्पा चहकत कहले रही– "आदिमी के सब कुछ चाहीं– धन–दौलत, ऐश–आराम, घर–परिवार, सब कुछ।" गनउड़ी तस्वीर के एक बार फिर देखलसु। फिर ऊ अपना रुमाल से तस्वीर के पोंछत बुदबुदाइल– "हँ, आदमी के ई तस्वीरो चाहीं, ए चम्पा!"

आखिरी शो के बाद गनउड़ी अपना तम्बू में आ गइल बा। घंटा भर पहिले कम्पनी के मुंशी हाजिरी ले के जा चुकल बा। बाकिर, अबहीं तक गनउड़ी के आँखिन में नींद नइखे। करवट बदलत ओकर मन जाने केने–केने छिछिया रहल बा। खने ऊ अपना गाँवें पहुँचि के माई का गोदी में बइठि के गोदइला हो जात बा त खने मउवार के चेहरा इयाद कइ के तमतमाइल जवान खने केसरी साहेब के सूरत इयाद करि के सिहरि जात बा, त खने चम्पा के हँसत चेहरा ओकरो के चहका देत बा। एक महीना भइल। माई के खर्चा देबे खातिर एक रात खातिर गनउड़ी गाँवें गइल रहे। माई अबकी बेसी थाकल–थाकल लेखा लागल रहे। बुझात बा अब गनउड़ी के कम्पनी छोड़ि के गाँवहीं रहे के पड़ी। मउआरो के ई समझावल जरूरी बा कि युग बदलि गइल बा, ए साहेब! रउवों ठंढा जाईं, ना त ठंढा करि दिहल जाई। आ ई केसरी सहेबवा कउना गुमाने पादत रहेला। सारदा बाई के मरद बा, एही गुमाने नूं? अरे, ऊ त सारदा बाई लेखा गऊ मेहरारू मिलल बाड़ी तब नूं? दोसर मेहरारू रहित त केसरिया जइसन मरद के चुत्तर पर लात मारि के भगा दिहले रहित। लुच्चा बा, केसरिया। खाली दारू पी के तम्बू में पड़ल रहेला, निठल्लू। आ तम्बू से जब निकली त जे भी सामने पड़ी ओकरा पर ऊ कुकुर लेखा भूँके लागी। आज हमरा के ऊ बेखदी–बदी के डाँटि दिहलसु हा। आ ई चम्पा हमरा के जोकर भाई काहें कहेली? हमार नाम उनुका जहर लागेला का? बाकिर, ना अपना हँसी से त ऊ बरमहल मधुये चुवावत रहेली।

गनउड़ी फिर करवट बदललसु। एही संगे ओकरा मन के पाँख फिर खुलल। कम्पनी ओ घड़ी सिंघेश्वर के मेला में तमाशा दिखावत रहे। उहवें एक दिन चम्पा ओकरा से पुछले रही– "तू केहू से प्रेम करेलऽ कि ना ए जोकर भाई!"

गनउड़ी सकपका कइल रहे। बाकिर तुरंते सम्हरि के उहो सवाल करि दिहले रहे– "प्रेम कइसे कइल जाला?"

चम्पा के आँख चमकि गइल रहे। फिर ऊ मुसकात कहले रही– "प्रेम करे खातिर आकाश से तारा तूड़ि के ना ले आवे के पड़े, ए जोकर भाई! प्रेम करे खातिर खाली एक–दोसरा के प्रति साँच–साफ भाव से समर्पण आ विश्वास के जरूरत पड़ेला।"

गनउड़ी के मन कुछ हरियरा गइल रहे जरूर। बाकिर, ओकरा मन में एगो शंको रहे। एही से ऊ गवें कहले रहे– "हमरा से प्रेम के करी?"

चम्पा तपाक से कहले रही– "काहें, तोहरा में का कमी बा?"

गनउड़ी आपन आँख चम्पा पर गड़ा के कहले रहे– "तोहरा नइखें लउकत कि हमरा में का कमी बा?"

चम्पा सहज भाव से कहले रही– "ना, हमरा त तोहरा में कउनों कमी नइखे लउकत। बाकिर हँ, एगो छोट–मोट कमी ई बा कि तू ऊ पारस पत्थर बाड़ऽ, जे पीतर के त सोना बना देवेला, बाकिर खुद अपना तकदीर बदले का विषय में ना सोचे। आदमी के अपनों हिसाबन के जोड़–घटाव करत रहे कि चाहीं, ए जोकर भाई!"

अतना कहि के चम्पा खिलखिलात अपना तम्बू का ओर बढ़ि गइल रही। गनउड़ी के आँख, लपकत जात चम्पा पर टंगा गइल रहे। फिर ऊ चम्पा पर आपन नजर टिकवले बुदबुदाइल रहे– "हम अतना बुरबक नइखीं, ए चम्पा! हमहूँ मिडिल पास बानी। सब बुझत बानी, हम...।"

गउनड़ी के आँख बन्द बा। बाकिर ओकरा आँखिन के नींद कहीं उड़ि गइल बा। ऊ फिर करवट बदललसु। रात सायँ–सायँ करत बा। ददरी मेला के किच्–काच कबे शांत हो गइल बा। बाकिर, ओकर मन अबहीं तक पवँरत बा। ऊ एगो लमहर साँस खीचलसु। तलुक ओकरा अपना तम्बू में केहू के ढुके के आहट मिलल। ऊ हड़बड़ाइले उठि के बइठि गइल। सामने चम्पा बाड़ी। गनउड़ी के धक् से लागल। तम्बू में जरि रहल बिजुरी के बल्ब से करेन्ट निकलि के जइसे ओकरा देहि में दउड़ि गइल। ऊ हकलात पूछतलसु– "चम्पा तू, इहवाँ, अतना राति खा!"

चम्पा उदास बाड़ी। दुख के रेखा उनुकर चेहरा के भारी करि दिहले बा। ऊ गनउड़ी के बिछावन पर बइठत सिसुके लगली।

गनउड़ी अचकचा के पूछलसु– "अरे, तू रोवत काहें बाडू?"

चम्पा के सिसुकला के रफ्तार बढ़ल। उनुका हिचकी आवे लागल। आँख से ढरकल लोर के पवनारा उनुका गाल पर बहे लागल। गनउड़ी फिर टोकलसु– "काहें रोवत बाडू, कहबू तब नू?"

चम्पा सिसुकत कहली– "हम बड़ा मुसीबत में पड़ि गइल बानी, गउनड़ी जी!"

'गनउड़ी जी?' गनउड़ी के अचरज भइल। चम्पा ओकरा के त बरमहल जोकर भाई कहेली? आज गनउड़ी जी? ओकरा कोतुहल भइल, ओकर जिज्ञासा बढ़ल। ऊ चम्पा से कहलसु– "हम बानी नू, हमरा पर विश्वास करऽ, कहऽ, काहें रोवत बाडू?"

चम्पा ओढ़नी से आँख के लोर पोंछत कहली– "विश्वास बा तब नू आइल बानी! तोहार दिल जतना सुन्दर बा, ओतना सुन्दर दिल के एक कम्पनी में दूसर केहू नइखे।"

गनउड़ी तपाक् से कहलस– "तब कहऽ, झिझिकत काहें बाडू?"

चम्पा घुटकत कहली– "हम बहुत गरीब लइकी बानी, गनउड़ी जी! जलपाईगुड़ी में हमार बूढ़ माई–बाप बाड़े। बाबू आन्हर बाड़ें। ओ लोग के रोटी आ खोली के किराया हमरे कमाई से चलेला। ऊ लोग भूखे मरि जाई।"

गनउड़ी के अचरज भइल। पूछलसु– "काहें, ऊ लोग भूखे काहें मरि जाई?"

– "काल्हु शारदा बाई हमरा के कम्पनी के नोकरी से निकालि दिहन। हम कहाँ जाइब, का करब?"

– "शारदा बाई तोहरा के नोकरी से निकालि दिहें? ना, ऊ अइसन काहें करिहें? तोहरा से कउनों गलती हो गइल बा का?"

– "गनउड़ी जी.... गनउड़ी जी.... हम.... हम...."

– "हँ–हँ, कहऽ झिझिकऽ जनि।"

– "हम माई बने वाली बानी, गनउड़ी जी!"

गनउड़ी पर जइसे आकाश टूटि गइल। थोड़िका देर तक ओकरा जइसे कठेया मारि दिहलसु। फिर ऊ अचकचा के चम्पा से पूछलसु– "तूं ई का कहत बाडू, चम्पा!"

"हँ गनउड़ी जी!" चम्पा ओही तरी कलपत कहली– "ई डेढ़ महीना पहिले के बात बा। दिन के दस बजत रहे। हम एगो काम से शारदा बाई के तम्बू में गइल रहीं। शारदा बाई ओ घड़ी बाजार गइल रही। तम्बू में खाली केसरी साहेब रहलें। हम पूछि के लौटत रहीं तलुक केसरी साहेब हमरा के दबोचि लिहलें। हम झका–झूमर कइलीं, चिचियाइल चहलीं, बाकिर ऊ पापी हमार मुँह बन्द.... "

अतना कहत–कहत चम्पा फूट–फूट के रोवे लगली। गनउड़ी के देहि में जइसे आग लागि गइल। ओकर खून खउले लागल। ऊ तमतमाइल उठत कहलसु– "हम केसरिया के खून पी जाइबि।"

"ना–ना शारदा बाई का कहिहें?" ई कहत चम्पा तम्बू के निकसार पर खाड़ हो के गनउड़ी के राह रोकि लिहली।

उफनत दूध जइसे पानी के छींटा पावते शांत हो जाला, ओइसहीं शारदा बाई के नाम सुनते गनउड़ी के चढ़ल पारा गिरि गइल। शारदा बाई ओकरा के बेटा लेखा मानेली। बाकिर, अब का होई? ई चम्पा बेचारी... गनउड़ी चम्पा का ओर मुँह उठा के कहलसु– "तोहरा अइसन लइकी के एह नचनिया–बजनियन का बीच में ना आवे के चाहत रहे, चम्पा!"

"का करतीं!" चम्पा मसुआइल कहली– "बाबू रिक्सा चलावत रहन। अचानक उनुकर दूनों आँख के रोशनी चलि गइल। हम ओही साल मैट्रिक पास कइले रहीं। इस्कूल में डांस सीखले रहीं। उहे काम आइल! हालांकि, हम अपना एह जिनिगी से खुश नइखीं। बाकिर, का करीं, मजबूरी बा!"

गनउड़ी के मन भारी हो गइल। ओकर मुँह जबदि गइल। ऊ सोच में पड़ि गइल। थोड़िका देर खातिर तम्बू में सन्नाटा पसरि गइल। आखिर गनउड़िये के बोल फुटल– "तोहरा ओही दिन शारदा बाई से कहि देवे के चाहत रहे, जेह दिन के ई घटना बा!"

चम्पा आपन मुड़ी झुकवलहीं कहलीं– "लोक–लाज के डरि से ना कहलीं। हमरा इहो बुझाइल रहे कि शारदा बाई हमार बात पतियइहें कि ना!"

– "बाकिर, अब त कहहीं के पड़ी?"

– "हमरा माई बने वाली बात त ऊ जानत बाड़ी। हमरा संगे के लइकिन में से केहू उनुका के ई बात बता दिहले बा!"

– "अच्छा! ओकरा बादो शारदा बाई कुछ ना कइली?"

– "आज सबेरहीं ऊ हमरा के बोलवले रहे!"

– फिर?

– ऊ हमरा से ई पूछली कि "ई पेट केकर बा? तू ओकर नाम बतावऽ! हम तोहार शादी ओकरा से करवा देहबि!"

– "तू नाम बतवलू?"

– "हम केसरी साहेब के नाम बताईं तब दुख, ना बताईं तब दुख, हम उनुकर नाम ना बतवलीं!"

– "फिर शारदा बाई का कहली?"

– "ऊ हमरा के समझवली, डरऽ जनि, जिनिगी में अइसन गलती हो जाला, तू नाम बतावऽ, तोहार शादी धूम–धाम से होई!"

– "ओकरा बादो तू केसरी साहेब के नाम ना बतवलू?"

– "कइसे बतइतीं, बेंवत कहाँ रहे?"

– "फिर शारदा बाई का कहली?"

– "ऊ खिसिया के हमरा के हिदायत कइली कि काल्हु तक नाम बता दऽ, ना त तोहरा एह कम्पनी के नोकरी छोड़ि के जायके पड़ी। बदचलन लइकी खातिर हमरा किहाँ जगह नइखे!"

अतना कहि के चम्पा फिर सिसुके लगली। फिर सिसकुत कलपत ऊ आगे कहली– "हम कहाँ जाइबि, का करब? समाज में हम आपन मुँह कइसे देखाइबि? हमरा बाबू–माई के का होई?"

गनउड़ी फेरा में फँसि गइल– "ई कउन अफतरा हमरा कपारे आ गइल, दादा!" ऊ आपन मुड़ी उठा के एगो लमहर साँस छोड़लसु। फिर ऊ आपन आँख बन्द करि लिहलसु। ओकर मन अउँजाय लागल, आ ओकरा दिमाग में विचारन के हल्फा उठे लागल। आपन, अपना माई के, गाँव–घर के, मउआर के, केसरी साहेब क, शारदा बाई के, चम्पा के, चम्पा के माई–बाबू के, हल्फा पर हल्फा। ऊ हड़बड़ा के आपन आँख खोललसु। सामने चम्पा बइठल बाड़ी। उनुकर चेहरा बुझल–बुझल बा।

गनउड़ी के मन दुखा गइल। अचानक ओकरा अपना माई के बात इयाद पड़ि गइल– "बेटा, दुखियन के मदद जरूर करिह!" गनउड़ी का सामने जइसे झक् से अँजोर पसरि कगइल। ऊ मुसकाइल! ओकर मन तनी हरियराइल। ओकरा बुझाइल जइसे जंगल में भटकत राही के एगो राह मिलि गइल बा।

गनउड़ी गवें उठल आ अपना बक्सा में रखल चम्पा के तस्वीर के निकालि के ले आइल। फिर ऊ तस्वीर के चम्पा का ओर बढ़ावत कहलसु– "चम्पा, ई तस्वीर तोहार बा। बहुत दिन से ई हमरा बक्सा में बन्द बा। बाकिर, ई तस्वीर निर्जीव बा। तोहार सजीव तस्वीर हमरा दिल में बन्द बा। ओकरा के हम ना निकालि सकीं!"

चम्पा अचकचा गइली। उनुकर चिहाइल नजर गनउड़ी पर अँटकि गइल। गनउड़ी आगे कहलसु– "हम शारदा बाई का आगे ई स्वीकार करि लेइबि कि तोहरा पेट में पले वाला जीव हमार अंश बा। बाकिर, का तूहूँ ई बात स्वीकार करबू? का तू हमरा से शादी करबू?"

चम्पा के नजर झुकि गइल। ऊ अपना दहिना हाथ के तर्जनी से जमीन पर लकीर खींचे लगली। गनउड़ी, चम्पा के फिर टोकलसु– "मुड़ी उठावऽ चम्पा! कहऽ, का तू हमरा से शादी करबू?"

चम्पा आपन मुड़ी गवें–गवें उठवली। उनुका होठन पर मुसकी के एगो पातर रेखा उभरि गइल। फिर ऊ गवें से कहली– "हँ!"

■ /kuMhgk] Hkkst iqj] 802160

गजल

✍ ब्रजेन्द्र नारायण 'शैलेश'

बीतल समय न याद कर ऽ !
मत जिनिगी बरबाद कर ऽ !!

दिहले बा तकदीर जवन
ओहसे घर आबाद कर ऽ !

बहुत निर्दई हऽ दुनिया
मत एहसे फरियाद कर ऽ !

भाय, जिये के खातिर तूँ
राह नया ईजाद कर ऽ !

चुप्पी में बा घुटन बहुत
नीक लगी, संवाद कर ऽ !

■ 500@1] lR;e uxj ¼xkMfu;k Ldwy ds mRrj ujh xyh½] Hkxokuiqj] okjk.klh&221005

यादगार

कन्हैया सिंह 'सदय'

सांसारिक सुख साधन के बिटोरे आ कवनो विधि धन, मान, यश अर्जित करे में व्यस्त आदमी का समय के बदलाव, जवन आस्ते–आस्ते होला, पते ना चले। सुनीता आ आनंद के बियाह के पचीस साल बीत चुकल रहे, तबो, ओह लोग का लागे, काल्हे के बात ह। सुख के दिन बीतत देर ना लागे आ दुख के एके पल पहाड़ हो जाला।

आनंद, एगो सम्पन्न परिवार के सुन्दर, सुशिक्षित, स्वावलंबी ओ नेकदिल इंसान रहन। शादी से पहिलहीं ऊ मेकानिकल इंजीनियरिंग के डिप्लोमा पास कके टिस्को, जमशेदपुर में सहायक अभियंता के पद पर नियोजित हो चुकल रहन। सुनीता, ओह जमीन के पौधा रही जहवां बेटा के वंश–बेल बढ़ावे वाली आ बेटी के धन–मान घटावे वाली संतान समुझल जात रहे। पालन–पोसन, शिक्षा–दीक्षा, खान–पान आ पहिराव–ओढ़ाव सभ में बेटी के साथ सौतेला व्यवहार होत रहे। दो सग के के कहो जब महतारियो बाप, बेटी के हीन भाव से देखे। इहे वोजे रहल कि उनकर दूनू भाई पढ़–लिखके नौकरी पकड़ लिहलें आ उनका के प्रवेशिका ले पढ़ा के घरे बइठा दिहल गइल। फेरू वर–खोजाई शुरू हो गइल। बाबूजी जहाँ जाई, एगो भारी भरिखम दहेज के मांग होखे आ उहां का बैरंग वापस लौट आईं। भाई लोग खातिर त कपरबथी हो गइल रही ऊ। देखते–देखत उमिर के बाइस बसंत पार हो गइल। तब, एगो सुखद घटनाा घटलि।

एक दिन ग्राम पंचायत मुखिया के बेटी चंचल, जवन सुनीता के क्लास फेलो आ सहेली रहे, अपना विवाह के नेवता लेके घरे आइल आ जयमाल में शामिल होखे के आग्रह कइलस। सुनीता के पास एको गो ढंग के कपड़ा ना रहे, एह से ऊ नाकुर–नुकुर कइली। बाकिर, जब ऊ कहलस– "चिन्ता मत करऽ, हमरा पाले एगो अधिका लहंगा–सेट बा, तूं ऊ पहिर लीहऽ..."। तब सुनीता राजी हो गइली। फेर, चंचल अपना होखे वाला पति के फोटो देखावत कहलस– "ई लइका ओही कॉलेज में प्राध्यापक बा, जवना से हम बी0कॉम कइले बानी...।"

"फेर त देखा–देखी भइले होई....।"

"एही से नू, पांचे लाख में मामला पट गइल हा....।" कहत ऊ मुस्कियलस त सुनीतो के चेहरा खिल उठल।

सजधज के बारात आइल। द्वार–पूजा के बाद जयमाल के कार्यक्रम रहे। मंच के बीच चाँदी के पत्तर चढ़ावल दू गो महाराजा सोफा... जवना के एक बगल बर–पक्ष के मित्र मंडली आ विशेष परिजन... दोसरा बगल कन्या–पक्ष के सखी–सलेहर आ महिला लोग खाड़ भइल। एतने में चंचल के भउजाई अपना अंकवारी के सहारा देके उनका के मंच प ले अइली आ उनका पीछे रहली आरती के थाल आ माला लिहले सुनीता। फोटोग्राफर सक्रिय हो उठले। जब आरती होखे लागल तब दुलहा–पक्ष के कवनो लड़िका चुहल कइलस। सुनीता मुड़के मुस्कियइली आ चल गइल जादू। उनका खंजन नयनन के बांकपन, कंचन काया के सुघड़पन आ रूप–रंग के सम्मोहन से दुलहा के छोट भाई आनंद विमोहित हो गइले। फेर त ऊ अपना मन से लेके मोबाइल तक में ओह मोहिनी छवि के कैद करे में कवनो कोर कसर ना छोड़ले। एने सुनीतो बियाह के कवनो रसम में उनका सामने आवे में ना हिचकिचइली। अइसने अंकुरित प्रेम के शाश्वत आकर्षण आत्मीय रिश्तन के प्रारंभ बिन्दु बनेला।

घरे लवटला का बाद आनंद, अपना भउजाई चंचल से ओह तस्वीरन के देखा के लड़की के बारे में जाने चहलें। चंचल बतवली– "ई हमार सहेली हीयऽ... अपने जाति–विरादरी के बिया, लाखन में एक.... सहजता, नैतिकता आ सुन्दरता के परतोख...।"

फेर ऊ मुस्कियात पूछली– "का इरादा बा?"

"हम एकरा से शादी करे चाहत बानी...।"

"शादी त हो सकत बा। बाकिर, दहेज त हमरा एतना ना मिली...।"

"हम दहेज–विरोधी हईं... खुद कमा रहल बानी.... शादी त अब एही लड़की से होई... रउरा सहयोग करीं।" आनंद आग्रह कइलें।

"ठीक बा, हम प्रयास करब...।" चंचल के होंठन पर एक बेर फेर मुस्कुराहट रेंग गइल।

दोसरे दिन ई बात जरत मरीचा के गंध अस परिवार में पसर गइल। सांझ खां सभे एक साथ बइठल। आनंद से पुछाइल। जवाब में ऊ जे कुछ कहलें, सुनके बाबूजी आग बबूला हो गइलीं।

"..... दहेज, शोषण के पर्याय ह.... हमार शादी बिना दहेज के ओही लड़की से होई जवना के हम पसंद कइले बानी.... यदि रउरा सभ के हमार प्रस्ताव मंजूर नइखे त हम आजीवन कुंवार रहल पसंद करब...।" कहके आनंद उहाँ से उठ गइलें आ दोसरके दिन जमशेदपुर खातिर रवाना हो गइलें।

आखिर ऊहे भइल, जवन आनंद चाहत रहन। उनका हठ के आगे सभे का झुके के परल। मुखिया

जी के खबर दियाइल, सुनीता के बाबुजी के बोलावल गइल, सुदिन धराइल आ अगिले लगन में चट मंगनी पट शादी सम्पन्न हो गइल। कुछुवे दिन बाद आनंद, सुनीता के साथ, जमशेदपुर आ गइलें। तर्क, तकदीर से हार चुकल रहे आ कर्म भाग्य से...।

जमशेदपुर अइला का बाद जब नेह के नदी बढ़ियाये लागल, यौवन गुनगुनाये लागल आ मिलन के छंद रचाये लागल त एगो सुनहरी किरिन सुनीता के अंतर अंजोर क दिहलस। आनंद पुलकित हो उठलें।

एक दिन सुनीता, आनंद से पुछली– "अगर हमरा कोख से बेटी भइल त राउर का प्रतिक्रिया होई?"

"यदि अइसन भइल त हम अपना के भाग्यशाली समुझब। हम ओकर स्वागत करब... शिक्षा–दीक्षा भा पालन–पोसन में तनिको कोताही ना करब आ अइसन संस्कार देब कि भविष्य में हमनी के नांव रोशन कर सको...।"

"परंपरागत मान्यता का मोताबिक त जब बेटी धरती प गिरेली त ऊ दू आंगुर नीचे धँस जाली... बाप के छाती सिकुड़ जाले आ महतारी अभिशप्त हो जाली। जहाँ बेटा के जनमते कुल, उजियार हो जाला ऊहें बेटी से अन्हार। परिवार खातिर असंतोष, निराशा आ चिन्ता के विषय बनके पैदा होली बेटी। इहे वोजे बा कि आज काल्ह गरभे में बेटी के मार देबे के कोशिश कइल जा रहल बा...।"

"एकर मुख्य वजह बा– अशिक्षा, अंधविश्वास, दहेज प्रथा, गरीबी, आर्थिक परतंत्रता, मूल्यहीनता आ पुरुष–प्रधान समाज के वर्चस्व। समुचित शिक्षा, आत्मनिर्भरता, जागरूकता, सशक्तिकरण से लइकिन के सोच आ सरोकार में बदलाव आ सकत बा। नयकी पीढ़ी एह दिशा में सक्रिय हो चुकल बिया। फेर त ना दहेज के चिन्ता रही ना पुरुष–वर्चस्व के डर... ना भ्रूण–हत्या होई ना दुष्कर्म...।"

"....बेटी जब पढ़–लिखके आत्मनिर्भर बन जात बाड़ी सन, तब ऊ अइसन हरकत करे लागत बाड़ी सन कि बाप–महतारी के सिर शर्म से झुक जाता, दिल लहूलुहान हो जाता... फेर बुढ़ापा के सहारा त बेटे बनत बा...।"

"का हर बेटा लायेके होता? हम त कहत बानी, आज के अधिकतर बेटा नालायेक आ अधिकतर बेटी लायेक होत बाड़ी। अपवाद कहवां नइखे? परिष्कृत संस्कार, उचित परिवेश आ सुसंगत के अभाव में संतान नालायेक बनेले। अब त, लइकियो महतारी–बाप के बुढ़ापा के लाठी बन रहल बाड़ी.... दाह–संस्कार, कजिया, पिंडदान आ तर्पण कर रहल बाड़ी...।"

"रउरा बात में सच्चाई बा, इनकार नइखे–कइल जा सकत। एगो बेटी भइला के नाते लइकाई से लेके जवानी तक हम जेतना भेद–भाव आ अनादर के दंश झेलले बानी ओकरे प्रतिक्रिया स्वरूप उभरल ई सभ सवाल, हमरे आप–बीती के छद्म प्रदर्शन हउवें सन। बेटी आ बेटा एके कोख से जनमेलें। दूनू नर–नारी के प्यार के निशानी होलें, फेर भेद–भाव काहें? आज हम रउरा अस पति पाके गौरवान्वित महसूस कर रहल बानीं। केतना भाग्यशाली बानी हम...। कहत सुनीता के आँख भर आइल। आनंदो भाव–विह्वल हो गइलें।"

"तूं खाली तने के ना, मनो के सुन्दर बाड़ू। हम तोहरा निश्छल प्यार आ शालीन बेवहार से गद्‌गद बानी। तोहरा अस पत्नी पाके त हम धन्य हो गइल बानी... अब आवऽ...।" कहत ऊ सुनीता के अपना ओर खींच लेहलें। बात–चीत के दौरान एक बेर आनंद, सुनीता से पूछले रहन– "गर्भावस्था में हर औरत के कुछ आपन विशेष पसंद होले। का तूं बता सकत बाड़ू कवनो अइसन चीज के नांव जवन तोहरा प्रिय लागत होखे?"

"प्रेम से बढ़के प्रिय हमरा आउर कुछ ना लोग।"

"प्रेम त बहुरूपिया ह.... सृजन के आधार ह.... सांसारिक–मानसिक आ आध्यात्मिक सुख पावे के माध्यम ह.... ई आदि ह, अंत ह...। तूं कवना प्रेम के बात करत बाड़ू? बुझौवल मत बुझावऽ। हमार सवाल छोट बा, तोहार जवाबो छोट होखे के चाहीं...।"

"अच्छा जाये दीं... संक्षेप में कहत बानी– पति–प्रेम के अलावा, सुगंधित फूल, हमरा अच्छा लागेले सन। फूल, सृष्टि के सबसे सुन्दर आ सुकोमल कृति होले सन, एकनी से केहू के अहित ना होखे। हम चाहीले कि हर रोज कम से कम एगो फूल भगवान के तसवीर प चढ़ाईं... फेर ओकरा के आशीर्वाद मान के उठाईं.... अपना जूड़ा में सजाईं आ ओकर सुगंध रउरा तक तक पहुँचाईं....।"

"वाह! तोहरो कवनो जवाब नइखे। एतना छोट इच्छा के अभिव्यक्ति खातिर, एतहत बड़ भूमिका! हम त चक्कर में पर गइली हां। ठीक बा, तोहार ई इच्छा हम पूरा करब...।"

आनंद मुस्कियात कहलें। दोसरे दिन से फूल आवे लागल। डेरा से कुछुवे दूर प शिव–मंदिर रहे आ ओकरा से सटले फूल के दोकान। आनंद जब ड्युटी

से लवटस, कबो माला, गजरा भा छुट्टा फूल लेइये के आवस। सुनीता ओह फूलन के बड़ा ध्यान से निहारस काहें कि ओमें आनंद के प्यार सोझे खाड़ लउके। नव महीना बाद सुनीता एगो सुन्दर–सुकांत कन्या के जनम दिहली। ओकरा के देखके–छूके दूनू बेकत के दिल कमल–फूल अइसन खिल गइल। अस्पताल से जब छुट्टी भइल त ऊ लोग डेरा आइल.... सोहर गवाइल.... लड्डू बंटाइल.... आ ओकरा बरही के दिन त एगो शानदार भोजो के आयोजन भइल। ओही दिन ओकर नामोकरण भइल। आनंद आ सुनीता के प्यार के पहिल पहचान बनल 'जूही'। बरही के अवसर प आनंद के बड़ भाई आ भउजाई आइल रही। भाई त दू दिन बाद वापस लवट गइलें। बाकिर, चंचल, सुनीता के देखभाल करे खातिर रह गइली।

एक महीना बाद जब चंचलो–लवट गइली तब भगवान प चढ़ावल फूल के जूड़ा में सजावे के सिलसिला, जवन एह दौरान थम्ह गइल रहे, फेर शुरू भइल। ओइसे त बालकनी में कुछ गमलन में फूल रहले सन। बाकिर, सुनीता ओकनी के गहबेगह इस्तेमाल करे खातिर बचा के राखस।

ओह दिन साप्ताहिक अवकाश के दिन रहे, सुबह नव के समय। अंदर, आनंद, जूही के साथ खेलत रहन आ बहर, बालकॉनी में सुनीता कुर्सी प बइठके ब्लॉक के सामने वाला पेड़ प ध्यान से कुछ देखत रही। अचानक एगो सुखद स्पर्श उनकर अंग–अंग सिहरा देहलस। गर्दन घुमाके देखली, आनंद रहन। पूछलें– "का देखत बाड़ू सुनीता।"

"देखत बानी घोंसला बनावत ओह बुलबुल दम्पत्ति के। घोंसला हर आन्ही–पानी में उजड़ जाला। बाकिर, ऊ दंपत्ति हिम्मत ना हारेले सन, ओकरा के फेर से मरम्मत करेलें सन.... जोड़ खाले सन.... मादा अंडा देले, सेवेले.... जब अंडा फूटेले सन तब चूजा निकलेले सन आ जब बड़ हो जाले सन त फुर्र से उड़ जाले सन। हम ई सिलसिला साल भर से देख रहल बानी। एकनियो के जिगिनी अजीब बा.... ना खाये के चिंता ना भविष्य के भय... ना कवनो धरम ना संप्रदाय.... बस, खाली बच्चन के उड़ जायेके इन्तजार....।"

"एही के कहल जाला– निस्स्वार्थ प्रेम। बिना कवनो स्वार्थ के केहू खातिर कुछ कर देबे के मजा कुछ आउरे होला। बुलबुल के जोड़ा सृष्टि के रचना में सहभागी जरूर बाड़े सन। बाकिर, प्रतिफल के कामना ओकनी में नइखे। .... मगर तोहरा चिंतन के कारण कुछ आउरे बुझाता...।"

"हं, हम सोचत रहीं.... का हमनी का अपनो खातिर एगो घोंसला नइखीं बनवा सकत?"

"इहें बात कहे खातिर एतहत बड़ घेरा.... कहां कंकरी कहां मचान... धन बाड़ू तूहूं... एकर मतलब तोहरो ई शहर स्वच्छ, सुन्दर, शांत आ सुरक्षित लागेला। निजी मकान बनावे के योजना त हमरो मन में बा... जल्दिये एपर अमल करब...।"

आनंद उनका इच्छा के भला कइसे नकार सकत रहन, जब ऊ चांद के चांदनी, सुरूज के रोशनी आ दिल के धड़कनों में उनके के देखत रहन। कुछुवे दिन बाद प्राइवेट इलाका में एगो छोटे प्लॉट किनाइल.... चहारदिवारी दियाइल आ छव महीना के भीतरे सुनीता के सपनन के महल तइयार हो गइल। कथा–पूजा आ भोज के बाद ऊ लोग कम्पनी क्वार्टर छोड़के अपना घर में आ गइल।

ओह दिन ड्युटी से लवटके जब आनंद घर का लगे पहुंचलें, आ गेट का लगे खड़ा इंतजार करत सुनीता के देखलें तब फूल के इयाद परल। ऊ बाइक घुमा के जब वापस लाये लगलें त सुनीता टोकली– "का बात बा जी!.... कहां जात बानी?"

"फूल ले आवे.... घर पहुंचे के हड़बड़ी में ध्यान से उतर गइल हा...।"

"रउरा घरे आईं अब फूल ना, फूल के पौधा किनाई, छते पर फुलवारी बनावल जाई...।" आनंद अपलक उनकर मुँह निहारे लगले।

"खिसिया गइलू का?"

"ना जी! ई बात त हम कय दिन से सोचत रहीं... आज मौका मिलल त कह दिहलीं... रउरा निश्चिंत होके घरे आईं।"

छुट्टी के दिन बाजार से सिमेंट–बालू से बनल पचासन गो हर साइज के गमला किनाइल... ओकनी के खाद–माटी से भरल गइल.... किसिम–किसिम के मनचाहा फूल–पौधा नर्सरी से मंगावल गइल, रोपाइल आ ओकनी के पटवे के व्यवस्था कइल गइल। एह तरे छत के आधा हिस्सा के फुलवारी का रूप में विकसित हो गइल।

प्रकृति–प्रदत्त मनमोहक रंग आ छविवाला रवानी–बिरवानी के फूल ओह लोग का बड़ा अच्छा लागे। रोज सांझ–सवेरे जब दूनू बेकत पटवे... फूलन प मंडरात भंवरन के निहारे आ आस–पास के बिरिछन प बइठल चिरइन के मधुर संगीत सुने त ओह लोग के मन खुशी से लबा–लब हो जाव। जूहियो त एगो फूले रहे। ओकरा के खेलत–कुदत देखके त लागे, सरग के सुख–छते प उतर आइल बा। नींद आवे के

सही समय आ बदलाव के रफ्तार जानल बहुत कठिन बा। बाकिर, ओकरा प्रभाव से इन्कार नइखे कइल जा सकत। जूही, उमिर के साथ आस्ते–आस्ते बढ़त जवानी के दहलीज प पहुंच गइल। महतारी–बाप के लाड़–प्यार, नैतिक संस्कार, सही दिशा–निर्देश, प्रेरणा आ प्रोत्साहन के बदौलत ऊ सफलता के अनेक ऊँचाइयन के छूवलस। ऊ सुन्दर, सुशील, मेधावी आ जागरूक लड़की रहे। सी0बी0एस0ई0 से बारहवीं के परीक्षा पास कइला का बाद ऊ बी0आई0टी0 मेसरा से कंप्यूटर साइंस के डिग्री हासिल कइलस। जब ऊ आई.आई.एम. रोहतक से एम0बी0ए0 करते रहे त टाटा मोटर्स जमशेदपुर, अपना प्री कैम्पस सेलेक्सन के दौरान ओकर चयन कइलस आ ट्रेनिंग के बाद इहे कम्पनी ओकरा के नियोजितो क लिहलस। तब ऊ माई–बाबूजी के साथ रहे लागल।

नौकरीशुदा लड़की से शादी कइल भला के ना पसंद करी। जूही के शादी खातिर आनंद का बेसी दौड़–धूप करे के जरूरत ना परल। नौकरी के दूइये महीना में लड़का पक्ष से तीन गो आफर आइल। तिसरका लड़का जूहिये के कम्पनी में अभियंता रहे... स्वजातीय रहे आ कम्पनी क्वार्टर में अपना माता–पिता के साथ रहत रहे। काम के दौरान ऊ जूही से मिल चुकल रहे। आनंद ओकरा माई–बाप से मिललें। ऊ लोग राजी हो गइल। कुल–खानदान के पता लगवला का बाद सुदिन निकलाइल आ धूमधाम से जूही संग जीतेन्द्र, परिणय–सूत्र में बंध गइलें।

जूही के कन्यादान कइला का बाद आनंद आ सुनीता में अद्‌भुत परिवर्तन आइल। अब ऊ लोग तब कबो फुलवारी में बइठे, आध्यात्मिक चर्चा करे लागे। एक दिन सुनीता, आनंद से पूछले रही– "का एह जीवन के उद्देश्य भौतिक–सुख–साधन के संगिरहा कइल, भोग–विलास कइल आ संतत्ति–जनन तक सीमित बा? कि आउरो बा?"

"सांच पूछऽ त एकर मुख्य उद्देश्य मोक्ष प्राप्त कइल बा। अर्थ से धर्म आ धर्म से मोक्ष तक के यात्रा मात्र एही शरीर से संभव बा।"

"त एकरा खातिर का करेके होई?"

"ईश्वर के भक्ति.... सरधा आ विश्वास के साथ। एकरा बिना जनम–मरन के चक्कर से छुटकारा नइखे मिल सकत...।" आनंद कहलें।

धीरे–धीरे ओह लोग में पूजा–पाठ, सत्संग, आध्यात्मिक पुस्तकन के अध्ययन के तीर्थाटन के रूचि जागे लागल। मथुरा, काशी, अयोध्या आ पुरी के यात्र कइला का बाद बारी आइल उतराखंड के। जून के महीना ओह क्षेत्र के यात्र खातिर अनुकूल मानल जाला।

यात्र के दिन जूही ओह लोग के विदा करे गइल रहे। ट्रेन में चढ़े से पहिले सुनीता घर के चाभी जूही के संउपत कहले रही– "फुलवारी के खियाल रखिहऽ...।"

हरिद्वार पहुंचला का बाद बस से, ऊ लोग गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ वगैरह के दर्शन आ पूजा–अर्चना करत दिनांक 16.06.2013 (एतवार) के जब केदारनाथ मंदिर के समीप पहुंचल त सांझ हो गइल रहे। ओह दिन घनघोर बारिस क चलते दर्शन संभव ना रहे। ऊ लोग लगहीं के एगो होटल में ठहर गइल आ एकर सूचना जूही के दे दिहल। खाना खइला का बाद आनंद त जल्दिये सुत गइलें। बाकिर, सुनीता अभी अधनिनिये रही। एतने में उनका बुझाइल, होटल कांप रहल बा। ऊ सचेत हो गइली.... आनंद के जगवली आ एकरा पहिले कि दूनू बेकत बाहर निकलो, मंदाकिनी के भयंकर सैलाब में ऊ होटल समाधिस्थ हो गइल। विहान भइला जूही जब ओह हृदयविदारक दृश्य के टी0वी0 में देखलस त ओकर होश उड़ गइल। ई उहे होटल रहे जवना में ओकर माई–बाबूजी ठहरल रहलन। जूही के चीत्कार से अचानक ओकर परिवार अचकचा गइल.... पास–पड़ोस के लोग दउरल आइल.... समुझावे–बुझावे लागल....। गांव प सूचना दियाइल। दोसरके दिन ओकर बड़की माई आ बड़का बाबूजी पहुंचलें। सभे जूही के समुझावे के कोशिश कइल। बाकिर...।

हादसा के पांचवां दिन ऊ लोग हरिद्वार पहुंचल। चारू ओर त्रहि–त्रहि मचल रहे। कवनो होटल में, जब ठहरे के जगह ना मिलल त ऊ लोग एगो सुरक्षा–कैंप में पनाह लिहल। देव–भूमि, नरक–नगरी में तबदील हो चुकल रहे। पांच दिन ठहरला का बादो जब लाश के पता ना चलल त निराश होके जीतेन्द्र जमशेदपुर लवट गइले। ओही दिन सांझ के ट्रेन से जूहियो अपना बड़का बाबूजी आ बड़की माई के साथ गांव खातिर प्रस्थान कइलस। पंडित जी के निर्देश का मोताबिक किरिया–करम के प्रारंभ भइल। बड़का बाबूजी उतरी लेहलीं आ तेरहवां दिन कजिया भइल। बावजूद एकरा, जब जूही के मन शांत ना भइल त ऊ अकेलही गया पहुंचल आ विधिवत् माई–बाबूजी के पिंडदान आ तर्पण कइलस। फेर उहवां के अनेक मंदिरन में जाके ओह लोग के दिवंगत आत्मा के शांति खातिर ईश्वर से प्रार्थना कइलस। जमशेदपुर पहुंचला का बाद ऊ अपना पति आ सास–ससुर

के एक साथ बइठा के आपन इच्छा जाहिर करत कहलस– "जायेवाला त चल गइल....। अब काहें ना हमनी ओही मकान में चल के रहल जाव.... ओकरा के वीरान छोड़ल ठीक नइखे बुझात....।"

जब केहू कुछ जवाब ना दिहल त ऊ फेर कहलस– "शायद रउरा सभ डर रहल बानीं.... ओकरा के भुतहा महान मान रहल बानीं.... कवनो बात ना.... काल्ह से हम स्थाई रूप से अकेलहीं ओह मकान में रहब आ जब रउरा सभ आवे चाहब.... हम स्वागत करब...।" दोसरे दिन ऊ आपन कपड़ा–लत्ता पैक कइलस आ चल परल एकांत के सफर खातिर। ऊ जागरूक लड़की रहे, अंधविश्वास ओकर कुछ ना बिगाड़ सकत रहे। मकान में प्रवेश कइला का बाद सबसे पहिले ऊ ओकर सफाई कइलस....नहा–धोवा के पूजा अर्चना आ हवन कइलस... खाना बनवलस–खइलस आ जब आराम करे जाये लागल त ओकरा फुलवारी के इयाद परल।

जब ऊ छत पर गइल त देखलस–गमलन में रोपल सभ फूल–पौधा सूख गइल बाड़े सन। ओकरा रोवाई छूटि गइल। अब सिमेंट–बालू के बनल ओह गमलन के ऊ का करो। माई बाबूजी के नेह के निशानी ओह गमलन के फेंकल त ना जा सकत रहे। एतने में ओकरा मन में एगो विचार कौंधल– काहें ना एकनी से कवनो अइसन चीझ बना दिहल जाव जवन माई–बाबूजी के यादगार बन जाव। का बन सकत रहे?

रात में इहे सोचत ऊ सुति गइल। जब सुबह जागल त एगो आकृति ओकरा मानस–पटल प उभरलि। ऊ होही दिन एगो कुशल कारीगर के बोलवलस आ अपना सोच के साकार करे के इच्छा जाहिर कइलस। कुछ देर सोचला का बाद कारीगर राजी हो गइल। ऊ छते प ओह गमलन के जोड़ के एगो अइसन आकार दिहलस जवन अनमन ताजमहल अइसन लागेला।

dkfrd uxj] VkYdk oDlh]
te'kniqj] 831004

लघुकथा

तालमेल

विनोद द्विवेदी

नया सरकार क गठन होते जगहे जगह इनकम टैक्सवालन के छापा परला का सूचना जब अग्रवाल जी सुनलन त रात भर नीन ना आइल। होत फजिरहीं ऊ बदहवास सांसद जी का घरे पहुँचलन आ आपन दुखड़ा सुनवलन। सांसद उनके धीरज बन्हावत कहलन, "अग्रवाल जी हर बेमारी क इलाज बा! फेरू ई त लोकतंत्र हऽ आजु हम तोहरा कामे आइब त काल्ह तूँ हमरा कामे अइबऽ!"

अग्रवाल जी के कुछ राहत भेंटाइल। जर जलपान का बाद अग्रवाल जी के तनी अलोता ले जाके सांसद जी कुछ कहलन आ उनकर कान्ह थपथपाइ के हँसत कहल, "तालमेल बनल रहे के चाहीं।" अग्रवाल जी हँसत चल दिहलन। उनकर मन कुछ हलुक हो गइल रहे।

घरे पहुँच के अग्रवाल जी अपना भरोस वाला लोगन के बइठकी बोलवलन आ अपना मकान का बगल वाला अपना बड़का हाता में कालेज का निर्माण खातिर प्रस्ताव पास करवलन। दू दिन बाद सांसद जी कालेज के भूमिपूजन का समय फीता काट के भाषन देत, अपना सांसद निधि से बीस लाख अनुदान क घोषणा कइलन। जन कल्याण में अग्रवाल जी के बैलेन्स सही हो गइल। उद्घाटन का समय जिला का इनकमटैक्स अधिकारियनों के बोलावल गइल रहे।

कुछ बरिस बाद जब चुनाव क अधिसूचना जारी भइल त सांसद जी शहर का सब प्रतिष्ठित लोगन के मीटिंग बोलवलन। अग्रवाल जी के एक दिन पहिलहीं खबर मिलल रहे। मिटिंग खतम भइला का बाद ऊ सांसद जी का समनहीं अपना मुनीम के बोलाइ के धीरे से कहलन, "इहाँ के हमनी पर बड़ उपकार बा। तूँ बीस लाख रुपया, काल्ह ले आके, इहाँ का चुनाव–फंड में पहुँचा दीहऽ। बहुत सावधानी से इ काम करे के बा! इहाँ का फेरू जीत जाइब त हमनी के बहुत भला होई!"

साँसद जी मुस्किअइलन, "अग्रवाल जी जनसेवा में हरमेसा आगा रहल बानी! तबे न हमरो इनका से तालमेल बनल बा! जनसेवा बेगर तालमेल के, ना होखे।"

Hkkjrh; [kk| fuxe] okjk.klh

अनेति से प्रेम

आनन्द 'संधिदूत'

घंटन के असली नाँव कुछ अउर रहे– कवन हो उपधिया। लेकिन अब केहू का मालूम नइखे। घंटन नांव अइसे पड़ल कि ऊ अपना कुछ संघातिन का संगे बनारस घूमे गइलन। तब बनारस का दालमण्डी मोहल्ला में रण्डियन के कोठा रहे। घंटन कोठा पर गइलन त घंटन लगा दिहलन आ नीचे गली में उनकर साथी लोग इन्तजारे करत रहि गइल। लवटि के अइलन त उनकर साथी लोग उनका घंटन बिलम गइला के चर्चा कइल आ इहे चर्चा उनके नया नाँव दे दिहलस– 'घंटन'।

घन्टन अनेति का राह पर चलत रहलन आ एकरा चलते उनकर सबकुछ बिला गइल। ऊ बड़ा टांठ परिवार के रहलन। खेत–बारी, घर–दुआर हर तरह से सम्पन्न। लेकिन देयाद लोग जब उनके अनेति करत देखल त अपना हिस्सा के बंटवारा कइ लिहल आ घंटन के उनका मेहरारू का साथ अलगा कइ दिहल। बँटवारा का बाद घंटन के अउर आजादी मिल गइल। घंटन जब खेत पर जासु त अइसन लागे कवनो बादशाह आइल बा। धान का रोपनी में जब सबका खेत पर रोपनिहारन में अनइसा बँटाय त घंटन का खेत पर गरमागरम इमिरिती लुटावल जाय। चेला लोग कहे कि घंटन बाबा आज रस पीये के मन बा। घंटन मुस्किया के पूछस– कवना चीज के? चेला लोग बिरुदावली गावत कहे कि बाबा का दरबार में गूर आ चोट्टा के रस थोरे घोराई। ले दे के बाद मिसिरी आवे आ मिसिरी के सरबत चेला–चापड़ लोग सराहि–सराहि के पीये। एही दरबार में कबे जाउर के चर्चा चले आ घुरला भर दूध में अँजुरी भर मखाना आ मिसिरी डाल के जाउर पाके। चेला लोग खा–पीके मगन रहल करे। आफत रहे त घंटन का मेहरारू के। घंटन के हुकुम होखे कि तूँ हमरा सामने कपड़ा पहिन के मत आइल करऽ! बिल्कुल विवस्त्र रहल करऽ।' ओह जमाना में छत ना रहे। सबकर घर माटी के देवाल पर खपड़ा का छाजन वाला रहे। घंटन साँझी खानी एगो खटिया खपड़ा पर चढ़ा देसु आ अपना मेहरारू से कहसु कि आवऽ एही पर जिन्दगी के मजा लिहल जाव। खपड़ा पर बिछावल खटिया पर गाँजा मलत बइठल घन्टन अपना देयाद का आँगन में लाल–लाल आँख कइले ताकत कहसु कि– देयाद आ दाल गलवला के मोल हऽ।

देयाद लोग त घन्टन का गलवले ना गलल बाकिर घंटन जरूर गले लगलन। घंटन का अत्याचार से दुखित मेहरारू एक दिन स्वर्ग सिधार गइलि। घंटन के अउर सुराज मिल गइल। खेतबारी बेंच–बेंच के ओही पइसा से शहर–शहर घूमके अइयासी शुरू कइलन। एक बेर बनारस घूमे गइलन। एगो नया रेक्सा लउकल। ऊ रेक्सा पर बइठ के रेक्सहा के पूरा बनारस घुमावे के हुकुम दिहलन। रेकस्हा हुकुम के पालन कइलस। पूरा शहर घुमा के रेक्सा ओहिजे खड़ा कइलस जहाँ से उनके चढ़वले रहे। लेकिन घंटन रेक्सा से उतरलन ना बइठले रहि गइलन। रेक्सा वाला उनका तन्द्रा के तोरत कहलस कि बाबा अब पूरा शहर घूम लिहलऽ अब तऽ उतरऽ। घंटन रेक्सा सुहरावत कहलन कि "अब हम उतरब ना तोर रेक्सा कीनब। बोल का लेबे?" रेक्सा वाला के मुँहमाँगा दाम दे के घंटन रेक्सा पर बइठल गाँवे लउटलन। गाँव पर कुछ दिन ऊ रेक्सा पर घुमलन।

जब रेक्सा टूट–फूट गइल त घंटन जमराज के भेख धारण कइलन। ऊ एगो भइंसा खरीदलन आ ओही भंइसा पर बइठ के घूमे सुरू कइलन। लेकिन भंइसवा पर घूमे में एगो दिक्कत रहे। ऊ सबेरे–सांझ त ठीक चले बाकिर दुपहरिया में तेज घाम रहला पर घंटन के अनुशासन ना माने आ उनके लेले–देले कवनो अड़ही–गड़ही का मड़िया में उतर जाय। एहसे घंटन के बड़ी परेशानी होखे।

भइँसा के त्याग के ऊ बैल पर चले के निर्णय लिहलन। बैल पर ऊ शंकर भगवान के भेस बना के बइठसु। भसम–भभूत लगवले आ एगो पोरसा भर के रम्मा नियर तिरसूल लिहले घंटन जब बैल पर बइठल गली–खोर में निकलसु त लइका डर का मारे भाग–भाग के अपना घर में लुका जाँसऽ। तब तक घंटन के घर–दुआर पहटोपहट हो चुकल रहे। जवना खपड़ा पर खटिया बिछी ऊ केतना दिन चली? खेतो बारी बिकाइये गइल रहे। घंटन का सामने अब आवास, भोजन आ मादक द्रव्य का प्राप्ति के समस्या आइल, लेकिन अनेति में कमी ना आइल। एक दिन गांजा पीके लाल–लाल आँख का साथ बैल पर बइठल ऊ ठाकुरबाड़ी पर शंकर जी का शिवाला में आपन रम्मा–तिरसूल लिहले पहुँचलन आ शंकर भगवान के एगो मोट गारी देत कहलन कि "जब एक शंकर मैं पैदा होग्या तो अब तुम्हारी क्या जरूरत है?" एतना कहि के ऊ शिवलिंग का पेनी में आपन तिरसूल घुइसबे त कइलन लेकिन तब तक अगल–बगल में खेत जोतत कोईरिन के नजर पड़ गइल। कोइरी खेत जोतल छोड़के त्रहि बाबा–त्रहि बाबा करत गोड़ पर गिर पड़लन स आ ओह दिन शंकर भगवान के जान बाँच गइल।

घंटन से जुड़ल अइसन कुल किस्सा–कहानी बहुत बाड़ी स। ओह जमाना में गाँव में पागल बहुत रहलन स। एक दिन घंटन गाँव का पागलन के बटोर के गंगा का रेती पर ले गइलन आ हाथ में एगो मुंगरी लेके पगलेटन के हुकुम दिहलन कि "चलो परेड करो। परेड चालू भइल, कासन खुद घंटन बोलत रहलन लेफराइट लेफराइट पीछे मुड़, आगे चल!" सबेरे के परेड होत होत बेरा लरक गइलि लेकिन परेड खतम होखे के नांव ना लेत रहे। एगो पागल सूरुज का ओर ताक के चिचिआइल लंच का समय होग्या। घंटन उठवलन मुंगरी, "चुप सारे देस संकट में पड़ा है ओर तुमको लंच लउक रहा है!, चल लाइन में!" परेड अन्हार भइला तक चलल। ओह दिन त परेड हो गइल बाकिर पागल भगलन स त गाँव में महीनन एक्को पागल ना लउकल।

जब शंकर भगवान बनला से मन भर गइल त घंटन कृश्न के रूप धारण कइलन। ऊ अमवा घाट पर एगो कमरा बनवलन आ एगो माटी के चबूतरा। ओही चउतरा पर ऊ कपार पर मोर के पंख बान्ह के आ हाथ में बांसुरी लेके कृश्न भगवान बन जासु आ तीन–चार गो पागल मेहरारू राधा–रुकमिन बन के उनका चारू ओर नाचल करें सऽ। पगली मेहरारुन से उनके फायदो रहे। खेत–बारी, घर–दुआर त कबके नष्ट हो चुकल रहे। सम्पति का नाँव पर अमवा घाट के कुटिया रहि गइल रहे। खाये–पीये के कवनो साधन ना रहे। गांजा–भांग–शराब के जरूरत अलग से रहे। पगलेटिनो के आराम से रहे खा पीके उनका कुटिया में आराम करे के मिल जाय। भीख में जवन पइसा–रुपिया मिले ओके घंटन छीन लेसु आ ओह से उनका नशा पानी के काम चले।

एही पगलेट मेहरारुन का रासलीला में घंटन के भेंट सिमिरखी से भइल। तब घंटन पागल भिखमंगिन का अन्न पर एकदम से निर्भर हो चुकल रहलन लेकिन उनका बेवहार में कवनो कमी या अन्तर ना आइल रहे। ऊ अबहियो तड़पसु, गर्जसु आ गाहे–बगाहे जब तब पागल मेहरारुन के मार पीट के रुपियो–पइसा छीन लेसु। एह मारपीट से आजिज आके अउर कुल पागल मेहरारू त भाग गइली स लेकिन सिमिरखी ना भागलि। घंटन ओकरा पर केतनो अत्याचार करसु ऊ सहि ले आ घंटन का सुख–सुविधा के ध्यान राखे। ऊ खाना बनावे, घंटन के खिआवे, कुटिया के सफाई करे आ मोका निकाल के भीखियो मांग ले आवे।

घंटन अब शरीरो से पहिले जइसन स्वस्थ ना रहलन। उनका पूरा देह में घाव हो गइल रहे। सिमिरखी के जे जवन दवाई का नांव पर घास–पात बचावे ऊ ओके ले आवे आ पीस–पास के घाव पर लगावे। घंटन के ऊ साफ–सुथरा राखे। घंटन का कपड़ा के ऊ गंगा जी ले जाके सबुनावे, सुखावे।

घंटन एकरा बादो सिमिरखी के एहसानमंद ना रहलन। ऊ पइसा खातिर सिमिरखी के लुग्गा झोरी करसु। एक दिन त हद हो गइल। ओह दिन पइसा खातिर उग्र रहलन घंटन। लउर उठवलन आ लउर से पीटत–पीटत लउर के हूर सिमिरखी का पेट में दे मरलन, ऊ दर्द से तड़प उठलि। ऊ ओहिजा से उठिके कुछ दूर बइठ के रोवे लागलि। रो के थोड़े ठण्ढाइलि त लंगड़ात उठलि आ आपन झोरी उठा के भीख मांगे चल गइलि। घंटन कांठ का मूरति नियर बइठल, अपराध के बोध से गलत रहलन। उनका आँख से एक ठोप लोर निकलल आ पलक–बरौनी में अझुरा के, फूट के, छितरा गइल। ओह दिन निर्दयी घंटन के पहिली बार बोध भइल कि एह स्वार्थ का दुनिया में केहू अइसनों बा जे उनसे निस्वार्थ प्रेम करत बा। धन खतम भइला का बाद चापलूस आ चाटुकार से अलग भइल उपेक्षित घंटन में पहिली बेर कोमल दया भाव अँकुरत लागल।

भीख मांग के सिमिरखी जब लौट के आइल त, घंटन अपराधी नियर ओकरा सामने खड़ा रहलन। बड़ा जोर लगवलन त भरभराइल आवाज में मुँह से निकलल, "हम त सोचले रहलीं हँ कि आज तूँ हमके छोड़ के चल जइबू।"

"..... ....." सिमिरखी कुछ ना बोललि। ऊ खूँटा में बान्हल चवन्नी भर गांजा आ दूगो बासी इमिरती, जवन कवनो हलुवाई किहाँ से भीख में मिलल रहे, घंटन का समाने धइ लिहलसि।

– "तुहऊँ खा नऽ!" घंटन एगो इमिरती सिमिरखी का ओर बढ़ावत कहलन।

– "नाहीं रउरा खाईं। गँजवा पर कुछ मीठ खाये के होला एह से लेत आइल बानीं।"

– "तूँ हमार केतना खियाल राखेलू हो!" कहि के घंटन भोंकरि–भोंकरि के रोवे लगलन।

सिमिरखी उनके चुप करवलसि, हाथ – मुँह धोअवलसि, रोटी सेंकलसि। घंटन का लागल कि उनकर अब तक के जीवन बेअर्थ गइल हा। जीवन के सार्थक ई अपनाव त अब बुझाइल हा।

एह घटना का बाद, घंटन आ सिमिरखी का जीवन में एगो नियमितता आ गइल रहे। सिमिरखी नियम से सबेरे उठ के गंगा जी कपड़ा साफ करे, नहाय आ आके कुछ नास्ता बनावे। घंटन के खिआवे

आ झोरी उठा के गांव में निकल जाय। सांझ खानी गाँव से लौटे त ओकरा धोकरी में अनेक तरह के सामान रहे। जवन बनल बनावल रहल करे, ओके ऊ खुद खा ले, लेकिन घंटन बाबा के ऊ अपना हाथ से दूगो रोटी गरम–गरम बनाइके खिआवे। जिनगी भर के बहेंगवा घंटन अब गृहस्थ हो गइल रहलन। अब उनकर मन न भइँसा–बैल पर बइठे के करे ना कृश्न बन के रासलीला करे के। सिमिरखी उनके नहाये के कहे त नहा लेसु, खाये के कहे त खा लेसु, आराम करे के कहे त आराम करसु। उनका नशा के लत अपना आपे छूटे लागल रहे। कबो कबो सांझ के जब तब एक चीलम गाँजा पी लेसु, बाकी अब पहिले अस ना।

लेकिन घंटन के ई सुधारवादी नियमित जीवन दइब के पसन्द ना आइल। एक दिन सबेरे सिमिरखी उठलि त छाती में दरद के सिकाइत कइलसि। घंटन करुआ तेल लेके मालिश करे चललन लेकिन सिमिरखी तइयार ना भइल। कहलसि, "रउरा बाभन हईं रउरा हाथ से हम सेवा ना कराइब।"

"एहिजा हमरा–तोहरा छोड़ के अउर के बा? हमार सेवा तूं करत हऊ त तोहरो हम करबे करब।"

"रउरा आपन खियाल राखब।" सिमिरखी के आवाज लटपटाये लागल रहे।

घंटन का कुछ समझ में ना आइल त कुटिया का बाहर निकल के रोवे लगलन। उनका रोवाई से कुछ अदिमी जुट गइल। सिमिरखी का संगे गंगा जी नहाये वाली कुछ सधुआइनो लोग आ गइल। लेकिन तब तक हालत बहुत बिगड़ चुकल रहे। जेकरा जवन मुँह में आवे ऊ तवन करे के सलाह देव। जल्दी से तुलसी के एगो पत्ता सिमिरखी का जीभ पर रखल गइल। दुइ ठोप गंगाजलो डालल गइल। पता ना गंगा जल कंठ में गइल कि ना तब तक सिमिरखी अनन्त में विलीन हो चुकल रहे।

घंटन एक बेर फेर आवारा हो गइलन। रोग जहुआइल जात रहे। पूरा शरीर घाव आ मवाद से भर गइल रहे। देखभाल करे वाला केहू ना रहे। संग साथ का नामपर चिंउटा–चिंउटी कीड़ा मकोड़ा आ रात के सियार आवत रहलन स। सब उनका खून आ माँस के लोभी रहे। कीड़ा काटँऽ स भा सियार नोचऽ स त घंटन गरियावत चिचिया उठसु। ओतना बीहड़ आदमी के हालचाल पूछे के ओघरी केहू क हिम्मत ना पड़े। जब आवाज आइल बन्द हो गइल त लोग कोठरी में झाँक के देखल। आधा लास सियार खा गइल रहलन स।

घंटन का नाँव पर रोवे वाला के रहे? सिमिरखी त पहिलहीं चल गइल रहे।

■ inkjFk yky d xyh]
oklyhxt] fetkiqj

गजल

रिपुसूदन श्रीवास्तव

नींद में हम रहीं तऽ जगावल करीं
बात होले अगर कुछ बतावल करीं।

दूर बाटे बहुत घाट के रोसनी
नेह–बाती बुझे ना, बढ़ावल करीं।

हाथ से ना ढँकी आदमी के हया
आँखि से आँख सोझे मिलावल करीं।

साथ जीये–मुवे के न किरिया रही
तेज गाड़ी मगर अब भगावल करीं।

दर्द के राग पर ताल देइब सदा
गीत रउँवें बिहँस के कढ़ावल करीं।

अकथ कहानी

तुषारकान्त उपाध्याय

राजधानी के सबसे पॉश कॉलोनी। खूब चौरस सड़कन के दूनो ओर बनल आलीशान बंगला सब, जवना में एगो डॉ0 प्रकाश शुक्ल के हऽ। बड़हन गेट के भीतर बड़े–बड़े फेंड़ आ तरतीब से लगावल गइल फूलन के बगइचा के बीचे तिनमंजिला मकान। भीतर–बाहर देशी–विदेशी गाड़ियन के आवाजाही।

एगो अजीब स्तब्धता आ चुप्पी ओढ़ले वातावरण। चुप्पी टूटत बा डॉ0 मीरा के आवाज से.... – बेटा अभि! जाके ले आवऽ उनका के!

– जी?

– हँ.... का जाने उनके खातिर साँस अँटकल होखे!

– बाकिर माँ....!

– हँ, बेटा! ले आवऽ। देखत नइखऽ सउँसे देह में बेडसोर, बिथा से घरघरात इनकर आवाज आ तबो... जइसे कवनो लालसा में देह नइखे छूटत!

ओही घरी डॉ0 शुक्ल करवट बदले के कोशिश कइले। आँख के छोर भींजल रहे। पीरा से उसिनाइल चेहरा। देह चाम ओढ़ले नर–कंकाल।

सहारा देके करवट बदलवावल गइल। कबो आँख खुले त शून्य में कुछ निहारस आ फेर अर्द्ध –चेतना में डूब जासु। लोग आवे, चुपचाप उनका के कुछ देर देखे आ आपन संवेदना व्यक्त क के चुपचाप चल देइ। अब–तब के हालत रहे। प्रोस्टेट कैंसर। बस प्रतीक्षा रहे पंछी के पिंजरा छोड़ के जाये के। असह्य वेदना आ चिकित्सकीय अनुमान के झुठलावत उनकर आत्मा शरीर ना छोड़ पावत रहे। अभि... उनकर बेटा.... एगो सफल चिकित्सक। एक महीना से सबकुछ छोड़–छाड़ के पिता के सेवा में लागल रहे। ऊ अपना महतारी के बात मान के बहरी निकलल। कुछ अइसन रहे, जवन ओकरा समूचा ज्ञान आ तर्क के झूठ करत लागल।

डॉ0 प्रकाश शुक्ल मेडिकल कॉलेज में बाल रोग के विभागाध्यक्ष। उनकर पत्नी डॉ0 मीरा शुक्ल ओही मेडिकल कॉलेज में मेडिसिन विभाग के प्रमुख बाड़ी। एगो बेटा अभिनव आ एगो बेटी अनन्या।

अभिनव के ओकर मित्र आ परिवार के लोग 'अभि' कह के बोलावेला। महतारी–बाप ओकर बियाह ओकरे कॉलेज में पढ़ रहल अपना पारिवारिक मित्र के बेटी से करा देले बा। शायद ऊ लोग अभि के मन के भाषा पढ़ लेले रहे। बेटा–पतोह दूनो जाना अमरीका में सफल डॉक्टर बा लोग। बेटी अनन्या आइ.ए.एस. अधिकारी बिया आ ओकर बियाह संगही प्रशिक्षण पावत आइ0ए0एस0 अधिकारी से भइल।

मध्यम वर्ग खातिर अइसन परिवार, अइसन जीवन एगो आनन्द–उत्सव रहे आ एही उत्सव आ ओकरा संस्कार के चलते आज बेटा–बेटी दूनो जाना सब कुछ छोड़–छाड़ के पिता के अंतिम समय में उनका साथे बाड़न।

.... बाकिर कुछ रहे!

.... कुछ अइसन रहे जेकरा के पूरा मेडिकल कॉलेज जानत रहे बाकिर सामने केहू कुछ ना कहल।

डॉ0 शुक्ल के गरिमामय व्यक्तित्व, उनकर सादगी, काम के प्रति उनकर समर्पण... हर वर्ग आ खेमा उनुका के बड़ा आदर आ स्नेह से देखते रहे आ मैडम मीरा त तब प्रथम वर्ष में आइल रही, जब डॉ0 शुक्ल असिस्टेंट प्रोफेसर बन गइल रहले। मीरा के पिता ओही कॉलेज में प्रोफेसर रहले। उनका प्रस्ताव के डॉ0 शुक्ल के परिवार अपना खातिर गर्व के बात समुझत रहे।

डॉ0 प्रकाश शुक्ल आ मीरा के बियाह के राजनीति, कला, प्रशासन आदि क्षेत्रन में आपन पहचान रखे वाला अइसन केहू ना रहे, जे हिस्सा ना बनल होखे। उनका अपना चिकित्सकीय पेशा के त बतिए अलग रहे।

देखते–देखत पाँच बरिस कइसे बीत गइल, पते ना चलल। एही बीच शुक्ल दंपति एगो सुंदर बेटा पाके बहुते खुश रहे लोग। डॉ0 शुक्ल अब स्थापित डॉक्टर रहले। कॉलेज में जतना मान रहे, प्राइवेटो प्रैक्टिस में ओतने यश मिलत रहे। उनका से देखवावे खातिर लोग हप्तन इंतजार करे। काम से जइसहीं फुरसत मिले, पति–पत्नी स्वतंत्र पंछी अस फुर्र से कहीं दूर उड़ जात रहे.... सिर्फ एक दोसरा के खातिर, एक दोसरा के संगे। डॉ0 प्रकाश के महतारी–बाप एह बीच मनोयोग से अक्सरहाँ कहसु.... मीरा, मीरा आ कृष्ण देह से त ना नूं मिल सकल रहे लोग, बाकिर देखऽ हमनी के उहन लोग के आत्मा लिहले सशरीर मिल रहल बानीं जा।

मीरा अब डॉ0 मीरा शुक्ल बन गइल रही, बाकिर पोस्ट ग्रेजुएशन में प्रवेश के चिंता उनका के पढ़ाई–लिखाई में अतना व्यस्त क देले रहे कि ऊ आस–पास के दुनिया एकदमें भुला गइल रही। हर दोपहर के, जब डॉ0 प्रकाश के तनी फुरसत मिलत रहे, मीरा उनकरा मेडिकल कॉलेज के चैम्बर में चल आवत रही आ ऊहो ओही तन्मयता से उनका तइयारी में मदत करत रहले।

दिसंबर के काँपत जाड़ के दू पहर! लागत रहे कि बहरी बर्फ के बड़े–बड़े चखान गिरल बा। कई दिन से सूर्य ना लउकल रहले। अइसना समय में मेडिकल कॉलेज कुछ खाली–खाली लागेला। खासकर हॉस्पीटल से अलग वाला हिस्सा।

डॉ0 प्रकाश अपना चैम्बर में, हीटर के गरमाहट में बइठल 'लैन्सेट' के टटका अंक में डूबल रहले कि दरवाजा पर खट्–खट् के आवाज भइल।

'आ जा!' ऊ जानत रहले उनकर पत्नी होइहें। एकदम निर्धारित समय पर। डॉ0 मीरा कबो बिना खटखटवले अंदर ना जात रही। आजु मीरा के संगे सिहइला अस उनकर सहपाठिनी आ डॉ0 प्रकाश के शिष्या सुमन भी रहली।

.... ई हमरा से कई बेर से कहत रहली हा। पी0जी0 के तइयारी में इनको के राउर कुछ मदत मिल जाइत त....!

'.... हूँ!' डॉ0 प्रकाश अपना के तनी असहज महसूस कइले। डॉ0 सुमन के ऊ क्लास में पढ़वले रहले बाकिर चैम्बर में पढ़ावल! पत्नी के बात दोसर बा; भा सब छात्रन के साथ ठीक बा।

'.... देखीं.... ई हमरे संगे आइल करिहें।' डॉ0 प्रकाश के असजता महसूस करत मीरा निहोरा कइली।

'.... ठीके बा!' डॉ0 शुक्ल गंभीर बेबसी के साथ अपना पत्नी के बात सँकारत कहले।

मीरा आ सुमन हाउस जॉब के बाद जवन समय मिले ओके संगे–साथ पढ़ाई में बितावे के कोशिश करे लोग। डॉ0 शुक्ल के चैम्बर भा मीरा के घर। खाली पढ़ाई। डॉ0 शुक्लो के थोर–ढेर, मुश्किल से, जे समय बाँचे, इहनिये लोग के संगे गुजरे।

XXXX

आज सुबहे से पुलिस के गाड़ियन के तारा–ताती लागल बा। कॉलेज में साइने–डाइ के घोषणा हो चुकल बाटे। आधे रात से पुलिस छात्रन के सामान बान्हे आ सुबह तक छात्रवास खाली करे के सूचना दे रहल बा।

डॉ0 सुमन खातिर अचके बड़हन मुश्किल आ गइल। कहाँ जाईं? गावें गइला से मये संपर्क टूट जाये के खतरा बा। बाबूजी जजमनिका आ तीन बिगहा जमीन के दम पर कइसहूँ घर चलावेले। कई बेर कॉलेज आ हॉस्टल के फीस भरे खातिर सुमन के कतना फजीहत उठावे परल बा, ई त ऊहे जानत बाड़ी। हर बेर उनका के उबारे खातिर मीरा प्रगट हो जासु। सुमन के स्वाभिमानी मन छान–पगहा तुरावे बाकिर लाचारी बेबस कर दे।

एक बेर डॉक्टर बन जाये द.... फेर त मीरा के मये कर्ज चुका देब। एकरा खातिर त ऊ करब, जे केहू ना कर सकल होई। सुमन प्रायः सोचसु।

आ.... आज फेर मुश्किल में! सुमन आपन सामान बान्ह के बालकनी में आके खाड़ हो गइली। अइसन जनात रहे कि उनकरा देह में इचिको जोर ना रह गइल रहे। हतास! ओठे फेफरी परल। गाँवे चल जाइब त पी0जी0 में नाँव लिखावल सपने होके रह जाई। अतना पइसो नइखे कि नगीचा–पासे कवनो प्राइवेट मकान किरया पर ले लीं।

आ तबे... सामने सड़क पर मीरा के कार आके रुकल। मीरा सीढ़ी लाँघत सीधे सुमन के सामने आके खाड़ हो गइल रहली.... "अरे, ई सब.... सामान बान्ह के एहिजा काहें खाड़ बाड़ू?"

.... का करीं? सोचत बानीं गाँवें चल जाईं.... बाकिर सब कइल–धइल बरबाद हो जाई!

.... "गावें काहें? एहिजा तहार घर नइखे का?" बड़ा अपनत्व से डाँटत मीरा सुमन के अटैची उठा लेहली... "चलऽ! घरे चलऽ! हमार घर तहरा खातिर गैर के घर कबसे हो गइल?"

पूरा पैंतालिस दिन बंद के दौरान सुमन मीरा आ डॉ0 प्रकाश के घरे रहली। सब कुछ सुलभ। खाली पढ़ाई करे के रहे। डॉ0 प्रकाशो अब कुछ बेसिये समय देबे लागल रहले आ प्रकाश के महतारी–बाप खातिर त जइसे सुमन बेटिये अस घरे आ गइल रही।

इम्तहान के दिन नजदीक आवत रहे। तनाव आ दबाव अपना चरम पर रहे।

रविवार के सुबह। लॉन के गुनगुन घामा बइठल मीरा आ सुमन डॉ0 प्रकाश के संगे सवालन के दोहरावे में लागल रहे लोग।

"एक कप चाह हो जाय!" –कहत मीरा उठ के भीतर चल देली।

सुमनो कुर्सी से सिर लगा के सुस्ताये लगली। आँख आधा खुलल, आधा मुँदाइल। तबे उनकर आँख डॉ0 प्रकाश के आँख से मिलल। छन भर खातिर। ऊ उनके ओर देखत रहले। सुमन सकुचा के आँख बन क ले ली। फेर कई बेर छुप–छुपा के देखली। डॉ0 प्रकाश एगो मोट, अध–खुलल किताब के पीछे से एकटक उनकरे के देखत रहले।

ऊ सँउसे दिन सुमन के चैन से ना गुजरल। ऊ बेर–बेर पढ़ाई से भटक जात रही। जनाइ, उनकरा आँख में डॉ0 प्रकाश के आँख बेर–बेर डूबत, बेर–बेर

उतरात बाड़ी स।

मीरा आ सुमन ओही मेडिकल कॉलेज से पोस्ट ग्रेजुएशन पूरा क के ओहिजे सहायक प्राध्यापक बन गइल रही। मीरा मेडिसिन के आ सुमन गायनकोलॅजी के।

XXXX

बेटी के छठियार के मोका पर डॉ0 प्रकाश आ डॉ0 मीरा अपना सब अभिन्न मित्रन के बोलवले रहे लोग। सुमन आजु के पार्टी में मेजबान के हैसियत से अतना तल्लीन रही कि जनात रहे कि उनकरे अपना बेटी के छठी ह।

डॉ0 प्रकाश के बचपन के मित्र डॉ0 नीरज श्रीवास्तव आ उनकर पत्नी डॉ0 मुक्ता विशेष रूप से एह आयोजन में भाग लेबे आइल रहे लोग। डॉ0 नीरज आ उनकर पत्नी लंदन के मेडिकल कॉलेज में प्रोफेसर रहे लोग। मुक्ता बचपन में मीरा के सहपाठी रहली। लरिकाईं के दोस्ती आ ऊहो एकदम खास।

"…. मीरा, हम एगो बात कहल चाहत बानीं।"

"हँ…. कहऽ ना! तोहरो औपचारिक होखे के जरूरत पर गइल?"

"ना…. बाकिर बाते कुछ अइसन बा कि…."

मीरा के मन संशय से भर उठल। आदमी के मन नकारात्मक बातन के कल्पना बड़ा जल्दी क लेला।

…. ई सुमन…. बियाह नइखे कइले अब तक?

…. देखऽ मुक्ता! ऊ बहुते सामान्य परिवार के लइकी ह…. ई त तोहरो पता बा। अब ओकर पिताजी ओकरा लायक लइका त खोजे से रहले!

…. ऊ त ठीक बा, बाकिर सुमन अइसन स्थापित लइकी खातिर लइकन के का कमी ओकरे संगे पढ़े वाला कई लोग तइयार बइठल होई!

…. त?

…. कहीं प्रकाश आ सुमन में?

…. पगला गइल बाड़ू?

…. पता ना, भाई।

मीरा के मन संशय के गहिर खाई में डगरे लागल रहे।

…. अरेऽ! तोहर मुँह काहें मुरझा गइल? पता ना, काहें दो त काल्हुए से हमरा कुछ अइसन बुझात बा। हमार भरम होई। तू हमार सखी हऊ, एह के कह देनी हाँ।

एक सप्ताह रह के डॉ0 नीरज आ डॉ0 मुक्ता त चल गइल लोग, बाकिर मीरा के मन आशंका से मुक्त ना हो सकल। कई बेर त उनका ई सब हास्यास्पद लागे आ मुक्ता पर खीसियो बरे अइसन बात करे खातिर, बाकिर दोसरा घरी लागे जइसे सउँसे देह के रकत सुखा गइल होखे।

जात–जात डॉ0 नीरज मीरा के बेटी के नामकरण क गइल रहले।

छव बरिस के बेटा आ तीन महीना के बेटी के साथ मीरा अपना सुखद संसार में भरसक रम गइली। अब ऊ फेर से ड्यूटी ज्वाइन क लेले रही। मेडिकल कॉलेज के ड्यूटी आ फेर सीधे घर, बाकिर उनका भीतर के सहजता आ शांति जइसे कपूर अस उड़ गइल रहे।

भीतरे–भीतर बेचैन मीरा अपना दाम्पत्य में पहिले वाली उष्णता और स्निग्धता ना पाके अउर बेचैन हो जात रही। जनाइ जइसे प्रकाश दोसरे दुनिया में गुम बाड़े। मीरा एकरा के बेर–बेर अपना मन के वहम कह के मन से निकाले के कोशिश करत रही। अचके कवनो बहाना से घरे आ जासु, फेर अपने पर झुझुआइयो जासु। कबो अचके डॉ0 प्रकाश के चैम्बर में बिना खटखटवले घुस जास आ चाई अस एने–ओने देखे लागसु। डॉ0 सुमनो संगे उनकर व्यवहार पहिले अस सहज ना रह गइल रहे। कुछ खिंचइला–खिंचइला अस। कबो ऊ सोचसु…. कतना पागल बानीं। मुक्ता तनी कुछ कह का दिहलस, शक मन से निकलते नइखे। भला प्रकाश अस पति आ ऊहो हमरा सबसे अच्छा सखी संगे…?! छिः! हमार सोच दूषित हो गइल बा।

डॉ0 सुमन मेडिकल कॉलेज के अपना ड्यूटी के अलावा डॉ0 वंदना मुखर्जी के सहायक के रूप में भी ड्यूटी करे लागल रही। डॉ0 मुखर्जी गायनाकॅलजी के विभागाध्यक्ष रहली आ स्त्री–रोग के समझ आ निदान के मामला में उनकर शोहरत राज्य भर के अन्य हमपेशा लोगन से बेसिये रहे। दुइए साल में सुमन जइसे उनकर अभिन्न अंग बन गइल रही। डॉ0 मुखर्जी, कवनो ऑपरेशन में, जब सुमन ना होखसु त अपना के सहज ना महसूस करत रही। सुमन के पातर–पातर अँगुरी जइसे सर्जरिए खातिर बनल रही स। ऊ कुछ लोन लेके अपना खातिर एगो छोट बंगला खरीद लेले रही। ऊ अपना काम में अतना व्यस्त रहस कि मीरा से कभिये–कभार मुलाकात हो पावे। एह मुलाकातन में मीरा के लागे कि सुमन उनका से आँख चोरा रहल बाड़ी। सुमन के बाबूजी आ उनकर सम्बन्धी लोग कई बार प्रयास कइल कि ऊ बियाह क लेसु बाकिर सुमन हर बेर टार देसु।

अब त लोग एह ओर से प्रायः अन्यमनस्क अस हो गइल रहे।

XXXX

.... शंकर जी, पहिले मार्केट चलीं। कुछ सामान कीने के बा। तब घरे चले के!

डॉ0 मीरा आपन गाड़ी अपने चलावसु। डॉ0 प्रकाश के कवनो स्टाफ शायदे घर पर आवत होखे! खाली एगो ड्राइवर शंकरे रहले जे कभी–कभार मीरा आ लइकन खातिर आ जात रहले।

".... रउआ साहेब के कॉलेज आ क्लिनिक से फुरसते नइखे मिलत आ घर के ई सब जरूरी काम हमरे करे के परत बा। ....रोज एगारह बजा देलें!"

".... कहाँ मेम सा'ब! क्लिनिक त साते बजे बंद हो जाला। आ फेर साहेब गाड़ी अपने लेके....।" अचानक शंकर सिहर के चुप हो गइल, जइसे कवनो गलत बात मुँह से निकल गइल होखे।

".... का? गाड़ी अपनहीं चला के?? बोलऽ शंकर!" –मीरा के कपार झनझना उठल... "साफ–साफ बोलऽ.... साहेब फेर कहाँ. जाले? आँय!"

".... साहेब डॉ0 सुमन मैडम किहाँ चल जाले।"... अब शंकर बात के साफ–साफ कहले में भलाई समुझले।

पति–पत्नी के अइसन मामिला में मये संसार भलहीं सब कुछ जान जाउ, जेकर हक छिना जाला ऊ शायद आखिरी आदमी होला जानेवाला।

मीरा के जइसे देंह के मये खून घींच लिहल गइल होखे!.... जइसे कवनो पातर गली के दोसरा कोना पर बसल झोपड़पट्टी में आग लाग गइल होखे। ना त दमकल के गाड़ी ओहिजा पहुँच सकत बा, ना त ओह बस्ती में अतना पानिये बा कि आग बुतावल जा सके। बस जरले नियति बा। खाली चिरायन गंध फइलत जाई चारू ओर।

डॉ0 मीरा के चेहरा बैक व्यू मिरर में देख के शंकर डेरा गइल।

– "घरे चले के मेम सा'ब! लागत बा, राउर तबीयन ठीक नइखे।" कई बेर दोहरवला के बाद मीरा बस सहमति में सिर हिला सकली।

XXXX

तीन महीना बीत गइल। डॉ0 मीरा पूरा दिन अपना के कॉलेज आ अपना बच्चन में व्यस्त राखसु। घरे आवते जनाइ जइसे कवनो गर्म माइक्रोवेभ ओवन में बइठल बाड़ी। सास–ससुर के प्रति कर्त्तव्यपरायता में कवनो कमी ना रहे। हँ.... डॉ0 प्रकाश से बिना कुछ कहले अइसन जनाइ जइसे दूनो लोग अलग–अलग ग्रहन पर जाके बइठ गइल होखे। प्रकाश पूरा–पूरी कोशिश करसु कि अकेले में कम से कम मिले परे। रात में, बिछवना पर आवते सूत जासु भा सूते के नाटक करसु।

.... आ मीरा खातिर त जइसे बिछवना पर अनगिनत नागिन लोटत रही स। तबो बेड पर गिरते–गिरत जइसे नीम बेहोशी में गोता जात रही आ बेसुध सूत जात रही। बाकिर घंटे–दू घंटा बीतत खुमारी टूटे त उठके बइठ जासु। मये देह झन–झन करे लागे। तरहथी पसेनन सउना जाई। घंटन घिघुरी मरले बइठल रह जासु। कबो उठ के पानी पियसु त कबो खिरकी तयर खाड़ होके बहरा पसरल सन्नाटा से चुप–चाप बतियावत जनासु। बगल में सूतल पति पर आँख परते आँख के आगे अन्हार छावे लागत रहे। जवना घर के आपन घर समझ के सब कुछ भुला गइल रही, ऊ कब, कइसे दोसरा के हो गइल, पते ना चलल।... हम त किरायदार बानी' एह घर में। कबो जाये के कहल जा सकत बा।.... कहाँ जाइबि? आ फेर ई दू गो बच्चा! काल्ह तब जवना जमीन पर खाड़ होके अपना भाग पर झूमत रहीं, ऊ त पानी पर पँवरत बर्फ के ढोका निकलल। यदि हमरा अस सक्षम स्त्री अपना के अतना असहाय महसूस करत बिया त फेरू पति आ उनका परिवार के सहारे जीए वाली औरतन के दशा का होत होई?

.... मीरा!....।

.... हँ....। अचके डॉ0 प्रकाश के पुकार सुन के मीरा के तंद्रा टूटल।

.... पिछला कई कहीना से हम तहार घुटन आ बेचैनी देख रहल बानीं। जवन साँच बा, ऊ बा। हम जानऽ तानी तहरा सब मालूम बा।.... डॉ0 प्रकाश मीरा के हाथ पर आपन हाथ राखल चहले।

"मीरा उठ के फेर खिरकी भिरी आ गइली.... फेर एह पर बात करे के का मतलब?"

अचके मीरा के लागल कि जइसे "ई कवनो निरीह नारी ना बलुक अपना जिनगी पर नियंत्रण रखे वाली एगो सशक्त आ सक्षम स्त्री बोली रहल बिया। आज प्रकाश के नकार के जइसे ऊ खुद के पा लिहले होखस... सूत जा प्रकाश!" आ मुँह फेर के बाहर लॉन में निकल गइल रही। बाहर ठंढ, रात के अन्हार। कब आके सुतली कुछ होश ना रहे। ढेर देर तक नीन ना परल। जब नीन लागल त दिन चढ़ला तक सूतल रहली।

XXXX

फोन के घंटी से डॉ0 प्रकाश आ मीरा के

नीन टूटल। साइड लैम्प जरावत, दोसरा तरफ के आवाज बिना सुनले डॉ0 प्रकाश कहले.... हँ, नीरज.... बोलऽ!

उनका पता रहे रात के एक बजे नीरजे फोन कर सकत बाड़े।

".... नीरज अगिला महीना आ रहल बाड़े। ऊ सिंगापुर में एगो कान्फ्रेंस में आवत बाड़े। फेर हमनी से मिले अइहें। लइकन के बारे में पूछत रहले हा।" कहल मुश्किल रहे कि प्रकाश आत्मालाप करत रहले कि मीरा के संबोधित!

एयरपोर्ट से घरे आवत डॉ0 नीरज डॉ0 प्रकाश के हाथ दाबत कहले.... तहरा खातिर जॉनीबाकर ले आइल बानीं.... ब्लू लेबल! आज साँझ के बइठकी में खूब गप्–सड़ाका मारल जाई!

डॉ0 प्रकाशो के इहे चाहत रहले। पता ना कतना दिन हो गइल रहे घर में घर अइसन रहत! आज हर तरफ से छुट्टी ले लेले रहले।

साँझ खा देश–दुनिया के बात चलत रहल.... दोस्तन के, कॉलेज के।

.... प्रकाश अबकी हम तहरा से कुछ खास बात करे आइल बानीं।

..... हमरा पता बा।.... बाकिर तहरा तक ई बात पहुँचल कइसे?

.... शुतुरमुर्ग अस बालू में आँख लुकवा लेला भर से सच्चाई थोरहीं छुप जाले। पूरा मेडिकल फ्रेटरनिटी एह बात के जानत बा।.... ई तूं का कर रहल बाड़ऽ, प्रकाश? का नइखे तहरा? एगो अइसन घर जवन कई जन्मन के प्रार्थना से नसीब होला। बतावऽ का कमी बा तहरा? ओकरो जिनगी बा.... आ तहार पत्नी, बच्चा सब?

..... कमी? कमी त कुछुओ नइखे, नीरज! तहरा का लागऽता कि प्यार बरसात के पानी हऽ जे जहाँ गड़हा देखलस जमा हो गइल आ मौसम बदलते अइसन सूखल कि एगो निशान तक ना रह गइल? कमी से प्यार के का रिश्ता? प्यार त पहाड़ के छाती चीर के बहे वाला अशेष झरना ह। एकरा सोत के पता के करी? कब, कहाँ, कवना उमिर में हो जाई प्यार, केकरा पता बा?

..... आ जेकरा से तूं बियाह कइलऽ, ऊ प्यार ना ह? फेर सुमन? का ऊ सिर्फ प्यार के भरोसे जिनगी बिता पाई? आखिर ओकरो त आपन परिवार होखे के चाहीं?

..... का करीं? अलचार बानीं। सब जानते बेबस। मीरा के प्रति थोर अपराध–बोध बा। मये भरला के बादो.... बड़ा सुख अनुभूति ह, यार! हँ.... सुमन हमरा खातिर रह जइहें।

"..... ई त कूर स्वार्थ ह।"... अब नीरज के लहजा बदल गइल रहे।

..... जवन होखे!

..... तूं जानऽतार' प्रकाश?.... हर विवाहेतर रिश्ता देह–लिप्सा में सराबोर होला।

..... विवाहेतर सम्बन्ध सामाजिक वितृष्णा से बनल अघोर शब्द ह। ई साँच बा कि स्त्री–पुरुष के बीच बिना देह के प्रेम नइखे रह सकत, बाकिर ई खाली देंहिये खातिर ना होला। ई अकथ अनुभूति ह।

डॉ0 प्रकाश के चेहरा पर स्निग्ध भाव देखि के नीरजो चुप हो गइल। दोसरा दिने हवाई जहाज से डॉ0 नीरज लवट गइले अपना दोस्त के अजनबी घर के पाछा छोड़ के।

डॉ0 मीरा अपना के अपना पेशा में भुलावे के कोशिश कइली। उनका जनाइ... हर मरीज के दुख उनकर अपने दुख के फइलाव ह। ऊ कॉलेज के सबसे लोकप्रिय आ गरिमामय प्रोफेसर के रूप में जाने जाये लागल रही। दुनिया खातिर डॉ0 प्रकाश आ डॉ0 मीरा आदर्श पति–पत्नी रहे लोग। उहन लोग के संस्कार से लइकन के अपना घर के बोध भइल आ अतना सफल भइला के बादो उहनी खातिर महतारिये बाप सबकुछ रहे।

डॉ0 सुमन सर्जरी में अतना नाँव कमइली कि डॉ0 बन्दनो मुखर्जी अपना प्रियतम शिष्या पर गर्व करसु। लइका लोग कभी–कभार सुमन आंटी से मिले उनका घरे चल जात रहे।

XXXX

अभि के फोन से जइसे सुमन के धड़कन रुक गइल होखे। ऊ बदहवासी में कइसहूँ पहिरन बदलली आ अभि के पहुँचे तक मुख्य द्वार पर तइयार होके खाड़ हो गइल रही। अब ऊ अपना के संयत क लेले रही। भीतर हृदय तार–तार हो गइल रहे। डॉ0 प्रकाश के देखे खातिर वेदनाजनित बेचैनी रहे, बाकिर मीरा के घरे जाके मिले के हिम्मत जुट ना पावत रहे।

सुमन के आवते सब खड़ा हो गइल। बिछौना के बगल के कुर्सी पर बइठत सुमन आपन हाथ डॉ0 प्रकाश के हाथ पर रखली। अपना हाथ से उनकर हाथ दबावत निर्विकार बइठल रही। रेगिस्तान के दुपहरी अस उनकर सूखल आँख अनायास मीरा का ओर उठली स। उनकर हाथ प्रकाश के हाथ अपना हाथ में लिहले मीरा का ओर जुड़ गइले स, जइसे पूरा जीवन मीरा के यातना के वजह बनला खातिर

क्षमा मांगत होखऽ स।

प्रकाश कराह के आँख खोलले। कुछ कहल चाहत रहले। ओठ हिलले स बाकिर शब्दन के वाणी ना रहे। सुमन के हाथ पर दबाव बढ़ गइल। आँखिन में कृतज्ञता भर आइल। उहे आँख मीरो देने घुमली स.... क्षमा माँगत अस। सुमन मीरा के हाथ आहिस्ते खींच के प्रकाश के हाथ पर रख देली। सब कुछ शीत.... शांत!

तेरह दिन के गहमा–गहमी। मीरा आ सुमन आमने–सामने पड़त रहे लोग बाकिर कबो कुछ बोल ना पावल केहू। एह घरी शायदे सुमन के बोलत केहू सुनले होखे!

"आवत रहिहऽ!".... अपना घरे जाये खातिर विदा माँगे आइल सुमन के बस अतने कह पवली मीरा।

डॉ0 नीरज के संगे अभि आ अनन्या कार तक छोड़े आइल रहे लोग। कार के पिछला सीट पर बइठल सुमन के देख के अइसन लागत रहे, जइसे कवनो लाश बइठा दिहल गइल होखे। जड़.... जइसे जीये के कारने हेरा गइल होखे।

..... लागत बा, सब कुछ काल्हुए त भइल हा.... पढ़ाई के बेर के संघर्ष आ हरमेस स्नेह आ सहयोग देबे खातिर खाड़ मीरा।.... सोचले रहीं, मीरा खातिर कबो ऊ कर पाइब जे केहू ना कर सकल। साँचो.... जिनगी के अकेलापन जवन उनका कारण मीरा के मिलल, भला अउर के दे सकत रहे? मीरा.... कबो एको शब्द शिकायत के ना निकलल जेकरा मुँह से! संसार के सामने पति आ परिवार के मर्यादा के हरमेस बना के रखल!...

विचारन के अन्हर–खोह में डूबत–उतरात सुमन अपना घरे आ गइली। लागत रहे जइसे कवनो भूत–बंगला में रहे आ गइल होखसु।... जेकरा खातिर मये जीवन अकेले गुजार दिहनीं। कबो अउर कुछ ना चहलीं.... परिवार, बच्चा.... खाली साँझ के कुछ छन साथ रहे के एवज में मये दुनिया से अलग हो गइल रहीं.... ओह!.... तबो जिनगी के सार्थकता एही प्यार में बा.... बहुते सुखद आ असीम।

..... प्रकाश तोहरा के पाके हम धन्य हो गइलीं।

सुमन आके ओही लान चेयर पर बइठ गइली, जहाँ प्रकाश बइठ के उनका से दुनिया–जहान के बात बतियावत रहले। सामने के फेंड़ से चिरइन के एगो झुंड उड़ल.... आपन घोंसला खाली क के। फेंड़ अकेले। वीराना चारू ओर। गँवें–गँवें अन्हार छवले जात रहे।

■ eu jkM] c)k dkykuh] iVuk] 8000001

गजल

■ प्रो0 रिपुसूदन श्रीवास्तव

जबसे गाछ सयान भइल बा पहुँचे लागल गाँव–नगर।
पुलुई पर सुगना बइठल तऽ कउँचे लागल गाँव–नगर।

धरती जब आकाश छुए तऽ घर घर टाटी लागेला
आसमान पथराव करे तऽ नाचे लागल गाँव–नगर।

ढहे पुरान भीत त केहू कानो कान न जानेला
नया भीत जनमे लागल त पाछे लागल गाँव–नगर।

ढाई आखर के पाती जबसे पहुँचल पंचाइत में
आपन–आपन अरथ लगा के बाँचे लागल गाँव–नगर।

बिछिली में धक्का देके, थपरी पीटल नीमन लागे
गोड़ सँभारि चले वाला पर ताके लागल गाँव–नगर।

■ ^iokl*] yu u0&2 iMko ik[kj] vkexkyk] et¶Qjij

जंगली फूल

तैयब हुसैन 'पीड़ित'

दुमका के सेंट जेवियर्स हाईस्कूल में नाम लिखा के जब फिरदौस गाँवे अइली त अगरा–अगरा के पड़ोसी लोगन से मिलस। चउदह–पनरह के किशोर उमिर में उनका बुझाय जइसे उनका जन्नत के सुख भेंटा गइल होय। उनका नाम के अरथो त जन्नते होला। ऊ दुमका में पापा के पुलिस–क्वाटर के चर्चा करस, जवन पत्थर–ईंटा से जोड़ल रहे, ओकरा तुलना में तुरते अपना इसकूल के गिरजाघरनुमा बिल्डिंग के बखान करे लागस। जइसे ओहीला पुलिस–क्वाटर के जिकिर जरूरी रहे। बिल्डिंग का सामने सहन। सहन में करीना से हरियर–हरियर बनावटी घास रोपल। अरिये–अरिये गोल्डमोहर आ अमलतास के पेड़। जगह–जगह किसिम–किसिम के फूल। कमरा में बड़का–बड़का शीशा लागल खिड़की। छत में पंखा, देवाल में मर्करी आ चम–चम करत एके साथे कुर्सी–टेबुल वाला हर लइका–लइकी के अलग–अलग सीट। टेबुल में ड्रावर। ड्रावर में ताला–चाभी। टी0वी0 के सीरियल आ सिनेमा में देखल सीन अब छछात उनका सामने आई। काहें कि इहाँ को–एजुकेशन बा, लइका–लइकी के एके साथे पढ़ाई। देखल दृश्य के कल्पना फिरदौस के दिल में हुरदंग मचवले रहे।

"ई त उनका पापा के पुलिस–अफसरी के रोब–दाब रहे, जे आसानी से उहाँ उनकर नाम लिखा गइल, ना त ठरहरिया मारत रह जाला लोग, कहाँ सुनेलन प्रिंसिपल फादर!"

दादी कहली– "डी एस पी के बेटी के कइसे ना नाम लिखाई रे? तले फिरदौस के मतारी टुभुक पड़ली– आ हमहूँ त एस पी के बेटी ठहरलीं अम्मा जी!"

वइसे फिरदौस के गँवई मकानो कइक कट्ठा में फइलल बा। नदी–किनारे दुमंजिला बिल्डिंग। भीतरे–भीतर अंगना से नदी तक जायेला पानी में डूबल पक्का सीढ़ी। जनानीखाना से अलग मर्दानीखाना आने बड़का दालान। दालान का आगे सहन। सहन में किसिम–किसिम के गुलाब लगावल आ बीच में घन डाढ़–पात से लदाइल झबराह मौलेसरी के पेड़। मौले–सरी के जड़ तर गोल–गाल पक्का के चबूतरा बनल रहे, जेह पर आदमी–जन, नोकर–चाकर बइठ के सुस्ताँ सऽ। सवांग आ उनका हीत–दोस्त काठ के ऊँच कुर्सी आ कपड़ावाला आरामदेह चेयर पर पसर के गलचउर करे लोग।

गाँव में ई घर बड़े साहेब के घर कहाये। बड़े साहेब आने फिरदौस के दादा मियाँ, जे अब दुनिया में नइखन, गाँव के बड़का जमीन्दार रहस। परदादा त अंगरेजन के गुलामिए में पहिला चुनाव लड़के मुस्लिम–लीग से जीतल रहस। हरियर बक्सा रहे उनकर जेह में वोट गिरावल गइल। दादी कहली– "उनका खिलाफ कांग्रेस के केहू हरिचरण सिंह खड़ा रहस। लोग नारा लगावे– 'हरियर बक्सा में वोट दो। लाल बक्सा में थूक दो!' बुझला लाल बक्सा रहे हरिचरण सिंह के।"

परदादा के अब्बू अपने फिरदौस के लकड़दादा जेकरा कलकत्ता के मुर्गीहट्टा में थोक भाव से मुर्गा–मुर्गी बिकाय, एगो अंगरेज साहेब के सालों–भर मुफुत मुर्गा–मुर्गी देत बड़ा दिन पर थैली में नजराना पेश कइले रहस। साहेब बहुत खुश भइल। "हम टुमको थैंक्स बोलटा है मियां! काल्ह बंगला पर आवो, हम भी टुमको गिफ्ट देने मांगटा।" आ गइला पर वाजिद मियां के ऊ एगो बन्दूक देलस। कागज पर लिखल नाँव– 'शैख वाजिद अली!' तब से वाजिद मियां शेख वाजिद अली कहाये लगलन। उनकर रूतबा बढ़ गइल। आ बेटा वोट में जीत के 'बड़े साहेब' हो गइलन। ना त गाँव के पूरब ई जोलहा टोली ह, जवन बड़े साहेब के जितला पर 'जलालपट्टी' कहाये लागल। बाप त अंगरेजन से सर्टिफिकेट पा के जोलहा से शेख एक पुस्त पहिलहीं हो गइल रहस।

फिरदौस अपना अम्मी–अब्बू के एकलौती बेटी बाड़ी, दुलरुई धिया! नामे से ना, देखहूँ में जन्नत के हूर नियर सुन्नर। बचपने से उनका सेवा–टहल ला एगो आदिवासी लइका रखायेल। नाम कुंडू उराँव, बाकी सब लोग 'बहादुर–बहादुर' कहे लागल। ऊ फिरदौस के बस्ता लेके कॉन्वेंट इसकूल पहुँचा आवे, फेर छुट्टी भइला पर लिआ आवे। अपने सरकारी इसकूल जाय। खाली समय में घर के काम करे। फिरदौस बचपने से ओकरा साथे खेले लगली। ऊ इनकर हम उमिरिया बा। साँवर, पातर, छरहरा लइका। चेहरा पर निमक आ मुँह में छोट–छोट दुधिया दाँत, जवन हँसला पर बिजुरी मतिन चमक जाले। ऊ हरदम मुस्कियातो रहेला छोकड़ा!

फिरदौस ओके जीव–जान से मानेली। कबो अब्बू–अम्मी के मारे ना देस। डाँट भले खा लेवेला। कुंडू के अपना टिफिन में से नीक–नोहर बचा के रोजे खिआवेली। ऊ उनकर दोस्त दाखिल हो गइल बा। मिड्ल इसकूल तक त ऊ पैदल भा कुंडू के सायकिल पर बइठ के चल जास, बाकी अब सेंट

जेवीयर्स इसकूल दूर पड़ी। पहुँचावे ला सरकार गाड़ी–ड्राइवर त बा बाकी साथे बहादुरो जाई। अब्बू के अपना पुलिस ड्राइवर पर विश्वास नइखे।

इहहूँ फिरदौस के रोजे फोन पर बात होले कुंडू से। अपना तनखाह के पइसा बचा के ऊ इनके से बतिया आवेला एगो साधारण मोबाइल कीन लेले बा। कहेला– "फिरदौस! हम तोहरा बिना बे–पाँख के पखेरू हो जाइले। तनिको मन ना लागे। अपना घरे बानी त का? मन जइसे तोहरे साथे बा। इहाँ त जंगली साथियन साथे जंगल–जंगल घूमत चलीला। तेंदू पत्ता के बिक्री से गुरदेल खरीद लेले बानी। पेड़ पर मारत–मारत पक्का निशाना हो गइल बा। अब त गुरदेल के गोली से पाकल फलो तूड़ लिहीले। तू जल्दी दुमका आवऽ ना त हमरो के गाँवे बोला लऽ!"

मन त कुंडू बिना फिरदौसो के ना लागे। हरदम घर में सियान अब्बू–अम्मी से का बतिआवस? लइकन के एगो अलगे दुनिया होला, जहाँ हम उमिरिए असल साझीदार आ राजदार दूनों होले। घर के दोसर फेमिली मेम्बर के बीच शिष्टाचार के एगो देवाल उठल रहेला, जवन लइकन खातिर लछुमन–रेखा मतिन होला। "हई करिहऽ, हउ मत करिहऽ! इहाँ जइहऽ, उहाँ मत जइहऽ! हेकरा साथे खेलिहऽ, होकरा साथे ना!" लइकियन के त आउरो बाधा। ऊ त जन्नत पढ़ल–लिखल परिवार में पैदा भइल बाड़ी, एह से स्मार्ट बन के रहेली। ना त मोलबी के लइकियन नियर बुरका पेन्हे के पड़ित। ओढ़नी से चउर–चउर के मूड़ी से आधा देह तोपल त अबले जरूरे जरूरी समझल जाइत। फिरदौस मने–मने हँसेली मोलबियन से औरतन पर पाबंदी के मजहबी बात सुन के। मरद कपड़ा नियर औरत बदलत चलऽस त ठीक, औरत के बिना इजाजत दुआरी से बाहर गलियो में जायेके मनाही! गैर मरद से गुफ्तगू? बाबा रे बाबा! ई त कुफ्र ह कुफ्र। जइसे आसमान टूट जाई। ई इस्लामिक डर उनको के बड़े डेरवावेले जब ऊ सोचेली कि का आगे उनका के कुंडू से ना बतिआवे दिहल जाई!

गाँवे रहते अब्बू के तरक्की के खबर मिल गइल बा। तइयारी शुरू बा, जल्दिए दुमका जाइब जा। उहाँ से लातेहार जाएके पड़ी। अब्बू के एस0पी0 वाला पोस्टिंग लातेहारे बा। लातेहार का बारे में अब्बू जेही–तेही से फुस–फुस बतिआवेलन। मने मन उनका भयो बेआपल बा। खतरनाक जगह बा लातेहार! उहाँ के जंगली बड़ा लड़ाकू बाड़न सऽ। जेकरे–तेकरे लइका के उठाके रंगदारी मांगेलन सऽ। ठीकदार के काम रोकवा के लेबी। ना देहला पर मार–काट गोली–बनूक, बम–पिस्तउल!

लातेहार आ गइल बानी। दुमका के क्वाटर से बड़ क्वाटर मिलल बा अब्बू के। पहरा पर हरदम पुलिस रहेला। बाकी पावर बढ़ल त कामो बढ़ गइल बा उनकर। हरदम एने–ओने फोर्स लेके जाएला पड़ेला। कबो हई कांड, कबो हऊ कांड! जादे लफड़ा जंगलियने साथे।

हमार सेंट जेवीयर्स इसकूल लातेहार से बहुते दूर पड़ेला। बाकी अइसन नीमन इसकूल लातेहार में हइयो त नइखे। एह से उहँही पढ़ब। हमरा खातिर त ठीके बा। एगो आउर खुशी के बात ई बा कि कुंडुओ के उहँहीं नाम लिखा दिहल गइल ह, पच्चीस परसेंट गरीब लइका के एड्मिशनवाला कोटा में। रिजर्वेशन का चलते नाम लिखे के पड़ल ह प्रिंसिपल फादर के, ना त अब्बू केस में फँसा देतन।

कुंडू के खुशी के ठेकान नइखे। जइसे खजाना हाथ लाग गइल होय। ओकरा कहेला– हम त सपनों में ना सोचले रहीं हइसन इसकूल में पढ़े के। तोहरे चलते ई नसीब भइल हऽ फिरदौस! बाकी इसकूलो में हमरे देख–रेख में लागल रहेला बुरबक। कवनो लइका से बतिआवे चाहब त सामने आके खड़ा हो जाई, जइसे ऊ ले भगिहन सऽ हमरा के! कइक बेर समझाईले ओकरा के, कि अब हमनी के सियान होत जात बानीं। फेर ई मिशनरी इसकूल हऽ। इहाँ लइका–लइकी से बोले–बतिआवे के मनाही नइखे। उल्टे स्मार्ट कहाये खातिर सबके आपन–आपन ब्वाय आ गर्ल फ्रैंड बा। बाकी कुंडू त छापा–मोहर देले रहेला हमरा पर। सहेलीसऽ ओकर नाम जोड़ के हमरा के 'फिरदौस बहादुर' कह के चिढ़ावेली सऽ। ऊ सुन–सुन के खुश होले बाकी हम लाजे काठ हो जाइले। वइसे उहाँ हमर नाम 'जन्नत' साथियन के बीच लोकप्रिय बा।

कुंडू के कुछ अपने जइसन गरीब लइकन से जादे दोस्ती बा। अक्सर पीछे बइठेलन सऽ ऊ। गरीबी गुने इसकूल–ड्रेस ओतना चकमक ना रहे ओकनी के, जबकि इहाँ रोजे कलफ कइल ड्रेस आ टाई के होड़ लागल रहेला। बाल के स्टाइल अलगे हीरो–हीरोइन मतिन रखे के प्रतियोगिता बा। सबेरहीं पुलिस का गाड़ी से आवे पड़ेला, साँझ ले घरे पहुँचीले। गनीमत बा कुंडू साथे आवेले–जाले, एह से राहता में डर ना लागे। गुरदेल हरदम ओकरा जेबे में होला।

एक दिन हिस्ट्री सर औरंगजेब के कठोर होय के एगो उदाहरण देत बतइलन कि औरंगजेब के लइकी

जैबुन्निसा के एगो गरीब शायर अकील से प्यार रहे। जैब बाप के चुप्पे ओके अपना महल में बोला लेस। कौनो दरबारी एह बात के बादशाह से चुगली क देलस। औरंगजेब अचानक एक दिन बेटी के कमरा के दरवाजा खटखटवलन। अकील अंदरे रहे। अब का होय? जैब हड़बड़ी में उनका के कोना में रखल एगो खाली टब में समा जायेके राय देली। दरवाजा खोलला पर औरंगजेब कमरा के जासूसी निगाह से अइकलक, फेर पुछलक– कोना में हऊ टब के का जरूरत बा बेटी? जैब कहली– अब्बा हुजूर! पाँच वक्त के नमाज का अलावे रातो में इबारत का वक्त पानी के जरूरत पड़ जाले, एह खातिर....। औरंगजेब कहलक– "रात में ठंढा पानी से वजू? केहू बा?" तुरते दूगो नोकर हाजिर भइलन। औरंगजेब के हुकुम भइल– "एह टब के उठा के ले जा लोगन आ तंदूर के आग पर चढ़ा दऽ!" फेर बेटी से कहलन– "पानी खउला के वजू करे के चाहीं।"

पूरा कलास के लइका–लइकी एह दौरान हमरा आ कुंडू का ओर ताक–ताक के मुस्कियात रहलन। कुंडू के चेहरा खीसी तमतमा उठल रहे।

अइसहीं एक बेर कवनो छुट्टी में कुंडू अपना घरे से लवटल त हमरा से अकेले में उज्जर–करिया के धारी लेले लमहर पोंछ वाली एगो मरल चिरई अपना पतलून के पॉकेट से निकाल के देखलवलस। ओकरा आवाज में हमरा से बोलल आ फेर आग में जरा के ओकर राख हमरा चेहरा पर छींट देलस। ओकरा एह पागलपन पर हम दंग रह गइलीं। ऊ त ना बतइलस बाकी इसकूल के एगो दोसर आदिवासी लइका के जबानी हमरा मालूम भइल कि ई एगो टोटका ह। अइसन कइला से नाहियो चाह के लइकी के झुकाव लइका कावर हो जाले।

समय बीतत जाता। अब हमनी के मैट्रिक के फाइनल परीक्षा सामने बा। अब्बू के डाक्टरी पढ़ावे के अरमान देखत हम बायलोजी ले लेले बानी। बाकी कुंडुओ के ईहे विषय पढ़े के चुनाव हमरा समुझ में नइखे आवत। एह सब हरकत से अब हमरा कुंडू से डर लागे लागल बा। ओने कुंडू कौनो बात लेके हमरा पर आपन अधिकार समझ के अड़ जाले। कुंडू हमरो कमजोरी रहल बा, बाकी एह हद तक ना। हम कुछ अनहोनी के आशंका से उदास रहे लागल बानी। अम्मी पूछेली त पढ़ाई के भार बढ़ जाये के बहाना बना दिहीले।

इस्कूल का एगो प्लान से त ओकरा खुशी के ठेकाना ना रहे। भइल ई कि इसकूल में बायलोजी–ग्रुप के लइका–लइकी के खास–खास पौधा के पहचान खातिर जंगल घूमे के प्रोग्राम बनल। दबाव डाल के एह टूर के कुंडू दुमका में अपना घर के आस–पास रखवइलस। लातेहार के जंगल घूमल सुरक्षित ना रहे, एह से ओकर प्रस्ताव बायोलोजी सर मान लेलन।

जरूरी इन्तजाम–बात खातिर कुंडू अपना कुछ साथियन साथे पहिलहीं अपना इलाका में भेज दिआइल।

टूर में बहुते मजा आइल। जंगल में सटल–सटल पेड़, झाड़ी। झाड़ियन के बीच छिपल खरगोश, लोमड़, गीदड़ आ साहिल जइसन जानवर देख के रोमांच हो आवे। रह–रह के मोर बोले– "मेंऊ–मेंऊ"। घूम–धाम के एगो टेन्ट में ठहरे–खाये के इन्तजाम रहे। दू पहर के लंच के बाद आदिवासी लइकियन के हाथ में हाथ आ कान्ह मिलाके डांस भइल। करिया–करिया नाट कद के लइकियन के लाल कोर के उज्जर साड़ी बेलाउज में मांदल का ताल पर एक साथे थिरकल। ओकनी के दल में शामिल होके नाचे लगलीं। ई एगो आउर नया अनुभव रहे। कुंडू कहाँ से दो डफ ले आइल आ कमाची से तड़–तड़–तड़–तड़.... बजावे लागल। ऊ आपसूफ बजावत जाये। लइकियन के थिरकन बढ़त जाय। हमनी खूब मौज–मजा कइलीं। एह बीच डफ बजावल छोड़ के कुंडू कहाँ से दो वोइसने जंगली फूल ले आइल आ हमरा केस में खोंस देलस। साथी सब हँस के ताली बजा देलन सऽ। बाकी हम पानी–पानी हो गइलीं। काहें कि बाद में पता चलल कि जंगली लोग में शादी का पहिले ईहे परपोज करे के तरीका ह। ई कुंडू हमरा ओर एक डेग आउर बढ़ गइल रहे।

हमरा घरे केहू गलत खबर क देले रहे। अब्बू फोन कइलन त हमनी दूनों के स्वीच ऑफ मिलल। ऊ दुमका पुलिस का साथे टूर के पता लगावत जंगल में पहुँच गइलन। हम त अब्बू के देखते छुई–मुई हो गइलीं बाकिर कुंडू के डफ तड़तड़ावल जारी रहल। अब्बू पास आके ओकरा के डँटलन। लेहाज के वास्ता देलन। हमनी के वापस लौटावे के टीचर से कहलन। बाकी ई का? कुंडू हमरा के अपना पीछे करत लौटे के रास्ता रोक लेलस। अब्बू के काटऽ त खून ना! जब ऊ रोसिअइलन त कुंडू हमरा के आगे क के उनका से सवाल–जवाब करे लागल। ओकर कहना रहे कि जंगली रीति से ऊ हमरा से शादी क लेले बा। अब हम ओकर बीवी बानी आ बिना शौहर के चहले अब्बू हमरा के इहाँ से ना ले जा सकस। पागलपन के हद तक ऊ चीखे लागल। हमरा समझ

में ना आवत रहे कि हम का करीं? हम ओकरा जकड़ में रहीं आ ऊ लाज–लेहाज सब भुला गइल रहे। ओकरा मुँह से दारू के बदबू आवत रहे।

अब्बू डेरवावे खातिर कमर से पिस्तउल निकाल लेलन आ एने कुंडू पाकिट से गुरदेल निकालत चमउटा में गोली बोझ लेलस। अब्बू एह डर से फायर ना कइलन कि गोली पहिले हमरा लागी। आ एही चालाकी से कुंडू हमरा के बीचे सेंडविच बनवले रहे। अब्बू धीरे–धीरे पिस्टल लेले फोर्स साथे हमरा भीरी सटे लगलन। लइकियन–लइका के जमात हक्का–बक्का रहे। अइसन अनहोनी के केहू उमेद ना कइले रहे। अपराधी के पकड़े के पुलिस के आपन टैक्टिस होला। साइत एही ट्रेनिंग से अब्बू हमरा ओर एगबारगी दउड़ पड़लन कि कुंडू गुरदेल से गोली चला देलस। हम अतने देखलीं कि गुरदेल से गोली छूटल आ अब्बू के एक आँख से तड़–तड़ खून बहे लागल। ऊ पेस्तउल फेंकत आँख जाँत के बइठ गइलन आ हम बेहोश बहादुर के बाँह में बन्हाइल रहीं... ।

■ U;ı vthekckn dkykuh]
egsUæ] iVuk] 800006

लघुकथा

बछरू

✍ **राजगुप्त**

बाबुए जी का जमाना से हमरा दुआर प एगो न एगो गाय रहे। मिलावटी युग में, खाँटी दूध खातिर हमहूँ एह परंपरा के ना छोड़लीं। गाइ पाले में बछरूओ से फायदा मिले। बिसुकते बाछा बेचि के, गाइ बटइया पर सेवे खातिर दुसरा के दे दीं। एहू पारी हमार गाइ बाछा बियाइल। ओकर हालत ठीक ना रहे। लोग कहे कि ई बाछा कवनो भाव में ना बिकाई। हमार मन खट हो गइल बाकिर बाछा प तनी बेसी खेयाल राखे लगनी। ओकरा खातिर गाइ का थान में तनी दुधवो छोड़ दीं। गाइ के पखेव बचाइ के ओकरो के देबे लगनी। कुछुवे दिन में बछरू गदाइ गइल। हम के देखते ऊ दुलराये लागे। हमहूँ मने–मन खुश होखीं। गाइ बिसुकते एगो गँहकी बाछा के तीन सौ रूप्या में कीनि ले गइल। हम अभी रूपया धइ के दुअरा आइले रहनी कि एगो अदिमी टोकलस, 'अरे कसइया के बछरूआ बेच दिहनी हा ?' हमरा कटले खून ना।

दू–तीन लोगन के तुरंते राहे–राह दउरवनी आ कहनी कि ओकरा भेंटाते मोबाइल प फोन करिहऽ जा। आखिर ऊ भेंटाइल। कहलीं, 'तूँ आपन रूपया लऽ, हम बाछा ना बेचबि'। ऊहो अँकड़ि गइल 'हमहूँ रूपया गिनले बानी, अब ना बेचबि'। ऊहो जानि गइल कि असामी गरजू बा। हमरा संग के लोग दबाव बनावल, तब्बो अड़ल रहे। ले देके पाँच सइ में बछरू वापस मिलल। गऊ हत्या का अछरंग से बाँचे खातिर हमहूँ रूपया देबे तइयार हो गइनी। घरे आइ के खूँटा पर बान्हते बछरूआ हमरा ओरि अइसे करून भाव से तकलस कि हमरा भीतर कचोट उभरि आइल। ओघरी ओकर आँखि भींजल रहे। आठ–नौ महीना अपना दुआर रखला का बाद हम ओके चरवाही में दे दिहनी। फेरू गंगा तीरे छुट्टा छोड़वाइ दिहनी। फेरू ओके एकदमे भुलाइ गइनी।

बरिस बितला पर एगो करीबी के परवाहि करे गंगा–तीरे गइल रहनी। भादों के दिन रहे, नदी बढ़िआइल। डहरी में ठेहुन भर पानी। परवाहि कइला का बाद गंगा के घाडन पार करे खातिर नाव धइल गइल। ओही घरी आन्हीं–पानी आ गइल। उल्टा दिशा में नाइ खेवे के रहे। हिलकोरा आ तेज हवा से नाइ डगमगात रहे। अरार प पहुँचे का पहिलहीं नाइ ओलरि गइल। ''बचाव ऽ बचाव ऽ। दउरऽ।। के हल्ला में अरार का ओर से एगो साँड़ पानी में कुदत लउकल। ओलरत नाइ के मूड़ी से सोझ कइले, अरियाँ ले आइल, फेर उछड़ि के अरार प चढ़ि गइल। साँड़ के रंग–रूप देखि के हमके आपन बछरू इयाद आइल। हम विभोर होके ओके मूड़ी झुकवनी। ईहे सोचत कि अदिमी ले ढेर उपकारी त एह पसु के प्रेम बा!

■ jkt lkMh?kj] pkd] cfy;k

सुलोचना

कृष्ण कुमार

आधा राति बीत गइल रहे। सभे सुति गइल बाकिर सुलोचना के आंखिन से नीन कोसन फरका उड़िया गइल रहे। कतनो उतजोग कइली बाकिर नीन ना आवत रहे। बिजली रानी रूसल रही। घर के कोना में स्टूल पऽ राखल लालटेन भुकभुकात रहे। घड़ी के आगे बढ़त सुई के साथे उनकर उम्मीद के दामन छूटल जात रहे। बलवती होत आशंका के सोझा धैर्य जबाब देत रहे। गला रूंधल जात रहे। करेजा बइठल जात रहे। कबो बुझा कि ऊ मुँह में आ जाई। अन्हरिया जात। जंगला के बहरी तकली। कुच–कुच अन्हार। कुकुरन के भों–भों आ टिटिहिरीन के चेंचिआइल रात के भकसावन बनवले रहे। घर के कोना–कोना काटे खातिर दउरत रहे। बेचैनी बढ़ल जात रहे। राति के एक बजि गइल। मन के कतनो समझावसु बाकिर उनका आंवक में ऊ ना आवत रहे। बस इहे एगो सवाल उनका मन मंदिर के मथत रहे– "काहें अइसन हो कइलें बेटा सुधांशु? खुद के जान खतरा में डालि के ना बरदाश्त होखे वाला प्रसव पीड़ा सहि के जेकरा के जनमवनी ऊ अइसन काहे हो गइल....? जेकरा खातिर आपन कईअक गो ख्वाहिश सीना में दफन कऽ लेनी। एक–एक पइसा जोड़ि के पढ़वली–लिखवनी। जिनिगी के डेग–डेग प समझौता कइनी। ऊ अइसे कइसे अतना जल्दी बदलि गइल...?"

सुधांशु के माई सुलोचना के दुनिया बेटे तक सीमित रहे। सुतल–उठल, दिन–राति सभ सुधांशु तक। इकलौता बेटा रहन सुधांशु। सुलोचना उनका के एको पल आंखिन से फरका ना होखे देत रही। सुधांशु के बाबूजी रामबरन बाबू के जीवन के लालसो सुधांशु से अलगा ना रहे। हँ, ऊ तनिका अनुशासनप्रिय जरूर रहन। माई, शरारती सुधांशु के एक कौर खिआवे खातिर घंटों व्याकुल–बेचैन रहत रही। रामबरन बाबू तनिका डांट देत रहन त सुधांशु माई के आंचरा में जाके लुका जात रहन। तब सुधांशु खातिर सुलोचना टूट परत रही रामबरन बाबू पऽ, "अइसे ना लइका के डांटल जाला। डरे बाबू हमार कांपऽ तारे...।"

जबाब में रामबरनो बाबू पीछा ना रहत रहन, "हँ.... हँ....! बहुत निम्मन करऽ तारू। बेटा के अवरू बिगाड़ऽ...! असहीं काल्हु बीवी के अंचरा में लुकाई तऽ समझिहऽ। हम कुछुओ ना कहबि।"

एह पऽ सुलोचना चिचिआए लागत रहे, "हमार बेटा हऽ। हमरे रही। बीवी के अंचरा में कबो ना लुकाई। रउआ देखत रहबि। हमार बेटा सरवन बनी....।"

समय के चक्कर घुमत गइल। सुधांशु पढ़े में बड़ा तेज निकललें। डॉक्टरी कॉलेज में नाम लिखा गइल। करम फूटल सुधांशु के। डॉक्टरी के पढ़ाई के सुबहित दूसरको समेस्टर ना पूरल कि रामबरन बाबू गुजरि गइलें। दुःख के पहाड़ टूटि के भहराइल सुलोचना पऽ बाकिर तबो हिम्मत ना हरली। सुधांशु के पढ़ाई में तनिको दिकदारी ना भइल। गहना–गुरिया बेंचि के, करजा–पाइंच लेके बेटा के पढ़ावे में भिड़ गइली। एक से एक उरेब आइल बाकिर तनिको विचलित ना भइली। बेटा जइसे–जइसे आगा बढ़ल गइल सुलोचना ओतने अगरात गइली। ऊ बेटा के लेके बड़ा मुगालता मन में पाल लेले रही। तब समय के पांखि पऽ उनकर मन सवार हो जात रहे, "सुधांशु अइहें, गोड़ छू के कहिहें, माई, देखऽ तोहार कुरबानी रंग ले आइल। तोहार सुधांशु डॉक्टर बनि गइलें....।"

समय करवट भरलसि। घूरा के दिन फिरेला। सुलोचना तऽ आदमी रही। आखिर उहो दिन आ गइल। सुधांशु डॉक्टर बनि गइले। सुलोचना के ई संदेश मिलल। बुझाइल, जइसे एक पल में सउँसे दुनिया बदल गइल। बांसों उछलि गइली। एक छन में सउँसे दुनिया भेंटा गइल। राति–दिन आंखिन से लोर बहवावे वाली सुलोचना के जइसे सरग के सुख भेंटा गइल। इतराये लगली। बाकिर ई सुख घरी–छन भ खातिर रहे। ढ़ेर दिनन तक ले ई ना ठहरल। पुअरा के आगि लेखा बम से लहकल आ फेरू ओसहिं बुता गइल। सालों माथ ना लागल कि साथे काम करे वाली एगो नर्स रधिया से अझुरा गइलें सुधांशु। मन बड़ा पागल हऽ। जवानी आन्हर होला। कब केने बहकि जाई ई कहल ना जा सके। आंखिन–आंखिन में सभी बात हो गइल। मन से मन के तरंग मिलल। शब्दन के जरूरते ना पड़ल। बिना बोलले सभ बात बन गइल। दूनों आदमी बिना कुछ कहले सभ कुछ समझि गइलें। ई कहि के आंखियो के जुबान होला। जब आँखि के भाषा भावना के धरातल पऽ अंगड़ाई लेला त अपने–आप चाहत के जुबान मिल जाला। आँखि, दिल के भाषा पढ़ि लेलस। गँवे–गँवे दूनों आदमी एक–दोसरा के नियरा अइलें। एक–दोसरा के पसन से जान गइलें। पसंद–ना पसंद, अच्छा–खराब आदत, दोस्त–परिवार सभ से वाकिफ हो गइलें। समय के पहिया घुमत गइल। जवान मन में प्रेम हिलकोरा मारे लागल। तब दूनों आदिमी गुपचुप बिआह करे के मन बना लेले।

देवाल के कान होला। दूनों आदिमी के प्रेम–कहानी प्रचारित हो गइल। जिनगी के आखिरी पड़ाव पऽ पहुँचल सुधांशु के माई सुलोचना के तऽ एकर तनिको भनक ना मिलल बाकिर रधिया के पूरा परिवार एह से वाकिफ हो गइल। गोड़े तऽ गरई धरा गइल रहे। बिना जूता तुरले एम0बी0बी0एस0 लड़िका भेंटाये वाली बतकही। एगो नर्स आ एगो डॉक्टर। दिल्ली–आसमान के बीच। तब ओह लोग के देरी कइल वाजिब ना बुझाइल।

अपना अतीत के पन्ना पलटे लगलें सुधांशु। माई

अतना कइलस। गइना–गुरिया, जमीन–जायदा बेंचिके डॉक्टरी पढ़वलसि। मुसमात मेहरारू। बड़ा बरिआर धक्का लागी। जब ऊ एह बात के सुनी त अछुधा होके गिर पड़ी। सदमा लागि जाई। हार्ट फेल हो सकऽता माई के। आग–पाछ में परि गइलें सुधांशु। का करीं आ का ना, बड़ा फेरा में परल रहन। कतनो मन से सुलहा कइल चहलें बाकिर माई के प्रेम उनका पऽ हॉबी हो जात रहे। एक ओरे रधिया के तलफत जवानी आ दोसरा ओरे बेबस, लाचार, विधवा माई सुलोचना के दुलार–प्यार आ त्याग। उभ–चुभ में हिया हहरल जात रहे। बड़ा अफदरा में परि गइलें सुधांशु।

रधिया के परिवार बहुत तिकड़मबाज। हाथ में धराइल तितिर उड़ल चाहत रहे। ना महटिआए देलें स सुधांशु के। एगो दोसरे नाटक रच देलें सऽ।

रधिया के बोखार अपने लागल कि लगवलें सऽ, ई भगवान जानसु। ओकरा के एगो प्राइवेट अस्पताल में भर्ती करा देलें सऽ। तब रधिया के सखी–सलेहर अस्पताल में जाके सुधांशु के बतवली स, "रधिया के तबियत बहुते खराब हो गइल बा। ऊ सरिता अस्पताल में भर्ती बाड़ी। उनका बांचे के तनिको उम्मीद नइखे। रउआ खातिर बेचैन बाड़ी। अन्त दांव में रउआ के एक नजरी देखल चाहऽतारी.... ।"

चार दिन से अपना डिउटी प ना आवत रही रधिया। सुधांशुओ जानल चाहत रहन रधिया के बारे में। दू–चार बे मोबाइल लगवलें। बाकिर ओकर मोबाइल 'स्वीच ऑफ' बतावत रहे। छटपटाइल रहन सुधांशु। रधिया के बारे में सुनला के बाद अपना के रोकि ना पवलें। ओकरा सहेलिन से कहलें, "अस्पताल से छुटते सांझि तक हम कसहूँ आ जाइबि। तू लोग जा। उनका के बता दिहऽ जा... ।"

"अचके में का हो गइल रधिया के? अतना कम दिन खातिर सनेह काहे के जोड़ले रही?" –सुधांशु उभ–चुभ में परि गइलें। उनका बुझाते ना रहे कि का करसु। काम से मन उचटि गइल। बार–बार घड़ी देखसु। टाइम कटले ना कटत रहे। सांझि के पाँच बजल। अस्पताल के डिउटी से फारिंग भइलें। सरिता अस्पताल खातिर बाइक से परइलें। अस्पताल में रधिया कम्बल से मुँह तोपलें बेसुध पड़ल रही। उनका परिवार के लोग आ सखी–सलेहर रधिया के चारों ओर से घेरले रहे। सुधांशु के आवते सभे एक लई में आवाज लगावल, "डॉक्टर साहेब आ गइनी.... । ए डॉक्टर साहेब! बबी अब ना बचिहें। रउए में इनकर प्राण बसल बा। हई सेनुर धरीं आ इनकर मांग टीक दीं। इनकर मुक्ति हो जाई। आखिर त अब ई एह दुनिया से जा रहल बाड़ी.... ।"

बड़ा फेरा में परि गइलें सुधांशु। विवश हो गइलें। माई के लाड़–प्यार उनका के झकझोरलसि। देहिं गनगना गइल। ऊ महाजाल में फँसि गइल रहन। तजबीजे के मोका ना मिलल। निकलल ना भइल। एक चुटकी सेनुर रधिया के कपार पऽ डाल देलें। बिना मन के बिआ, कनपटी में सेनुर। चतुर रधिया के सखी–सलेहर मोबाइल बीडियो फोटोग्राफी करत जोरदार थपरी पीटली सऽ। रधिया करवट बदलत बइठ गइल। रधिया के माई सुधांशु के आशीर्वाद देत कहली– "जुग–जुग जीहीं सभे। जुगल जोड़ी कायम रहो। बेली के डाढ़ि लेखा जीवन में पसरीं सभे। देखिं सेनुर पड़ते बबी टनके लगली... ।"

दू गो नाव प चढ़ल बड़ा महंगा सउदा पड़ेला। एक ओरे माई के प्रेम तऽ दोसरा ओरे रधिया के। वात्सल्य आ वासना के चकोह में अझुराइल सुधांशु। माई के चुपे–चोरी रधिया के त सेनुर लगा देलें सुधांशु बाकिर घर अइला पऽ बड़ा अनमनस्क हो गइलें। उनका अइसन बुझाइल जइसे गाइ मार देले होखीं। ब्लड प्रेसर बढ़ गइल। बुझा कि मगज उड़ि जाई। भय आ भ्रमरूपी तत्व चुपे–चोरी उनका स्वाभाव के अंग बन गइल। कवनो काम में मन ना रमत रहे। उनका भितरी से मन बुतात बुझाइल। वात्सल्य के भूत उनका वजूद के धिक्करलसि, "राम...! राम...! तूं अइसन खराब हो गइल। साफे गड़हा में कूटि गइलऽ। कीचड़ में डुबकी लगा लेलऽ। डॉक्टर होके एगो नर्स से अझुरा गइलऽ। अइसन उमेद हमरा तोहरा से कबो ना रहे। तोहरा खातिर जवन ना करे के तवन कइनी। गहना–गुरिया, खेत–बयार सभ ओरिया देनी। पइंचा–करजा लेनी। तोहरा के डाक्टर बनाये खातिर एगो उधामति से बाजि ना अइनी। अपना कईअक जरूरिआतन के करेजा में दफन कऽ लेनी। हर डेग प जिनिगी से समझौता कइनी। नामी मेडिकल कॉलेज में तोहार नाम लिखवावे खातिर एक–एक पाई जोड़नी। जा तोहरा धिक्कार बा. ...। एक चिरूआ पानी में डुबि मरऽ.... ।"

बहरहाल कुछ दिन बीतल। वात्सल्य के वासना तड़िया देलस। बीतत समय के साथे रधिया के प्यार गहरात गइल। अपना घरे रधिया के ले आवे में सुधांशु के दिक्कत बुझात रहे। बाकिर ओकरा घरे निधड़क पहुँचि जात रहन। सुतली रात में घरे आवसु। सुधांशु के बदलल आचार–विचार उनका माई से छिपल ना रहल। गंवे–गंवे उनका शक–सुबहां होखे लागल। तब दिनों दिन सुधांशु के बात–व्यवहार तल्ख होखे लागल। माई के मन में एक दिन आइल कि सुधांशु से पूछीं कि तोहरा कवनो दिक्कत–परेशानी बा तऽ बतावऽ, हम ओकरा के दूर करबि। बाकिर उनकर हिम्मत पस्त हो गइल। तले भगवान सुजनी जुटा देले। एक दिन अस्पताल से लवटले सुधांशु बेडिंग बान्हत रहन। तब अपना के ना रोक पवली उनका माई, "बेटा, कहीं जाए के तइआरी करऽ तारऽ। ना... । ए घरी तोहार काम कुछ बढ़ि गइल बा। हमरा से ठीक से बोलत–बतिआवत

नइख। कवनो परेशाली होखे तऽ हमरा के बतावऽ। हम अपना अवकात भर उठा ना राखबि। जतना हमरा से सपरी ओतना मदद करबि।"

सुधांशु, माई के ओरे एक नजर तकलें, "हँ माई! हमार काम बहुते बढ़ि गइल बा। एगो कान्फ्रेंस के सिलसिला में विदेश जा रहल बानीं। लवटे में कुछ महीना लागि जाई। हम तोहरा के अकेले ना छोड़बि। तोहरा खातिर एगो जगह देखले बानीं। ओइजा तहार सेवा–सत्कार करे वाला ढ़ेर लोग बा। हम तोहरा के अकेले एह घर में छोड़ के ना जाइबि। हम तोहरो समान पैक क लेले बानीं। काल्हु होत पराते हमनिन के एइजा से निकल जाए के बा....।"

बेटा के बतकही सुनि माई के मुँह बवा गइल। कठेया मारि देलस। उनका बुझाइल कि करेजा मुँह में आ जाई। ओह राति ऊ मुँह में अन्न के एको दाना ना ठेकवली। बिछवना प करवट मारत रहि गइली बाकिर आंखिन से नीन कोसहन फरका परा गइल रहे। आशंका से मन उबिया गइल रहे। सोचे लगली– "आखिर ऊ कवन जगहा बा जहंवा सुधांशु हमरा के छोड़ि के पराइल चाहऽ तारें। एह शहर में त कवनो हमार हीत–नाता नइखन। सवांग के संवारल घर उनका के काटे खातिर दउरत बुझाइल।"

सुकवा उगल। मुर्गा बांग देलसि। दुआरी प आइल गाड़ी के हार्न सुनते सुलोचना के नीन टूटि गइल। देखली सुधांशु सिरहाना खाड़ बाड़ें। कहले, "माई, चलु देरी हो रहल बा। आठ बजे हमार गाड़ी बिया। गाड़ी छूटी त हमार जहाज छूटि जाई।"

एक नजरी बेटा के निहारत टूटल मन के साथे गोड़े हवाई चप्पल पहिनलीं आ बेटा के पीछा लाग गइली। गाड़ी खुल गइल।

एगो बड़का घर के गेट प गाड़ी रूकल। सुलोचना भीतर समइली। बेटा के डाक्टरी पढ़ावे में बार उज्जर भइल रहे। एह से उनका तजबीजे में एको सेकण्ड ना लागल। ऊ बुझि गइली– "ई तऽ वृद्धाश्रम हऽ।" उनका करेजा प साँप लोटि गइल। कठेया मार देलस। गोड़ के नीचे के धरती कांपि गइल। मने–मन बुदबुदइली, "सेमर के रूआ वाला हाल हो गइल। साफा उड़िया गइल। जेकरा के सरधा से सेवनी। ऊ आजु हमरा के एह हालात में पहुँचा देलस। एह से निम्मन त ई रहित कि धरती फाटि जाइत आ हमरा लेखा अबला–अभागिन ओह में बिला जाइति...।"

एगो कातर नजरी से बेटा के ओरे सुलोचना तकली। बाकिर मन के बात मने में रहि गइल। मुँह ना खुलल। सुधांशु के हिम्मत पस्त हो गइल। सुलोचना से नजर मिलावे में कतरइलें। कुछ कागजातन के खानापूर्ति भइल। सुधांशु दस्तखत कइलें। माई के गोड़ छुवलें आ वृद्धाश्रम से नव–दू–एगारह भइलें। सुलोचना उनका के तब तक तिकवत रहि गइली जबले ऊ उनका आंखिन से अलोत ना हो गइलें। शायद ई माई–बेटा के आखिरी मुलाकात रहे...। कुछ दिनन के बाद सुलोचना के इहो पता चल गइल कि बेटा आपन बिआह क लेलें।

समय ढेर बातन के भुलवा देला। शुरूआत में कुछ दिक्कत जरूर बुझाइल सुलोचना के। बाकिर गंवे–गंवे वृद्धाश्रम के लोगन से ऊ जुड़त गइली। बीतत समय के साथे उनकर मन सथा गइल।

भगवान के बांह बहुते बड़ हऽ। सब केहु के नचावत रहेला आ अपने दिखाई ना दे, आ ना नजर आवे। वृद्धाश्रम के नीअरे रामबदन जी के घर रहे। बड़का मकान। बेटा परदेशी। बेटन के बाप से कवनो मतलब ना। उनको साथे घर के अलावा कुछुओ ना रहे। तनिका समान आ मुअल घरनी के इयाद। समय कटले ना कटत रहे। मनफेरवन खातिर वृद्धाश्रम में ऊ आवत–जात रहन। सुलोचना पऽ उनकर दीठ गड़ि गइल। पत्थर पऽ दूबि जमाइये के मनलें। सुलोचना से आँखि मिला लेलें। दूनों के अकेला मन। मन से मन के तरंग मिलल। आंखिन के भाषा भावना के धरातल प' अंगड़ाई लेलस आ चाहत के जुआन मिल गइल। भावना के बेयार में दूनों जना उड़ियाये लगलें। कुछ एने आइल कुछ ओने गइल। एक दिन हिम्मत बान्हि के ऊ सुलोचना से निवेदन कइलें, "हमार बड़का मकान बगल में बा। अगर रउआ कवनो एतराज ना होखे त हमरे इहां चलि के रहीं। समय आसानी से कटि जाई। दरद बंटाई त कुछ हलुक होई। हमार हाल रउओ से खस्ता बा। फरक अतने बा कि रउआ एगो बेटा बाड़ें आ हमरा तीन गो। बाकिर तीन कनउजिया तेरह चुल्हा वाला हाल बा। रउओ से ढ़ेर हम दुखित बानीं...।"

रामबदन जी के बतकही बिजली के करंट लेखा सुलोचना के देहिं में समा गइल। जवन लउके ना बाकिर अपना साथे ढ़ेर आगि आ ऊर्जा समेटले प्रवाहित होत रहेला। सुलोचना मुसकइली। ढ़ेर दिनन के बाद उनका चेहरा प ओह दिन खुशी के बेयार आइल रहे। जइसे ठूंठ गांछ फगुनहटा लगते मोजरा जाला। रामबदन जी के गइला के बाद सुलोचना रात में सोचे लगली, "जरूरिआत बहुते बाउर चीज हऽ। एकदम निर्लज्ज। बिना नेवतल, नेवतरही लेखा। बिना बोलवले धमकि आवेला। देखऽ फेरू चलि आइल। बहुते बेहाया, बहेंगवा...। उनका मन में एगो इहो बात आइल कि अब लजइला में कुछुओ नइखे। परिवार के मुराद में आपन जमीन छूटल। आपन लोग छुटल। बेटा छुटलें आ हासिल कुछुओ ना भइल।

ततलबजे मर्यादा के एगो बरिआर दीवार उनका सोझा खाड़ हो गइल– "का कही लोग–बाग? का कही जमाना? बेटा सुधांशु सुनिहें त का कहिहें? बाप के

मुअला प माई ऐय्याशी में डूबि गइल.... ।"

सुलोचना के एह दीवार के नियरा पहुँचला के बाद बुझाइल–प्रेम एहिजे आके एगो मिथ बनि जाता.... । मूल्य बनि जाता.... उदात्त बनि जाता। एकरा सोझा उमिर, जाति, धर्म, प्रदेश, हैसियत सभ बेमानी हो जाता। देखे में ऊपर से लागऽता कि कुछुओ नइखे आ भीतरे–भीतरे बहऽता। जइसे बिजली के करंट तार के भीतर चलत रहेला।

कतनो कोशिश कइली सुलोचना बाकिर ओह राति उनका नीन ना आइल। बेटा सुधांशु खातिर जतना चिन्ता–फिकिर के मोटरी–गेठरी अपना कपार पऽ अबले ओढ़ले रही ओह सभ के ओईंछि–पोईंछि के दरिआव में प्रवाह कऽ देली। आ शापित अतीत आ मन में हहरल संकोच से मुक्त होखे खातिर पछुआ खोंसि लेली। बिहान भइला सांझि के समय वृद्धाश्रम में अइलें रामबदन जी। अपना मन के बात बतवली सुलोचना। दूनों आदमी एक–दोसरा के बतकही से सन्तुष्ट भइलें। मिनटों में आगा के प्लान बन गइल। दृढ़ संकल्प से दुविधा के बेड़ी तोर देहली सुलोचना। होत पराते वृद्धाश्रम के मैनेजर लगे मुखातिब भइली, "गुड मौर्निंग मैनेजर साहेब।"

"गुड मौर्निंग मैडम, कहीं, का आदेश बा.....?"

"अब हमरा एइजा नइखे रहे के....?"

"आहि दादा, ई का कहनी? राउर बेटा रोपेया भेजऽ तारें। उनका के हम का जबाब देबि? रउआ एइजा कवनो तकलीफ होत होखे त बताईं। हम ओकरा के दूर करबि.... ।"

"हमरा एइजा कवनो तकलीफ नहखे मैनेजर साहेब। सबसे बड़ बात ई बा कि हमार मन एइजा नइखे रमत। हमहूं अपना हिसाब से जीअल चाहऽतानी.... ।"

"आहि मैडम, ई कइसे होई? बिना रउआ बेटा के अनुमति पवले हम रउआ के कइसे एइजा से जाये दीं... ।"

"मैनेजर साहेब, कान खोलि के सुन लीं। बाप–मतारी, बेटा के मालिक होला बाकिर बेटा कबो बाप–मतारी के मालिक ना होखे। अगर बेटा बरिआरी मालिक होइयो जाता तऽ सभका अपना जीवन के जीए के स्वतंत्र अधिकार बा। शासन–प्रशासन उनका डांड़ में रस्सा लगवा दी। ई संविधान में लिखल बा, आ हम रउआ के एह बात से भरपूर आश्वस्त करऽतानी कि हमार बेटा सुधांशु कबो हमरा के खोजे–ढूंढे ना अइहें। रउआ अहथिर रहीं।" –ई कहत आपन स्वेच्छा–पत्र मैनेजर के हाथे थमवली सुलोचना। कलम से कान ककुलावत कांपत हाथे स्वेच्छा–पत्र थमलें मैनेजर। तबले एगो टेल्हा के साथे लेले पहुँचि आइल रहन रामबदन जी। टेल्हा उनकर समान उठवलसि आ रामबदन जी के हाथ धइले मुस्कात वृद्धाश्रम के सीढ़ी से नीचे उतरि गइली सुलोचना।

■ egkohj LFkku ds fudV] djeu
Vksyk] vkjk] 802301 ¼fcgkj½

गजल

शंकर शरण

घीउ जइसन इ देहिंयाँ खरे लागेले।
घाम अइसन कि छँहियों जरे लागेले।

आदमी के मती जब मरा जाले तऽ
जाके धूरी में जेंवर बरे लागेले।

लूर जीये के सीखे बदे गाँव में
डेग दउरा में जिनिगी धरे लागेले।

मन के दीयर में जसहीं उगे हरियरी
सुधि के मारल हरिनिया चरे लागेले।

चित के चउकठ चढ़े जे केहू मेह अस
आँख के ई तलइया भरे लागेले।

डाढ़ि पर चिरई चहकत मिले जे कतों
अपनो बुलबुल बहुत मन परे लागेले।

कहि द ऽ उनसे कि ऊ अपना हद में रहस
ताल छोड़ते मछरिया मरे लागेले।

बात रोवेले, बेरा प' कहला बिना
अपना–आपे से बतरस करे लागेले।

■ vk'khokn Hkou] u;k pkd] cfy;k&277001

डरपोक

प्रो0 विजयानंद तिवारी

लोग इहे बतवले रहे कि रामनाराएन बाबू बी. डी.ओ. भऽ गइल बाड़े। इहो कि बगले का जिला में पोस्टेड बाड़े। एक बेर गाँवहूँ प आइल रहले। दू–दू गो सरकारी गाड़ी रहली स।

मुटुर भइया उनकर बचपने के संघतिया। बी.ए. पास कइला का बाद एने–ओने भटकले। फेरू यू.पी. का कवनो कालेज से बी.एड. कइले। जोगाड़ भिड़ा के धनपुरा मिडिल स्कूल में मास्टर बाड़े। साले भरि में हीरा मोटर साइकिल कीन लिहले। रोज मोटर साइकिले से स्कूल आवेले–जाले। रोज का! हफ्ता में तीन–चार दिन। गाँव पर खेतियो–बारी देखेले। बाबू जी का नांव प खाद के दोकानों बा। माई वार्ड मेंबर बिया। दुआरि प नाँव के बड़हन प्लेट लागल बा। मुटुर चौधरी, सहायक शिक्षक। गाँव में ईजति बा। धाक बा। एह से कई गो ऐब छिपल ढँकल बा।

एक दिन साहस बान्हि के रेशमी उनके से पुछलसि–

– रामन बाबू के का हाल बा, भइया?

– अरे, राम नाराएन? उनकर त चानी बा रे, रेशमी! आपन हाल कहु।

– ठीके बा भइया। इहे बुचिया का बेमारी से अलचार बानी। कतने दवाई–बीरो करवनी बाकिर....। अच्छा तहरा स्कूल से रामन बाबू के ब्लाक कतना दूर होई?

– ईहे छव–सात किलोमीटर। का, कवनो सनेसा बा त कहु। भा हमरो से मदत मांगे के होखे त निधड़क कहिहे।

– ना, ठीक बा भइया। एही तरे पूछत रहली हाँ। एहिजा से कवनो बस भा टैक्सी रामपुर तक जाले का, भइया?

– ई का भइया, भइया लगवले बाड़ीस। दू गो बस जाली स रामपुर से होत सासाराम तक। बाकिर ई सब काहें? रामनाराएन अब बड़का हाकिम हो गइल बाड़े। अब ऊ नइखन जे तोरा के मुफतिया टिउसन पढ़ावत रहले!

मुटुर का बात में छिपल व्यंग आ गांव–जवार के लइकिन पर डोरा डाले वाला उनकर इतिहास इयाद क के रेशमी चुपचाप लवटि गइलि।

का सांचहूँ मुफतिया? हँ, मुफतिए।

रामनाराएन शुरूए से पढ़े में तेज विद्यार्थी रहले। मैट्रिक फस्ट डिवीजन। आई.एससी फस्ट डिविजन। बी.एससी. में पटना के कवनो कालेज में नांव लिखावे के कोशिश कइले। परसेंट आ नम्बर देखि के त बुझात रहे कि परीक्षक लोग औढरदानी होई भा परीक्षार्थी रामानुजम चाहे वशिष्ठ नाराएन। लवटि के विक्रमगंज में नाँव लिखवले। डेरा लेके डेढ़ महीना तक रोज टाइम से कालेज जासु। लइका–लइकी त टापा–टुंइया। प्रोफेसरो लोग कभिए–कबार दरसन देसु। एगो हितलगाह किरानी बाबू गँवे से सलाह दिहले– कोचिंग–वोचिंग के जोगाड़ करऽ, भा गाँवे जा के तइयारी करऽ। क्लास का फेरा में का पड़ल बाड़ऽ? फारम भरे का बेर अइहऽ।

पहिले त बड़ा अचरज लागल, जबूनो बुझाइल। बाकिर फालतू के डेरा के खरच आ बनावे–खाए के झंझट से नीक बुझाइल गाँव ही पऽ रहि के तइयारी कइल।

गाँवे अइले त अनमना खातिर दू–चार गो लइका–लइकी के टिउसन पढ़ावे शुरू कइले। तेज रहबे कइले, देखा–देखी दर्जन भर विद्यार्थी जुमे लगले। एक महीना मुफ्त पढ़वला का बाद फीस बान्हि देसु।

रेशमी के कई गो सहेलियो पढ़े जाँ सऽ। रेशमी के घर के हाल ठीक ना रहे। दू साल से बाबू का दहिना गोड़–हाथ में लकवा के शिकाइत रहे। छोट भाई पांचवाँ क्लास में मिडिल स्कूल में पढ़े जाइ। प्राइमरी–सह–मिडिल स्कूल। छोट–मुट परचून के दोकान रहे जहँवा घर के काम– धन्धा निपटा के माई बइठे। बगल का कोठरी में बाबू खटिया पर पड़ल खांसत रहसु। कबो–कबो रेशमियों दोकान पर बइठि जाई। ओह घरी गाँव के लफुअन के बेमतलबो के भीड़ लागे। सहेली सभ टिउसन खातिर जाए के बेर ई जरूर कहऽ स कि तूहूँ तीन–चार महीना पढ़ि ले रेशमी! सर जी बहुते आछा पढ़ावत बाड़े। कबो–कबो ई बात माइयो का कान में पड़े। एक दिन साहस बान्हि के रामनाराएन का दुआर प चहुँपली। रामनाराएन पढ़ावत रहले। देखि के अचकइले।

– का सहुआइन चाची? का बात ह?

– ए बबुआ, रेशमी के पास ना करइबऽ? ओकरा बाबू के हाल देखते बाड़ऽ। आ दोकान–दउरी में त बस लागा लागल बा।

– अरे! का बात बा, चाची। तू ओकरा के भेंजऽ। ई सबन का सँगे ऊहो पास करी।

रेशमी पढ़े आवे लागलि। स्कूले ड्रेस में आवे, कबो बाकी लइकिन से अलहदा। बड़–बड़ आंखि, नाक–नक्श, लंबाई–गोराई। पढ़ाई–लिखाई में जरूर कमजोर रहे। देरी से आइल रहे, एह से रामनाराएन देरी तक पढ़ावसु। शुरू में साथ में एक–दू अउर लइकिन के रोकि लेसु, ई कहि के कि इहनी का मैथ आ साइंस में पिछड़ल बाड़ी स। दुआर प उनकर अलग रूम रहे। घर में माई, चाची आ एगो छोट चचेरी बहिन। बाबूजी इलेक्ट्रिक इंजीनियर। पटना पुनाईचक में दुमंजिला मकान बनवा देले रहले। अपने त कबो

हेइजा बदली कबो होइजा का चलते पटना में बरमहल रहसु ना। एहसे निचला तल्ला किराया पऽ देके ऊपर वाला अपना जिम्मा रखले रहले। माई गाँवे पऽ रहेले। बाबूजी कबो संगे ना रखले। पता ना काहें? माइयो का गाँवें प अच्छा लागेला।

दुआर पऽ अपना बड़हन रूप में रामनाराएन बी. एससी. फाइनल के तइयारियो करसु आ सांझ सबेर ट्यिुशनो क लेसु। पहिले फक्कड़ नियन रहसु बाकिर जबले रेशमी आवे लागलि, कपड़ा–लत्ता साबुन–क्रीम प धेयान देबे लगले। रेशमियो कबो कबो टाइम का पहिलहीं जुमि जाइ। रूम आ चउकी–कुर्सी के झारि–पोंछि देइ। कबो कबो अगर बत्तियो जरा देइ। रामनाराएन कहसु–तनी देवता लोग के फोटवो के देखा द। फोटो के देखवला का बाद कबो रामोनराएन के अगरबत्ती देखा के खूब खिलखिलाइ के हँसे रेशमी। अगरबत्ती का धुंआ लगला से बड़–बड़ आंखि लोरा जाँस। रामनाराएन का मन में आवे कि तरहथी से लोर पोंछि दिहीं। बाकिर पढ़ेवाला लइका–लइकिन के भा माई के आवे के अंदेशा से अपना के रोकि लेसु। तबो मुंहा–मुंही विद्यार्थिन में ई चरचा होखे लागल कि सर जी रेशमी के जादा मानऽताड़े। बुझला फीसो नइखन लेत।

अइसहीं एक दिन रूम झारि पोंछि के रेशमी चउकी प बइठि के किताब उघरलसि– 'सर जी, एगो बात बा। ई चेस्ट आ ब्रेस्ट में का अन्तर बा'? सन्न दे लागल रामनराएन का। फेरू सम्हरले अपना के।

– फारम् भरा गइल तोहार? फारम ले ले अइहऽ। ओही घरी एह शब्दन के अरथ आ अन्तर बता देबि। आजु दुपहरिया में।

फेरू लइका लइकी आ गइले सऽ। ओह दिन सरजी का पढ़ावे में मन ना लागल।

दुपहरिया में कापी आ फारम ले के निकललि रेशमी त माई पुछलसि–

– एह बेरा कहाँ, बुचिया?

– फारम भरे के बा, माई। रामन सर जी बोलवले बाड़े।

जहिया से रामनराएन रेशमी के रेशमा कहि के बोलावे शुरू कइले, ऊहो रामनराएन के रामन सर सहेलियन का बीच में कहे लागलि। अब सभका खातिर रामन सर! उन्हको आछा लागल। बाकिर आजु के सवाल– चेस्ट आ ब्रेस्ट में अंतर– दिमाग में झन्न–झन्न करता। काहें ई सवाल पुछलसि? दूनो के हिंदी में अरथ त छातिए होला!

दुपहरिया में कापी में फारम लपेटले रेशमा हाजिर। फारम पऽ फोटो तऽ साटले रहे। नांव गाँव कुल्हि लिखाइले रहे। फारम के चउकी पऽ धऽ दिहले।

– पुछले रहलू हा नूं.... चेस्ट आ ब्रेस्ट के माने? हम आपन चेस्ट देखावतानी। ऊ आपन टी शर्ट खोलि दिहले। – देखऽ ई हऽ चेस्ट, माने छाती। अब तू ब्रेस्ट देखावऽ! रेशमा चुप, एने–ओने ताकत। सर जी केंवारी के सिटकिनी लगा दिहले। तनी सकुचाइल रेशमा। फेरू रामनराएन समीज उठा दिहले। रेशमा के आँख मुदाइल। अद्भुत। अनुमान से जादा उठान। अजन्ता–एलोरा के मूर्तियन के फोटो किताबे में देखले रहले। एहिजा छछात हाड़–मांस के। बाकिर हाड़ कहाँ? मांस, रकत आ फेरू एही से दूध। सलवार के डांड़ा अतना कसल काहें? –"हाथ बढ़ल। हाथ रूकि गइल। बाकिर सलवार सरकि के गिर गइल रहे। कैमरा रहित तऽ एह 'वीनस' के फोटो उतार लिहंती। अरे बुरबक, सोझा खाड़ मूरत काँपि रहल बिया, एने तू उधेड़बुन में! फेरू....।"

कब दो ले माई के दूरे से आवाज आवत रहे– खइबऽ ना बबुआ? घबड़ाइल–सँकाइल जवाब– "हँ माई, आवते बानीं।"

केवाड़ी के एगो पल्ला खोलि के देखले। माई जात रहे। बहरी अइले। गँवे से रेशमा निकसलि। बाकिर माई कनखी से देखि लेले रही।

दू दिन का बाद बाबूजी के सनेसा आइल। – इम्तहान देके पटना आ जा। ओहिजे से आगा के तइयारी करिहऽ। रामनराएन का बुझा गइल कि बात के बतंगड़ हो रहल बा। इम्तिहानो नगीचे बा। टिउसन बन्द। बैग में कापी–किताब–कपड़ा डालि के तइयार। सांझि खा सहुआइन चाची का दोकान पऽ जाके चार सइ रूपया उनका हाथ में देके कहले– फारम भरवा दीहऽ चाची। अउर कवनो जरूरत होई त फोन करवा दीहऽ। तबले रेशमा परगट भइलि।

– काल्हुए जा तानी का सर जी? फेरू खिलन्दड़ी टोन में चेस्ट–बेस्ट, चेस्ट–वेस्ट रटत घर में भागि गइलि। चाची हँसली– एकर लइकपन ना गइल। बियाह में जरूर अइहऽ, बबुआ जी।

रिजल्ट ओतना बढ़िया ना रहे कि रामनराएन पटना में पी0जी0 में एडमिशन लेसु। बाकिर हौसला ना हरले। कम्पटीशन दिहले आ पहिलही बेर में चुना गइले। बाबूजी माई के खुशी के ठेकाना ना रहे। बाबूजी त कई गो लइकिन के फोटो–बायडाटा ले के पटना में खूंटा गाड़ि दिहले। – हई देखऽ, हमरे विभाग के एज्क्युटिभ इंजीनियर के लइकी ह। पटनो में मकान बा कंकड़बाग में। लइकी हिस्ट्री में आनर्स कइले बिया। ई रिश्ता ना होई त हमरा खातिर बड़ा गड़बड़ होई। रामनराएन लगातार चुप। चाहत रहले कि एगो दिन खातिर गाँव पर जइतीं। ओने बाबूजी माइयो के पटना बोला लिहले। माई एक दिन बे बात का बात

में गाँव के हाल चाल छेड़ि दिहली–आरे ऊ हरिकिसुन बो सहुआइन रहली नूं.... उनकर बेटी के बियाह परे साल बगले के एकौनी गाँव में हो गइल। तहरा के बड़ा इयाद करत खोजत रहली। तीर नियन लागल माई के बात। ऊ ब्यंग रहे कि उलाहना कि हमरा हार के घोषणा। माई का दिमाग में ईहे नू होई– ऊ कवन जाति हम कवन जाति? केहू बताइत कि प्रेम के जाति का होला? ई अइसन नश्तर बा कि नू खून बहे देता नू दर्द थमे देता।

पटने में धूमधाम से बियाह भइल। जे जइसन कहे, रामनराएन मशीन लेखा करत जासु। गाँवहूँ से पनरह–सोरह आदमी शादी में बोलावल रहले। खातिर बात देखि के दंग रहे लोग। मुटुर चौधरी मोका पाके रामनाराएन के कान में फुसफुसइले– तहार दुलहिन रेशमी लेखा तऽ नइखे बाकिर कवनो बात ना। बेस्ट ऑफ लक बी0डी0ओ0 साहेब! फेरू एगो नश्तर!

रामपुर में बी0डी0ओ0 साहेब के क्वाटर मेम साहेब का मन मोताबिक त ना रहे बाकिर अपना देखरेख में ढंग से सजवली–सजववली। बढ़िया नेम प्लेट। सोनहुला अच्छर में आर0 एन0 राय– प्रखंड विकास पदाधिकारी।

आजु डी0एम0 साहेब किहें मिटिंग बा। राय साहेब ड्राइंग रूम में सात बजे सुबहे से बड़ा बाबू आ सहायक लिपिक के संगे कागज पत्तर में अझुराइल बाड़े। नव बजे दूनो जना के छुट्टी कइले। हलुका नाश्ता का बाद चाह पीयत रहले। तबले गेट के संतरी आके सलूट कइलस– साहेब, एगो औरत छोट बच्ची का संगे कसौली गाँव से आइल है। मिलल चाहत है। नांव रेशमा। बीडीओ साहेब आधा कप चाह टेबुल प ध दिहले। मेम साहेब का ओर तकले, फेरू संतरी के आडर दिहले– भेंज दो जल्दी।

साहेब कुर्सी छाड़ि के बरामदा में आ गइले। गँवे गँवे रेशमा छोट लइकी के हाथ धइले बरामदा का सीढ़ी तक आ के थथमलि। साधारन साड़ी पर पुरान शाल ओढ़ले। साहेब ऊपर आवे के इशारा कइले। आके गोड़ छुवलसि। राम नराएन चहले कि दूनो बांहि धके खाड़ा क दीहीं। बाकिर थथमि गइले। बरामदा में धइल चउकी पर बइठे के इशारा कइले। तबले मेम साहेब आ गइली। चारू ओर आंखि घुमा के देखली, जइसे सोचत होखसु कि एह भिखमंगी के कहाँ से बोला के बइठवले बाड़े। मिटिंग के समय एकदम निगिचा। रामनराएन मेम साहेब से बतवले–

– ई गाँव के सहुआइन चाची के लइकी.... पढ़े में बहुत तेज, बाकिर माई–बाबू आगा ना पढ़ा सकले। बियाहो क दिहले। हमार टाइम त हो गइल बा। तू एह दूनो के बढ़िया से खिया पिया दीहऽ। हम लवटबि त अउरी बात होई। ठीक!

साहेब फाइल समेटि के बरामदा से उतरले। पीउन आ के फाइल थाम्हि लिहलस। गाड़ी फाटके पर लागलि रहे। बइठत खा बरामदा ओर आँखि गड़ा के देखले। गाड़ी स्टाट भइल त साहेब के दिमाग चक्कर धिन्नी अस घूमत रहे। आजुए मीटिंग के टाइम राखे के रहे! खैर मिटिंग चार बजे तक चललि। बीडीओ साहेब का ऊल्ह मेल लेसले रहे। मेम साहेब के सोभाव जानत रहले। साहेब के कहला का मोताबिक ड्राइबर तेजी से गाड़ी चला के क्वाटर तक चहुँपवलस। साहेब धड़धड़ात बरामदा में चढ़ले। केहू कते ना। ड्राइंग रूम में घुसले। मेम साहेब गंभीर मुद्रा में बइठल।

– चलि गइली सऽ का?

– हँ।

– काहें?

– ई अस्पताल भा धरमशाला त हऽ ना। ओकरा लइकी का भरि कपारे घाव। ऊ छुछुनरी बिना ब्रेसियर के थल–थल देखावत। बुला मरदो छोड़ि देले बा। साहेब सूबा किहें जाए के इहे रंग–ढंग हऽ? गाँव में जवन रहे तवन रहे। ई अफसर लोग के क्वाटर हवे स। एँतरे दवाई खातिर हम सइगो रूपया दे देनी हा। पूछति रहलि हा– सर जी कब ले लवटबि? हम कहि देनी हाँ– कवनो ठीक नइखे।

– हूँ....। बीडीओ साहेब बाथरूम में गइले। ओहिजे उनका नया तरकीब सूझल। बहरी आके झूठमुठिया मोबाइल फोन लगवले.... हाँ.... हाँ.... मैं बीडीओ बोल रहा हूँ.... बाजितपुर में.... सड़क जाम.... थाना का फोर्स है.... हाँ.... हाँ.... मैं आ रहा हूँ।

मेम साहेब से कहले– हम तुरंते जात बानी। टेबुल पर धइल चाह का ओर तकबो ना कइले। डराइबर चपरासी हड़बड़ा के गाड़ी प बइठले स। चपरासी पुछलस– हुजूर फोर्स के ले लिआउ नू?

– नहीं चलो।

जीप दू किलोमीटर चलि के पहिला बस के ओवरटेक क के रोकववलस। बी0डी0ओ0 साहेब बस में धड़धड़ात चढ़ले। आगा से पाछा तक सभ सीट प देखि अइले। उतरि के अपना डराइवर से कहले– चलो अगिला बस तक। सात–आठ किलोमीटर का बाद दोसर बस के रोकवावल गइल। भीड़ रहे। बीचे में लोग खाड़ रहे। कंडक्टर से कहि के सभ के नीचे उतरववले। फेरू आगा–पाछा सभ सीट देखि अइले। कहीं ऊ मेहरारू ना।

अब्ब?

– और आगे चलें साहेब? डराइवर पुछलस। बोली में कुछ कुछ झुंझलाहट, कुछ कुछ साहेब के सनकीपन के ओरहन रहे।

– नहीं। चलो वापस।

दिमाग में आन्ही चलत रहे। काहे खातिर आइल रहलि हा! ठीक से बातो ना भइल। ओकर हालो ना जनलीं। ई इंजीनियर के बेटी, अपना गुमान में ओकरा के ठीक से आदरो ना देले होई। अब कहाँ गइल होई? अतना दिन से हमहीं कवन खोज खबर लेले रहनी हा?

सोचले कि पहिला हाली एक बोतल दारू पी जाईं! फेरू घर के संस्कार आ डराइवर–चपरासी का सोझा आपन इमेज बचावे के चिन्ता। बाकिर अंत में डराइवर से गँवे से पूछिए लिहले– "इधर कहीं भांग की दुकान है? डराइवर अचकचाइल– साहेब, मोड़ पर एक मिठाई की दुकान है। भांग की बरफी रखता है, साहेब।"

– "ठीक है, चलकर पांच ठो बरफी ले लो।" पाँचो बरफी चबा गइले। बुझला माई आ मेहरारू के गुमान चबात होखसु। डराइवर बोतल में पानी रखले रहे। क्वाटर तक चहुँपत चहुँपत राति के नौ बजत रहे। भाँग के असर हो गइल रहे। चपरासी के बाँहि धइके बरामदा पर चढ़ले। मेम साहेब इन्तजार में खाड़ रहली। सोफा पर धम्म से बइठि के पसर गइले।

– "आजु.... आजु खाए के... मन नइखे ?"

मेम साहेब बाँहि ध के उठवली। ड्राइंग रूम में सोफा पर बइठा दिहली। आँखि के पूरा पटर उघारि के बोलले– "तुम.... तुम बेवकूफ हो! .....तुम घमंडी हो.... तुम मेरा.... मेरा पहला प्यार.... नहीं हो। हा.... हा.... हा मैं कायर हूँ..... डर.... डरपोक!" फेरू सोफा प लोंधड़िया गइले।

■ LVs'ku jkM] dkbjijok] cDlj ¼fcgkj½

ग़ज़ल

✍ शशि प्रेमदेव

[1]

ना कवनो जंगल, ना कवनो वन में कबो भुलइलीं हम!
बेरि–बेरि अँखियन में उनुका काहें राह हेरइलीं हम?

पाके पहिला परस किरिन के जसहीं तनी फुलइलीं हम
निठुर हवा के झोंका आइल तितिर–बितिर हो गइलीं हम!

संघतियन के एह् सवाल कऽ का जबाब हम दीं आखिर–
'उनके सोझा देखि के ओह् दिन कइसे ना पगलइलीं हम?'

गोड़ रहे धरती पर बाकिर ओठ चान का अधरन पर...
छन्–दू–छन् में कतना लमहर आज सफर तय कइलीं हम!

घूमि–घूमि के अरथ प्रेम कऽ समझावत रहलीं बाकिर–
जब कबीर से भेंट भइल तऽ साँचो बड़ा लजइलीं हम!

सउँसे रेगिस्तान में जइसे एगो बादल कऽ टुकड़ा...
दुनिया के आबाद करे में ठोपे–ठोप बिलइलीं हम!

काँट–नियर टभकी छाती में ता–जिनगी ई बात 'शशी'
के हमरा ला फाँड़ पसारल... केकरा बखरा अइलीं हम!

[2]

टिकुली ऊ एगो आज ले तहरा लिलार के!
रखले बा कइसे, देखि लऽ, दर्पन, सम्हार के!

माली के चौकीदार बनवलो का बावजूद
पतउड़ चोरा के ले गइल् रौनक बहार के!
नाजे कवन सवाद बा ओकरा के मिल गइल्
बिहँसत बिया, तलाब के, चिरई जुठार के!

पीछे पड़ल बा चान के अइसे शरीफ लोग
ओरवा दिही बुझात बा खलिसा निहार के!

उनुका अनूप रूप कऽ हम का मिसाल दीं
दमकेले जइसे पूस में सरिसों–कछार के!

केकरा बदे सरेहि में एगो उदास फेंड़
कबसे अकेल खाड़ बा, आँचर पसार के!

तय बा कि छटपटाइ के मुइबे करी 'शशी'
भँवरा, समुझि के फूल, जो चूमी अँगार के!

■ iqoZk] vxkthZ] dqoj flag b.Vj dkyst] cfy;k

अनबोलता क प्रेम

विजय शंकर पाण्डेय

"आज मीरजापुर जेल में बहुत सफाई देखात हौ। तीन दिन से तइयारी चलत हौ।" गेट के सामने वाला पान के दुकानदार से एगो ग्राहक पुछलन। दुकानदार कुछ बोले एकरे पहिलहीं ऊ फिर बोलल... "चूना छिड़कल हौ! जवन इहाँ हरमेस भइँस बन्हल देखात रहल तवन नाहीं बा, पूरा सफाई हौ, का बात हौ? कोई मंत्री आवत हयेन का?"

– "नाहीं हो, आज एगो नया जेलर साहब आवत हयन। सुनीला कि ओनकर बहुत ना हौ। बहुत इमानदार अउर खुर्राट हएन। कोई कऽ पैरवी नाहीं सुनतन।"

– "अच्छा! का नाम हौ उनकर ?"

– "कवनो खुराना साहब हयेन।"

– "अच्छा! तबें सब ठीक–ठाक होत हौ।"

ठीक दस बजे खुराना साहब हाथ में अटैची लेहले जेल गेट पर आ धमकलन। पहिले से पहिचानत बंदीरक्षक सलूट करके गेट क ताला खोले लगल। जेलर साहब कहलन कि "पहिले रजिस्टर दो!" रजिस्टर पर आपन नाम, समय अउर दस्तखत करके तब अन्दर घुसलन।

तब तक के0पी0 थपलियाल स्थानान्तरित जेलर अपने रूम से बाहर निकल अइलन। खुराना साहब से हाथ मिलौलन। अपने साथ ओनके अपने रूम में ले गइलन, अपने कुरसी पर बइठावे लगलन, लेकिन खुराना साहब कहलन, "अभी यह कुर्सी आपकी है चार्ज हो जाने के बाद ही मैं इस कुर्सी पर बैठूँगा।"

थपलियाल साहब पहिले से चार्जलिस्ट, चार्ज मेमो, चार्ज सरटीफिकेट भर–भरा के ठीक कइले रहलन। खुराना साहब के सत्यापित करे के रहल।

नवागत जेलर के कैदियन कऽ संख्या सत्यापित कइल बहुत जरूरी रहल। अउर सब शाखा के सत्यापन ओतना जरूरी एसे ना रहल कि शाखा कऽ सहायक ओकरे खातिर जिम्मेदार होलन। जेलर केवल काउण्टर साइन करेला। जइसे भोजन, रसद के स्टोर, टूल्स, प्लाण्ट स्टोर, आ रिकार्ड रूम आदि कऽ।

खुराना साहब के सामने कैदियन कऽ सूची रख दिहल गइल। हर कैदी के आगे सजा के बरिस, कऽ आजीवन या दस पाँच बरिस का, कानूनी धारा क रिकार्ड आ जुर्म क विवरण रहल। जेइसे चोरी में, डकैती में, छिनैती में, गिरहकटी में तीन सौ दो में, बलबा में, बेटिकट यात्र में, बिचारणीय कैदी या सजायाफ्ता। महिला कैदी डिटेल के साथ। ई डिटेल कम से कम बीस पेज कऽ रहल।

औपचारिकता कऽ चाय–पानी कइले के बाद सत्यापन बदे खुराना साहब उठलन। आजीवन सजायाफ्ता कैदी सरकिल एक से तीन तक जेलर साहब के स्वागत में खड़ा रहलन। कोई झुक के सलाम करै, कोई पैर छू के प्रणाम करै। ओनके ड्रेस पर ओनकर नम्बर, कबसे बन्द हौ, कवने धारा में बन्द हौ, ई अंकित रहल। केहू–केहू कैदी के ड्रेस पर सबसे ऊपर लाल रंग से 'डी' लिखल रहल।

आतंकवादी कैदियन कऽ अलग सूची रहल। ऊ सब नजरबन्द रहलन। हाथ–पैर में हथकड़ी लगल कुछ कैदियन कऽ बन्दी रक्षक रुपया पइसा लेके हटवा देहले रहलन ऊ सब फिर लग गयल। कैदियन से कहलन कि धीरज रखा अबहीं नया जेलर आइल हएन फिर कुछ दिन बाद ठीक हो जाई। पहिले के तरह रहिहऽ!

एक–एक बैरेक से कैदी तीसरे सरकिल में आवे लगलन, बैरेक क संख्या मिलान करके ओनके फेर अपने बैरेक में बन्द कराके ताला कऽ चाभी अपने पास जमा करावत गइलें। ओ लिस्ट पर ओ बैरेक के दीवान अउर बन्दी रक्षक कऽ हस्ताक्षरो करावत रहलन। एही तरह से बहुत बारीकी से कैदियन कऽ संख्या सत्यापित करत रहलन।

नम्बर आयल कोठरी में बन्द खूंखार सजायाफ्ता आजीवन या मृत्युदण्ड कैदियन कऽ। एही क्रम में देखत देखत गइलन कैदी नं0 555 कोठरी नं0 17 में रामू के धारा 302 आजीवन सजा।

"यह क्या है? तुम लोग पागल हो गये हो? या मुझे पागल समझते हो? यह रामू है? क्या थपलियाल साहब यह क्या मजाक है?"

खुराना साहब आप नाराज न हों, लिस्ट में रामू के आगे लिखा है "भैंसा" जानवर, सजा–आजीवन धारा–302 जरा लिस्ट देखें।

लिस्ट देखले के बाद खुराना साहब शान्त हो गइलन। "अइसन जीवन में पहिली बार देखत हईं।" "कोई भइंसा के आजीवन सजा भयल हौ अउर एह जेल में बन्द हौ!" खुराना साहब अचरज प्रगट कइलन।

थपलियाल साहब कहलन कि चलें आफिस में बइठ के चाय पियल जाय फिर आप के एकर कहानी बताइब। अभी कैदियन के भोजन के समय होत हौं।

दूनो लोग आफिस में आके बइठ गइलन। पहिले से इन्तजाम भइल मिठाई, नमकीन, काजू, बदाम, किसमिस, मेवा, फल, काफी, जेलर साहब के छः फुट लम्बा, चार फुट चौड़ा मेज पर सजा के रख गइल। साथ में सहायक जेलर, जेल कऽ डाक्टर भी बइठलन। कुछ बन्दी रक्षक सेवा में एक पाँव पर खड़ा

रहलन कि कइसो खुराना साहब कऽ निगाह ओनके ऊपर पड़ जाय तऽ आपन बैरेक बदलवा लेलन, जहाँ दस पइसा कऽ जुगाड़ हो जात, तऽ ओनहूँ कऽ बाल बच्चा ठीक–ठाक पढ़ लिख लेतन नाहीं तऽ जिन्दगी भर जेल कऽ रोटिये चोरावत बीती।

खुराना साहब के तरफ काजू कऽ प्लेट बढ़ावत थपलियाल साहब कहलन कि चुनार तहसील में एक गाँव जोगवाँबीर बा। उहाँ चार साल पहिले किशोर नाँव कऽ अदमी अपने दुवार पर सुतल मन्नेलाल कऽ गला काट के भागल। ई भइँसा जवन आप देखलीं, तवन तब चार महीना कऽ पड़वा रहल। किशोर के अपने आँख से मन्नेलाल कऽ गला काटत देखलेस। ओ समय ई बाँय–बाँय चिल्लाइल। चूँकि खूटा में बन्हल रहल एसे छटा–पटा के रह गयल कुछ कर नाहीं सकल। ओकर चिल्लाव देख के ओकर मतारियो चिल्लाये लगल। ई दूनों कऽ अवाज सुनके मन्नेलाल कऽ औरत दरवाजा खोल के बाहर निकललिन तऽ देखलिन कि मन्नेलाल कऽ सिर धड़ से अलग हौ अउर खून कऽ धार चलत हौ।

जाड़ा कऽ दिन रहल बरसातो भयल रहल। हड़बड़ी में किशोर कऽ शाल मन्नेशाल के दुआरे गिर गयल, एनके एक पैर कऽ प्लास्टिक कऽ जूतो कीचड़ में फँस के छूट गयल रहल। शोर सुनके गाँव कऽ लोग आ गइलन। किशोर पर नामजद रिपोर्ट दर्ज भयल। शंका कऽ लाभ देके किशोर बाद में छूट गइल।

मन्नेलाल के कोई औलाद नाहीं रहल। ओही पड़वा के रामू कहके बुलावैं। दू छेमी कऽ दूध भइँस से निकालें आ दू छेमी कऽ दूध रामू के पियाइ दें। रोज रामू के नहवावें, तेल लगावें आ ओसे बात करें। एनके खटियो ओकरे पासे रहे। दूर कर दें तऽ चिल्लाय। हार–गुन के अपने पास करेके पड़ै। जब खेते जायँ तऽ ओनके साथे ऊ खेते जाय। खेत से मन्नेलाल कहैं कि जा घरे खराई मारे के लियावा, तब घरे आवै अउर मलकिन से बाँय–बाँय कहके बतावें। मन्नेलाल कऽ औरत रेवाड़ी समझ जायँ कि खराई मारे बदे लेवे आयल हौ। मन्नेलाल के रोटी–गुड़, मण्ठा लेके चलै तऽ इहो साथे–साथे जाय। खेत में आके बइठल रहै, जब मन्नेलाल आवैं तऽ ओनके साथे घरे आवे। जब कह दें कि रामू अब तू घरे रहा तऽ चुप मार के घरे बइठै। जइसे उनकर बात समझत होखे। कभी जब रेवाड़ी खाली न रहैं तऽ पड़वा के गरवै में रोटी गुड़, डबा में धइके बान्ह दें आ रामू सीधे खेते जाके मन्नेलाल के पहुँचा आवैं। कोई आदमी गाँव कऽ रामू के पकड़ल चाहे त रामू भाग चलै, कोई केतनो दौउड़वइया हो ओके न पा सकैं। गाँव में लोग इहै कहैं कि "सच्चो ई मन्नेलाल कऽ लइका हौ।"

रेवाड़ी, मन्नैलाल के मर जाये के बाद कुल दूध रामू के पियावे लगलिन। दस महीना होत–होत रामू पूरा भइँसा के तरह जवान हो गयल। छः महीना में किशोर कऽ जमानत हो गयल। किशोर रेवाड़ी के अउर परसान करे बदे गली से जाय, ओनके देखे रामू हँकड़ै। लगै अउर जमीन खुरचे लागे। फाटक बन्द रहले से लाचार, बस लाल–लाल आँख कइके तरेरै। हूँ हूँ–हूँफे आ फों–फों करै।

रेवाड़ी के समझ में आ गयल कि अब रामू बचवा किशोर के मारै लायक हो गयल हौ। रेवाड़ी रामू के कान में रोजै कहैं कि जवन तोहरे बाबू के मरले हौ ओके तू पहिचानेलऽ नऽ? रामू मूड़ी हिलावै– 'हाँ'।

एक दिन संयोग से अन्हार हो गइले पर किशोर एनके दरवाजे से जात रहल, रामू ओनके देखके लगल हँकड़े अउर जमीन खुरुचे! रेवाड़ी फाटक खोल दिहलिन कि "जा रामू तूँ आज अपने बाबू कऽ बदला फेर लऽ!" रामू तेजी से बहरा दउड़ल, किशोर आपन परान लेके चललन भाग, पचास फुट जात–जात रामू किशोर के दू दिवाल के कोना में दबा देहलेस ओनकर छाती टूट गइल। मुँह से खून फेंक दिहलन। गिर गइलन तबो नाहीं छोड़लेस, ओनके पेट पर चढ़ गयल। पेटवो फार दिहलेस। फिर फों–फों करतें अपने घरे लवट आयल।

सुबह ओके पुलिस पकड़ ले गइल। तब से जेल में बन्द हौ। जिला जज आजीवन सजा सुनाये हएन। रेवाड़ी हाईकोर्ट में अपील कइले हईंन। हर इतवार के रेवाड़ी एसे जेल में मिले आवेलिन एक किलो गुड़ अउर पाव भर तेल पिया के जालिन।

खुराना साहब कहलन जानवर क अइसन कहानी हम कबों नाहीं सुनले रहली हँ! रामू के पशु कइसे कहल जा सकेला, जे प्रेम कऽ भाषा अनबोलता होइके समझत हौ। ओनके काल्ह कोठरी से निकाल के जामुन के पेंड़ के नीचे खुला में बान्हल जाय।

■ xtu dfV;k] ukjk;.kh fcgkj
dkykuh] fpÙkbiqj] okjk.klh

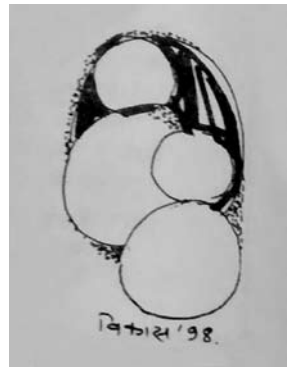

तामे दो न समाहिं

विष्णुदेव तिवारी

अंतरा फस्ट क्लास से पास हो गइल। जइसे मन के पयकड़ गल के छू–मंतर हो जाय, जइसे निराश नैनन में बसंत नेह–रस चुआ दे आ सामने उहे पुष्प–लता फूलन लथरा जाइ जेके नेही छुअन बरिसन से पटवत आइल रहल हा!

तब... नाक–मुँह नचावे वालन के ओठ गोलिअइले स, भहुँ तिरकट भइली स आ बोल टपक परल... चलऽ.... अबकी सुकलान भइल।

ऊ अपनहूँ अपना के अनलकिए समुझत रहे। मैट्रिक के परीक्षा में ओकर पेपर कतना बढ़िया भइल रहले स। कवनो अनेसा ना रहे कि सेकेन्ड क्लास आई। हऊ.... धब्–धब् करत, धरती धुनत चलत सरसोती, जे टेस्ट परीक्षा में अपना नाँव के जगहा अपना बापे के नाँव घसेट घलले रहे, फस्ट हो गइल। हिन्दी सर के बेर–बेर लिखववला के बाद कहीं 'सरस्वती' शुद्ध–शुद्ध लिख सकल रहे.... ऊहे सरसोती।

अंतरा के मन महिनवन छपिटात रहल। घूम–घूम एके जगह मेंड़रि मारे.... "सेकेन्ड क्लास कइसे? डैडी त ना, बाकिर दादी वचन–फिचुकारी दाब देले रही, का पढ़ावत रहुए नरेनवा?"

मम्मी ढेर ना बोलसु। उनका से रहाइल ना। तनी जोरे से कह देले रही... "रउआ का जानब का पढ़ावत रहुअन!"

"अपना अभाग के अछरंग दोसरा के लिलारे ना साटे के चाहीं, दादी!" – अंतरो टुभुकल रहे।

एक दिन नरेन अंतरा से कहले रहे, तूं त एकदम लइकन अस बोलऽतारू, अंतू!

का मतलब? लइकिन के बोली दोसरा–तिसरा तरह के होला का, नरेन भइया?

नरेन कबो–कबो अपने बोललका भुला जाला आ याद ना परे त कुंभिला जाला.... का कहले रहुई?

.... बेटिन के बोली बेटन से अलग होला।

.... हँ.... होला।... ना तऽ!

मम्मी भीतर से हँसत आइल रही.... नरेन, चाह पी लऽ फेर बात करऽ। अंतू त जवन बात लोक ले, ओकर खलरा तक ना छोड़े!

दादी लाख नोहे पानी उबिछसु, मुँह पर केहू के मुँह नाहिंए नोचले होइंहें। कहली.... हँ, बाचा, ठंठा जाई। तऽ नरेन हँसत कहले रहुए... "दादी, तहरा त पी0एम0 के 'सलाहकार परिषद्' में होखल चाहत रहुए!"

.... अइसहीं नेट पर रिजल्ट आइल रहे। अइसहीं रिजल्ट देखते अंतरा भउँचक छत के सीढ़ी से अंगना उतर आइल रहे। अइसहीं लोर भरभरा के भुइंया बिखर गइल रहे। अइसहीं देंह डूबे लागल रहे।.... तबो कुछ अइसन रहे जे ऊ ओइसन दुख सह लेलस...। अब ई सुख नइखे सहात।

गुलाब के कलम लगावत नरेन एकबाएके अंतरा के अपना दुआरे आइल देख के चकचिहा गइल रहे..... सब ठीक तऽ, अंतू?

अंतरा थकला अस, दलान में रखल चउकी पर बइठ गइल। नरेन हाथ झारत पुछलस... बोलऽ ना! मुँह काहें लटकल बा?

अंतरा के छोट भाई आशीष, जे अंतरे संगे आइल रहे, जवाब दिहलस... "अंतू सेकेन्ड भइल बिया, भइया, एही से!"

दोसर समय रहित त नरेन चश्मा उतार के मुँह बिजुकाइत.... बड़ बहिन के दीदी नूं कहल जाला, बाचा? बाकिर स्वगत–कथन कहत अस, अपनहीं फइल गइल ओकरा मुँह से निकल परल रहे...आइँ! सेकेन्ड?? आ ओकर जीभ कुछ देर ले तरुआ से चपकल रह गइल रहे।

अंतरा के हिचकी फूट परल। आशीष हँसे लागल। लइके नूं रहे! ओकरा का पता कि मैट्रिक बोर्ड के परीक्षा 'बिहार विद्यालय परीक्षा, समिति' ले ले, जेकर कापी 'अतल लोक' भा 'सुतल लोक' में लिखल जाली स, जे से फस्ट क्लास के गारंटी मिल सके।

".... अंतरा बिना चिट–पुर्जा के, अपना मन से, बहुत बढ़िया लिखले रहे, कहीं एही से त ना अइसन हो गइल?" नरेन सोचलस।

अंतरा सोचत बिया.... बाकिर तब में आ अब में ढेरे फरक बा। तब नरेन ओकरा के पढ़ावे ओकरा घरे आवत रहे। अब ना आवेला।

ओकर इहे आदत ह। एसे सब हलकान बा। जब ढरक जाई, त भरम के हर ढूह ढाह दी आ जब दिल खट्टा कर ली त फाटल खून अस ना जमी, ना थमी। लाख घिघिया।... अत्यंत मेधावी बाकिर गाँव के डिहवार बन के रह गइल। आपन कमी जानियो के ओके ठीक ना कइल ओकर सबसे बड़ कमी ह।.... ओकरा छाती में एगो विजेता के दर्प बा। पी0सी0एस0 के इन्टरव्यू बोर्ड में, एगो मेम्बर ओकरा से पुछले रहे...

– "संसार का प्राचीनतम धर्म क्या है?"

– "विश्वासघात!" ओकर जवाब रहे।

– "भारत की महानतम परंपरा क्या है?"

– "भारत को लूटना।"

– "आपकी समझ से देश के विकास में सबसे बड़ी बाधा क्या है?"

– "सरकार द्वारा गलत आधार पर जाति–विशेष को प्रश्रय देना।"

– "आपकी जाति क्या है?"

– "मनुष्यता!"

– "क्या बकवास लगा रखा है?" प्रश्न पूछे वाला

खीसिन बमक उठल रहे, "इन्टरव्यू देने आये हो कि फिल्मी डायलॉग मारने?"

– "ये डायलॉग फिल्मी नहीं, जिन्दगी की सच्चाइयाँ हैं, सर! आप मानें, न मानें... यह आपका विशेषाधिकार है। .... शायद आपका मूड बहुत खराब हो गया। कभी–कभी ऐसा हो जाता है, सर!.... कहीं ऐसा तो नहीं कि किसी दलाल ने घूस की पूरी ही रकम हजम कर ली या फिर...."

– "शट अप यू बास्टर्ड! गेट आउट!!"

मये गाँव कहेला कि ओकर जीभ साँप के जीभ अस हरमेस लपलपाते रहेला।

ओकर माई मुअत रहे त ऊ गोड़तारी बइठल रहे। आँख से परान ढरकल त छरक के मुँड़तारी आ गइल रहे... ना, माई ना! जब मुअते बाड़े त मूं जो! अगिला जनम में माई बनिहे त अपना लरिकन के हुँड़ार आ सियार से डेराये के मत कहिहे, बस!

तिरबेनी चउबे जब रिटायर भइले त गाँवहीं आ गइले। साथ में उनकर महतारी, मेहरारू आठ बरिस के लइका आशीष आ लइकी अंतरा। उनकर महतारी नरेन के बाबूजी से कहली, नेरन के बाबूजी नरेन से... "बाचा, एगो बिन्ती बा!"

नरेन जोम से अपना बाबूजी देने तकले रहे आ ओठन पर अनासे आ गइल गाभी के पीअत गँव से कहले रहे.... "हुकुम करीं!"

"....अपने काम ह!" बाबूजी के ई बुझात ना रहे कि बात कइसे कहीं। ऊ नीक से जानत रहले कि बेटा के चाल के उलटा उनकर कुछुओ चली–बसाई ना, बाकिर बात चउबे जी के रहे, आ अहसानन के बात भुलाइयो दिहल जाव तबो मिताई खातिर त कुछुओ कइल जा सकत रहे। कहले– "तनिकी समय निकाल सकेलऽ?"

– "केकरा खातिर?"

– "अपने खातिर समझऽ!"

नरेन हँसल.... 'कहल जाउ!'

– "अंतरा के तनी देख लिहितऽ...." बाबूजी कहले।

बाबूजी के ई बात नरेन के समझ में ना आइल रहे। ऊ चुपे रहल बाकिर मन के घोड़ा लगाम चबात रहले स। बाबुएजी कहले.... "तिरबेनी भाई के बुचिया पर साल मैट्रिक के इतहान दी। काकी (तिरबेनी चउबे के माई) कहत रहुई कि ओकर अँगरेजी आ गणित कुछ कमजोर बा।"

नरेन के असली बात तब बुझाइल रहे, बाकिर ओकरा से आपन टेढ़की बान देखावल छूटल ना। बाबूजी के बात खतम होखे से पहिलहीं ऊ खाना बदल देले रहे... "काहें.... तिरबेनी चउबे ना पढ़ावसु?"

– "ऊ संस्कृत के टीचर रले हा नूं?"

– "जे संस्कृत के टीचर होला ऊ गणित आ अंगरेजी ना पढ़ावे?"

– "भाई, ई जरूरी थोरहीं बा कि संस्कृत जाने वाला पढ़ावे भर दोसरो बिषे जाने!"

तब नरेन कुछ अउरी कहले बिना अपना बाबूजी के सोझा ले टहरत अइसे टसक गइल रहे जइसे पाकिट खूंख होते खहुआ हीत। बाबूजी सोचले.... "अइसन कुरुआसन लइका के बाप होखला से निस्तानी रहल नीक रहे। अब काकी के एह मुँहे कवन जबाब देब?"

नरेनो अहथिर ना रहे। कुछ सोचला के बाद ओकरा बुझाइल रहे कि चट्टी के धूर चटला आ लोगन के अइँठ घोंटला से नीक बा कुछ पढ़ाइए–लिखाई हो जाव। जवन लोग बाबूजी खातिर अतना कइल, ओह लोग खातिर थोरकी कुछ कइल अकारथ ना होई।

"....ठीक बा.... हम पढ़ा देब बाकिर फीस पहिलहीं तय हो जाये के चाहीं।" सुबहे–सुबह ऊ बाबूजी से कहले रहे।

बाबूजी के मये खुशी तवाँ गइल। उनका लागल, ई आदमी उनकर लइका त नाहिंए हो सके। कहले.... "नरेन, ओह लोग से हम पइसा के कहब, सोचऽ तऽ!"

– "सोच लेले बानी। सेतिहे ना पढ़ाइब!"

पहिले नरेन चाह ना पीयत रहे। दादी के हँसी बरे.... "अतहत हो गइलऽ! काहें ना पीयऽ?"

– "असहीं। चाह कवनो अमृत ह?"

– "हँऽ नूं! दादी कहले रही.... पूछऽ अंतू से! अखबार में लिखेला... चाह पीये से कैंसर ना होला!"

– "अच्छा विज्ञापन बा। कैंसर से डर लागेला का, दादी?"

– "मुअल के चाहेला हो?"

– "दादी, तूं त बहुते बूढ़ हो गइल बाड़ू हो।"

– "अरे कहाँ? दोसरा से एक गिलास पानियो त ना माँगीं! कतना दिन भइल.... सुजनी सी लेत रहुईं। तिरबेनी बो से पूछऽ.... आजुओ जरूरत परे त रोटी सेंके में हाथ ना जरी।"

अंतरा चाह दे गइल रहे।

पढ़ाई के बाद दादी बड़ा मयगर मने कहले रहे....

"बुचिया अस चाह केहू ना बनावे। जब ई ससुरा चल जाई, तऽ हमार चाह के बनाई?"

नरेन उदास गइल रहे। अंतरा हँस दिहलस। नरेन मुसका दिहलस... एकर माने दादी अबे सचहूँ जीयल चाहत बाड़ी।

टेक्स्ट बुक से लगाइत पासपोर्ट आ तमाम गेस पेपर तक... का... का... ना उलटाइल– पुलटाइल–रटाइल। चउबे जी हुलसत कहसु... "तोहार मेहनत देख के त हम लजा जात बानीं, बेटी। तहरा उमिर में जो अतना पढ़ले रहितीं तऽ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर भइल रहितीं, स्कूल के अलचार टीचर ना।"

अंतरा कुछ कहत ना रहे। बाकिर, एक दिन नरेन सुनुग उठल– "का कहनी, गुरु जी! सरकारी स्कूल के टीचर आ अलचार? अइसन हराम के नोकरी एह धरती पर दोसर कहाँ मिली?"

खूब! खूब!... चउबे जी जइसे सत्य के मुरचाइल कील पर पेटकुनिया गिरले आ काँख दिहले.... "सावन के आन्हर के सगरे हरियरे लउकेला, मास्टर!"

.... हम हराम के कमाई ना खाईं।

.... तबे तऽ आराम करऽतारऽ। अपने संग के देखऽ.... जेकर नाक ना सूखत रहे, सरकार के खजाना सोखत बा। हजारन पर सिग्नेचर करत अँड़िचत बा। तूं जरत रहऽ! बनत रहऽ मसीहा छेदही मच्छरदानी के।

.... माने?

.... माने अबे ना बुझाई। अबे त बाप के चुहानी के गंधे नूं मातल चलऽ तारऽ!

".... बाप के ना, अपना रसोई के सुगंधे कहीं, अंकल जी! बाप आ बेटा के रसोई रउए अस लोग बाँटेला।" नरेन पहिला बेर अपना के अतना कमजोर पवलस। ओकरा तिरबेनी चउबे के उपकारी मूर्ति में पहिला हाली चिहार लउकल। ओकरा बुझा गइल.... "उपकार के तार 'इस्तेमाल' के यंत्र से जुटल रहेला। घमंड के सुगर कोटेड व्यापार हऽ उपकार। तनी जोर से कहलस.... आ सावन के आन्हर ना, सर जी, सावन के पपीहा कहीं, जेके अंगारी चटा के बेला दिहल जाला!"

ऊ चाह ना पियलस। दादी के दुख बरल। बुझला मन से कहली, "का–का अंट–संट बोल देलऽ तिरबेनी!"

अंतरा के मन कुहुक उठल.... अइसना बोलला से का फायदा? ओकर मन नरेन के इचिको दोषी ना मानत रहे।

रात में, एकांता छत पर, चुरइल अस बेचैन टहरत ओकरा लागल.... नरेन अब ना आई। ओकरा याद परल.... नरेन कहले रहे.... तूँ हमार.....

".... हँ..... कहऽ..... तूं हमार?" ऊ नरेन के मुँह टुकुर–टुकुर ताकत पुछले रहे... हम तोहार के?

नरेन बात बदल देले रहे... "अच्छा, बतावऽ.... हमरा साथे तोहरा कवन नाता पसंद बा?"

".... उहे.... जेमे हरमेस तहरे संगे रहे के मिले!"

.... पागल!.... कहत नरेन कुछ देर ले नीम के ओह पार के घर के ऊपर उड़े वाली तिलंगी के बड़ा ध्यान से डोलत देखत रह गइल रहे।

बाकिर दोसरा दिने ऊ आइल। चाहो पिअलस आ रोज अस दादी के गोड़ो लाग के गइल। तब दादी के लागल रहे कि ओकरा लिलार पर सोच के कुछ सिकुड़न पड़ गइल बा।

मैट्रिक के अंतिम पेपर के दिने अंतरा टेम्पू स्टैन्ड तक अकेले गइल रहे। जाके इमली के फेंड़ तर केरा के थून्ह अस खड़ा हो गइल.... का हो गइल आज नरेन भइया के? अतना देर काहें भइल...? ...."लइकी, केकर इंतजारी करत बाड़े?.... केहू के ना! .....फेर?"

अपना फूलत साँसन के साथ पहुँचल रहे नरेन.... "काहें अंतू, परीक्षा देबे के मन नइखे का? सब निकल गइल.... तूं केकरा खातिर रुकल बाड़ू?"

".... तहरे खातिर!" अंतरा अइसे खिल गइल रहे, जइसे फुहार के बाद दूब।

.... जो ना अइतीं तऽ?

तंतरा जवाब ना दिहलस।

मये पेपर कतना बढ़िया भइल रहे, तबो सेकेन्डे क्लास। कइसे?

"..... आ अब इंटर में अंतरा के लापरवाही से नरेन भीतरे–भीतर कुर्हे.... तहार पढ़ाई ठीक से नइखे हो रहल!"

".... पढ़त त बड़ले आनीं, भइया!" अंतरा आँख झुकवले–झुकवले कहलस।

.... अइसे ना चली।

.... सब कुछ खतम बा, भइया! अब हमार फस्ट क्लास ना आई!

आदमी के मन हरदम अबूझ रहल बा। जनाला... मन के ऊपर–नीचे अनगिनत मन होला, जेमे अनगिनत भाव लुकाइल रहेला। बाहर के कवन धार कब कवना तह के आर–पार हो जाई, केकरा पता! एके धार कबो पारिजात उगा देला, कबो औकात बुझा देला।

नरेन के मन आवँक में ना रह गइल रहे.... ना, ई अंतरा ना, कवनो आत्महंता पिचासी हऽ जे अपने खून से तिरपित होखे खातिर अनुष्ठान नथले बिया....। खाली नकार।

ओकर खीस आकाश ध लिहलस.... मत आवऽ! कबो

मत आवऽ! जिद्द! हमरा का.... पढ़ऽ चाहे उफर परऽ! हमहीं फालतू बानीं जे भूँके आ जात बानीं। केहू के खँड में नइखीं बसल कि लीदा उठाईं आ लातो सहीं!

हें! हई मजाल?.... दादी के लागल रहे.... नरेन तिरबेनी के बदला उनका बेटी से चुकावत बा। उनकरो खीस ना अड़ाइल.... का–का बक गइलऽ नरेन बाबू! सेतिहे थोरे पढ़ावेलऽ? पान सौं गिन के दियाला। अउर.... अरे, तहरा त रोवें–रोवें जहर बा हो! अइसन नमकहरामी!

अंतरा के थरथरी लाग गइल.... "ई तूं का बोल देलू, दादी!" ऊ ओहिजे फेंका गइल आ बेहोश हो गइल।

ऊपर से देखला पर नरेन में कवनो बदलाव ना लउकत रहे, बाकिर ई साँच रहे कि भीतर के बहुत कुछ अब पहिले वाला ना रह गइल रहे। साँझ के बेरा पच्छिमी छोर से एगो मिसाइल चले आ अपना संघात से ओकर नस–नस तूर घाले। आत्मा एगो अजीब छटपटी में हुटहुटाइ। रात आवे त सन्नाटा झिझनी अस छाती में उतर के हृदय के सुन्न करे लागे। अइसने एगो रात के बाबूजी पुछले रहले.... आज–काल्हु तिरबेनी भाई देने नइखऽ जात का, नरेन?

.....ना।

बाबुजी कुछ अउर कहे–सुने के जरूरत ना समुझले। नरेन शून्य में टँगाइल रहे.... अब का? चउबे बाबा गाँव में घूम–घूम मृदंग बजावसु! बात का रहे?.... कुछ ना। रउआ सब बतंगड़ बना दिहनीं!

..... बाकिर अंतरा?.... ओकर का गलती रहे?..... हमरो बोले ना आवे। सबुर छूटल तऽ भाव दब गइल, भंगिमा प्रगट हो गइल आ जवन ना चाहत रहे, उहे हो गइल.... तऽ अब नाता कइसन? जवन मन में आवे, तवन करीं पंडी जी। जोड़ो राउरे, घटावो राउरे!

इंटर के रिजल्ट निकलला तीन दिन हो गइल बा। अंतरा के अबो विश्वास नइखे कि ऊ डिस्टिक टॉप कइले बिया। ओकरा ईहो विश्वास नइखे कि नरेन नइखे आवत।... एके बेर थोरहीं खिसियाइल बाड़े, बाकिर आइल नइखन छोड़ले। अइसन कवन बात हो गइल कि दक्खिन हो गइल मन! अबे कतना दिन भइल? .... जनाता काल्हुए के बात हऽ....।

आम खूब फरल रहले स। ऊ नरेन के संगे आपन बगइचा घूमे गइल रहे। कतना खुश रहे धरती।.... ओकरा लागल.... सोचत होई धरती कि आसमान त हरमेस ओकरे के अपना कोरा में उठवले गावत चलेला।

"ऊँ! कुछ कहलू हा का?" – नरेन पूछलस।

"ना! हँ.... कहत रहुईं, मम्मी कहेली कि एमे एगो मिठकवा बा। कँकरी अस करऽ... करऽ खा, तबो दाँत कोठ ना होला।

नरेन सीसो के बगल वाला झंगाठ फेंड़ का ओर देखावत कहले रहे... "हँ बा नूं हऊ–होने!"

"..... एगो तूरऽ ना!" ऊ ठुनुकल।

"..... चलऽ!" कहत नरेन फेंड़ के नगीचा जाके ऊपर का ओर कूदल रहे। झूलत आम ढेर दूर ना पहले स। कूद के उहनी के मजे से तूरल जा सकत रहे, बाकिर आम पर रहे वाला अमहा कीरा सुपुटल बइठल रहँऽ स। काटे खातिर अतना तेजी से झपटले स कि नरेन के, हाथ–मुँह झारत, पिछउड़िए पराये परल रहे।.... बाकिर गदब हार ना मनलस।

"....छोड़ऽ नरेन, दोसरा दिने तूरे के!" ऊ मुसुकिआइल आ फेर लजा गइल।

"..... का दोसरा दिने ई ना कटिहें स....?" नरेनो लजाइले बोलल।

ऊ अपना के सँभारत कहलस... एगो छिड़काव क देला के बाद सब जाना मू के घुलट जाई लोग!

नरेन हँस दिहलस.... आजुए टूटी जी! ऊ मुसकाइल... तऽ डंटा से तूरऽ ना!

".....देखीं.... ऊपर पड़ी कतना कूदत बानीं!"

"....हतनो त ना, महाराज!"

"....अंदाजा ना रहे नूं!"

".... बाकिर ई कटहवा कीरा सब? ....ऊ कुछ सोचत कहलस.... अइसन करऽ नरेन, हमार चुन्नी ले लऽ अपना मुँह में लपेट लऽ आ अब तूरऽ। तऽ कइसे काटी लोग?"

".....आ केहू देख ली तब?"

"....तब हमरो के ओढ़ा दीहऽ!"

अंतरा के कहीं आवे–जाये के मन नइखे करत। काल्हु ओकरा एगो सहेली के बहिन के बियाह बा। सहेली ओकरा के कहे आइल बिया। अंतरा सोचऽ तिया... जेकरा किहाँ जाये के, ओकरा किहाँ त गइबे ना कइलीं.... अब?

"....तऽ अइबू नूं? सखी पूछत बाड़ी।"

"....का करे?.... अंतरा कहऽतिया।"

"....का हो गइल बा तोरा? का करे आइल–जाइल

जाला?"

"....किरिया मत खियाउ। मन नीक रही त आइब!"

दादी के अस्तित्व में घरिये–घरी कुछ टूट–फूट हो रहल बा। ऊ जइसे अपने के भुलवावत पूछत बाड़ी.... नरेन ना नूं आइल रहल हा, अंतू?

"....ऊ का करे अइहें?" अंतरा के मुर्दा ओठ बरफ छिरिक दे तारे स।

"....ऊ तहरा के पढ़वले। तहरा रिजल्ट से ओकरा खुशी ना मिलल होई?"

अंतरा के आँख अँड़हुल हो जा तारी सऽ "ई त उहे जानसु, बाकिर आवहीं के रहित तऽ जइबे काहें करिते? उनका के जायेके के कहले रहे?"

ई बात दादी समुझ नइखी पावत.... तिरबेनी उजबुक बा। झिंगुर–झिंगुर मिठाई खा गइले। नरेन के एकहू ना मिले?.... नइखे आवत तऽ जाके दऽ, ना त गोड़ पकड़ के मना ले आवऽ!

"....ना दादी! केहू अपने आवे त ठीक। गोड़ ध के बोलावल ठीक ना!"

एने नरेन के रात करवट बदलत बीतल.... कहीं मैट्रिक में जान–बूझ के कुछ गलती त ना कर देले रहुए ई लइकी कि सेकेन्ड आ गइल रहे? कुछुओ संभव बा।... जवना दिने ओकर डैडी हमरा संगे बतरस कइले रहले, ओह दिन ओकरा उदास आँखिन में लाचार खीस खदकत हम ना देखले रहीं का?.... कहीं ऊहे खीस त ना अइसन करवा दिहलस?.... बाकिर अइसन लागत त ना रहे!.... अइसन होला का? आपन रिजल्ट केहू अपने बिगारेला का?

नरेन के अंतरा के कई गो बात याद परली स.... ओह दिन दशहरा के सतमी रहे। साँझ खा जब ऊ ओकरा घरे गइल त देखलस कि ऊ कोनवा वाला घर में चुप–चाप बइठल बिया। ओकर दूनो आँख लोराइल बाड़ी स। नरेन एकदम से काँप गइल.... काहें भाई, एहिजा काहें?

अंतरा के आँख महुआ बन गइल रहे... कुछ ना भइया, तनी कपार टनकत बा।

"....त अकेले काहें?"

"....अकेलहीं रहे के मन करत बा।"

"....त.... हम जात बानीं।"

"....ना, तू मत जा!"

एही बीचे दादी आके अंतरा के बगल में बइठ गइल रही... अब तूँ ही बतावऽ बाचा। मतारी–बाप कुछ भूल–चूक क दी तेकरा खातिर का चक्र सुदर्शन उठा ली आदमी?

"....हम बूझऽतानी भूल–चूक कि जान–बूझ के...." अंतरा के आवाज बन्हा गइल रहे।

"....चुप रहऽ!" दादी खिसिअइलीं.... बहुते बुझाता तहरा जान–बूझ के!

नरेन हँस दिहलस। अपना देखउआ हँसी पर ओकरा फेर हँसी बर गइल.... बात का भइल, दादी?

"....कुछुओ ना हो। तहरा खातिर रखल परसादी तिरबेनी बो नइहर से आइल अपना भतीजा के दे देली हा तेकरे खातिर बरिसत सेवाती भइल बाड़ी।"

अंतरा कुछ बोलल ना। दादी फेर कहली.... "....अब तूँ ही समुझावऽ ए, बाबू!"

"....अंतू, ई सब एकदम ठीक नइखे। झूठो के ई रुसा–फूली? भर जिनगी तहरा एहिजे रहे के बा का जे लइकबुधी नइखे छूठत।" नरेन ऊपर से डाँटत अस कह गइल रहे, बाकिर कहते कहत ओकर हृदय लोरे गनगना गइल रहे।

दशहरा के बाद आशीष बतावत रहे कि अंतरा दशहरा तक निर्जला रह गइल रहे। नरेन से हरमेस झूठ बोलत रह गइल। कहला पर दोद देव "....के कहऽता.... आशीष? झूठा!"

मंदिर में घरीघंट बाजल त नरेन के अँगुरी मोबाइल के बटन टीपे शुरू क देली स कि ऊ थथम गइल... ना, ना.... हम आवऽतानी, अंतू! ऊ डेगरगरे तिरबेनी चउबे के घर का ओर चल दिहलस। बँसरोपन चउबे के दुआर से खड़ँजा वाली सड़क पर मुड़े के पहिले उनकर मड़ई पार करे के परत रहे। नरेन के मन मिरिगा हो गइल रहे बाकिर गोड़ अबहियों सकुचात रहले स। मन सोचत रहे.... हवा हो जइतीं। केहू के लउकितीं ना। समय जइसे थथमल रहे। ओकरा कुछ समझ में ना आइल कि हो का गइल.... अतना बिबस, अतना भ्रमित कि जइसे सपना टूटल होखे.... झनाक्!

नरेन छन भर खातिर अवाक् रह गइल। अगिले छन ओकरा मुँह से चकचिहाइले निकलल.... "अरे, अंतू! तूं???"

".... तहरे किहाँ जात रहनी हाँ! अंतरा बस एतने कह सकल रहे कि सूरज के पहिलौंठी किरिन ओकर ओठ चूम लिहलस।

■ frokjhiqj] nfgoj] cDlj] ¼fcgkj½ 802116

भिहिलात बतासा जइसन

भगवती प्रसाद द्विवेदी

"चिन्हलऽ कि ना?" एकरा पहिले कि तहार सवाल हमरा तन्द्रा के भंग करित, तहार उलाहना–भरल सुर गूँजि उठल, "जिनिगी के एह भागमभाग में के केकरा के इयाद करेला जी! केकरा गरज पड़ल बा केहू के चिन्हें–पहिचाने के!"

तहरा ओठ के दूधिया चाननी–अस निश्छल हँसी के निरेखि के हमरा आँतर में रजनीगंधा के अनगिनत फूल अनसोहाते गमगमा उठलन स। अइसन लागल, जइसे सेवाती के बूनी नियर तहार सबद बून–बून रिसत हमरा सीप–अस हिरदया में पइसि गइल होखऽ स आ भितरी–बहरी अनगिनत जोन्हीं मतिन मुक्तादीप जगमगा उठल होखऽ स।

आँखि चार होते हमरा हड़बड़ाहट का ओजह से पियाला के चाह छलकि के टेबुल पर छितरा गइल आ हम खुदे पर झुँझुआत अचरज से सवाल जड़त खाढ़ हो गइलीं, "शशी! तूँ?"

तूँ पाथर के मूरत बनके खामोश खाढ़ रहलू। तहार कजरारी आँखि अबहुँओं किछु बोलत रहली स, बाकिर ओह वाचाल नयनन के भाखा हम भला कइसे बाँचि पइतीं?

हम बेताबी से बाट जोहत रहलीं कि फेरू तहरा ओठ के बंद कपाट खुलो, हरसिंगार के फूल झरे लागो आ हम तहरा बात के डोरी पकड़िके एह मनहूस चुप्पी प काबू पा सकीं। मगर हमरा इंतजार के बावजूद जब तूँ नाहिएँ खुललू, त हमहीं माहौल के सन्नाटा तुरलीं, "कइसन बात करत बाड़ू, शशी! तहरा के ना चिन्हें के माने होई अपना आपके ना चिन्हल... आ खुद के भुला पावल का अतना आसान होला?"

"होला, बिरजू! बहुत आसान होला।" तूँ कुरसी खींचि के बइठत मुसुकी कटलू, "ओहइसे ई ठीको बा, काहेंकि जखम के टीस के इयाद कके जिनिगी के दरदीला बनवला से का फायदा!"

"ना शशी! तहार ई सोच गलत बा।" तहरा बात के काटे के हम भरसक कोशिश कइलीं, "जवन वैद कवनो मरणासन्न मरीज के नया जिनिगी देले होखे, ओकरा के भुला पावल का कबो संभव होला?" बाकिर लाँगट साँच के का कबो झुठलावल जा सकेला? कहे के त हम कहि दिहलीं, बाकिर हमार मन हमरा के बेरि–बेरि धिरकारे लागल। कइसन सवारथी निकललीं हम!

"नमस्ते जीजी!" आहट पाके नमिता जब बहरी अइली, त तूँ दूनों हाथ जोड़ि दिहलू। बीबी पर निगाह पड़ते हम स्वयं के संयम करेके भरसक प्रयत्न कइलीं, बाकिर मन बहके से तबहूँ रुकल ना।

"जीजी! तहन लोग बेटी के बियाह कइलू आ हमरा के बोलइबो ना कइलू? का एह परिवार पर हमार अब अतनो हक ना रहल...?" तूँ शिकाइती लहजा में सवालन के झड़ी लगावल शुरू कइलू।

"का बताईं शशी! दरअसल शालिनी के शादी अतना जल्दबाजी में तय भइल कि केहू के नेवता भेजे के समय आ सवाँसे ना रहल। लइकावालन के हड़बड़ी मचवला से नाक में दम आ गइल रहे। खैर, सभ किछु सही–सलामत निपटि गइल।" नमिता बात के रुख बदले का गरज से कहली।

नमिता निगाह उठाके एक हाली हमरा ओरि देखली। उन्हुकर बात हमरा हँसुआ के बियाह में खुरपी के गीत गवला लेखा लागत रहे। बुझिला ऊहो हमरा अंतस के भासा पढ़ि लिहली। तबे नू ऊ मूड़ी झाँटत उठि के ठाढ़ हो गइली, "अरे, हम त खुदे लेक्चर झाड़ल शुरू कऽ दिहलीं। आवऽ, अंदर चलल जाउ।" ऊ तहार हाथ धइली आ मुसुकात आँगन से होके भीतर घर में ले जाए लगली।

गेट के रेलिंग पकड़िके हम अनमनाह–अस ठाढ़ हो गइलीं। सड़क पर चलत नर–नारी के हुजूम अपना आप में मगन रहे। मसालाडोसा वाला चिरपरिचित राग अलापत आपन ठेला ले–ले एनिए बढ़ल आवत रहे। सोझा रायजी के खटाल के ऍंड़ा–गोऍंड़ा लोग लोटा–गिलास लेले दूध के फिराक में मँड़रात रहे। तलहीं बादर के गड़गड़ाहट अचक्के में हमार धियान अपना ओर खिंचलस। आसमान में कुलाँचत अनगिनत बदरी के झुंड का संगे सूरुज के आँख–मिचौनी खेलल हमरा नीमन लागे लागल। लुकात–छिपत सूरुज आ मृगछौना मतिन ऊधम मचावत बदरी।

एकाएक मन–पंछी अतीत के सपनीली दुनिया में फुर्र से उड़ि चलल। गाँव के गली में इयाद के आँख–मिचौनी शुरू हो गइल....

"शशी! चलऽ, चोर–सिपाही खेलल जाउ!" जब तूँ पहिली बेर शहर से गाँवे वापस लवटल रहलू, त हम दोस्ती के हाथ बढ़ावे का गरज से कहलें रहलीं।

"चोर–सिपाही! भला ई कवन खेला होला?" तहरा गुलाबी गाल पर अचरज भरल कौतुक के लकीर खिंचा गइल रहे।

"अरे.... चोर–सिपाही नइखू जानत? बड़ा मजेदार खेला ह.... छुपा–छुपव्वल.... आँख–मिचौनी!" हमार आँखि तहरा कपोल के ज्यामिति पढ़े–बाँचे लागलि रहे।

हमार किशोर मन तहरा रूप के सरोवर में गोता लगावे खातिर बेचैन हो उठल रहे।

"तूँ चोर आ हम सिपाही!" अँगना में आवते हम तहार बायाँ हाथ अपना हाथ में ले लेले रहलीं। सउँसे बदन में अनगिनत चिउँटी रेंगे लागल रहली स।

"तहरा मन में त खुदे चोर बसल बा, फेरू तूँ सिपाही कइसे हो सकेलऽ...?" तूँ एगो सवाल उछलले रहलू– गेना नियर। बुझिला हमरा मनोभाव के ताड़ि

गइल रहलू तूँ।

बाकिर हम तहार बात सुनियो के अनसुनी कऽ देले रहलीं। खेला शुरू हो गइल रहे। हमरा आँखि के ढाँपत तहरा ओढ़नी के हमरा मूड़ी का पाछा बान्हि दिहल गइल रहे। गाँव के अउरी लरिकन का सँगहीं तूहूँ थपरी पीठत खिलखिलात रहलू आ हम दूनों हाथ पसरले तहरा के छूवे के भरसक कोशिश करत रहलीं। ओह घरी अनसोहाते हमरा मन परि गइल रहे– अपना छोट भाई सुधांशु के रोज–रोज के खेला। सवेर के सेनुरिया लाली पसरते एगो गौरैया मुँड़ेरा से उड़िके अँगना में उतरि आवति रहे। सुधांशु ओकरा के पकड़े का गरज से अँगना में धउरत रहे, बाकिर ऊ गौरैया पहिले एने–ओने फुदुकत ओकरा के तंग करे, फेरु चहचहात फुर्र से बगइचा के तरफ अइसे उड़ि जात रहे, जइसे ऊ ओकरा के अँगूठा देखावति होखे।

साँचो, तहार शहर से गाँवें आ गइल, हमरा सरग के कवनो सोनहुला अप्सरा के धरती पर उतरि अइला लेखा लागत रहे। कहवाँ ऊ महानगर के उन्मुक्त–आसमान आ कहवाँ ई कीच–कादो में सिमटल–सिकुड़ल बदबूदार गाँव! तबे त तूँ अपना आप में हरदम गुमसुम रहत रहलू जइसे केहू आजाद पाखी के पकड़िके पिंजड़ा में कैद कऽ देले होखे। एगो पाँख कटल पंछिए नियर फड़फड़ात भर रहलू तूँ। बाकिर ना जाने काहें, एगो अबोध बबुआ बनल हम जागत–सूतत बस तहरे के निहारत रहल चाहत रहलीं– पिंजड़ा में बन्न एगो पियारी मैना लेखा।

पढ़ल–लिखल, खाइल–पियल–सभे किछु भुला बइठल रहलीं हम। सपनो में खाली तूँहीं लउकत रहलू। दूध के माफिक धप्–धप् एगो सरोवर बा, जवना में कमल के दूगो फूल अचक्के में फुला उठल बाड़न स। सरोवर के गहिराई में उतरिके हम डुबकी लगावत फूल के पकड़े बदे बेताब हो उठत बानीं। बाकिर हम जइसहीं पवँरत उन्हन का ओरि लपकत बानीं, दूनों फूल आगा.... अउर आगा भागत चलि जात बाड़न स। फूल दूर.... बहुत दूर.... हम हलकान–परेशान..... हमार आँखि खुलि जात बाड़ी स। खुदे पर झुँझुआत बानीं। पसेना से तर–ब–तर आँखि मीजत अबहुँओ ना जाने का–का ऊल–जलूल सोचत जा रहल बानीं.... "इहवाँ खड़ा–खड़ा कवनो अधेड़बुन चलि रहल बा का जनाब?" तहार मिसिरी अस सवाल हमरा हिरदया में मिठास भरि देत बा। अतीत के पगडंडी से चलिके वर्तमान के खुलल मैदान में मन–पथिक के राहत भेंटात बा।

"किछऊ त ना!" हकलात हम भीतर का ओरि बढ़े लागत बानीं, "चलऽ, अंदर चलिके बइठल जाउ।"

पत्नी के ओठ के मुसुकी व्यंग–बान–अस करेजा में धँसे लागत बा। साइत ऊ हमार चोरी पकड़ि लेले होखे।

"तहार 'ऊ' कइसन बाड़न?" झेंप मेटावत हम पूछि बइठत बानीं।

"बस, ठीके बाड़न। दरअसल आजु काल्ह टूर पर दिल्ली गइल बाड़न, एही से संगें ना ले आ सकलीं।" तहार मधुर आवाज तन–मन में रचे–बसे लागत बिया।

"अजी! तहरा कइगो बाल–बुतरू बाड़न स?" नमिता तहरा के कुरेदत सवाल टपकावत बाड़ी।

"हमरा? कॉपी–कलम ले आके कैलकुलेट करे के परी.... छव गो बेटा, दूगो बेटी!" तहार सुर ठहाका में डूबि गइल बा।

बाकिर सचमुच आजुओ तहरा में तनिकियो तब्दीली नइखे आइल। चाननी–अस चमचमात–झिलमिलात तहार काया। गुलाबी ओठ के सम्पुट में जोन्हीं–अस जगमगात दाँत के पाँती। आँतर के तरल भावन के बानी देत कजरारी आँख। इहे रूप के मादकता हमरा के भाव–विह्वल कऽ देले रहे कबो। तब, हम अपना प्रणय के इजहार करत एकान्त पावते चुंबन के झड़ी लगा देले रहलीं। आजुओ समुझि ना पावेलीं कि ओइसन दुस्साहस कइसे कइले रहलीं हम?

"छिः! भला इहो कवनो प्यार हऽ!" तूँ हमरा के दूर झटहेर देले रहलू आ एकरा पहिले कि हम अपना आप के सम्हारि पइतीं, तूँ फूटि–फूटि के खुदे रोवे लागल रहलू।

हमरा त जइसे कठया मारि देले रहे। ई का कइ बइठलीं हम? अब तूँ अपना महतारीं–बाप से हमार शिकाइत करबू आ हम एगो अनेरिया कुकुर–अस चारू ओरि से दुरदुरावल–दुत्कारल जाइब।

"शशी! हमरा के माफ कऽ दऽ। अनजाने में हमरा से गलती हो गइल।" हम रोवाइन–पराइन होके आरजू–मिन्नत कइले रहलीं।

"अनजाने में ना, जानि–बूझके अइसन गलती करत आ रहल बाड़ू तूँ। गाँव के ना जाने कतना भोली–भाली लरिकिन का सँगें ई खेला खेलते होखबऽ।" तूँ आँखि पोंछत दहड़ले रहलू, "तहरा शरम नइखे आवत एगो लइकी का सँगें अइसन हरकत करत? कई गो लरिकनों का साथे त तूँ दोस्ती–इयारी कइले होखबऽ। का उन्हनियो के वासना के तृप्तिए खातिर दोस्त बनवले बाड़ऽ? अगर ना, त एगो लइकी का सँगे दोस्ती के अइसन गलत मतलब काहें लगा लिहलऽ तूँ? का संगी–साथी के इहे माने होला.... नोंचल–बकोटल?"

आजु हम झूठ ना बोलब, शशि! ओह घरी हमरा नजर में लरिकिन से दोस्ती करेके बस इहे अरथ रहे आ कइयन का साथे हम इहे कुल्हि कइलहूँ रहलीं। बाकिर तूँ हमरा के एगो नया परिभाषा दिहलू।

"हम भटकि गइल रहलीं, शशी! का तूँ हमरा के माफ ना करबू?" हमरा कँपकँपात हाथ जुड़ि गइलन

स। मने–मन हम अपना आप के कोसत रहलीं। हमार अन्दाज जे गलत निकलल रहे! हम त शहरी चहकत तितलियन लेखा तहरो के उन्मुक्त बूझि बइठल रहलीं। हमरा आसमानी किशोर मन के पहिला ठोकर लागल रहे।

"बिरजू! जइसन कि तूँ जानत बाड़ऽ, हम एगो बड़ घराना के बेटी हईं। महतारी–बाप के एकलउती सन्तान। हालाँकि हम शहर में रहिके मैट्रिक तक के पढ़ाई कइले बानीं, मगर माई–बाप के रूढ़ि का चलते चाह के बावजूद आगा पढ़ल नामुमकिन बा हमरा खातिर। एह रूढ़िवादी, परम्परावादी परिवारन में ई कतई संभव नइखे कि हमनीं के एह जनम में एक–दोसरा के जीवन साथी बनि सकीं जा.... आ तहार त लरिकाएइँ में बियाहो हो चुकल बा, भलहीं गवना नइखे भइल त का! फेरू एगो मासूम औरत के जिनिगी के चउपट करेके हमनीं के का हक बा? बेशक् हमनी के परेमी बनि सकींले जा, बाकिर पति–पत्नी ना। खामखां अपना जिनिगी के बरबाद करे प काहें तुलल बाड़ऽ? पहिले आपन कैरियर बनावऽ। हम जानत बानीं, तहार ई क्षणिक प्यार जिनिगी ना हो सके। इयाद रखिहऽ, दोस्ती में सेक्स कबो आड़े ना आवे। आजुओ हम दोस्त बानीं आ अगर चहबऽ, त ताजिनिगी दोस्त बनल रहबि।"

तहरा बात के गहिराई में उतरिके हम त हक्का–बक्का रहि गइल रहलीं। हती चुकी छोकरी आ अइसन गहन–गम्हीर बात! तबे त ई मैट्रिक के इम्तिहान पहिला दरजा में पास कऽ गइल आ हम बस इहँवें लटकल बानीं। धत् तेरे की! हमरा अपना आप से नफरत होखे लागल।

तहार पाक–साफ निष्कलुष मन हमरा के सचहूँ माफी दे देले रहे। अब तूँ हमरा पढ़ाई में मदत करे लगलू आ तहार प्रणय के सबक वाकई हमरा के जिनिगी से जोड़ि दिहलस। कबो तूँ एगो टीचर–अस सबक रटवावऽ, कबो ममतामयी महतारी–अस फल–मिठाई–पकवानो खाए प मजबूर करऽ, त कबो प्रेयसी मतिन सपनीली दुनिया के सैर करावत सुधारस के फुहार से सरोबोर कऽ द। गुरू, माई, प्रेयसी। आखिर कवन संबोधन दीं तहराके? साँचो शशी! ऊ तहार प्यार, तहरे प्रेरना रहे, जवना के बदउलत हमरा नियर आवारा–लंपट के मैट्रिक से बी0ए0 के पहिला दरजा हासिल भइल आ आजु अनपढ़–गँवार बनल रहला का जगहा सरकारी महकमा में अच्छा–खासा ओहदा मिलल। आजुओ हम समुझि ना पावेलीं कि आखिर ऊ कइसन सम्मोहन रह तहरा आँखिन में! तहरा रसभरल बतकही में? तबे नू ओने हमरा–तहरा माई–बाप के, गाँव वालन के खिलाफत बढ़ते जात रहे आ एने हमनीं के गहिरे आ गहिरे उतरत जात रहलीं जा– पावन पियार के समुंदर में। एक–दोसरा के मीठ बातन में आपन सुध–बुध भुला–बिसरा के।

जब तूँ डोली में बइठिके ससुरा गइलू, त एकान्त में कई दिन ले तहार तसवीर निहारत हम फूटि–फूटि के रोवते रहि गइल रहलीं। बिदा के बेला में तूँ सुहागिन बनल हमरा सोझा ठाढ़ रहलू। माँग में सेनुर के ललाई, हाथ में मेंहदी, पाँव में महावर आ बिछिया, गरदन में हीरा के हार, कलाई में खनकत चूड़ी–कंगन, कान में टॉप्स, माथ पर जगमगात टीका, नाक में नथिया, बदन पर सुहाग के सितार जड़ल साड़ी आ पूरनमासी के चान–अस खिलल चेहरा। आँखि से लोर के बून मोती मतिन टपकत रहे आ मर्माहत पीर लेले हम विदा करत रहलीं। तहरा चलि गइला का बाद कई दिन ले हम पगला–अस गाँव से बहरी निकलिके खेत–खरिहान में भटकत रहलीं। अमराई में कोइलर के कूक, लहलहात फसिल के हरियरी, ताल–नदी के लहरन के किलकारी.... कवनो कुदरती करिश्मा हमरा मन के बान्हे–बोधे में कामयाब ना हो पावन रहे।

तलहीं हमरा बहाली के चिट्ठी मिलल रहे आ गाँव के ओह गली–कूचा से, जवना में हर जगहा बस तहरे इयाद रचल–बसल रहे, हम एह महानगर में आ गइल रहलीं। बाकिर इहँवों तहरा के कहाँ भुला पवलीं। साँचो शशि! ई शरीर बेशक हमार ह, बाकिर हमार जिनिगी त तुहीं हऊ नू! ओह रात खा हम कतना भयंकर सपना देखले रहलीं! हमरा शशि के देह बरफ नियर ठंढा हो गइल बा आ उन्हुकर चिता सजावल जा रहल बा। परिवार के तमाम लोगन के आँखिन से लोर के गंगा–जमुना बहि रहल बा। लरिका बिलखत बाड़न स। सासु छाती पीटत बाड़ी... "ना–ना! पसेना से लथपथ होके हम उठि बइठल रहलीं। आँखि बरिसे लगली स। भिनुसार होते हम अटैची सम्हरले रहलीं आ तुरुन्ते गाड़ी धइलीं। रास्ता भर हम ट्रेन के रफ्तार के कोसत रहलीं। बेरि–बेरि निगाह घड़ी पर जाके टिकि जात रहे आ बेहद पछतावा होत रहे एह मानव तन पर। काश, हमहूँ चिरई लेखा उड़ि पइतीं!"

दनदनात पहुँचल रहलीं तहरा लगे। तहरा के सकुशल देखिके जनाइल, जइसे हमरे नया जिनिगी मिलल होखे। धड़कत दिल के बड़ा राहत भेंटाइल रहे। तहरा के देखते मन के मुरुझाइल सूरुजमुखी अचक्के खिलि उठल रहे। तूँ अपना पति से मिलववले रहलू। उन्हुका नियर जादुई प्रतिभा के धनी व्यक्तित्व से केहुओ के ईर्षा हो सकत रहे। जइसन तन, ओइसने मन। बुझिला उन्हुको के तूँ हमरा बारे में सभ किछु बता देले रहलू। तबे नू ऊ नाव लेते पहिचान लिहलन आ अतना मान–सम्मान दिहलन– अतना, जतना हम सपनो में ना सोचले रहलीं। सुख, समृद्धि आ शान्ति– सभ किछु उहवाँ मौजूद पाके हम अन्दाज लगवलीं कि

एकरा मूल में तहार गंगाजल नियर पाक–साफ मने रहल होई। लवटत खा तूँ बहुत किछु दिहल चाहत रहलू, बाकिर खाली तोहार पियारे काफी नइखे का? जवन किछु हमार बा, बस तहरे दिहल त हऽ।

"केकरा खेयाल में खोके गुमसुम हो जात बाड़ऽ जी? हम आइल रहलीं आत्मीयता भरल दू–चार बात करे–सुने खातिर, बाकिर तूँ पता ना, कवना दुनिया में चलि जात बाड़ऽ।" तूँ हमरा के झकझोरत शिकाइती लहजा में कहलू। मूड़ी झरहेटि के हम वर्तमान में लवटे के कोशिश करत कहलीं, "बस, तहरे इयाद में डूबि गइल रहलीं हाँ!"

नमिता किचन में ढूकिके नाश्ता तेयार करे में लवसान रहली। "साँचो शशी! हम तहरा इयादिए में अब तक के जिनिगी कटले बानीं आ ई हमार अहो भाग बा।" हम असलियत जाहिर करत कहलीं, "ना बिरजू! हमनीं दूनों के प्यार एक–दोसरा के सम्बल बा।" तूँ हमार बात काटत कहलू। "शशी! हमरा मन परत बा ऊ दिन, जब हम इहवाँ जांडिस के मरीज होके छटपटात रहलीं। सेवा–टहल खातिर केहू ना रहे। नमिता लरिकन का साथे अपना बहिन के बियाह में नइहर गइल रहली। बेहोशी के हाल में अस्पताल पहुँचावल गइल रहलीं। हमरा बेमारी के खबर पावते तूँ अपना पति के सँगे अस्पताल पहुँचि गइलू आ तन–मन–धन से हमरा सेवा में जुटि गइल रहलू। तूँ तमाम इज्जत–प्रतिष्ठा के ताख प राखि के एगो पतिवरता मेहरारू नियर जीव–जान से हमार सेवा कइले रहलू। अगर तहार पियार, तहार सेवा, तहार प्रार्थना हमरा ओह घरी ना मिलल रहित, त सचमुच हम कब के मरि गइल रहितीं। शशी, तूँ हमरा के नवजीवन देले बाड़ू। का तहरा के भुलाइल अपना आप के भुलाइल ना होई?" हम तहार तरहत्थी अपना लिलार से छुआ देत बानीं। आँतर के चाह बा कि एगो चुंबन जड़िके तहरा के आगोश में बान्हि लीं। तलहीं किचन से देसी घीव में तलल कचउड़ी के पलेट लेले नमिता आ धमकति बाड़ी आ हमनीं तीनों अलगा–अलगा दायरा में बँटा जात बानीं जा। भीतरे–भीतर ना जाने का–का पिघिलत आ खदबदात बा। पसीजत–भिहिलात बतासा जइसन। बहरी झमाझम बरखा होखे लागत बा।

❑ 204] VyhQku Hkou] vkj Cykd] ik0ck0u0% 115] iVuk ¼fcgkj½

बतकुच्चन

✍ **डा0 ओम प्रकाश सिंह**

पिछला दिने एगो सम्मानित पाठक के टिप्पणी आइल रहे कि भोजपुरी में 'श' के इस्तेमाल ना होला। उहाँ के भोजपुरी के बढ़िया जानकार हईं आ भोजपुरी पर लगातार शोध करे में लागल बानी। अब एह बात से त हमरो विरोध नइखे कि भोजपुरी में श भा ष के इस्तेमाल ना होखत रहे। भोजपुरी में संयुक्ताक्षरो के परंपरा नइखे रहल। इहाँ ले कि चिल्होर वाला 'ल्ह', अन्हार वाला 'न्ह' जइसन संयुक्ताक्षर लउके वाला के भोजपुरी में स्वतंत्र वर्ण मान लिहल गइल बा। बाकिर अब ले अगर कुछ नइखे भइल त आगहूँ ना होखे के चाहीं, एहसे हम सहमत नइखीं। सोच लीं कि अगर भगवान शंकर के संकर बना दिहल जाव त कतना बेजाँय लागी! टंगरेजी में तवर्ग के ध्वनि ना मिल पावे ओही तरह हर भाषा में कुछ ध्वनि के अभाव देखल जा सकेला। मराठी के ळ के उच्चारण दोसरा भाषा वाला खातिर कतना मुश्किल होला। भोजपुरी में कबो श भा ष के जरुरत ना पड़त रहे त ओकरा खातिर वर्ण ना बनल। बाकिर तब कैथी लिपि में लिखात रहुवे भोजपुरी आजु देवनागरी लिपि में लिखल जाले। एहसे श के इस्तेमाल मना कइल कवनो तरह से उचित ना कहाई। हम भोजपुरी के ना त विद्वान हईं ना व्याकरणाचार्य, जवन जायज लागेला, सही बुझाला तवना के इस्तेमाल कइल करेनी। आखिर सभे तरह तरह के विराम चिन्ह के प्रयोग करते बा नू, जबकि संस्कृत आ ओहसे उपजल बाकी भाषा में इस्तेमाल होखत पूर्ण विराम का अलावा सगरी विराम चिन्ह अंगरेजिए से आइल बा। भोजपुरी में देस लिखे वाला के गलत ना माने के चाहीं बाकिर अगर केहु देश लिखत बा त ओकरो के सही माने के चाहीं। अगर श के इस्तेमाल से बहुते विरोध होखे त वइसनका शब्द इस्तेमाल कइल जा सकेला जवना में श ना होखे। ना त साम आ शाम के फरक मेटा जाई। जरुरत बा कि एह बारे में लमहर बहस चलावल जाव जवना में भोजपुरी के बड़का विद्वान आ व्याकरणाचार्यो लोग शामिल होखे आ कवनो राय पर सहमत होखल जा सके। हमनी के हिन्दी आ भोजपुरी दुनू में काम करे के पड़ेला ता अइसन कुछ ना कर सकीं कि हिन्दीयो गलत लिखाये लाग जाव। एहसे हमनी के नवहियनो पर गलत प्रभाव पड़ सकेला। ओह लोग के भाषा में विकृति आ सकेला। एहसे हमरा विचार से भोजपुरी के बहुते जटिल भा छँटुआ बनवला के जरुरत नइखे। आगे रउरा सभ के मरजी। रउरा आपन विचार एहिजा लिख सकीलें। भाषा में विस्तार आ स्वीकार के गुंजाइश रही तबे न ऊ अउरी संपन्न आ पोढ़ बनी।

❑ Hkkst ifjdk MkV dke

अय अय अय हनुमान गोसाईं

प्रकाश उदय

प्रेम भइला के चलते फेल भइल त बहुत सुनले रहन बाबू नकबुल्ली सिंघ, बाकिर फेल भइला के चलते प्रेम भइला के समाचार जब सामसुनर से सुनले त सनकले त ना, काहे कि सनकले त ऊ बहुत बाद में, बाकिर जवन कइले तवना से ई त बुझाइए गइल कि कहियो.ना.कहियो सनकिहें। का कइले ? ईहे त बात बा, कुछ ना कइले। कुछ ना कहले। ना सरसले, ना उकठले; ना हँसले, ना उदसले। सामसुनर बेचारू के बुझाइल कि बुला सुनबे ना कइले। त फेर सुनवले। तब्बो कुछ ना, त कुछ उसुकवले। तब्बो कुछ ना, खुल के लइकी के जात के बारे में बतवले जवन ऊहे रहे जवन उनुकर आपनो रहे आ तवने बाबू नकबुल्ली सिंघ के रहे। तब्बो कुछ ना, त लइका के जात के बारे में बतवले जवना जात के ना ऊ अपने रहन ना बाबू नकबुल्ली सिंघ। तब्बो कुछ ना, ता हार.दाँव देके अपनहिंए गरियवले, हरामजादा फलनवो के, हरामजादी फलनियो के। तब्बो बाबू नकबुल्ली सिंह के मुँह से राम.रहीम कुछऊ ना निकलल। आल्थी. पाल्थी मार के बइठल रहन, बइठले रह गइले। बस, तनी भ दहिना, फेर तनी भ बायाँ गोड़ उठवले आ दूनो बेरा अपना जवना वायु.विमोचन.निनाद खातिर बाबू नकबुल्ली सिंघ अपना समाज में अलगा से जानल जालन तवन कइले। सुने में आइल कि सुन के, अइसन ताजा समाचार लेके आइल रहन जवन बेचारू सामसुनर तिनिका बिना नाक प हाथ धइले उठ जाए के परल। उठ के जब बहरा निकल गइले तब बाबू नकबुल्ली सिंघ उनका के बोलवले। बोला के कहले कि तुम्हारा मुँह महकता है। तुम सरवा नीम का दतुअन क्यों नहीं इस्तेमाल करता है ?

बाबू नकबुल्ली सिंघ माने ऊहे बाबू नकबुल्ली सिंघ जवन थोर.बहुत नकल क बल प, थोर बहुत पइसा आ पैरबी के बल प, थोर.बहुत हितई नतई मिला के दर्जन भर से जादहीं सवांगन के थाना कचहरी में नामजद बद भइला के बल प आ सबका से जादे, सवासेर सीधा आ सोगहग पसेरी भर के कटहर के बदला में

जोखन जोतखी उनुका जवना चमकन्त किस्मत के बखान कइले रहन, अपना ओही किस्मत के बल प तवन कइले जवन उनुका खन्दान में उनुका से पहिले केहू ना कइले रहे। ऊ अपना पहिलके हुमाच में मैट्रिक के बजर कपाट के पार हो गइले। आगे के हवाल ई कि जइसे ऊ मैट्रिक पास कइले तइसे इण्टर कइले, बीए कइले, एम्मे कइले, पीएचडी कइले, तइसे नोकरियो पवले। नोकरी का ? कौलेज में पढ़ावे के । बाबू नकबुल्ली सिंघ के कहनाम कि कोशिश त हम किए थे कलर्की के वास्ते, बाकिर का करते, जगहिए नहीं था। इन्तजारो किए। हई पिएचडिया जो किए सो उसी इन्तजारी में किए। अइसा नहीं कि कलर्की का जगह खाली नहीं हुआ, हुआ, बाकिर जौना एमपी को हम पैरबी में लगाए थे ऊहो सरवा एक्के उजबुक। उसको पते नहीं कि कौलेज में पोरफेसरे नहीं होता, कलर्को होता है।

बाबू नकबुल्ली सिंघ के ई जवन हिन्दी सुनल गइल तवना के सुनला के बाद ई जानल जरूरी बा कि एह हिन्दिए के लेक्चरार होके ऊ एह कौलेज में अइले। हिन्दिए के काहे?

– हिन्दिए के इसलिए बुड़बक कि जौन एम्मे हम किए थे तौन हिन्दिए से किए थे।

– काहे हिन्दिए से किए थे ?

– काहेकि ...

काहेकि जवना कौलेज से जवना सन में बाबू नकबुल्ली सिंह एम्मे करे चलले तवना कौलेज में तौना सन में सबका से दब्बू, दब्बू बुला ना कहे के चाहीं, दयालु, दोसरा के दुख बूझे वाला दूबे जी जवन रहन तवन जवना डिपाट के हेड रहन तवन डिपाट रहे हिन्दी डिपाट। दूबे जी बेचारू चाहो पियवला के, खइनियो खियवला के एहसान के जिनिगी भर ना भुलाय वाला जीव। गोड़ छुअते गनगना जाय वाला अइसन गतरे गतर गदगदी गुरु के एह कलजुग में केहू पावे त आपन भाग मनावे। जब बोलस मीठे बोलस आ केहू कतनो तींत बोले, मीठे मान के सुनस। उनुकर कहनाम कि मास्टर बेचारा किसी को दे ही क्या सकता है, सिवा दो.चार.दस.बीस. पचास.साठ.सत्तर.पचहतर नम्बर बढ़ाकर दे देने के या दिलवा देने के,

आ – उनुका मोताबिक – मास्टर प्रजाति मात्र के मोक्ष के लिए, सिवा इसके – आन उपाय कहूँ कछु नाहीं ...

अइसन दूबे जी क जवन परम पुनीत हिन्दी डिपाट ओही हिन्दी डिपाट से एम्मे कइला के नतीजा कि बिना दोसर कवनो गुरुजी के हाथ गोड़ जोड़ले, भा तुरले, बाबू नकबुल्ली सिंघ एम्मे कइले आ गुरुजी के बेटा.बेटी के तिलक बियाह में खलिसा समैना बाजा आ गाड़ी घोड़ा जइसन इन्जाम के अन्जाम दे के पीएचडी कइले आ आगे जवन भइले तवन भइले।

बाकिर ई कुल्ह त कहे.सुने के बात ह, असल बात ई ह ... चाहे, ई कुल्ह त असल बात ह, कहे सुने के बात ई ह कि हिन्दी दिवस के शुभ अवसर पर हिन्दी के जवना.जवना खासियत के जिकिर कइल जाला, हिन्दी के तवने.तवने खासियत प रीझ के जइसे बाकी सभ, ओसहीं बाबू नकबुलियो सिंघ

बाकी सभ सब्जेक्ट के एकोर कइ के हिन्दी पढ़ले आ हिन्दिए पढ़ले। केहू कहे कि ना, ई बात ना ह, असल बात ई ह कि दूबे जी ... त ओकर आ दूबे जी के अइसन के तइसन!

बाकिर, एकर माने ई ना कि बाबू नकबुल्ली सिंघ के केहू पढ़ावे लिखावे के ममिला में चउपटानन्द सरस्वती कहे। शुरू.शुरू में जरूर उनुका कुछ दिकदारी बुझाइल। पढ़े खातिर त पढ़े के ना परल रहे बाकिर पढ़ावे खातिर बुझाइल कि पढ़हीं के परी। कुछ अकिल त चलवले, जइसे क्लास में कुछ देर से गइल, कुछ देर तक हाजिरी लिहल, कुछ पहिलहीं निकल आइल, लइकन से हाल चाल पूछल, आपन बतावल, कवनो ना कवनो बहाना जोह के कवनो ना कवनो लइका लइकी के डाँटे ओटे में कुछ टाइम बितावल, कुछ पढ़ावहीं के परल त पान खा के पढ़ावल कि अपने ना बुझाय कि का बोलत बानी ... ''जाकर फलनवा किताब से पढ़ो, चिलनवा किताब से पढ़ो, तब्बो नहीं बुझाय तब, पुछला बिना नहीं रहाय तब, अलनवा से पूछो फलनवा से पूछो, तवना के बादो पूछना नहीं ओराय तो आओ, हमरे से पूछो, हम मना थोरे किए है''... आ तबो केहू पुछिए देल त '' जब ईहो नहीं बुझाता है त जा के भँइस चराओ, झुट्ठे अपना टाइम और गार्जियन का पइसा बर्बाद करने का कौन फैदा!' कुछ लफंगा लफाड़ी लइकन के पटियवले कि जवन स्टुडेण्ट क्लास में कुछ बन्तूपना देखावे ओकरा देने दस बीस आँख से गुड़ेर के देखल जाय। ऊ एहू खातिर

कम ना कइले कि कुछ संगी पढ़वनिहार लोग बिना कवनो दबाव के, अपना राजी खुशी से उनुकरो क्लसवा ले लीहल करे। लइकन में सबका से रसगर पढ़ावे वाला के रूप में फेमस डाक्टर आरार प्रसाद, जिनकर असल नाम राजा राम प्रसाद रहे बाकिर जिनिका के रतिराज प्रसाद के नाम से जादे जानल जाय – से त बाबू नकबुल्ली सिंघ के क्लास लेबे खातिर धउरल आवस। उनुकर एह मदद के पावे खातिर बाबू नकबुलियो सिंघ के उनुकर कम मदद ना करे के परल रहे। तीन महीना पहिले उनुका दुमंजिला प रोज रात के जवन ढेलवाही होखे लागल रहल, जवना के पुलिसियो ना रोक पवले स, काहे कि उन्हनी के पचास गो आउर जरूरी.जरूरी काम रहे दुनिया जहान में, तवना के बाबू नकबुलिए सिंघ रोकववले, अपना प्रताप से। ऊ दस बजे रात से लेके साढ़े चार बजे भोर तक डाक्टर आरार प्रसाद के छत प चढ़ के सीना तान के घूम.घूम के ढेलवाही करे वाला सरवन के गिन गिनके अतना निरघिन निरघिन गारी सुनवले एकसुरिए कि का मजाल कि फेरू कबो केनियो से कवनो ढेला सरवा डाक्टर साहेब के छत देने ताकियो पावे। हालांकि बाद में, बाबू नकबुल्ली सिंघ जवना लइकन के एह ढेलवाही के काम में लगवले रहन ऊ सिकाइतो कइलन स कि सर, रउरा अइसन निरघिन निरघिन गारी ना देल चाहत रहे, सुन के मान लीं कि हमन के खून खउल जाइत तब ? तब बाबू नकबुल्ली सिंघ मनले कि ई सिकाइत वाजिब बा, बाकिर ऊ का करस, ढेर दिन बाद अतना खुल के गरियावे के मिलल त उनुका से ठटाइल हा ना। उन्हनियो के माने परल तब, कि गारी के ज्ञान के ममिला में गुरुजिउआ असल गुरु बा। अपना खातिर असल गुरु सुन के बाबू नकबुल्ली सिंघ के छाती चौड़ा हो गइल आ तय हो गइल कि इण्टरवल में थम्सप लिम्का के साथे सिनेमा के एकाध अउर मैटिनी शो एह असल गुरु के असल चेलन के उनुका तरफ से बेमँगले मिल जाय वाला बा। डाक्टर आरार प्रसाद बाकिर, जब अपने त अपने, अपना कुछ अवरू संघतियन के, अइसन मोका प मोनासिब साथ देबे वाला बाबू नकबुल्ली सिंघ के कुछ.कुछ क्लास लेके उनुका के समाज सेवा के जादे.से.जादे मोका देवे के पाठ पढ़ावे लगले त बाबू नकबुल्ली सिंघ के अपना प्लानिंग प गौरव त भइबे कइल बाकिर गलानी जवना के कहल जाला कुछ.कुछ ऊहो हो गइल बुला। ऊ अपना के ओकरे बाद से, जब ना

तब, डाक्टर आरार प्रसाद के गोड़ प गिरे गिरे लेखा पावे लगले। उनुका एह गोड़ प गिरे गिरे लेखा भइला के भनक जब डाक्टर आरार प्रसाद के लागल त ऊ बाबू नकबुल्ली सिंघ खातिर कुछ अवरू नम हो गइले, कुछ अउरू गिरे गिरे हो गइले। तब, बाबू नकबुल्ली सिंघ कुछ से कुछ अउरू जादे गिरे गिरे हो गइले। तब, डाक्टर आरार प्रसाद त बुझाइल जइसे बिछ जइहें। तब, बाबू नकबुल्ली सिंघ बुझाइल जइसे बिछिला जइहें।

एक दिन ऊहो आइल कि बाबू नकबुल्ली सिंघ एह बिछलहर से लगलन थरथराय। उनुकर करेजा तक काँपे लागे ई सोच के अतना सीनियर डाक्टर आरार प्रसाद कहियो उनुकर झोरा मत उठा के चले लागस। ऊ उनुका से लगलन लुकाय। डिपाट में डाक्टर आरार प्रसाद बइठल होखस त उनुका भितरी जाय के हिम्मत ना होखे। देखते ऊ उठ के खड़ा हो जइहें आ तब उनुका के बइठावे में पसेना छूट जाई।

ई तब के बात ह जब, संजोग से, कौलेज के कुलेखा काल चलत रहे। सुलेखा नाव रहे को एजुकेशन वाला एह कौलेज के इतिहास में पहिले

पहिल बहाल भइल पहिला महिला टीचर के जिनिका अइला के चलते ऊपर झाँपर त कुछ ना बाकिर भितरे भीतर कौलेज के कन कन मे एगो भूचाल लेखा आ गइल। जवना सब्जेक्ट के, सौभाग्य के ममिला में साँढ़ समझल गइल, उनुका अइला के चलते, ओकरा के लोकल लैंग्वेज में साइकोल्जी कहल जात रहे। तब, सँउसे कॉलेज के फटीचर टाइप के जे टीचर रहे से कुछ दिन ले टीचर टाइप के टीचर लागे के कोशिश में लाग गइल आ जे टीचर टाइप के टीचर रहे सेकर बात बेवहार कुछ कुछ फटीचर टाइप होखे लागल – अइसन सुने में आवेला। ईहो सुने में आवेला कि पुरनिया प्रोफेसरान में से कुछ प्रोफेसरान, जिनिका के अपना पुरनिया भइला के बावजूद नवहा भइला के कवनो अहसास ना सतवलस, सुलेखा जी के एह आगमन के कॉलेज के सामूहिक करेक्टर पर अटैक मतिन मानल, आ ऊहे लोग बाद में एकरा के कुलेखा काल के रूप में इयाद कइल। बाबू नकबुल्ली सिंघ ओह कुलेखा काल में कुछ दुबकल दबकल मतिन लखात रहन, अइसन कुछ लोग बतावेला।

एकर असल कारन त ई रहे कि ओ घरी ऊ डाक्टर आरार प्रसाद के सादर प्रेम के प्रबल प्रकोप से भागल फिरत रहन। बाकिर केहू केहू ईहो कहेला कि ऊ ए डरे भागल फिरत रहन कि मिटिंग सिटिंग में भेंट भइला प कहीं सुलेखा जी उनुका नकबुल्ली नाम के मजाक मत उड़ावे लागस। तब ले, लोग बतावेला कि अपना वायु विमोचन निनाद खातिर जतना बाबू नकबुल्ली सिंघ जानल जात रहन ओकरा से जादे केहू के मजाक उड़ा देवे वाला आ उड़ा के जुड़ा देवे वाला अपना सुभाव खातिर सुलेखा जी जानल जाय लागल रही।

त एक दिन के बात कि जवना लइकन से बाबू नकबुल्ली सिंघ डाक्टर आरार प्रसाद के दुमंजिला प ढेलवाही करववले रहन उन्हनिए में से एगो, सुधीन्दर राय ऊर्फ बकोटा भाई बाबू नकबुल्ली सिंघ के सोझा सुलेखा जी के बारे में, उनका पेन्हला ओढ़ला बोलला बतियवला के बारे में कुछ अइसन अइसन बात बतवले जवना के सुन के जइसे अवरू अवरू लोग के मजा आवत रहे ओसहीं बाबू नकबुलियो सिंघ के आवल चाहत रहे बाकिर आइल ना। उल्टे ऊ उर्फ बकोटा भाई बेचारा के दबेर देले। बाकिर ऊ दबेरइले ना। उल्टे, कहले कि ए माट्साहेब, ढेर माट्साहेब बनबऽ त ठीक ना होई। आरार प्रसदवा से जा के बता देब कि तूहीं ओकरा दुमंजिला प ढेलवाही करवले रहऽ त सोचऽ जे का होई ...

सुनके बाबू नकबुल्ली सिंघ के डेराइल चाहत रहे आ ना डेराइल चाहत रहे त भड़कल त चाहते रहे। बाकिर ना डेरइले, ना भड़कले। उल्टे, उनका अपने ना बुझाइल कि मने मने तनी गिलपिल मतिन काहे हो गइले। कहले कि उर्फवा, पहिला बेर तोरा मुँह से मर्दाही के बात सुनलीं। आदमी के असहीं निडर होके बोले के चाहीं, सोझा नकबुल्ली होखस चाहे नकबुल्ली के नाना। एही बात पर, बोल कि का चाहीं तोरा, का खइबे, का पियबे ?...

सुधीन्दर राय उर्फ बकोटा भाई गड़बड़ा गइले। अपना नाँव के साथे उर्फ बकोटा भाई ऊ एसे रखले रहन खलिसा कि उनुका नेतवाही के सवख रहे आ

हाल.साल में जवन छात्र नेता लोग पनपल रहन उहन लोग के साथे कवनो ना कवनो एगो अजब गजब उर्फ लागल रहत रहे। फलनवा ऊर्फ दाढ़ी, चिलनवा उर्फ टेंगारी वगैरह वगैरह। पछिला बेर के चुनाव में कवनो कवनो टेम्पू, रेक्शा, पैखाना, पेशाबखाना प महामंत्री पद के कर्मठ उम्मीदवारसुधीन्दर राय उर्फ बकोटा भाई पढ़े के मिलल त लोग सुधीन्दर राय के त छोड़ देल बाकिर बकोटा भाई के उर्फ सहित्ते पकड़ लेहल। बाबू नकबुल्ली सिंघ त ऊहो ना, खाली उर्फवा कहके बोलावस। आज बाकिर उर्फ बकोटा भाई के उमेद रहे कि धिरावल सुनके बाबू नकबुल्ली सिंघ उनुका के उनुका असल नाम से बोलइहें। ना बोलवले त बेचारू अचकचा गइले। ऊपर से बड़ाई ठोंके लगले त अवरू कचकचा के अचकचा गइले। सोचले कि निकल जाईं ना त गुरुजिउआ के कवन ठेकान, तीन गो पिस्तउल रखले बा।

बाकिर निकले ना पवले। गुरुजिउआ डपट देलस कि सरवा, बिना मिठाई खइले जइबे त मूँड़ी ममोर देब। खा के रोए लगले कि गल्ती हो गइल गुरुजी, खीस में मुँह से निकल गइल हा ...। बाबू नकबुल्ली सिंघ तरह.तरह से उनुका के धिरजा धरवले बाकिर जतने धरवले उर्फ बकोटा भाई के भितरे ओतने हदस समात गइल।

साँझ के बाबू नकबुल्ली सिंघ अपना उर्फवा के लेले.देले डाक्टर आरार प्रसाद के घरे पहुँच गइले। खोलके बतवले कि हमहीं रउरा घरे ढेलवाही करववलीं, हमहीं रउरा छत प चढ़ क झुट्ठो.मुट्ठो के गरियवलीं आ रउरा अइसन हीरा आदमी के बुड़बक बना के आपन क्लास पढ़ववलीं ...

सुन के आरार प्रसाद पहिले त बुझाइल जे बेहोश होके गिर जइहें। बाबू नकबुल्ली सिंघ के बुझाइल जइसे हत्यारी लाग गइल होखे। गोड़ प गिर परले ऊ डाक्टर आरार प्रसाद के। कहले कि हमरा के मारीं, गरियाईं, माफ मत करीं हमरा अइसन पापी के ...

डाक्टर आरार प्रसाद कसहूँ.कसहूँ बइठे पवले।

बड़ा कोशिश क के बड़ा देर बाद कुछ बोले पवले। कहले कि ''बाबू नकबुल्ली सिंह, हम सपनो में ना सोचले रहीं कि रउरा एह कटेगरी के आदमी होइब...''

तब बाबू नकबुल्ली सिंघ बुला एह ताक में रहन कि कहाँ से धरती फाटे कि धउर के ओही में कूद जाईं, बाकिर डाक्टर आरार प्रसाद बुला बूझ गइले, कूद के खड़ा भइले आ देही के सँउसे दम लगा के बाबू नकबुल्ली सिंघ के जकड़ लेले। कहले कि महाराज, एह कल्जुग में दोसरा प अपना एहसान के बोझा लादे खातिर लोग कवन कवन ना कुकर्म करे आ एगो रउआ बानी कि आपन एहसान उतारे खातिर एतना बड़ झूठ बोले अपने से चलके हमरा घरे आ गइनीं! आन प अछरंग लगावे वाला ढेर देखनी बाकिर अपने प अछरंग लगावे वाला अइसन महामना मनई के अपना अतना भीरी पा के हम त निहाल हो गइनी...!

बाबू नकबुल्ली सिंघ त जइसे आसमान से गिरले। कहले कि ना जी, साँचे कहनी ह, हे सुधीन्दर राय से पुछवा लीं, ईहो रहन ढेला फेंके वालन में ...

मस्त हँसी हँसले डाक्टर आरार प्रसाद। आछा त ई सुधीन्दर राय हवे ? हम त इनका के उर्फ बकोटा भाई जानत रहीं, त ईहो गवाही दीहें राउर ? काहे ना दीहें, हम का नइखीं जानत राउर प्रताप! इनका अइसन एगो दूगो के कहो, जतना ढेला झिटिका होला दुनिया में, ओतना लइकन के रउरा खड़ा क दीं अपना तरफ से गवाही में, हम का जानत नइखीं! राउर त चरन धो के पीए के चाहीं महाराज ...

आ डाक्टर आरार प्रसाद भाग के घर के भितरे गइले। बुला कठवत में पानी ले आवे। जान छोड़ के भगले बाबू नकबुल्ली सिंघ आ पीछे पीछे उनुकर उर्फवो ...

रात के एह से ओह करवट होत, कबो उठत, कबो बइठत, कबो टहरत, कबो जाड़ा के सीजन में आपन पसेना पोंछत बाबू नकबुल्ली सिंघ जनले कि कइसे गाँधी जी एगो पतरसुटुक देह लेके एगो डँटुली डोला डोला के अंगरेज सरवन के भगा के सात समन्दर पार पहुँचा देले! अतना त हमार आ हमरा सँउसे खन्दान, सँउसे हितई नतई के जोर जबर से केहू के अइसन हदस ना भइल होई, केहू अतना दहशत में ना आइल होई जतना हमरा बाबू नकबुल्ली सिंघ के देही में एह डाक्टर आरार प्रसाद के एह नेह.छोह के, एह भाव भरोसा के दहशत अमाइल बा! सैकड़न टेररिस्ट मरल होइहें तब पैदा भइल होइहें एगो डाक्टर आरार प्रसाद ... बाबू

नकबुल्ली सिंघ पवले कि एह दुनिया मे दम देखवला से जवन कवनो जिनिगी में नइखे होखे वाला, नम भइला से तवनो हो जाई आ एही जिनिगी में ...

भगवान बुद्ध के ज्ञान लेखा एह ज्ञान के पवला के बाद वाला बाबू नकबुल्ली सिंघ कवनो दोसर बाबू नकबुल्ली सिंघ हवन। एह वाला नकबुल्ली सिंघ के बिना केहू के बतवले बुझा गइल कि नम होखे खातिर जरूरी बा कि सूखल काठ मत भइल जाय, लदरल फेड़ भइल जाय। आ ताही दिन से जवन बाबू नकबुल्ली सिंघ क्लास मत करेके परो एकरा खातिर का.का ना कइले, पढ़ावे लिखावे के काम के पँजरा मत जाय के परो, खलिसा एही खातिर, जवन बाबू नकबुल्ली सिंह शिक्षक राजनीति में अपना लायक कवनो जगह के जोगाड़ में लागल रहत रहन आ लहाइयो लेले रहन लगभग, तवने बाबू नकबुल्ली सिंघ एह ताक में रहे लगलन कि कब केकर क्लास खाली मिले कि अपने ढुकि जाईं।

जरनियाह लोग बतावेला बाकिर कि ई बात ना ह। बाबू नकबुल्ली सिंघ के एह धर्मान्तरण के पीछे कुछ अउर ना, कॉलेज के ऊहे कुलेखा काल रहे। एक दिन प्रिंसिपल साहेब जब सुलेखा जी के सलवार.समीज के बजाय साड़ी में आवे के पाठ पढ़ावत रहन 'ताकि महाविद्यालय की छात्रओं से अलग एक गरिमा' सुलेखा जी के साथे नत्थी हो जाय, तब बुला बाबू नकबुल्ली सिंघ ओइजे रहन। ऊ उखड़ गइले। उनका मोताबिक यह एक ठो छुदुर हिन्दूवादी सोच है जिसको कि घूरा पर लसार कर नहीं फेका तो हिन्दुस्तान उसी तरह से बूड़ जाएगा जिस तरह से पाकिस्तान बूड़ गया। क्या मतलब है कि मुसलमानी सलवार समीज पहिरकर केहू आता है तो आप उसको हिंदुआनी साड़ी पहनकर आने को कहते हैं, साफे सांप्रदायिकता हुआ यह तो जिसको कि बर्दास ही नहीं किया जा सकता है, वह भी बाबू नकबुल्ली सिंघ के रहते ...

प्रिंसिपल साहेब के ना बुझाइल कि एमें हिन्दू मुसलमान आ सांप्रदायिकता कइसे घुस गइल ऊहो ओह कॉलेज में जवना में किरियो खाय खाती कवनो मुसलमान ना, जेने देखऽ हिन्दुए.हिन्दू। बाकिर ई उनुका आजे ना, जहिया से बाबू नकबुल्ली सिंघ एह कॉलेज में अइले तहिए से बुझा गइल रहे कि इस आदमी के

मुँह लगना ठीक नहीं। 'जाने दीजिए, छोड़िए, यह मतलब नहीं था मेरा, आप भी बाबू नकबुल्ली सिंह' ... वगैरह वगैरह से काम चलवले आ काम चलियो गइल, काहे कि सुलेखा जी जब बाबू नकबुल्ली सिंघ के एकटक ताके शुरू कइली त बाबू नकबुल्ली के त

बुझाइल कि आइल साँस जाई ना गइल साँस आई ना। कहली कि आपका नाम तो बहुत सुना था बाबू सिंह जी, आई मीन नकबुल्ली जी, लेकिन आपको सुना आज ही और यकीन कीजिए कि आई ऐम इम्प्रेस्ड, आई मीन वेरी मच। चलिए चाय पीते हैं। 'बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी' चल देले। बाकिर अचिरे पता चल गइल उनुका कि हमेशा 'चलिए' के मतलब 'चलिए' ना होला। 'अरे नहीं, चलिए मिन्स बैठिए, चाय है मेरे पास, मेरे थर्मस में ...

चाह दुइए कप रहे। प्रिंसिपल साहेब कहले कि चाय मैने अभी अभी पी है, आपलोग पीजिए। त 'आपलोग' पीयल। जबकि ओह आपलोग में से एगो, बाबू नकबुल्ली सिंघ चहिते त कहिते कि चाय मैंने कभी नहीं पी है, आपलोग पीजिए। बाद में एह बात के लेके जे लोग जवन जवन बात बतियावल ओमें से एक बात ईहो रहे कि चाह में आ थर्मस वाला चाह में फरक होला।

होत होई, बाकिर भइल ना। बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी थर्मस वाला चाह पी त ले ले बाकिर पीके बताइयो देले कि ''पी त लिए हम आपके कहने पर, पर आगे से आप कहबो कीजिएगा त पियेंगे नहीं। हम माठा वाले पाठा हैं, थइयो थे, हइयो हैं आ रहबो करेंगे''। सुन के, हो सकेला कि सुलेखा जी के मन में ई आइल होखे कि लेकिन, बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी, मुझे तो चाह वाली राह पर ही रहना है, माठी वाली पाठी नहीं बनना' आ अपना एही माठा वाला पाठा के तर्ज पर माठी वाली पाठी वाला बात प उनुका हँसी छूट गइल होखे बाकिर ईहो हो सकेला कि उनुका के जवन गुदगुदवलस तवन 'हइयो है' आ 'थइयो थे' होखे। ऊ पुछबो कइली कि यह जो आपकी हिन्दी है, वह कुछ अजीब सी नहीं है ? बाकिर ई उनुकर सवाल नम्बर चार रहे। सवाल नम्बर एक रहे कि यह जो आपने हिन्दू.मुसलमान वाली बात की, साम्प्रदायिकता वाली, उसके लिए, आपको नहीं लगता कि यहाँ कोई जगह नहीं थी, कि आपने जबर्दस्ती की ? सवाल नम्बर दू कि आपने इस सवाल का बुरा तो नहीं माना ? आ सवाल नम्बर तीन कि यह जो आपका नाम है बाबू सिंह जी, आई मीन नकबुल्ली सिंह, उसको कुछ और नहीं होना चाहिए था ?... जैसे कि ... आई मीन कुछ और नहीं तो कम से कम ... आई मीन कि नकबुल्ला सिंह तो कम.से.कम होना ही चाहिए था आ सवाल नम्बर चार कि यह जो आपकी हिन्दी है ...

अइसन ना कि ईहे चार गो सवाल पुछाइल होखे, ईहो ना कि जवन पुछाइल होखे तवन एकसुरिए पुछाइल होखे, आ ईहो ना कि जवन पुछाइल होखे तवना के बाबू नकबुल्ली सिंघ जबाबे देले होखस। 'चलिए चाय पीते हैं' से लेके 'चलिए चाय नहीं पीते हैं, चलिए माठा पीते हैं, चलिए कहीं और बैठते हैं, चलिए ग्राउण्ड में टहलते हैं' के दिन पखवारा महीना साल दू साल के दौरान जाने कतना सवाल पुछाइल आ एही पूछा पुछउअल के चलते बाद में एह काल के कॉलेज के कुलेखा काल के नाम के नाम से इयाद कइल गइल।

ओह कुलेखा काल में बाबू नकबुल्ली सिंघ बजाय बाबू नकबुल्ली सिंघ के बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी के नाम से जानल गइलन। खाली एही से ना कि आई मीन नकबुल्ली जी जवना टाइप के रहन उनुके तवना टाइप के भइला के चलते, खुद सुलेखा जी जवना टाइप के रही उनुको ओह टाइप के भइला के चलते, डाक्टर आरार प्रसाद बतावेले कि एह कुलेखा काल के 'कु' में एह कौलेज के जवना कुकुरलोग के तरफ इशारा बा तवन कुकुरलोग कसमसा के रह गइल,... कइल त बहुत कुछ चाहत रहे लोग बाकिर कुछ करे ना पावल, हाथी बजारे गइल आ बजारे से आइयो गइल, कुकुरलोग के ईहे ना फरियाइल कि पहिले के भूँके त बाकी सब भूँके!

अब अइसनो बात ना रहे एकदम से। जेकरा जवन कहे के होला कहिए देला कसहूँ। कहबो कइल। बाबू नकबुल्ली सिंघ बाकिर पलट के जबाब ना देले केहू के। केहू केहू ईहो कहल, आ निमने मने कहल कि हरजे का अगर्चे जो ई जोड़ी

गाजा बाजा के साथ जमिए जाय जे बा से...। केहू केहू त ईहाँ ले कि ईहो कहल कि अगर रउरा कवनो संकोच बा बाबू नकबुल्ली सिंघ जी, त कहीं त हमहीं बात चलाईं...। बाबू नकबुल्ली सिंघ बाकिर पलट के जबाब ना देले एहू के। उनुका फुरसते ना रहे। एक्के त धउर.धउर के क्लास लेबे के रहे, दोसरे, क्लास लेबे खातिर परान दे दे के पढ़े के रहे, पहिले के पढ़ल त कुछ रहे ना। ऊ श्योर सक्सेस से शुरू करस, गाइड से पढ़स आ तब जाके सीरियस जवना के कहल जाला तवना किताबन के घोंकस आ जहाँ ना बुझाय तहाँ बिना कवनो लाज सरम के सीनियर से लेकर जूनियर तक, इहाँ तक कि अपना स्टुडेंटो स्टुडेण्टिन लोग से पूछे समझे के तइयार रहस। क्लास में हमेशा आपन गलती मान लेवे खातिर ततपर; ' नइखे आवत','पढ़ के बताइब', पूछ के बताइब' खातिर तइयार, 'तोहन लोग मे से केहू के आवत होखे त ऊहे बता देवे' के गोहार के साथे साथे जवन ना बुझाय तवना के बूझे खातिर आ बुझवावे खातिर अदबद के अपना वाला हिन्दी से खालिस भोजपुरी में ढुकि जाय वाला बाबू नकबुल्ली सिंघ के तनी अबेरे

से सही, बाकिर देर ना लागल अपना पढ़वइयन के नयनतारा बनत। अब जवन मास्टर अपना पढुअन के नयनतारा, तेकरा कहाँ फुरसत! ऊपर से सुलेखा जी के सवाल, सवाल प सवाल, सवाल में से सवाल आ जबाब के भितरियो से सवाल। चाहत त ई रहे कि बाबू नकबुलियो सिंघ कबो कुछ पुछिते, बाकिर सुलेखा जी जब पुछली कि आप को क्या कुछ भी नहीं पूछना है मुझसे, त कहले कि काहे नहीं पूछना है, जवन.जवन आपको बताना है, जब जब आ जइसे. जइसे आ जतना जतना तवन तवन हमको पूछना है, तब तब आ तइसे तइसे, ततना ततना ... लेकिन जवन नहीं बताना है आपको, तवन मत पुछा' जाय हमसे, इसी डर के मारे आपके बताने के पहले हमें आपसे कुछ पूछना है तो यही पूछना है कि बताइए कि क्या पूछना है आपसे ?

– अच्छा, तो डरते भी हैं आप ?

त सुलेखा जी के पता चलल कि बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी, ऊ जवन लिकिलिकि मास्टर बाड़े, डॉक्टर आरार प्रसाद, तिनिका से कतना डेरालन आ काहे। बाकिर, सुलेखा जी के पता ना नीक लागल कि बाउर, ई जान के कि अपना आई मीन नकबुल्ली जी खातिर ऊहो कम डेरवावन ना रही। कवन डर ? ऊहे डर जवन जुलेखा बानो से रहे उनुका। जुलेखा बानो के ? जुलेखा बानो ऊ जे, एम्मे में रहन जब बाबू नकबुल्ली सिंघ, तब उनुका साथे पढ़ेवालिन में से एगो रही आ जब.

जब क्लास में आवे बाबू नकबुल्ली सिंघ के नाम तब तब ओढ़नी से मुँह ढाँप के हँसत हँसत गिर.गिर परे वाली त अकेले ऊहे रही, जबकि अकेले एगो जुलेखे बानो रहली जिनिका चलते नकबुल्ली सिंघ के नाहिंयो चहला प क्लास में बइठे के परत रहे, पढ़वनिहार लोग के अरकच बथुआ अँउजा पथार बोलल सुनेके परत रहे, लिखवावल लिखे के परत रहे। बाबू नकबुल्ली सिंघ के कहनाम कि कितने बकलोल हैं हम इस बात को इसी से समझिए कि आपका सुलेखा नाम हमको उसी वाली जुलेखा बानो के पास ले भागा और प्रिंसिपल जब सलवार समीज को लेकर आपको टोके तो उसी जुलेखा का प्रताप कि हम बेबात के बात में अनेरिए हिन्दू मुसलमान को घींच लाए...

– घींच लाए ...?

– वही, खींच लाए, अब हमारे मुँह से 'खींच लाए' के पहले 'घींच लाए' ही निकल जाए तो हम का करें। हमहूँ जानते हैं क्या होता है, का नहीं होता, कि 'हमहूँ' कहना ठीक नहीं है, हिन्दी की टँगरी टूटती है इससे, पर करें का, हम तो भोजपुरी वाले ठहरे, हमारी हिन्दी में तो हमारी भोजपुरी ढुकी ही रहेगी ...

– ढुकी ही रहेगी ! आई मीन क्यों ढुकी ही रहेगी भाई ?

– ढुकी ही रहेगी क्योंकि अलग से बनी रहे हमारी भोजपुरी इसके लिए हमारे एजुकेशन सिस्टम में कुछ हुआ तो है नहीं। यह तो हुआ नहीं कि हमको हमारी भोजपुरी के जरिए कोई हिन्दी सिखाता। हमारे तो मन में बइठा दिया सबने आ बइठियो गया हमारे मन में कि हिन्दिए हमारा नेशनल कहलाने वाला लैंग्वेज तवने हमारा मदर टंग, हम तो सच पूछिए तो हिन्दी इसीलिए पढ़ते गए कि हमको लगा कि बाकी सब सब्जेक्ट तो पढ़ना पड़ेगा, हिन्दी तो हिन्दिए में है ही, उसको क्या पढ़ना, वह तो अपनहिए आ जाएगी, तो जो अपनहिए आ जाएगी हिन्दी, वह यही वाली है, जवन हम बोल रहे हैं, जवन हमसे बोला' रही है, हमारे लिए हमारी वाली हिन्दी, वह आपको अजीब.सी लगती है तो लगा करे... और आपको क्या लगता है, देखिए, सम्हर के, मतलब 'सम्हल' के बोले तो 'क्या' बोले कि नहीं, तो आपको का

लगता है कि आप जो बेर बेर आईमीन.आईमीन करती रहती हैं वह हमको अजीब सा नहीं लगता है, बाकिर का कीजिएगा, मतारी बाप बाल बच्चा को जनमते अंग्रेजी इस्कूल में पटक आएँगे तो और क्या होगा, आईमीन वाली बेमारी तो लगिए जाएगी ... लेकिन यकीन कीजिए, लिखते हम वइसा नहीं हैं जइसा बोलते हैं, 'ने' कहाँ लगता है कहाँ नहीं, तब हम इयाद रखते हैं, इयाद रखते हैं कि हिन्दी में मैं मैं करना होता है, हम हम से काम नहीं चलता, पता है कि कक्षा होता है, कच्छा नहीं होता, लइका लोग को बताता भी हूँ कि कक्छा बोलो कच्छा मत बोलो लेकिन अपने बोलता हूँ, मैं, इस मैं पर, गौर करिए मोहतरमा, कि अपने मैं बोलता हूँ तो पता भी नहीं चलता कि कब कक्षा में जाने के बजाय कच्छा में चला गया... और बस... ये जो दो बातें में ठीकठाक बोल गया, उसे ठीकठाक बोलने में, यकीन कीजिए कि हमारा मुँह दुखा गया ससुरा ...

इहँवे से बुला गड़बड़ भइल। बाबू नकबुल्ली सिंह यकीन करेके कहले त सुलेखा जी बुला सचहूँ यकीन क ले ली। यकीन क लेली बुला सुलेखा जी, कि जवन जुलेखा जी में रहे, जवना के चलते उनुका, आईमीन नकबुल्ली जी के, नाहिंयो चहला प क्लास में बइठे के परत रहे तवन कुछ ना कुछ उनुको में बा। एही के चलते बुला, ऊहो एक दिन ओसहीं, ओढ़नी से मुँह ढाँप के हँसत हँसत गिर गिर परली जहिया अपना क्लास के एगो वाकया सुनावत सुनावत बाबू

नकबुल्ली सिंह से ऊ हो गइल जवन .....

बाकिर ऊ बात बाद में। पहिले ऊ बात जवन ओह बात के पहिले, जवन बाबू नकबुल्ली सिंघ बतवले। ई कि बाबू नकबुल्ली सिंघ के सवख जागल बीए तिसरका साल के तवना पेपर के पढ़ावे के, जवना के लोग कहे कि सबका से कठिन पेपर ईहे – काव्यशास्त्र वाला। लोग मनो कइल कि जाय दीं महाराज, एक दू साल बाद एह पेपर के रउआ पढ़ाइब, बाकिर बाबू नकबुल्ली सिंघ काहे के जे माने जायँ। त ओही पेपर में रस सिद्धान्त के पढ़वला के बाद, जवन पढ़वलीं तवन पढ़ावे पवलीं कि ना, ईहे जाने खातिर हीरामती से पुछले कि हीरामती, हीरामती ही नाम है न तुम्हारा, तो हीरामती बोलो, रस के कितने अयअय होते हैं।

हीरामती अपना जगह प ठाढ़ 'जी क्या ?'

– रस के कितने अयअय होते हैं ?

– जी क्या ?

– अयअय .....

– जी .....

– कौन कौन होता है भले मत बताओ, पर कितने होते हैं रस के अयअय,

कम से कम इतना तो बता दो...

बाकिर हीरामती बेचारी के जइसे कुछ बुझइबे ना कइल। तब एगो लइका खड़ा भइल। अपना पढ़वला के निष्फल जात देख के उदास हताश बाबू नकबुल्ली सिंघ के धिरजा धरवलस कि सर, उसको पता है, बस अचानक आपने पूछ दिया है, इससे थोड़ा घबड़ा गई है। बोलो जी, रस के कितने अवयव होते हैं?

छुटते कहली हीरामती कि चार। कहली कि स्थायी भाव, विभाव, अनुभाव और संचारी भाव।

क्लास के बाद बाबू नकबुल्ली सिंघ ओह लइका के बोलववले। कहले कि बात क्या है सिरीमान जी, हम पूछे कि रस के कितने अयअय होते हैं तब कुछ नहीं बताई, तुम पूछे कि रस के कितने अयअय होते हैं तो फट से बता दी, बात क्या है, कुछ चक्कर चक्कर है का तुम दोनो में, है तो बोलो, डेराओ मत... सिरीमान जी बेचारू के कठेया मार देलस। पढ़े लिखे से मतलब राखे वाला लइका। घर के हालत एकरा से जादे के इजाजत ना देत रहे। बाबू नकबुल्ली सिंघ संजोग से ओकर घर परिवार के हालत से वाकिफ रहन, ऊहे नाम लिखवावे से लेके लाइब्रेरी से किताव दिआवे तक के जिम्मेवारी उठवले रहन। अइसन अछरंग प बुझाइल कि अब रोई कि तब। बड़ा हिम्मत बान्ह के वतवलस कि जवन दिक्कत रहे तवन 'अवयव' आ 'अयअय' के रहे ...

सुलेखा जी सुन के ओढ़नी से मुँह ढाँप के हँसत हँसत गिरली बाद में, सुनावत में बाबू नकबुल्ली सिंह त बुझाइल जइसे हँसत हँसत रो दीहें। ऊ सोचले रहन कि आज सुलेखा जी के मदद ले के ऊ अपना अयअय के अवयव में बदल दीहें, बाकिर से होखे ना पावल। जवन भइल तवना के उनुका कवनो अनेसा ना रहे। दूनो जना के हँसी जब अपना चरम प रहे तबे अचक्के में दूनो जना के हँसी रुक जइल।

सुलेखा जी पुछली कि बाबू सिंह जी आई मीन नकबुल्ली जी, आपने कुछ सुना ? कैसी आवाज थी यह ?

जवाब में बाबू नकबुल्ली सिंघ कुछ ना कहले, बस घुमले आ चल देले।

सुलेखा जी पता ना जनली कि ना जनली, जनली त कब जनली, बाकिर बाबू नकबुल्ली सिंघ कइसे ना जनिते। अपना एह वायु विमोचन निनाद खातिर त ऊ अलगा से जानल जात रहन!

अइसन ना कि एकरा बाद सबकुछ खतम हो गइल। बिना खतम भइले कहाँ कुछ खतम होला, बाकिर... बाकिर बीच में कुछ आकिर बाकिर आ गइल। कुछ संकोच में पर गइला लेखा हो गइल होइहें बाबू नकबुल्ली सिंघ। हो सकेला कि उनुका के संकोच में पा के कुछ संकोच में पर गइला लेखा हो गइल होखस सुलेखा जी। बीच में एकाध बेरा माठा पीए अइबो कइली जइसे पहिलहूँ आवत रही, आ अइली त पवली कि बाबू नकबुल्ली सिंघ जी थर्मस के चाह पी पी क दिन रात कुछ ना कुछ पढ़े में, अपना हिन्दी में ढुकल भोजपुरी में से हिन्दी के अलगे से आ भोजपुरी के अलगे से खड़ा करे में लागल बाड़े। बाबू नकबुलियो सिंघ के कबो कबो कुछ अइसन बुझाइल कि सुलेखो जी के हिन्दी कुछ कुछ भोजपुरिआइल जाता आ केहू के मजाक उनुका से अब ओतना आसानी से नइखे उड़े पावत। उनुका ईहो बुझाइल, आ सुलेखो जी के कवनो बात से एह बात के तस्दीक भइल कि जवना सिरिमान जिउआ से जवना हीरामती के साथे कुछ चक्कर वक्कर भइला के बात ऊ कहले रहन आ सुन के ऊ रोआइन पराइन हो गइल रहे तवने सिरिमान जिउआ के तवने हीरामतिया के साथे सचहूँ कुछ चक्कर वक्कर लेखा होखे.होखे हो गइल बा। कुछ खास त ना बाकिर बीए तिसरका साल के साइकोल्जियो वाला क्लास में अइसनके कुछ अन्दाज लागल रहे सुलेखा जी के, अइसन कुछ ऊ बतवली। सुलेखा जी के मोताबिक इसके पीछे वही, उस दिन उस श्रीमान जी से 'आप जो चक्कर वक्कर वाली बात कहे थे', उसीकी कोई भूमिका है। 'ऐसा भी संभव है' – इसकी तरफ उसका ध्यान आप ही ने एक तरह से खींचा।

सुनके बाबू नकबुल्ली सिंघ तनी अनसइबो कइले कि आप ऐसे क्यों कहती है कि 'आप जो चक्कर वक्कर वाली बात कहे थे'...

– नहीं कहे थे ?

– कहे क्यों नहीं थे, लेकिन आप कैसे ऐसे कह सकती हैं...

– क्यों, क्यों नहीं कह सकती ?

– 'आप कहे थे' – ऐसा कैसे कहिएगा आप, 'आपने कहा था' न कहिएगा! 'बात' को आप कहिएगा कि 'कहे थे ?' 'कही थी' न कहिएगा... और बताइए, अगर हमारे ही कहने से हुआ तो हम तो सिरिमाने जी से कहे थे, वह जो हीरामती है, उससे तो कहे नहीं थे हम, तो ऊ चक्कर.वक्कर में पड़ा सो पड़ा, ऊ काहे पड़ी...?

सुलेखा जी कहली कि ऐसे मामले में जब एक तरफ से कुछ होता है तो दूसरी तरफ से कुछ हो इसके लिए, श्रीमानजी, उस एक ही तरफ से होना काफी होता है...। एक तरफ से अयअय जैसा कुछ होगा तो दूसरी तरफ से अयहय जैसा कुछ हो ही जाय अगर, तो कैसे रोक लेंगे आप या आपके ...

'बाप', सुलेखा जी कहली ना, बाकिर नकबुल्ली सिंघ के बुझा त गइले होई। बाकिर कुलमिलाके एकर का माने भइल – बाबू नकबुल्ली सिंघ बूझल चहले त ना बुझाइल, ना बूझल चहले त कुछ.कुछ बुझइबो कइल। दूनो जना में एहर बीच जवन एगो निझइला निझइला अस आलम रहे तवना में एह चक्कर वक्कर वाला ममिला से कुछ उटकेरला उटकेरइला लेखा जवन भइल तवनो तनी तनी नीके लागल होई, दूनो जना के, ना सही खुल के, तनी थथमिए थथमिए के बतियवला से सही। एक दिन त सुलेखा जी हिन्दी डिपाट में बइठल रह गइली, एकन्ता पा के बाबू नकबुल्ली सिंघ के खलिसा ई बतावे खातिर कि जब श्रीमान जी जो है, उसके कहने पर, हीरामती जो है उसने बता दिया होगा कि रस के कितने अवयव और कौन.कौन, तब, श्रीमान नकबुल्ली सिंघ जी, आपने जिस नजर से एक दफा उस बालक और

एक दफा उस बालिका की तरफ देखा होगा उसका मतलब उस बालक ने, भले न समझा हो, क्योंकि बालक होते ही हैं थोड़े बम्मड़, लेकिन उस बालिका ने भी न समझा हो यह हो ही नहीं सकता क्योंकि ...

– बालिका लोग बम्मड़ नहीं होती...

– जी।

– और बालक लोग बम्मड़ होते हैं ?

– छोटे बम्मड़, क्योंकि बालक लोग कतनो त बालके हैं न ...

– कतनो त! बालके!

– हाँ। कतनो त। बालके।

आ सुलेखा जी झम्म से उठली आ चल देली। बड़कवा बम्मड़ जे रहन उनुका उठे में देरी लागल। गिरत भहरात लेखा घरे पहुँचले। पहुँचके चाह ना पियले, आल्थी पाल्थी मार के बइठ गइले। बइठ के, ढेर दिन बाद, भरपूर मन से, दुचार बेर में अपना वायु विमोचन निनाद से मन मुताबिक फारिग होके आपन अयअय से अवयव में जाए के प्रैक्टिस शुरू क देले – अ तब व तब य तब व ... अववव...धत्... अयवय... धत् धत् धत्...

ओही बेरा के बात ह कि सामसुनर पहुँचले। सामसुनर ऊ जीव जवन तिसरकी बेर बीए के पहिलके साल में फेल होके पहिला बे बाबू नकबुल्ली सिंघ के पास एह प्रोब्लेम के लेके पहुँचल रहन कि फेल भइला के चिट्ठी बाबू लगे कइसे लिखीं। दू साल से एके बतिया लिखत बानी कि फेल हो गइनी। अबकी बे गुरुजी, कुछ अइसन तरीका बताईं कि ऊहे मत लिखे के परे। गुरुजी बतवले रहन कि लिख दे कि रिजल्ट हो गइल, कवनो नया बात नइखे भइल।

ऊ दिन ह आज के दिन ह। धूर से रसरी बर लेवे वाला जीव सामसुनर बिना नागा, डेली पहुँच जाले बाबू नकबुल्ली सिंघ के घरे, कवनो ना कवनो खिस्सा कहानी लेके। आजो ले अइले कि गुरुजी, प्रेम भइला के चलते फेल भइल त रउरा सुनले होइब, फेल भइला के चलते प्रेम भइला के हवाल हमरा से सुनीं, सुनके सनक ना गइली रउरा त कहब कि का सुनवले रहे सामसुनरवा...।

सामसुनर सुनवले आ बाबू नकबुल्ली सिंघ सुनले कि कइसे हिन्दीवलू पाठक जी पढ़ावे के असकती बीए तिसरका साल के क्लास में एक दिन कहले कि आज तहनी के इन्तहान होई। टाइम फोर्टी फाइव मिनट। अपने से सवाल चुन ल स। लइका लोग सवाल चुनल, जबाब लिखल, पाठक जी लगे आपन आपन पन्ना जमा कइल आ घरे गइल। दुसरका दिने गजब भइल। पाठक जी रिजल्ट लेके अइले त केहू के दस में आठ, केहू के सात, पाँच, छौ बाकिर दू जने एकदम से फेल। आप त जानते होइब गुरुजी, एगो त सिरिमानजिउआ आ एगो हऊ हीरा किदो सोनामती... दुन्नो का दो एके सवाल चुनलन स। रस के कथी दो। आ ओही में कवन दो एगो लफज, अयहय किदो हयहय, जवना के ईहो गलती लिखलस, ऊहो गलती लिखलस। हद त ई गुरुजी कि पाठक जी जब डाँटत रहन त सिरिमानजिउआ कनखिए के भरे हीरामतिया के देख के का दो मुस्कियात रहे... फेल त गुरुजी हमहूँ कवनो कम ना भइलीं बाकिर अइसन

बेसरमी हम त ना कइलीं कभी। बताईं भला, दूनो में कवन मेल, न जात के मेल, ना औकात के मेल, बस एगो फेल भइला के मेल, ऊहो कवनो कौलेज अनवरसीटी के ना, एगो चिरकुट टाइप के इन्तिहान में फेल भइला के मेल... बताईं गुरुजी, हमरा अइसन अदमी त बड़का से बड़का इन्तिहान में फेल भइला के अइसन कवनो फैदा कबो उठइबे ना कइलस, एह सिरिमानजिउआ जइसन दुकड़िहा के बेंवत कइसे भइल अइसन सोचहूँ के...ऊहो हमरा रहते... हम त सुनिए के सनक गइलीं गुरुजी...

बाकिर बाबू नकबुल्ली सिंघ सुनके सनकले त ना, काहेकि सनकले त ऊ बहुत बाद में, बाकिर जवन कइले तवना से ई त बुझाइए गइल कि कहियो ना कहियो सनकिहें। का कइले ? ईहे त बात बा, कुछ ना कइले। कुछ ना कहले। ना सरसले, ना उकठले। ना हँसले, ना उदसले। सामसुनर बेचारा के बुझाइल कि बुला सुनबे ना कइले। त फेर सुनवले। तब्बो कुछ ना, त कुछ उसुकवले। तब्बो कुछ ना, त खुलके हीरामतिया के जात के बारे में बतवले जवन ऊहे रहे जवन उनुकर आपनो रहे आ तवने बाबू नकबुल्ली सिंघ के रहे। तब्बो कुछ ना, त सिरिमानजिउया के जात के बारे में बतवले जवना जात के ना ऊ अपने रहन ना बाबू नकबुल्ली सिंघ। तब्बो कुछ ना त हार दाँव देके अपनहिंए गरियवले, हरामजादा सिरिमानो जिउआ के, हरामजादी हीरोमतिया के। तब्बो बाबू नकबुल्ली सिंह के मुँह से राम.रहीम कुछुओ ना निकलल। आल्थी पाल्थी मार के बइठल रहन, बइठले रह गइले। बस तनी भ दहिना, फेर तनी भ बायाँ गोड़ उठवले आ दूनो बेरा अपना जवना वायु. विमोचन निनाद खातिर बाबू नकबुल्ली सिंघ अपना समाज में अलगा से जानल जालन तवन कइले। सुने में आइल कि सुन के, अइसन ताजा समाचार लेके आइल रहत जवन बेचारू सामसुनर, तिनिका बिना नाक प हाथ धइले उठ जाय के परल। उठके जब बहरा निकल गइले तब बाबू नकबुल्ली सिंघ उनुका क बोलवले। बोला के कहले कि तुम्हारा मुँह महकता है। तुम सरवा नीम का दतुअन क्यों नहीं इस्तेमाल करता है.....।

सामसुनर कहले कि गुरुजी, तहार मुण्ड ठीक नइखे, से त बुझा गइल, बाकिर तहार मुण्ड ठीक हो जाय ओकरा खातिर का कइल जाव तवन बतावऽ, करे लायक होई त करब, ना करे लायक होई त जाके नीम के दतुअन तूरब.....

बड़ा संतोख भइल सामसुनर के कि सुनके गुरुजिउया के हवा ना, हँसी छूटल आ हरहरा के। हँसते.हँसत कहले कि खूँटी प से कुर्ता उतार। त सामसुनर उतरले आ ऊहो कइले जवन हमेशा करत रहन आ बूझत रहन कि गुरुजिउआ बुझते नइखे। गँवे दस रुपया के एगो नोट ऊपर के पाकिर से सरका ले ले।

गुरुजी कुर्ता झरले। बबड़ी झरले। सामसुनर तनी अफसोस में रहले कि एगो अवरू नोटवा काहे ना खसका लिहलीं। बाकिर उनुकर 'गुरुजिउआ' जब दस के नोट निकाल के उनुका देने बढ़वले कि ले, एगो अवरू राख ले त सामसुनर अइसन सकपकइले कि कब हाथ बढ़ा के ले लिहले उनुका अपने ना बुझाइल। अतनो हिम्मत ना भइल कि गुरुजिउआ के मुँह देखके अन्दाज लगावस कि आजे के पइसवा निकलला के बारे में जानत बा कि रोज रोज के। भल मनवले कि गुरुजिउआ ओही घरी रिक्शा बोलवावे खातिर भेज देलस।

सुलेखा जी केवाड़ी खोललीं त पहिले ईहे पुछली कि ई के ह। बाबू सिंह जी, आइमीन नकबुल्ली जी बतवले कि ई सामसुनर हवे, दू दू गो नीमन नीमन नाम श्याम आ सुन्दर अकेले हथिया के बइठल बाड़े। आ इनिके मतिन सब सब निमनका नामन क अपना नाँवे लिखवा लेबे वाला लोगन के चलते हमरा मतिन मनइन के नकबुल्ली मतिन नाँव से काम चलावे के परत बा, बाकिर ई मत बूझिहऽ कि नकबुल्ली नाँव के कवनो मतलबे नइखे। सामसुनर नाँव के भले कवनो मतलब ना होखे, देखते बाटू कि सामसुनर केनियो से साम नइखन, अतना गोर बाड़े कि अँखियो भूअर भूअर बा इनिकर आ बबड़ियो, आ सुन्नर त सभे होला, तू कवन कम सुन्नर बाटू, त खाली सामसुन्नर के सुन्नर कहला क कवन माने मतलब, बाकिर हमरा नकबुल्ली नाँव के बड़ा स्पेशल मतलब बा। तहरा सुलेखा नाम के नइखे, हमरा पता बा। देखले बानी तहार फरवँठा मतिन बँगटहवा अच्छर... कवना बात के तू सुलेखा! बाकिर हमरा नकबुल्ली नाम के केहू काट ना सके, हमरा नानी के धइल नाँव ह, पढ़ल लिखल ना रही नानी ना त बेमतलब के बात बतियावे उनुको आइत, उनुको आइत बिना कवनो माने मतलब के नाँव धरे। बाकिर ऊ देखली कि उनुका नाती के नाक से सोरहो घरी नकबुल्ली मतिन पोंटा के ऐगो लर लटकल रहेला। तू पोंछत रहऽ ऊ लटकत रही। अइसन नाती के नाम ऊ नकबुल्ली धइली त कवन बेजाँय कइली? आ तूहीं बतावऽ सुलेखा, कि तू आज ले आपन नाँव सुलेखा से सुलेखी ना कइलू त काहे हम अपना नाँव के नकबुल्ली से नकबुल्ला करीं... ?

सामसुनर के पता चलल कि पाठक जी जब डाँटत रहन तब सिरिमानजिउआ कनखिए के भरे हीरामतिया

के देख के मुस्कियात रहे चाहे ना मुस्कियात रहे, हीरामतिया कनखिए के भरे सिरिमानजिउआ के देख के जरूर.से.जरूर मुस्कियात रहे। ऊ सोचत रहन कि पकिटिया में जवन दूगो दस के नोट परल बा, हो सकेला कि ओमें से एगो क नाम साम होखे, दुसरका के सुन्नर। सोचले कि गुरुजिउआ क हमार पूरा नाँव इयाद होइत, श्याम सुन्दर प्रसाद, त ईहो हो सकत रहे कि पाकिट में दस के एगो अउरू नोट होइत, प्रसाद नाम वाला। अतना सोच लेला के बाद ऊ एकबे सिरिमान जी देने आ एकबे हीरामती देने देखले आ सोचले कि गुरुजिउआ क ननिया गुरुजिउआ के नाँव नकबुल्ली ना राख के सनकी रखले होइत तब्बो कवनो बेजाँय ना रहे। औइसे, कुछ कुछ सनकी टाइप त गुरुजिउअन के जतिए होला

बाकिर ई नकबुलिया त सचहूँ के सनकाह बा। जे तहरा पाकिट से दस के नोट सरकवलस चुप्पे. चोरी, ओकरा के तू डिठारे ऐगो अवरू दस के नोट धरावऽ त तू ना भइलऽ सोगहग सनकी त दोसर के ? सामसुनर के इयाद परल कि उनुकर नानी एगो

कहनी सुनावत रहे जवना में राजकुमरवा के जिद रहे कि हमरा सोगहगे चाहीं। ई सोचके अचके उनुका देही में एगो फुरहुरी लेखा भइल कि कहीं हमहीं त ना हईं ऊ राजकुमरवा जवना के संजोग से सनकिए सही, बाकी एगो सोगहग के साथ मिल गइल बा! ई जब सोचले सामसुनर त एगो दोसर बात, सोचले ना सामसुनर, उनुका से सोचाय लागल। कि जब साइकोल्जी क सुलेखा जी, हिन्दी के नकबुल्ली जी के आज खालिस भोजपुरी में अइला खातिर 'का खियाईं का पियाईं' कइले बाड़ी, एह बात के बिलकुले बिसार के असल में ई लोग हिन्दी.फिन्दी भा भोजपुरी फोजपुरी में ना, रिक्शा में आइल बा, तब, अइसन शुभ के मोका प कहीं गुरुजिउआ से कुछ अइसन मत हो जाय ...

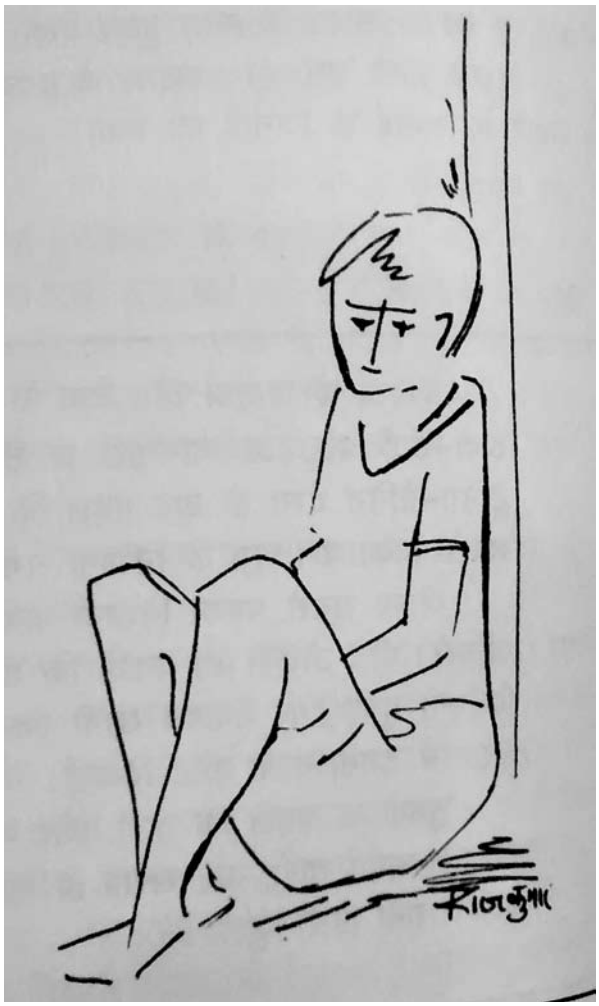

सामसुनर आँख मूँद के मने मने हाथ जोड़ले आ हनुमान जी से मनवले कि हे हे पवनपूत। अइसन शुभ सुअवसर पर गुरुजिउआ के ओकरा बाउ बिमोचन निनदवा से बचवले रहिहऽ...

सामसुनर के सँउसे हनुमानचलीसा इयाद बा। इम्तिहान में तीन घण्टा के टाइम ऊ अक्सर हनुमानेचलीसा लिख के काटेले। उनुका के हनुमानचलीसा पढ़े दिआय। अतना मन से ऊ पढ़त बाड़े कि उनुका नइखे सुनात कि का कहत बाड़े बाबू नकबुल्ली सिंह का कहत बाड़ी सुलेखा जी। अयअय कि अयहय। बल बुधि बिद्या देहु मोही... आ एह सनकहवो के। आ एह सनकाहिनो के। कुमति निवार सुमति के संगी... कि माने मतलब निकले कुछ इन्हनी के बात.बतकही के। विद्यावान गुनी अति चातुर... अयअय के अयहय के भला कवन मतलब! अय अय अय हनुमान गोसाईं... धत्ते रे की... जय जय जय हनुमान गोसाईं...

मने.मने, बाकिर अतना जोर से पढ़त बाड़े सामसुनर हनुमानचलीसा कि अउरियो केहू के दोसर कुछ नइखे सुनात!

जब सुनाई, तब्बे न आगे केहू कुछ कहे, कहके सुने, सुनके कहे पाई!

❑ Jh cyno ih-th dkyt]
cMkxko] okjk.klh 221204

बुढ़ारी के प्रेम

अयोध्या प्रसाद उपाध्याय

चम्पा के सुनरई पऽ रीझ के रधिका आपन बहू बना लेली। उनुका पढ़ाई के कवनो विचार ना कइली। घुँघराइल बाल, आम के फरुआ जस आँख, धनुहीं जस भौंह, पान जइसन ओठ, अनारदाना जस दाँत, सुगा के ठोर जइसन नाक, सोराही जस गरदन आ पातर पातर अँगुरी वाली चम्पा सब केहू के मन मोह लेत रही। जइसन नाम तइसन गुण रहे। गवने ससुरा अइली। सब केहू से घुलमिल गइली। सास के माई आ सुर के बाबूजी कहे लगली। बड़ ननद शोभा के बड़ बहिन मान लेली। दसे दिन बाद शोभा आपन ससुरा चल गइली।

गुलाब आई.ए. में इलाहाबाद पढ़त रहलें। साधारन कदकाठी के गुलाब रुपो–रंग में साधारने रहले, बाकिर पढ़े–लिखे में तेज रहले। रामनगीना समझदार रहलें। गुलाब के गुन समुझ बूझ के आपन दमाद बना लिहले। गुलाब रामनाथ के एकलौता बेटा रहलें। माई–बाबूजी के ख्याल गुलाब पऽ रहत रहे।

बी0ए0 पास कइला के बाद उनुकर नौकरी डाक विभाग में ऑडीटर के पद पऽ भइल। नम्बरे के आधार पऽ बहाली होत रहे। इनकर नम्बर बढ़िया रहे एह से कवनो बाधा ना आइल। नौकरी का नाँव से सब केहू खुश रहे, बाकी चम्पा अधिका।

गुलाब नियुक्ति पत्र बाबूजी के देखवले। रामनाथ हाथ में लेके पढ़ले– "बबुआ, एक हफ्ता के भीतरे ज्वाइन करे के बा!" – कहलें।

"हँ बाबुजी!" गुलाब जबाब दिहले।

जाये खातिर टंट घंट शुरू भइल। सामान बन्हाये–छन्हाये लागल। जरूरी चीजन के रख दिआइल। भोरहीं, बैग टँगले, माई–बाबूजी के गोड़ छू के गुलाब घरे से निकलत रहले, तबले झपट के चम्पो गुलाब के पाँव छूअत कहली– "हमरा के भुलाइब ना नू?"

जवना दिन गुलाब ज्वाइन कइले, ओही दिन साँझ के, घरे खबर दे देलें। रधिका भखले रही, बबुआ के पहिला दरमाहा से सतनारायण भगवान के कथा कहवावे के। एक महीना के बाद गुलाब के वेतन मिल गइल। रामनाथ बदलें, "बबुआ, तोहार माई भारा भखले बाड़ी। सतनारायण भगवान के कथा कहवावे के बा। दु दिन के छुट्टी में घरे आ जइहऽ।"

"अच्छा बाबूजी, हम आइब!" – गुलाब बतवलें।

दु चारे दिन में गुलाब पूजा के सामान के साथे आ गइलें। बाबूजी–माई के पैर छू के आसीरबाद पवलें। चम्पो गुलाब के पाँव छुवली। "हम तोहरा के भुलाइल नइखीं नू?" गुलाब पुछलें, आ चम्पा मुसुकात चल गइली। सतनारायण भगवान के कथा सुने टोला महाला के लइका, औरत सब केहू आइल रहे। कथा सुनके, परसादी लेके घरे गइल। ओह दिन चम्पा चहकत रही आ गुलाब खिलल रहलें। खुशी के माहौल रहे। संगही लोग परसादी खइलें। बिहाने गुलाब चल गइलें।

संयोग से सास–ससुर के बतकही चम्पा सुन लेली। खूब खुश भइली। खूब अगरइली। आपन भाग्य के सरहली आ देवता–पितर के गोहरवली।

रामनाथ, रधिका के कहत रहलें– "गुलाब के नौकरी करत साल से अधिक हो गइल। सरकारी घरो मिल गइल, बाकी खाये के तऽ होटले में बा। एह से काम ना चली। साल दू साल के... तऽ बात नइखे। अइहें तऽ कहब कि चम्पो के ले जा।"

"बुझात बा राउर आपन याद पड़त बा"– रधिका मुसुकी छोड़त कहली।

"काहे तूहूँ तऽ चाहते रहू"– रामनाथ जबाब देलें।

"आपन बात चम्पा गुलाब से कहली। गुलाब उनुकर मन जान... गइलें...।"

"माई–बाबूजी.... जबलें हमरा से ले जाये के बारे में ना कहिहें तबले अपना मन से कुछ कइल ठीक ना होई!" गुलाब कहलें।

चम्पा के मन में चकिया जाये के बात एकदम बइठ गइल बा। उठत–बइठत, सूतत–जागत हर घरी ओकरे धुन उनुका सुनात बा। अजबे उमंग–उत्साह से उमगल बाड़ी, समुद्र के हलफा जइसन उनुकर मन हिलकोराइल रहत बा।

होली के छुट्टी गाँवे बितवला का बाद गुलाब चम्पा के अपना साथे लिआ गइले।

एक दिन उदसले मन से रधिका कहली– "बहुरिआ के ना रहे से घर सूनसान लागत बा। बुझाता कि घर में केहू नइखे। रही तऽ कुछ–कुछ बोलत–बतिआवत रही।"

– "एही से उदासल बाड़ू? बतिआवे खातिर तऽ हम बड़लहीं बानीं!" – रामनाथ हँस के कहलें।

सुनते रधिका झुँझुआइ के बोललीं– "हँ नू, अइसन राउर मन भइल बा!"

रामनाथ हंसे लगले। रधिको मुसुकी छोड़ दिहली।

साँझी के बेरा चाय पीअत लोग बतिआवत रहे। अबहीं ले गुलाब के लइका–फइका ना भइलें, लइकन बिना घर उदास लागत बा। लइकन के किलकारी से घर–दुआर सोहावन लागेला। घर में चहल पहल रहेला। बाबा–आजी खातिर पोता–पोती खेलवना होलें।

"हँ हो! ई बात तऽ बा बाकी तोहरो तऽ आवते ना नू भइल रहे। कइ बरिस बीतला पऽ लरकोरी भइल रहू" – चिढ़ावै के ख्याल से रामनाथ कहलें।

ई बात सुनके रधिका जर–बुता गइली– "ना जाने काहे रउआ हमरे जरी लागल रहींला।"

ओही बेरा पऽ श्याम जी आ गइलें। "बइठऽ हो श्यामजी। कतहूँ गइल रहऽ का? लउकत ना रहलऽ!" रामनाथ पुछलें।

"तीन–चार दिन गाँवे ना रहीं। आजुये अइनीं हँ" – श्याम जी जबाब दिहले। भाई–भउजाई के प्रणाम क के बइठ गइलें। "बहुरिया नइखी तऽ तोहरे सब काम करे के पड़त होखी भउजी?" – श्यामजी चुटकी लिहले।

"अइसन? दूनों भाई हमरा के मुआइब का? भइया राउर पूआ पकइहें?" रधिका हँसत जबाब दिहली।

रधिका के बात रामनाथ के बेध देलस। नहला पऽ, दहला फेंकले– "का कहत बाडू? पूआ पकावे में मेहनत नइखे का? असहीं का पाक जाला?"

श्यामजी भइया–भउजी के नोंक–झोंक सुन–सुन के हँसत–हँसत लोट पोट हो गइले। जात–जात कहलें– "भउजी तू भइया के तंग मत करऽ। ना तऽ दूनों भाई मिलिके रउआ के...।"

देवर के रसगर बात सुन के रधिको हँस के कहली– "जाईं, जाईं बबुआजी, हम रउआ लोगिन के मर्दानगी देख लेब!"

श्यामजी के गइला के बाद रधिका पुछली– "भूख लागल बा? भोजन बना दीं?"

"हँ, बना दऽ।" रामनाथ कहले।?

"कवन चीज बनाईं?" – फेरू पुछली।

कहलें– "जवन बुझाय तवन बनावऽ।"

"साफ–साफ बताईं। कवन चीज खाइब?"

साफ–साफ ईहे बा कि "हमार मन आलू पराठा आ टमाटर के मीठ चटनी खाये के करत बा!" – जीभ चटकारत कहले।

"इहे नूं अबले पूछत रहीं तऽ रउआ एने–ओने बतिआवत रहीं। रउआ हमरा से कबो सोझ ना बतिआइंला!"

"हम तऽ हरदम सोझे बतिआईला। तूँ जे बाडू। एह से तोहरा टेंढ़े बुझाला!"

"हम काहे के टेंढ़ बतिआई? जवन बुझाय तवन रउआ कहीं। कवनो मुँह छेंकलें बानीं?" कह के रधिका रसोई घर में चल गइली।

संयोग से, जवन चीज रामनाथ खाइल चाहत रहलें ऊहे बनावे के रधिका पहिलहीं से सोचले रही। बाकी रामनाथ के साफ–साफ एके बार में ना बतवला के चलते दूनो परानी में कुछ देरी तक बतकूचन होत रहल। दाम्पत्य जीवन के ई सब सोहागे हऽ। एही से प्रेम प्रगाढ़ होखेला। अपनत्व के भाव बढ़ेला एह बतकूचन से एह लोग के मन–मिजाज पऽ कवनो तरह के चोट नइखे। अगर मन के कवनो एगो कोना में कुछ होइबो करी तऽ ऊ पानी के बुलबुला जस बिला गइल होखी। दूनों एक दोसरा के विचार के आदर करे जानेला। केहू अइसन कवनो काम ना करे, अइसन ना बोले जवना से केहू के मर्म घ्वाहिल हो जाय।

थोरिके देर में लोटा में गरम पानी दे के कहली– "जल्दिये आईं। ना तऽ ठंढा हो जाई गरमागरम पराठा खा के फरहर बन जाईं।"

रधिका खाना परोसि के बगल में बइठ गइली। रामनाथ कहलें– "जल्दी जा के अपनो के ले आवऽ। संगहीं खाइल जाई। रधिका उनकर बात कइसे टालस, अपना खातिर खाना परोसि के सँगहीं खाये लगली आ बतिआवे लगली।" रामनाथ पुछलें– "का हो! तोहर आपन बिआह के बात इयाद बा?"

"रउआ इयाद बा?" – रधिका सवाल के जबाब सवाले में देली।

"ना हो! हम तऽ भुला गइल बानीं।"

रधिका चुटकी लेके कहलीं– "अब बिआह के बात जानके का करब? चुपचाप खाईं ना तऽ सरक जाई। हर छन रउआ मजाके सूझेला।"

"ना हो हम मजाक नइखीं करत। साँचहूँ जानल चाहत बानी। अपना अतीत के जाने के चाहीं। ओसे प्रेरणा मिलेला।"

"साँचो के जानल चाहत बानी तऽ जान लीहीं। हमनी के बिआह के पचासा लागल बा। झूठ हऽ कि साँच, सुनले बात कहत बानी कि पचास बरिस बिआह के पूरा होखला आ एकइस गो लइका भइला पऽ फेरू बिआह कइल जाला। रउओ फेरू कर लीहीं।"

रामनाथ हँसोड़ रहले। रधिका के अइसन बात सुन के पुछलन– "फेरू तोहरे से कि दोसरा से?" तब ठठाके दूनों केहू हँसे लागल।

"चलऽ सूतल जाव। ढेर रात बीतल। बात करे में ना बुझाइल।"– कहके रामनाथ बिछवना पऽ गइले।

"सुनऽतानी, काल्हु चम्पा से बात भइल तऽ कहली रउआ लोग एहिजे आईं जा आराम रही।"

"त तूँ का कहलू?" – पूछलें।

"हम तऽ इहे कहनी कि 'अच्छा देखल जाई।'"

"हँ ठीके कहलू। घर–दुआर छोड़ के कहँवा जाये के बा? कवनो जरूरी होखी तऽ जाइल जाई।" – कहके.... चुप हो गइलें।

होत फजीर रधिका जागि के घरवे में कुछ

खुरखार करे लगली। रधिका के जगरम से रामोनाथ जाग गइले, आ काम में लाग गइलें। रामनाथ के दूध ले आवे के पहिलहीं घर में झाड़ू–बहारू क के रधिका निश्चिन्त रही।

दूध आवते झट्पट् चाय बना दिहली। संगही लोग चाय पिअले।

"हम खेत पऽ जात बानीं!" कहके रामनाथ खाड़ हो गइले।

रधिका कहली "ठीक बा जाईं। जल्दी आइब। खलिसा चाये पियले बानी।"

रामनाथ धूमधाम के अइलें तऽ रधिका पुछली– "मन असकतिआइल बा का? देहे नू हऽ। कइ दिन तऽ तेल लगवला हो गइल बा!" कह के तेल खातिर गइली।

"ना–ना, हम तेल ना लगवाइब। देही में दरद नइखे। तोहरा के देखते दरद भा थकइनी ना जाने कहँवा भाग जाला!" – रामनाथ कहि के खाड़ भइले तबले कटोरी में तेल लेले आ गइली।

"काहें देरी कइले बानीं। हम कबे के भोजन बना देले बानीं। अबेर होखत बा। जल्दी धोती बदल के आईं!" – रधिका कहली।

नहा धोआइ के रामनाथ चउकी पऽ बइठ के खाये के मँगले। "अच्छा" ले आवत बानीं।

"अपनो खातिर लेके अइहऽ!"

"रउआ खाईं। अबहीं हम ना खाइब!"

"ना खइबू त। हमहूँ ना खाइब!"

रधिका मुसुकात कहली– "रउआ हमरा के एकदम तंग क के छोड़ देले बानी। हम बाद में खा लेब! अबहीं बहुत काम परल बा!"

"बतावऽ कवन काम बा? हमहूँ हाथे पाथे करवा देइब!" – रामनाथ कहलें।

"ना, ना कवनो अड़गुड़ाह आ भारी काम नइखे!"

खाइ–पी के रामनाथ फेरू खेते के राह धइले। भर रास्ता सोचत रहले, "कवन काम रहे जवना के हमरा से ना बतवली। सुभाव से लाचार बाड़ी। एको काम हमरा.... से ना करावल चाहेली। भगवान हमरा के साँचो के लछिमी देले बाड़े। संगे जीये के आ संगे मरे के पचास बरिस पहिले अगिन देव के सोझ जवन किरिआ खइले बानी, हमहूँ ओसे पाछा ना हटब।"

रामनाथ के गइला के बाद रधिका सोचत रहली– "इनका अइसन अदिमी बड़ भाग से भेंटाला। हरदम ईहे चाहेलन कि सब काम अपनहीं कर दीं। हमरा के ना करे देलें। हम चाहींला ई नीरोग रहस। तबे नू हमहूँ ठीक रहब। भगवान इनका के लमहर उमिर देसु। बिआहे के बेरा पंडीजी बतवले रहले कि पति भगवान बरोबर होले। उनुकर सेवा–टहल कइला से जीवन के राह कट जाला। सबका सोझा जे हमार हाथ–बाँह पकड़ हिल, ऊहे हमरा खातिर सबकुछ बा। ओकरे संगे जीये आ मरे के संकल्प कइले बानी। मरते दम तक एह के कइसे भुलाइब।"

रामनाथ जब साँझ के लवटले तऽ दुअरे से 'रधिका' 'रधिका' बोलवले। रधिका झटकले अइली।

"कहीं! का कहत बानी?"

आज तऽ गजबे हो गइल। बार बार तोहरे इयाद आवत रहल हा। भुलइलो पऽ ना भुलात रहलू हा। ऊ हँस के कहलें।

"कहिया के छोह करे वाला हईं जी? खाली आपन काम निकाले के जानीलाँ? राधिका मुस्कियात पुछली।"

राधिका मेथी के लड्डू कटोरा में ले अइली। ओहमे से एगो मेथी रधिका का ओर बढ़ा के कहले– "लऽ तूहूँ खा।" पानी पियला का बाद बड़ा अहथिर होके कहले, "हम चाहत बानी कि तोहरा के बबुआ के पास पहुँचा दीं। हमरा कारन तोहरा तकलीफ उठावे के परत बा। ओहिजा आराम से रहिहऽ!" रामनाथ कहलें।

ई कहला के कहल हो गइल। छान–पगहा तुरावे लगली, "ना, ना रउआ के छोड़ के अकेले हम ना जाइब। हमरा के सुख करे के भेजत बानी कि दुख सहे के?" राधिका खुस होखे का जगहा दुखाइ गइली।

रामनाथ बार बार समुझावसु बाकी समुझे खातिर तइयार ना रहली। तब रामोनाथ रधिका के खिसिआइल देख के गुरमुसिआ गइलें। कुछ देरी से केहू केकरो से कवनो बात ना कइल। असल में प्रेम के अटूट धागा से कसके बान्हाइल ओह लोग का मन में छल कपट ना रहे। एक दोसरा के प्रति प्रेम आ विश्वास रहे। कबो–कबो क्रोध अइलो पऽ बहुत देरी तक ठहरे ना। ओही बेरा श्याम जी आ गइले। हाल चाल पुछलें– "कइसन बाड़ू भउजी?"

"ठीके नू बानी" मेहरइले राधिका कहली।

"अइसे काहे कहत बाड़ू? कवनो बात बा का भउजी?" श्याम जी पुछले।

"बुढ़ारी में राउर भइया सठिया गइलें। हमार नीमनो बात माने पऽ तइयारे नइखन। गुलाब के फोन आइल रहे कि तू लोग अहिजे आवऽ जा। ई हमरा के अकेले भेज के अपने एहिजे रहल चाहत बाड़े। हम कहत बानी कि दुनों आदमी संगे चलल जाई। एगो जीव एहिजा आ एगो जीव ओहिजा ई ठीक नइखे। एक दोसरा खातिर हरदम परान टँगाइले रही। एही

बतिया पऽ इहाँ के खिसिआ गइनी हं, तऽ हमहूँ....। अब रउए बताईं हमार कवन गलती बा?”

बगले में बइठल रामनाथ सुनके मुसुकाये लगलें। कहलें– “तोहार भउजाई हमार पोंछ अब काहें पकड़ले बाड़ी? आराम से बेटा–पतोहू के पास रहस। संगे हम रही चाहे ना। हम कवना काम के? जब कुछ करहीं ना देली। दिन–रात खटत रहेली, जवन हमरा अच्छा ना लागे। हम तऽ ईहे सोच के आपन राय देनी।”

सुनके श्यामजी हँस दिहले। आज ले केहू पति–पत्नी के ममिला नइखे फरिअइले। कोर्टो–कचहरी में सुलहे–सपाटा होला। कवन फेरा में हम उराह जइसन परल बानीं। कवनो बात नइखे ई झगड़ा झूठ–मूठ के बा। रुसा–फूली तऽ मरद–मेहरारू में कबो–कबो होइबे करेला। फेरू कुछ सोच के कहले, “भउजी हमरा के पंच मनले बाड़ी। रउआ का कहत बानी भइया? अगर रउआ, हमरा के पंच नाहियों मानब, तबो हम एह ममिला के फैसला सुनइबे करब... भउजी के कहनाम सोरहो आना साँच बा। एह उमिर में अकेल रहे के ना हऽ। अकेले रहे के मतलब हऽ खतरा मोल लीहल। बुढ़ापा बितावल पहाड़ हो जाला। एह उमिर में अलग–अलग रहल बीपत के घर हऽ। बुढ़ारी में दोसर केहू पंजरा ना सटे, भागल चलेला। बुढ़वे आ बुढ़िया आपन मन के बात बतिया के शेष जिनिगी काट लेला। दूनों एक दोसरा सच्चा मित्र होला। दुख–सुख के साथी होला। सँगे रहल बुढ़ारी के दवाई हऽ! साँच कहीं त असल प्रेम एही समय लउकेला।”

दूनों जाना– हँसे लागले। रामनाथ कहलें, “हम, एह लड़ाई में आपन हार मान लेनी। उनुका जीतला से हम खुश बानी। एह खुशी में उनुका हमनी के मिठाई खिआवे के चाहीं।”

“हार–जीत के कवनो बात नइखे। बात बा एक उमिर में दूनों के संगही रहे के। दुनों एक दोसरा के सहारा बनी। हम बिआहे के दिन संगे जीये आ संगे मरे के संकल्प कइले बानीं।” दइब छोड़ दोसर केहू छनो भ खातिर रउवा से हमके अलगा नइखे कर सकत।” रामोनाथ कम ना रहलें। हँसि के कहले – “साँच पूछ तऽ हमहूँ कबो तोहरा से अलगा ना रहल चाहींला। तोहरा के जबले ना देखींला, बुझाला कवनो चीज भुलाइल बा। हम तऽ तोहार इम्तहान लेत रहनी हाँ कि हमरा के तू साँचो के प्यार करेलू कि झूठो के?” कहत–कहत रामनाथ के आँख डबडबाइ गइल।

रधिको का रोवाई बरि गइल! ऊहो अँचरा से आँख पोंछे लगली।

▫ lkdr] ihj ckck jkM] Mh0,e0 dkWBh
d! ikl] vkjk ¼fcgkj½

गजल

✍ **ब्रजेन्द्र नारायण ‘शैलेश’**

पास तोहरा कह ऽ आईं कइसे
पीर एह दिल क’ सुनाईं कइसे

झूठ मनब ऽ, जवन कहब बाकिर
साॅच हियरा क देखाईं कइसे

शहर में आइ, चुपे चलि गइल ऽ
बेकली मन क बताईं कइसे

होइब ऽ निर्मोही रहे नामालूम
छूर एतना कि सताईं कइसे

तूँ त ऽ ‘शैलेश’ के भुला दिहल ऽ
नेह तोहरा से लगाईं कइसे

▫ Mk0 “kSyUnz ukjk;.k f}osnh] xzk0 vjxh] ftyk&pUnkSyh

अलबलाह

रमाशंकर श्रीवास्तव

बाबूजी के त खाली डांट–डपट करे आवेला। कबो–कबो हमरो पर हाथ चला दीले। केतना जोर से हमार गर्दन पकड़ के सिर के बाल खीचनी 'बउक कहीं के, आपने ध्न लुटावे खातिर तहार जनम भइल बा। एक छँइटी गेहूँ ओह लड़की के देबे के का मतलब ? त जो ओकरे लगे, बियाह कइ के रह जो।'

बाबूजी हमार बाल छोड़ देहनी। कहनी कि जाके एगो कुर्सी उठा लियाव। फेर ओही पर बइठ के हमरा के समुझावे लगनी 'तहार इ बहके के उमिर बा। कुंवार आदमी पर दुनिया पहिले अछरंग लगावेले। सुने में आइल ह कि जवना लड़की के तूँ छिपा के चीज दे देलऽ, ओकरा से तू प्रेम करेलऽ। लेकिन हमार खयाल बा कि उ तहरा के भरम में रखले बिया। तहरा जइसन बउकाह से कौन लड़की प्यार करी। बाकिर तूँ ओकरा आगे पीछे हमेशा लागल रहेलऽ। तहार शिकायत हमरा लगे पहुँच गइल बा। अब ओने मत जाइल करऽ। उ आपन मतलब निकाले खातिर तहरा से प्रेम करऽतिया।

रमेश खड़े–खड़े रोए लगले। केहूं त बोल पवले 'ना बाबूजी', कहे के बहुत कुछ रहे मगर कह ना पवले। आज उ हकलाह ना रहते त बाबूजी से आपन मन के सारा हाल बता देते। चालीस के उमिर लागे जात बा। बाबूजी तबो बेपिफकिर बानी।

अब उ गाँव भर के लइकन के बउकाह चाचा रहले। अब त कुछ लइका उनका के बाबो–दादा कहे लगले। आपन शादी ना भइला के दुख कम ना रहे। उ सब कह ना पावस। घर में माई, बाप, बाबा सभे रहे – दू गो छोट भाई के बेकत आ बाल–बच्चा रहे। मगर उनकर बेचैनी समझे के केहू तइयार ना रहे। घर–परिवार के काम करे में लागल रहस। हकलात–हकलात गाँव के कौनो आदमी पूछ पड़ल – 'तहरा केतना बाल–बच्चा बा ?' लोग उनकरा से हँसी–मजाक करे। हर आदमी उनका से पूछे – ऐ रमेश, कवनो लड़की पसन्द होखे त बोलऽ, तहार शादी ओकरे से करवा दीहल जाई।

केहू कहे – ऐ रमेश जी, तब हमनी के शादी के न्योता, कब देत बानी ? पफागुन चढ़ गइल, शुभ काम जल्दी होखे के चाहीं नाहीं त इहो साल टल जाई।

जाड़ा के दिन में एगो गाछ के नीचे अलाव तापत एक आदमी राय देहल – ऐ रमेश जी, मन के बात कबो खोल के अपना बाबूजी से कह द कि हमरा शादी में अब देरी मत करीं।

आरे भाई, शादी संजोग के चीज ह। भावी–जुटी त केहू के रोकले ना रुकी। अलाव घेर के बइठल लोग में इहे चर्चा होखे लागल – संतोष सिंह कहले 'अच्छा रहऽ, अब हमहीं तहरा बाबूजी से कहत बानी। लड़की त हम उपरिया देब ? हँसी ठाठा में उड़सल बैठकी।

रमेश के बाबूजी के लगे बात पहुँचल। उनकर जवाब रहे, 'केतना बेर समझाईं। रमेश कमासूत नइखन, दोसरे दिमागो से तनी कमजोरे बाड़े। हकलाह–बकलोल के कवन भरोसा बा। बेटिहा आके एह अध पागल के देख के लउट जात बाड़े सन। के अपना बेटी के बियाह एह पागल से करी। कहीं मेहरारुए के हत्या कर देहलस त सउंसे घर तबाह हो जाई। सुतला रात में रमेश अपना बाबूजी के कबो–कबो जगा के कहस, 'हमार बियाह जल्दी कर दीं। लोग हमरा के रिगावेला ? रमेश के दिमागी हालत के ठीक करे के केतना हकीम–डॉक्टर कोशिश कइले। बापो संतोष क लेहले कि रमेश के किस्मत में कुंवारे रहल लिखल बा।

दोसरा के बियाह–बारात देख के रमेश मने मन छटपटास। नया कनिया देखे खातिर देर तक ले भीड़ में खड़ा रहस। मन ही मन कुछ बुदबुदइबो करस – कबो हँसियो देस। गाँवे के केहू उनकरा के समझा देहल – 'कुछ दिन अउर दम धर रमेश, मस्तक के रेखा कहता कि तहार बियाह होके रही।' रमेश के मन हहरा के रह जाव। कबो–कबो घास चरत पड़रू के पकड़ के अपना गला से लगा लेस आ पूछस – बतावऽ त बेटा, हमार जनाना कहाँ बइठल बाड़ी। कुल कुलवांसी भादो मासी, बोलऽ त हमार बियाह केने होई ?

एक दिन अंगना में जाके अपना माई के लगे खटोला पर बइठ गइले, पुछले – 'माई, हमार बियाह कब करबू ? माई के मन भीतरे–भीतरे रोए लागे। एह अलबलाह के भगवान जब साफ वाणी ना देहले। त दिल काहे दे देहले ? खबर मिलल कि रमेशो के घर बस जाई। कौनो दूर गाँव के गरीब आदमी आपन बेटी देबे के तइयार बा। राताराती एगो मंदिर में रमेश के बियाह हो गइल।

रमेश के खुशी के ठेकाना ना रहे। जेकरे ना सेकरे से कहस – हमार बियाह हो गइल। लोग अब मजाके में पूछे – 'अपना जनाना के प्यार करेलऽ कि ना रमेश ? रमेश के हाव भाव देख के उनकरा जनाना के मन भीतरे–भीतर रोये लागल। अइसन पागल से बियाह हो गइल कि कवनो जनम में सुधरल नइखे जा सकत। उ अलगे सूतस, ठीक से बातो ना करे। उनकर डहकत मन के पीड़ा सुने के कान रमेश के पास ना रहे।

रमेश खुशी में उछल पिफरस। अपना औरत के कपड़ा लता तक खुदे पफींचस। मुँह हाथ धेए के पानी देस। परिवार के लोग अलगे हँसे।

कुछे दिन बीतल कि रमेश दुअरा के ओसारा में सूते लगले। पुछला पर कहस – केहू से कहिहऽ मत, हमार जनाना मना कइले बाड़ी। उनकरा लइका के होनहारी बा। एह से हमरा के अलगे सूते के कहले बाड़ी।

जब हमार बेटा हो जाई तब हम फेन उनकरा लगे सूते लागेब। रमेश बाजार से बर्फी कीन के ले आवस आ अपना जनाना मीना के खीयावस। मीना के हर

सुख के ध्यान रखस।

एक रात बइठल–बइठल मीना के चेहरा निहारत रह गइले। अलबलाह नियर बोलस। मुँह से बोली ठीक से ना निकले। खुश होके कुछ बोले के चहले तले मुँह से लार टपक गइल, केहू त रे कह पवले – हमरा से लोग कहेला कि अपना मेहरारु के प्यार करे के चाहीं। मीना, हमार दिमाग तनी कमजोर नू बा। त हमू प्यार कइसे कर पायेब ? सभे हमरा के आधा पागल कहेला। इ झूठ बात ह मीना। हम तहरा के ढेर प्यार करेके चाहीले। मुनवा अपना मेहरारु के नया बिलाउज कीन के देला। हमूं तहरा खातिर बिलाउज कीन के ले आएब। हमरा पर बिसवास करऽ मीना, हम तहरा के खूब प्यार करीले। जब तहरा के ना देखीले त हमार मन ना लागेला। हम आज तकले तहरा के प्यार ना कइनी। एक बेर हमरा के सिखा द – प्यार कइसे कइल जाला। सुतला रात के जब अंघी टूट जाला त मन करेला कि कंवाड़ी खोल के तहरा लगे चल आईं। तू हमरा के आज तकले आपन देह ना छूए देहलू। लोग कहेला कि मीना तहरा के प्यार ना करेली। सांचो मीना, तू हमरा के प्यार ना करेलू ? मंदिर पर के पुजारी बाबा कहत रहले – पूजा करावे के पड़ी। काल्ह चलऽ तू, पंडित जी से पूछल जाई। हम आज तकले केहू दोसरा से प्यार ना कइनी।

रमेश हकला–हकला के आपन पूरा बात कह जास। उनकर बात–व्यवहार पर मीना के दया आवे आ मन में भीतर से चीत्कार उठे। भगवान हमरा से इ कइसन बदला लेहले। उनकरो मन हुमके – उहां का दुअरा सूतल बानी, हमहीं जाके जगा दीं – कहीं कि रउआ दुअरा सूतला से हमार मन के दरद ना मिटी। चली उठीं, भीतरी चलीं। मीना के हाथ रमेश के कंधा से छुआ गइल। रमेश चिहा के उठले – केहऽ ? केहऽ ? हमार कान्हा के छूअल ह ? रात के हल्ला मचला के डर से मीना धीरे से अन्दर चल गइली। पलंग पर लेटली मगर अंघी ना आइल। पूरा रात पलक खुलले रह गइल। उनकरो भीतरे पुकारे उठे – इ कइसन प्यार ह। बियाहो, भइला पर मन पति के स्पर्श खातिर छटपटात रह गइल। जब उहां का लगे बइठनी त बाबूजी बहरा बुला लेनी। मीना बहू बनके जब अइली ओही दिन चाचा जाके कह देहले – अभी तहरा लोगिन के साल भर अलगे रहे के बा। ज्योतिषी जी कहले बाड़े कि एह बीच अगर दुलहिन गर्भ धारण कइली त बच्चा गूंग आ बहिर पैदा होई। पहिलके दिन दूनू प्रानी में डर बइठ गइल। हजामिन आके एही गाँव के तीन घर के घटना सुना गइली। आपन जिनिगी तबाह करे के पहिले अच्छी तरह सोच लीहऽ आजतकले हमरा खान्दान में कवनो बउक–बहिर के जनम ना भइल। मीना के दशा साँप छूछूंदर नियर हो गइल रहे। उ रमेश के बांह खींच के कबो–कबो लगे बइठा लेस। रमेश पत्थल बनल रह जास। उनकरा दिमाग में एतने भरल रहे कि हमार लइका कहीं हमरे नियर अलबलाह हो गइल तब का होई।

दुनू प्रानी के भीतर देह के भूख आ मन के प्यार पुकारे लागल। सास एगो बाबा के दिहल लवंग मीना के हाथ में बाँध देहली। इहे लवंग तहरा लोगिन के दोष हरी। बाकिर एक साल ले मन पर काबू रखे के पड़ी।

कई रात खटिया पर पड़ल रमेश के मन में क्रांति मचल रह जाव। अइसन जिनिगी से त कुंवारे रहल ठीक रहे। भोर के सुकवा उगल रहे। मीना के बुझाव जे आसमान के हर तारा उनकरा के बोलावत बा। बगइचा में बइठल नरेश इयाद अइले। उहे कहले रहले – बियाह अपना जोड़ा पारी में ही करे के चाहीं। हम त हमेशा तोहार इंतजार कइनी। मीना खिसिया के जवाब देहली – ढेर मत सोच नरेश। बाप महतारी के अरमान हम ना तूरेब। तोहार बाबूजी के धन चाहीं। हमार बाबूजी गरीब बानी। नरेश कहले – पागल से बियाह क के तू का पा लेबू ? उ तहरा के कंेते रखी। ओह चियरबउक से तहार संसार कइसे चली ?

घरे आके मीना खूब रोअली। ध्न–दौलत के देवाल तूरल केतना कठिन बा। कइसन किस्मत उनकरा कपार में लिख देहले भगवान। रमेश बउकाह रहले त का, सगरी परिस्थिति समझत रहले। शिवरात्रि के मेला आइल। मीना जल ढारे जाए के तइयार भइली। तले रमेशो उनकरा साथे लाग गइले।

रास्ता में मीना अपना दिल के दर्द पड़ोस के एगो दुलहिन से सुनवली – समझ में नइखे आवत का करीं। अइसन जिनिगी कब तक चलत रही। पड़ोसिन समझवली – दिल छोट मर करऽ। भगवान पर भरोसा रखऽ। उहे कवनो रास्ता निकलिहें।'

जल चढ़ा के मीना जब बाहर निकलली त रमेश के चेहरा पर एगो चमकत खुशी रहे। केहू तरे कह पवले – 'आज हमनी के घरे नइखे लौटे के। मीना के बांह पकड़ के एगो रिक्शा पर बइठ गइले। ट्रेन में बइठ के मीना से कहले – 'अब घरे नइखे लउटे के। उहाँ बहुत साँसत बा। हमार नानी बोलवले बाड़ी। नानी हमरा के बहुत मानेली। नानी कहली – भगवान के जवन मर्जी होई तवन होई। तू लोग खुशी से एहीजा आके रहऽ लोग। अचके फेरू रमेश के खुशी उमड़ल आ ऊ मीना के अपना बांह में भर लिहलन। मीनो के जइसे उनका खुशी में मन के चैन मिलल।

■ Vkoj 1@601] cojyh ikdl vikVleiV]
lDVj 22@2 }kjdk] ubl fnYyh&110077

अर्द्धांगिनी

अनिरूद्ध तिवारी अशेष

प्रो0 आशुतोष के कार तेज रफ्तार से कालेज कि ओर भागत जात रहे। अचानक उनकर पेट हँउड़े लागल रहे। मन बेचैन हो उठल रहे। सँउसे देह जइसे कवनो अनजान खौफ से पीयर पड़ि के थर–थर काँपे लगल रहे। रहि–रहि के उनके मुँह से 'आह', 'ओह', 'ऊँ', 'अरे' के करुण आवाज निकल परत रहे। अइसन बुझात रहे जइसे उनके कवनो हवा–बेयार छू देले होखे। ड्राइवर चंदन शीशा में उनकर चेहरा देखि के डेरा गइल रहे। लागत रहे जइसे केहू उनका के ढेला–पत्थर चला–चला के मारत रहे, आ ऊ दूनों हाथन से ओके रोके के असफल प्रयास करत रहें। चंदन घबरा के सुभाष चौक से पाँच–छह डेग पहिलवें कार रोकि के पूछि परल रहे–

"का हो गइल सर! तबीयत ठीक नइखे का?"

प्रो0 आशुतोष जइसे ओकर बात सुनबे ना कइले रहे। अचानक ऊ दहिना कनपटी पर हाथ रख के चिल्ला उठल रहें–

"आह, मत मारऽ लोग, मत मारऽ!"

चंदन फाटक खोलि के उनके नगीच आ गइल रहे। आ, अब ऊ जे कुछ देखत रहे, ओहसे हदास के मारे ओकर हाल बुरा रहे। प्रो0 आशुतोष के दायां कनपटी पर साँचो के पत्थर लाग गइल रहे। चोट गहिर रहे आ टप–टप खून चूअत रहे। बाकी प्रो0 आशुतोष के एकर तनिको होश ना रहे। ऊ तेजी के साथ कार से उतर गइल रहें आ कवनों अज्ञात प्रेरणा के वशीभूत बेसुध होके सीधे सुभाष चौक कि ओर धा परल रहें।

सुभाष चौक के दायीं ओर सड़क के किनारे एगो पीपर के पेड़ रहे। पेड़ के नीचे एगो पागल नियर जवान मेहरारू के शैतान लरिकन के हुजूम हाथ में ढेला–पत्थर लिहले घेर के परेशान करत रहे। एगो निपटे लंठ लरिका पत्थर चला के मारे जात रहे कि प्रो0 आशुतोष जोर से चीख परल रहें–

"मत मारऽ बबुआ, मत मारऽ!"

लरिका के हाथ नीचे झुक गइल रहे आ प्रो0 आशुतोष लरिकन के झुंड चीरत आन्हीं नियर ओह पागल औरत कि ओर बढ़ गइल रहें। चंदनवो उनका साथे धाइ परल रहे। उहाँ पहुँच के ऊ जे कुछ देखले रहे, ओसे ओकर करेजा मुँह में आ गइल रहे। प्रो0 आशुतोष की तरे एह पागल औरत के दायां कनपटी पर, ठीक ओही जगह, गहिर चोट लगल रहे आ ओहसे टप–टप खून चूअत रहे।

प्रो0 आशुतोष के देखते लरिकन के झुंड सकपका के पीछे हट गइल। औरत पर नजर पड़ते प्रो. आशुतोष के पाँव से जइसे जमीन घिसक गइल रहे। उनका अपना आँख पर बिस्वासे ना होत रहे। धाइके ऊ ओह पागल औरत से लिपट गइलें आ लरिका अस रोवत एक साँसें कई गो सवाल पूछ परल रहें–"मैकलीना तूं! तुहार ई दशा! कइसे? के कइल?"

मैकलीना कुछ बोललीं ना। पत्थर के मूरति की तरे बेजान अस ठाढ़ रहली हर बात से अप्रभावित आ प्रतिक्रियारहित।

"कुछू त बोलऽ मैकलीना, कुछू त बोलऽ!"

प्रो0 आशुतोष उनके झिंझोड़–झिंझोड़ के पूछत रहें, बाकी मैकलीना त जइसे कहे–सुने के ताकते खो चुकल रहली। चुपचाप खुद में हेराइल, आस–पास के परिवेश से बेखबर, खाली आँखन से टुकुर–टुकुर शून्य में ताकत रही।

प्रो0 आशुतोष उनके दूनों हाथन से थामि के बवंडर नियर घूमत अपने कार कि ओर चल देले रहें। अतना तेज, कि कई ठो लरिका तरे–ऊपर गिर पहलें सँ। एगो खटकिन अमरूद के खाँची सँरिहारत जमीन पर अबे बइठते रहे कि उनके गोड़ के ठोकर से अमरूद भरल खाँची उलट गइल। एगो कुक्कुर के पिछला टँगरी कचरा गइल आ ऊ कूँ–कूँ करत... दर्द से नाच उठल रहे।

प्रो0 आशुतोष के कार अब कॉलेज रोड से सिटी अस्पताल के ओर मुड़ गइल रहे। कार के तेज रफ्तार के साथे उनका मानस–पटल पर अतीत के कईगो चित्र एक साथे साकार हो उठल रहे।

प्रो0 मैकलीना मैथ्यू। अंग्रेजी के व्याख्याता आ समर्थ साहित्यकार। कॉलेजन में नया–नया आइल रही। जइसने विदुषी रहली, ओइसने सुन्नर। पहिले नजर में ऊ प्रो0 आशुतोष के मन–मस्तिष्क के रेसा–रेसा में फागुन के खुमार बन के उतर गइल रही। प्रो0 आशुतोष शुक्ल दर्शनशास्त्र के व्याख्यात रहलन। उनको व्यक्तित्व कम चुम्बकीय ना रहे। देह से सुबहित–आकर्षक रहबे कइले, राष्ट्रीय स्तर के ऊ लेखक, समीक्षक आ वक्तो रहलन। समय के पाबंदी, अनुशासन आ स्पष्टवादिता उनका सोभाव के खास अंग रहे। अपना आदर्श आ सिद्धांत के साथे कबो समझौता ना कइलें। उनका व्यक्तित्व के ई अंतिम पक्ष प्रो0 मैकलीना के अनचाहे अपनी ओर खींच लेले रहे। जल्दिये दू जवानदिल आपस में बहुत घुलमिल गइल रहे। दूनों के जिनिगी के किताब एक दुसरा के आगे पन्ना–दर–पन्ना खुलत चल गइल रहे।

एक दिन प्रो0 आशुतोष के प्रो0 मैकलीने से

पता चलल रहे कि प्रो0 मैकलीना के पाले शरद के अँजोरिया नियर धपधप करत रूप के सुघराई त रहे, बाकी उनकर जिनगी के ऊबड़–खाबड़ पगडंडी पर परसल करिया अन्हार में कबो अँजोर के कवनो फूल ना खिलल रहे। माई–बाप के छाँह बचपने में माथ से उतर गइल रहे। मउसी पाल–पोस के सयान कइले रही। मैट्रिक में ऊ राज–भर में अउवल आइल रही। मउसी खुश होके मुहल्ला भर में मिठाई बँटले रही। बाकिर मैकलीन के इंटर के पढ़ाई पूरा होते ऊहो साथ छोड़ दिहली। भविष्य एक बेर फेरू धुंध में हेराये लागल रहे। बाकी ऊ हिम्मत ना रहले रही। तेज त रहबे कइली। कालेज के पढ़ाई खातिर सरकार से स्कालरशिप मिल गइल रहे। जरूरत पड़ला पर ट्यूशनों क लेले रही। मेहनत रंग ले आइलि आ एक बेर फेरू ऊ अपना राज के नांव रोशन कइले रही। बाकी कॉलेज के पढ़ाई से लेके प्रोफेसर बनला तक के एह सफर में उनके जवान रूप आ अनाथ अकेलापन ना त चैन से कबो सूते देले रहे, ना चैन से कबो जागे। ओही घरी ऊ बलविंदर सिंह नांव के एगो पंजाबी युवक से प्रेम–बिबाह क लेले रही। बाकी जिनिगी के दुर्भाग्य इहवों उनकर पीछा ना छोड़ले रहे। बलविंदर खातिर प्रेम, वासना–पूर्ति के साधन आ स्वार्थ–पूर्ति के साजिश रहे। मैकलीना से शादी करिके ऊ उनके जवानी से खेले आ उनका पुश्तैनी मकान हथियावे के खेल खेलत रहे। समय रहते मैकलीना ओकर इरादा भाँप गइल रही। बहुत मुश्किल से ऊ ओकरा से तलाक लेके आपन पिंड छुड़वले रही। ई घटना उनका भीतर से झकझोर के रख देले रहे। जिनिगी एक बेर फेरू अबिस्वास, निराशा आ संशय के कुहासा ओढ़े लागलि रहे।

चंदन अचानक ब्रेक मार देले रहे, शायद कार के आगे कवनो कुक्कुर आ गइल रहे। प्रो0 आशुतोष के मानस–पटल पर धउरत अतीत के चित्र एकाएक ठहर गइल रहले सँ। छने भर बाद कार फिर से सिटी अस्पताल का ओर भागे लगल रहे आ प्रो0 आशुतोष एक बेर फेरू मैकलीना से जुड़ल अतीत के यादन में खो गइल रहे।

अपना पिछला जिनिगी के व्यथा–कथा सुनावत मैकलीना के पलकन के सीपी से खर–खर मोती झरे लगल रहे। प्रो0 आशुतोष आपन दायां हाथ अनायासे उनका कान्ही पर रख देले रहे–

"रात धुंध, कुहासा आ अन्हरिया से भरल हो सकेले, लमहरो हो सकेले, मैकलीना! बाकी हरमेसा ठहरले ना रहे, ढलबो करेले। तुहरे अस साहसी खातिर जिनिगी के प्रति पराजय के बोध सोभा नइखे देत। तूँ चाहऽ त नया भोर खातिर फिरू से एगो नया सूरज गढ़ सकेलू।"

प्रो0 आशुतोष के ढाढ़स पाके मैकलीना ओह घरी फूट–फूट के रो परल रही। जिनिगी कबो उनके खुल के रोवे के इजाजत ना देले रहे। आजु जइसे ऊ जी भर के रो लिहल चाहत रही। प्रो0 आशुतोषो उनके रोकले ना रहें, छोड़ देले रहे, जी भर रोके, जी हलका कर लेबे खातिर।

प्रो0 मैकलीना के खाली घंटी आजकल ज्यादातर प्रो0 आशुतोष के साथे बीतत रहे, कबो उनके विभाग–कक्ष में, कबो कालेज के कैंटीन भा लॉज में, त कबो छुट्टी के समय शहर के कवनो पार्क भा रेस्तरां में। दूनों जना के ई निकटता सगरो कॉलेज में चर्चा के नियमित विषय हो गइल रहे। कबो–कबो जब केहू एह निकटता के संबंध में प्रो0 आशुतोष से पूछि देव तऽ ऊ मुस्किया के रहि जात रहें, आ उनके हँसी एह निकटता के अउरियो रहस्यमय बना देति रहे। एक दिन प्रो0 मैकलीना, प्रो0 आशुतोष से बहुत अप्रत्याशित ढंग से पुछले रही–

"औरत–मर्द के बीच निकटता के राज का हवे, आशुतोष!"

"काम–वासना!"

आशा के बिपरीत जबाब सुनि के प्रो0 मैकलीना कुछ हैरान–परेशान हो गइल रही।

"हँ, काम–वासना।"

"प्रेम काहें ना?"

"प्रेम खातिर निकटता आ दूरी कइसन, मैकलीना?"

"मतलब?"

"मतलब ई कि, निकटता आ दूरी, दू के बीच होखेला।"

"प्रेमो त दू के बीच होखेला?"

"प्रेम दू के बीच होखेला जरूर, बाकी उहाँ दू होखे ना।"

प्रो0 आशुतोष के बात से मैकलीना के अतीत जइसे उनके आगे आके नंगे ठाढ़ हो गइल रहे। उनके आ बलविंदर के बीच निकटता त खूब रहे, बाकी प्रेम अचिको ना। उहाँ प्रेम के सिर्फ नाटक रहे। निकटता के कवनो अइसन छन ना रहे, जब बलविंदर उनका ऊपर भुखाइल भेड़िया नियर टूट ना परल होखे। उहाँ मैकलीना के इच्छा–अनिच्छा के कवनो अर्थ ना रहे। दूनों एक होके भी एक ना रहे। दूनों के बीच कबो खतम ना होखेवाली दूरी हर पल बनल

रहे। एह निकटता में प्रेम के लेशमात्र ना रहे। हर निकटता अपना साथे काम–वासना के आन्हीं लेके आवति रहे आ मैकलीना ना चाह के भी ओह आन्हीं में उधियात चल जाये खातिर अभिशप्त रही।

अचानक मैकलीना के जइसे साँस उखड़ गइल रहे, मुँह के तेज फीका परि गइल रहे आ पलकन के पंखुड़िन में ओस के मोती झिलमिला उठल रहे।

प्रो0 आशुतोष अचरज से पूछि परल रहें–

"का भइल मैकलीना? तबीयत त ठीक बा?"

"कु–छ–ऊ ना, ठी–क बा–नीं।"

मैकलीना के आवाज से जइसे राख झरत रहे। फिर ऊ सम्हरि के सहज भइल रही आ ओंठन पर मधुहास बिखेरत पुछले रही–

"त आखिर प्रेम का हवे?"

"द्वैत में अद्वैत के सौन्दर्यबोध।"

प्रो0 मैकलीना क्रिश्चियन रहली। प्रो0 आशुतोष के हिन्दू–दर्शन वाली शब्दावली उनका पल्ले ना पड़ल रहे। चिहा के पूछ परली–

"ई द्वैत–अद्वैत आ सौन्दर्यबोध का चीज हवे?"

"द्वैत माने दू, यानी कि हम आ तूँ। अद्वैत माने, जहाँ दू ना होखे, यानी कि न तूँ, न हम अर्थात् न हिन्दू, न क्रिश्चियन। अहंकार के एह दूनों बिकारन के मिटला पर जवने विराट सुन्दरता के बोध होखेला ओकरे नांव हवे प्रेम। कबीर के दोहा पढ़ले होइबू तूँ?"

"प्रेम गली अति साँकरी तामे दू न समाय।"

"हँ, पढ़ले बानीं, बाकी तब एकर अतना गहिर अर्थ ना जानत रहीं।"

सहसा ऊ गंभीर होके कहले रही–

"एगो बात पूछीं आशुतोष?"

"का?"

"तूँ हमसे प्रेम करेलऽ?"

"तोहसे प्रेम ना करीलां, ई संदेह कइसे पैदा हो गइल?"

प्रो0 आशुतोष पलट के सवाल पूछ देले रह ले। ओह घरी उनका चेहरा पर गंभीरता आ गइल रहे। प्रो0 मैकलीना के ओंठन पर बिजुरी के पातर रेखा आ गालन पर फागुन के ललाई चमक उठल रहे। उनके दायां हाथ सहजे प्रो0 आशुतोष के आगे बढ़ गइल रहे आ प्रो0 आशुतोष उनकर हाथ अपने हाथ में थाम के ओंठन से चूम लेले रहे।

एकरे बाद प्रो0 आशुतोष आ प्रो0 मैकलीना के फिरू कबो भेंट ना भइल रहे। अगला दिन से ग्रीष्मावकाश रहे आ कॉलेज खुलल त प्रो0 आशुतोष के तबादला एह नया शहर में हो गइल रहे। मैकलीना से मिले के ऊ बहुते कोशिश कइले रहें बाकी उनका क्वार्टर पर ताला लटकल रहे। उनके मोबाइलो से कवनो सम्पर्क ना हो पावत रहे। अनहोनी के आशंका से ऊ उनके गुम भइला के सूचना स्थानीय थाना में दर्ज करा देले रहें। बाकी मैकलीना के कवनो खबर ना मिलल रहे। आ, आजु ऊ मिलबो कइली मैकलीना होके भी, मैकलीना ना रहली।

प्रो0 आशुतोष के कार सिटी अस्पताल के गेट पर रुकल त ऊ अतीत से वर्तमान में वापस आ गइले। मैकलीना के मनोचिकित्सा विभाग में भर्ती कराके ऊ तुरंत घरे आ गइल रहें। डॉ0 बी0 के0 पटनायक, मैकलीना के आगरा के मानसिक आरोग्यशाला में ले जाये के सलाह देले रहे। प्रो0 आशुतोष घरे आके ओकरे तइयारी में लागल रहे। सगरो घर में कोहराम मचल रहे। परिवार के हर सदस्य मैकलीना के प्रति आशुतोष के एह निकटता से शुरूवे से नाखुश रहे। संयोग से घर में उनके बाबूजी ना रहलन। उनकर ईया आसमान बाँस पर टाँग लेले रही–

"आरे, ई कुलबोरन पैदा हो गइल बा.... मामखोर के सुकुल खानदान के नाक कटवा देलस.... ओह मुँहझँउसी के मउवतो नइखे का ए भगवान?..."

प्रो0 आशुतोष के माई करेजा पर पत्थर राखि के बेटा के समुझावत रही–

"ओकरे महतारी–बाप के खबर दे दऽ ए बबुआ! आके ले जाउ लोग! तूँ एह पचड़ा में मत परऽ!।"

"उनके महतारी–बाप रहतन, त उनकर ई दशा काहें होइत, माई?" – प्रो0 आशुतोष माई के पाँव जाँतत कहले रहे।

"बाकी ओकरा पीछे तूँ काहें के बउराइल बाड़ऽ? आखिर का लागेली तुहार ऊ?" माई तनी कड़ेर होके पुछले रहीं।

प्रो0 आशुतोष तरल आवाज में कहले रहें–

"अर्द्धांगिनी"

"का? अर्द्धांगिनी? आरे, ओकरा साथे तूँहूँ पगला गइलऽ का ए पूत? अर्द्धांगिनी माने का होला, जनबो करेलऽ?"

"हं माई, जानीलां– आधा अंग। मैकलीना हमार आधा देह हई। आ, हम अपने आधा देह के एह दशा में नइखीं छोड़ सकत।"

प्रो0 आशुतोष के माई के जइसे बाई धऽ लेले रहे। ऊ कबो दूनों हाथ से आपन कपार पीटत रहे, त कबो छाती। आशुतोष बड़ा मुश्किल से उनके काबू में कइले रहे। फिरू ऊ उनके अँकवार में लेके लोर

भरल आँखन से समुझावे के कोशिश कइले रहें–

“देखऽ माई! बियाह हो गइला भर से कवनो औरत अपना पति के अर्द्धांगिनी ना हो जाले। यदि... हो जाइति, त आजु पति–पत्नी के बीच अतना तनाव ना रहित।”

बेटा के आदर–स्नेह के स्पर्श से माई के ममता पिघल–पिघल के आँखन से छलक उठल रहे। आशुतोष गदोरी से उनके आँखन के लोर पोंछत आगे कहत रहें–

“तूँ त भगवान शिव के बहुत पूजा करेलू, माई! उनकर चित्र कबो ध्यान से देखले बाडू? आधा जनाना के, आधा मरदाना के। काहें? सती मूंइ गइली त शिव उनके लाश कान्हें पर लादि के घूमत रहें। काहें? काहेंसे कि शिव आ सती दू होके भी दू ना रहें। शिव खातिर सती के लाश लेके घूमल, अपने आधा देह लेके घूमल रहे....।”

बोलत–बोलत आशुतोष के गला सूखि गइल रहे। छन भर रूक के ऊ फिरू से बोलल शुरू क देले रहें–

“.... आ, माई! सती के लाश सड़ि–सड़ि के जहाँ–जहाँ गिरल, ऊ – ऊ जगह धर्म–तीर्थ बन गइल। काहें? काहेंसे कि उहाँ सती के लाश के टुकड़ा ना, शिव के प्रति उनकर प्रेम कटि–कटि के गिरल रहे। ऊ धर्म–तीर्थ ना, प्रेम–तीर्थ रहे, रे माई! प्रेमे शिव आ सती के अर्द्धनारीश्वर बना देले रहे। हमहूँ मैकलीना से ओइसे प्रेम करीलां त ऊ भला हमसे भिन्न कइसे हो सकेली? अब त मान जा माई! तूँ त प्रेम के मूरति, ममता के सूरति, करुणा के सागर हऊ माई....।”

.... कहत–कहत आशुतोष के सबुर जबाब दे देले रहे। ऊ अबोध लरिका नियर फफक–फफक के रो परल रहें। बेटा के मनुहार आ मैकलीना के प्रति उनकर असीम प्यार देखि के माई उनके अँकवार में लेके रो परल रही, आ दूनों हाथ से उनके माथ सुहुरावत बेर–बेर उनके लिलार चूमत रही।

घंटा भर बाद प्रो0 आशुतोष के कार मैकलीना के लेके सिटी अस्पताल से आगरा का ओर चल परल रहे।

■ ,u&20@3] VkYdk dkWykuh] VkYdk oDlZ] te'kniqj 831004

किताब –मिलल

1. **‘मेरी कथा : मेरी व्यथा’** (आत्मकथा) लेखक–**सीताराम पाण्डेय ‘प्रशान्त’** मूल्य–151 / – प्रकाशक – लोकलीला संस्कृतिमंच, बलिहार, बलिया

2. **‘पहिलका डेग’** (काव्य–संग्रह) कवि–**अशोक कुमार तिवारी** प्रकाशक– मूल्य–150 / – अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना–800001

3. **(अ) ‘सेनुर बनि गइल राख’** (नाटक) लेखक–**नन्दकिशोर ‘मतवाला’** मूल्य–60 / –

   (ब) ‘बिरहा सतावे दिनरात’ (नाटक) लेखक–**नन्दकिशोर ‘मतवाला’** मूल्य–75 / –

   (स) ‘काहें गइल परदेश’ (नाटक) लेखक–**नन्दकिशोर ‘मतवाला’** मूल्य–60 / –

   (द) ‘अँगना भइल विरान’ (नाटक) लेखक–**नन्दकिशोर ‘मतवाला’** मूल्य–60 / –

   (ध) ‘बरकू भैया’ (नाटक) लेखक–**नन्दकिशोर ‘मतवाला’** मूल्य–60 / –

   प्रकाशकः– भोजपुरी साहित्य परिषद्, साहेबगंज, पो0 करनौल, जिला–मुजफ्फरपुर

4. **“बाँध टूटेगा न ये मालूम था”** कवि–**ब्रजेश नारायण द्विवेदी ‘शैलेश’** मूल्य–120 / – प्रशान्त प्रकाशन, भगवानपुर, वाराणसी

प्रतिबद्ध कहानी सिरिजना

विष्णुदेव तिवारी

अँजोरिया के पीछे (कहानी संग्रह): सुरेश काँटक:
अभिधा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर: मूल्य-200/- प्रथम संस्करण- 2013

प्रसिद्ध रचनाकार सुरेश काँटक के चउदह कहानियन के संग्रह 'अँजोरिया के पीछे' लेखक का प्रतिबद्ध चेतना आ यथार्थ के समझ के सोद्देश्य अवदान हऽ, जहाँ ऊ अपना के अंध–मार्क्सवाद से बचाइ के ले चले के जद्दोजहद करत लउकत बाड़े।

संग्रह के पहिली कहानी 'बबुआ' महतारी के नेह, तपस्या आ निश्चछल व्यवहार के खिलाफ बेटा के कृतघ्न उपसंहार के मार्मिक कथा बा। कहानीकार जिनगी के संगे– साथ चलत बा, जवन अनुभूत बा, ओके लिखत बा आ कहानी के कवनो ओढ़ल विचारधारा से जँताये नइखे देत।

'भाई के चीठी' गरीब भाई के अपने सहोदर भाई के लिखल गइल मर्म भींजल चिट्ठी आ ओह चिट्ठी के पढ़ला के बाद दोसरका गरीब भाई पर पड़े वाला प्रभाव के मानस–कथा ह। एह में, पंचायत–स्तर पर 'सिस्टम' से चपकल चूषक आ कुपदी–सोभाव के अमानुष लोगन के क्रिया–कलाप व्यक्त भइल बा। कहानी फैंट्सी में खतम होत बिया।

सुच्चा फैंट्सी वाली कहानी हऽ "एक सइ तिरपन बरिस के आदमी"। ई कहानी आवे वाला काल्हु के बारे में सचेत करत बतावत बा कि विज्ञान के दुरूपयोग से संचालित बाजार जब आदमी के संवेदना पर सवार हो जाई, त दारुण अनर्थ होई। प्रेम, लोकलाज, सहकार सब बिला जाई, यंत्र निर्मित संसार सेक्स आ पइसा के अफरात से पीड़ित दुख के सर्जना करत फिरी आ दबंग लोग भा दबंग समष्टि/देश कमजोर वर्ग/ देश के हक छीन के उनके सांस्कृतिक–संस्कार विहीन क दीही।

'भरोसा' सुनयना नाँव के नारी के अपना आ अपना सवाँग के ऊपर भरोसा के कथा ह। ई संग्रह के अंतिम कहानी ह। इहाँ रमरतिया चाची अइसन नेक, मयगर आ बोल्ड स्त्री–पात्र आ राजेश जइसन लंपट पुरुष–पात्र के उद्भावना यथार्थ–परक बा।

नाटकीयता के साथ संवाद शैली में कहल गइल बीर कुँअर सिंह के बलिदान के कहानी ह 'सुगी कहली सुगा से'। ई इतिहास के साथ इतिहास–बोध के कथा बा। 'साँसत' पुरोहितवादी व्यवस्था के पुनर्कथा ह, जबकि 'अँजोरिया के पीछे' चुनाव करावे जाये वाला कर्मचारी लोगन के अपार कष्ट के व्यंग्य–कथा ह। 'एक डेग पीछे' गरीब लोगन के ओछपन के व्यंग्य–कथा ह। प्रशासन के तेज आँख के सोझा चरित्तर चमार आ हरेन्दर हरिजन के धूर्त्तई छिप नइखे पावत। डाँट पड़त बा, मूड़ी हेठ होत बा आ बी डी ओ साहेब जे खुदे एगो हरिजन बाड़े, चरितर के 'असली आग' जरावे के सीख देत विदा लेत बाड़े।

संग्रह के सबसे कमजोर कहानी (?) बा 'बिलरिया मउसी'। एगो आदमी, जेकर दूध, दही एगो बिलार खा–पी जात बिया, के हाथे ओह बिलार के मुअवा के कहानीकार भूख आ हत्या के बीच तर्क–संगत सम्बन्ध बतावे के चेष्टा कइले बा, जवन साफ नइखे हो सकल। प्राणी–जगत के प्रति पात्र विशेष के क्रूर आ नृशंस व्यवहार लेखक के व्यक्तिगत सोच बन के उभरत बा, जवन दुखद बा।

शेष कहानी 'मोह', 'बहाली', 'नेताजी के बैल', 'पागल' आ 'भूत'! भूत!' बाड़ी स, जेमे कहानीकार के पसन के विषय आ विन्यास दीठगर भइल बा।

कहानीकार कुछ कहानियन में पात्रन से कुछ करवला का बजाय सोचवावे आ बोलवावे के काम जादा करवले बा। कुछ कहानी में पात्रन के स्वतंत्र कार्य–व्यापार पर लेखकीय दबाव आ प्रभाव लउकत बा। तबो, 'अँजोरिया के पीछे' भोजपुरी कहानी–साहित्य के स्तरीय सृजन के रूप में रेखांकित करे लायक बा।

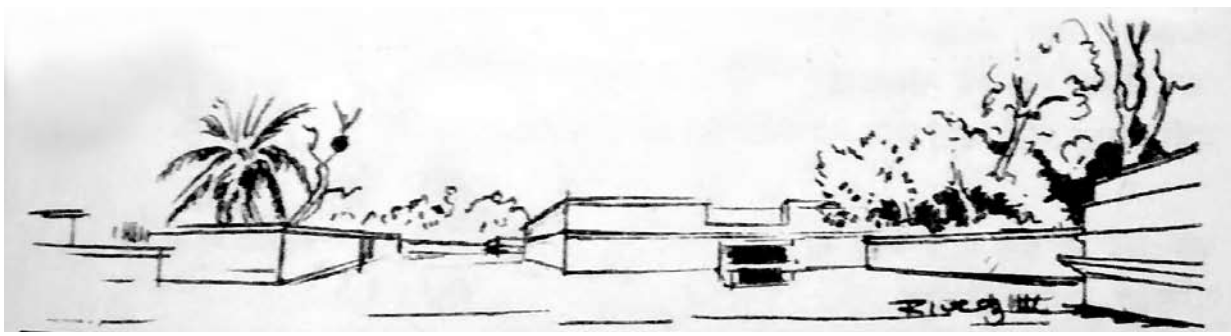

समीक्षा-2

परलोक में लोक

डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव

'जय कन्हैया लालकी' (बाल उपन्यास)-आशारानी लाल
मूल्य: 200/- अतुल्य प्रकाशन, दरियागंज, दिल्ली

भोजपुरी कथा–कहानी में डॉ0 आशारानी लाल के नाम अनजाना नइखे। हाले में उनकर बाल उपन्यास 'जै कन्हइया लाल की' प्रकाशित भइल हऽ। पूरा उपन्यास अलग–अलग शीर्षकन में भगवान कृष्ण के जीवन पर आधारित बा। चूंकि कृष्ण सामान्य व्यक्ति ना हउँवे, एह से उनकरा हर कर्म में अलौकिकता के समावेश बा। ऊ आध्यात्मिक दृष्टि से अलौकिक पुरुष बाड़े आ उनका जीवन में घटित सगरी कथा–कहानी में ईश्वरी शक्ति के बखान बा। अइसन घटनन पर कवनो तर्क काम ना करी। हर घटना के चमत्कार बाल–पाठकन के ऊंधी उचाटे आ सपना जगावे के काम करी। भक्ति आ आध्यात्मिक आस्था बाल हृदय में कथा के माध्यम से चहुँपी आ विश्वास के जड़ मजबूत करी।

गोकुल–वृंदावन के परिवेश में पूतना–बध, बकासुर–वध, गोबरधन–धारण, कंस–वध आदि भागवत कथा के मुख्य स्तंभ बा। लेखिका एह पुस्तक के प्रेरणा–स्रोत तमिल दम्पत्ति सौ0 आशा केतकर आ श्री भा0बा0 केतकर के लिखल 'संक्षिप्त श्रीमद् भागवत कथा' बतवले बाड़ी।

लमहर कथा के छोटहन बना के लिखे में लेखक के आपन प्रतिभा आ कौशल के उपयोग करे के पड़ेला। एमे कवनो शक नइखे कि आशारानी लाल श्रीकृष्ण के जीवन के विविध प्रसंगन के रोचक ढंग से सजाइ के पठनीय बना देले बाड़ी। लेखिका के भोजपुरी में कथा कहे के आपन शैली बा। कहीं कवनो फालतू प्रसंग नइखे। कथा में प्रवाह बा। छोट–छोट अड़तीस गो शीर्षकन में कन्हैया के कारनामा के बखान कइल गइल बा। कवितांश पर बनल शीर्षक अपने आप में अर्थपूर्ण बा।

जै कन्हइया लाल की मदन गोपाल की
लइकन के हाथी घोड़ा, बुढ़वन के पालकी।

कथा में लइका लोग हाथी घोड़ा पर चढ़ला के जिज्ञासा आ आनंद के लाभ उठावत बा। ओने बूढ़–पुरनिया लोगन के भगवान के नाम का पालकी रूप में सहारा बा। पालकी से पार उतरे के बा।

पुस्तक में कौतूहल कठही गाड़ी के धूरा में तेल के काम करत बा। ऊ कौतूहल सभ जगह मर्यादित ढंग से पैदा होता। बांसुरी आ गोपी के चीरहरण प्रसंग में मर्यादा हनन नइखे होत। परलोक के कथा भूमि पर लौकिक संदेश एह कृति के विशेषता बा।

कृष्ण के जन्मे भइल रहे दुष्ट–प्रवृत्ति के विनाश करे खातिर। एगारह प्रसंगन में राक्षस वृत्ति के वध होता। अध्यात्म अउर भक्ति–आस्था में पगल कन्हैया के लीला मथुरा–वृंदावन के बहाने समस्त मानव समाज खातिर मंगलकारी बा। पुरान–कथा के आधुनिक जामा–जोड़ा पेन्हा के साहित्य के मेला में उतरले बाड़ी लेखिका। बाल–उपन्यास के दर्जा दिलावे में भाषा के पूरा जोगदान बा। छिहलत भाषा लइका लोगन के पसन होला, अँटके वाला शब्दन से बालपाठक भागेले। हजारों साल बीतलो पर जेंतरे 'कृष्ण–कथा' पुरान ना भइल ओही तरे "जै कन्हइया लाल की" हमेशा तरोताजा रही।

एह कृति खातिर डॉ0 आशारानी लाल बधाई के पात्र बाड़ी। ई बधाई एतना उर्वर बा कि लेखिका के भोजपुरी रचना हमेशा उगत रही।

फोटो ग्राफर, लेखक, कवि भाई लोगन से अनुरोध.....

(1) फुल स्केप कागज पर साफ सुन्दर लिखावट में भा टाइप कराके रचना–सामग्री आ साथ में संक्षिप्त–परिचय आ फोटो ग्राफ भेजीं।
(2) पत्रिका में रिपोर्ताज रपट, फीचर सामग्री भेजत खा, साथ में ऊहे चित्र/फोटो भेजल जाव, जवन बढ़िया आ प्रकाशन जोग होखे।
(3) पाठक भाई लोगन से विनती बा कि पत्रिका का बारे में, आपन प्रतिक्रिया/विचार भेजत खा, आपन नाम पता, पिनकोड सहित आ मोबाइल नंबर भेजीं।
(4) संस्कृति–कला संबंधी आलेख बढ़िया चित्र रेखाचित्र, फोटोग्राफ के साफ प्रिन्ट–आउट का साथे भेजत खा ओकरा तथ्य–परक प्रामाणिकता के जाँच जरूर करीं। संपादक का नाँवें ईमेल पर फोटोग्राफ भेजल जा सकेला बाकि लिखित रचना के प्रिन्ट डाक/कुरियर से भेजल जरूरी बा।
(5) निजी खर्चा पर निकलेवाली आ बिना लाभ के छपेवाली अव्यावसायिक पत्रिकन के सबसे ज्यादा सहयोग ओकरा लेखक कवियन आ पाठकन से मिलेला। ई समझ के एह पत्रिका के पहिले खुद ग्राहक बनी अउरी दुसरो के बनाईं।

गतिविधि–1

विद्याश्री न्यास के सम्मान समारोह–2015 आ साहित्य अकादमी, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान श्री बलदेव पी0जी0 कालेज का संयुक्त आयोजन में भारतीय लेखक–शिविर

धर्मसंघ शिक्षा मंडल सभागर, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी में 14 जनवरी 15 के उद्घाटन आ सम्मान समारोह आयोजित कइल गइल जवना में आचार्य विद्यानिवास मिश्र "लोक कवि सम्मान" भोजपुरी भाषा–साहित्य के संवर्द्धन खातिर, 'पाती' के संपादक यशस्वी कवि अशोक द्विवेदी के दिहल गइल। श्री द्विवेदी वर्ष 1979 से भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका "पाती" के संपादन कर रहल बाड़े। हिन्दी आ भोजपुरी में उनकर लगभग एक दर्जन किताब बाड़ी सऽ।

विद्याश्री न्यास द्वारा "आचार्य विद्यानिवास मिश्र स्मृति सम्मान" श्री नन्द किशोर आचार्य के उनका उत्कृष्ट साहित्य सर्जना खातिर दिहल गइल। "राधिका देवी लोक कला सम्मान" श्रीमती सुचरिता गुप्ता के लोकगायकी आ संगीत का क्षेत्र में बहुमूल्य योगदान खातिर दियाइल। एह अवसर पर श्रीकृष्ण तिवारी गीतकार सम्मान श्री ब्रह्माशंकर पाण्डेय के मिलल।

सम्मान समारोह का अवसर पर सभागार में "संभावना कला–मंच, गाजीपुर के पोस्टर प्रदर्शनी आकर्षण के केन्द्र रहे। एकर संयोजक राजकुमार जी अपना दर्जन भर कला–सहयोगियन का साथ साहित्य आ कला के संयोजन से एगो अलगे समाँ बन्हले रहलन। विद्याश्री न्यास के संस्थापक अध्यक्ष श्री महेश्वर मिश्र आ मुख्य अतिथि श्री किरण शंकर (कविवर जयशंकर प्रसाद जी के पौत्र) द्वारा सम्मान देबे का समय सभा–मंच पर श्री दयानिधि मिश्र, विशिष्ट अतिथि राजेश गौतम आ डा0 अरुणेश नीरन उपस्थित रहलन। विषय प्रवर्त्तन आ संचालन डा0 प्रकाश उदय कइलें। जयशंकर प्रसाद के सृजन–यात्रा पर भारतीय लेखकन के राष्ट्रीय संगोष्ठी क दुसरा सत्र में "जयशंकर प्रसाद का समय आ साहित्यिक परिदृश्य" पर चर्चा रहे जवना क अध्यक्षता शंकरलाल पुरोहित जी (भुवनेश्वर) कइलें। एम्मे सुशील कुमार पांडेय (सुल्तानपुर) माधवेन्द्र पाण्डेय (शिलांग) आ प्रो0 अवधेश प्रधान (वाराणसी) आपन उद्गार प्रगट कइल लोग। डा0 वशिष्ठ अनूप विषय–प्रवर्त्तन कइलें।

तिसरका सत्र "कवि जयशंकर प्रसाद" पर चन्द्रकला त्रिपाठी (वाराणसी) विषय प्रवर्त्तन कइली। भारती गोरे (महाराष्ट्र) संतोष भदौरिया (इलाहाबाद) प्रो0 अनन्त मिश्र (गोरखपुर) अष्टभुजा शुक्ल (बस्ती) आ राजेन्द्र प्रसाद पाण्डेय (वाराणसी) आपन उद्‌गार प्रकट कइलें।

साँझ खा 7 बजे से सांस्कृतिक संध्या में सुश्री महालक्ष्मी, सुश्री माधवी, डा0 शशि तिवारी आ डा0 रेवती साकलकर क गायन भइल।

15 जनवरी के पहिलका सत्र में युवा समवाय क रहे दुसरका सत्र में "जयशंकर प्रसाद आ मंच" विषय पर आनन्दवर्धन (वाराणसी) विषय प्रवर्त्तन कइलें। श्री कमलेश दत्त त्रिपाठी जी का अध्यक्षता में विधुखरे दास (इलाहाबाद) कुँवरजी अग्रवाल (वाराणसी) रेवतीरमण (मुजफ्फरपुर) आपन उद्‌गार प्रकट कइलें।

"जयशंकर प्रसाद का कथेतर गद्य" विषय पर नन्दकिशोर पाण्डेय (जयपुर) व्योमेश शुक्ल आ जितेन्द्रनाथ मिश्र (वाराणसी) का अलावा श्री श्याम सुन्दर दूबे (दमोह) क वक्तव्य बहुत प्रभावशाली रहे। एह सत्र में विषय प्रवर्त्तन विजेन्द्र पाण्डेय (वाराणसी) कइलन।

एगो सत्र "कथाकार जयशंकर प्रसाद" पर आयोजित रहे। जवना में प्रो0 बलराज पाण्डेय, डा0 रामदेव शुक्ल, सदानन्द साही (वाराणसी) सविता उपाध्याय, बलभद्र आदि आपन उद्‌गार प्रगट कइल लोग। एकर विषय प्रवर्त्तन बाबूराम त्रिपाठी कइलें।

प्रस्तुतिः हीरालाल 'हीरा'

गतिविधि-2

भारतीय भाषा केन्द्र (जे0एन0यू0) नई दिल्ली में पुस्तक-विमोचन, परिचर्चा आ काव्यपाठ

"'पाती' पत्रिका भोजपुरी रचनाशीलता के आंदोलन के क्रांति–पताका हऽ। 'पाती' माने, नयकी पीढ़ी के नाँवे सांस्कृतिक चिट्ठी। एगो चुपचाप चले वाला सांस्कृतिक आंदोलन हवे 'पाती', जवना के अशोक द्विवेदी अपना संसाधन से चुपचाप चला रहल बाड़े।" ई उद्‌गार सुप्रसिद्ध साहित्यकार ikQ0 dnkjukFk flag (प्रो0 एमरिटस, साहित्य एवं संस्कृति अध्ययन संस्थान) के रहे। भारतीय भाषा केन्द्र (जे0एन0यू0, नई दिल्ली) में 'पाती' के यशस्वी संपादक, कवि v'kkd f}osnh के हालहीं प्रकाशित कविता–संकलन Þdh N vkx dh N jkxß dk foekpu vk ifjppk xk"Bh के अध्यक्षता करत ik0 dnkjukFk flag कहलें कि "भोजपुरी भाषा आ साहित्य खातिर 'पाती' के मूक आंदोलन इयाद कइल जाई। अशोक द्विवेदी के रचनात्मकता आ संपादन दूनों सराहनीय बा।" अशोक द्विवेदी के पुस्तक विमोचन आ काव्य–पाठ का बाद प्रोफेसर केदारनाथ सिंह जी आगा कहले कि भोजपुरी लयात्मक (लिरिकल) भाषा हऽ एही से गीत का अनुकूल बिया। टैगोर के 'गीतांजलि' के बहुत अनुवाद भइल, भोजपुरी में 'बँगला' लेखा संगीतात्मकता बा एसे ओकर अनुवाद सराहल गइल। हिन्दी में तनी खड़खड़ाहट बा! खड़ी बोली से बनला का कारन, खड़खड़ाले।"

"अशोक द्विवेदी के 'फूटल किरिन हजार' हम पहिले देखले रहनी। "कुछ आग कुछ राग" में अगीत, गीत, सॅटायर, फ्री–वर्स, गजल हर तरह क कविता बा; एहसे ई एगो मुकम्मल संग्रह बा भोजपुरी कविता के। खाँटी भोजपुरी के रंग देखे के होखे त अशोक द्विवेदी के कविता पढ़े के चाहीं। बहुत अइसन शब्द जवन हमनी के भुलाइल जाता, अशोक जी ओह शब्दन के अर्थ देके, पुरान शब्दन के नया जीवन दे देले बाड़े। व्यंग्य इनका कविताई के धार देत बा।" संग्रह के दू गो कविता 'गाँव के कहानी' आ 'साँप' का चर्चा का बाद 'गजल' प चर्चा करत केदारनाथ जी आगा कहलें कि भाषा अपना प्रकृति का मोताबिक 'विधा' के बदल लेले। अरबी फारसी से चल के 'गजल', उर्दू में आ हिन्दी में जइसे बदलल, ओसहीं भोजपुरी प्रकृति में ओकर रंग आ 'टोन' बदलल। अशोक द्विवेदी ए विधा के भोजपुरी जबान में ढाल देले बाड़े। अइसन चुटीला शेर से भरल गजल भोजपुरी में कम लिखाइल बा। एह संग्रह में भोजपुरी भाषा के बनाव, बचाव आ सँवार सब एक साथ मौजूद बा।"

कार्यक्रम के शुरूआत डा राम चन्द्र के स्वागत भाषण आ विषय–प्रवर्त्तन से भइल। अशोक द्विवेदी क परिचय देत ऊ कहलन कि इहाँ के कविता गाँव प्रकृति, समय आ समाज से जुड़त अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर घटित बदलाव के रेखांकित करत बिया। सी. आर. सी. ए. एस. के अध्यक्ष प्रो0 संजय पाण्डेय जी भोजपुरी के आपन मातृभाषा बतावत आ अपना माटी–अँगना–ओसारे से लेके वैश्विक संदर्भ से जोरत कहलें कि ई भाषा दिल के करीब बा एही से बात बतकही में हिन्दी ले ढेर हम सुभाविके एके बोलेनी। अशोक द्विवेदी के "कुछ आग कुछ राग" पढ़ि के अपना माटी, माई आ संस्कृति से जुड़े के मौका मिलल। अशोक द्विवेदी के कविता कई गो– भुलाइल

भोर पड़ गइल स्मृतियन के फेर जिन्दा क दिहलस। राजनीति आ समाजिक व्यवस्था के गहिर समझ इनका कविता में झलकत मिलल, एह रचनन में वैश्विक परिदृश्य के ताप महसूस कइल जा सकत बा। किताब में नया बदलाव आ 'अवमूल्यन' के प्रभावपूर्ण अभिव्यक्ति भइल बा।

सुप्रसिद्ध कथा लेखिका डा0 अल्पना मिश्र (दिल्ली विश्वविद्यालय) एह नया किताब के 'भूमिका' के अशोक द्विवेदी का कविता के कुंजी बतावत कहली कि कवि पूरा सत्यनिष्ठा आ सहजता से कविता का बारे में आपन विचार भूमिका में स्पष्ट कइले बा। 'मातृत्व गीत' 'बचपन' जइसन कविता भोजपुरी में लिखल जा रहल बा ई देखि सुखद अचरज भइल। गाँव आ ओकरा अस्मिता के लेके कवि में बहुत चिन्ता देखे के मिलल त संस्कृति से गहिर सरोकारो लउकल। लोक संस्कृति का नाँव पर फइलत अपसंस्कृति प कवि प्रतिरोध का साथ आक्रामक बा, बाकिर व्यंग्य का साथ। "केकरा खातिर" कविता के संदर्भ में 'अझुराइल सपना' के रूपक के खोलत अल्पना जी कहली कि ई वर्तमान समय, आ समाज के सत्य उद्घाटित करे वाला रूपक बा। मानवी विडम्बना के कई गो मरम स्पर्शी अभिव्यक्ति एह कवितन के पढ़त खा मिल जाई। ई किताब भोजपुरी साहित्य क अनमोल रत्न बा।

प्रसिद्ध कवयित्री डा0 सुमन केशरी 'कुछ आग कुछ राग' के रचनन में आइल सहज बिम्बन के रेखांकित करत कहली "अइसन नया आ टटका विम्ब अशोक द्विवेदी का कविता के जीवंत बनावत बा। गाँव आ गाँव के विकास के आपन विसंगति बाड़ी सन। ओह पीड़ा के अभिव्यक्ति पहिल कविता में बा। 'मातृत्व', 'एकता', केकरा खातिर' आदि कवितन का कन्टेन्ट के चर्चा करत सुमन जी कहली कि 'जिनिगी के दउड़' में मानवता के ऊ अन्धा दउड़ बा। अब न ओइसन गाँव न आदमी के उ चैन। दुश्चिन्ता से भरल आदमी, विकास का बादो असहाय बा। कवि प्रभावी ढंग से एह स्थिति/अवस्था के रेखांकित कइले बा। 'कुछ आग कुछ राग' में कवि के ईमानदार अभिव्यक्ति के कविता बाड़ी सन। जवन कवि का भाषा के ताकत के प्रमाणित करत बाड़ी स। एह कवितन के बहाने अपना जड़ो से जुड़े के अवसर मिलत बा।

डा0 राम चन्द्र कहलन कि 'पाती' के माध्यम से ऊ अपना भाषा से पहिलहीं से जुड़ल बाड़न। 'कुछ आग कुछ राग' आ ओकर रचना समय, समाज आ समाजिक विसंगतियन के अपना लोकस्वर में हमनी का सामने प्रस्तुत करत बाड़ी सन। डा0 रामचन्द्र जी का आग्रह पर कवि अशोक द्विवेदी अपना कुछ फ्री–वर्स, गीत अगीत आ गजल के पाठ कइलन, 'परंपरा–सुमिरन के कर्म गीत', 'कवि तूँ धरती राग लिखऽ', 'हकूमत गीत गावेले', 'मड़इया मोर' आ 'बस हमहीं न होइब' कविता के पाठ का बाद धन्यवाद आ आभार संयोजक डा0 रामचन्द्र जी प्रगट कइलें। एह अवसर पर समिति–कक्ष में विश्वविद्यालय के सुधी–सहृदय, भाषाविद् प्रोफेसर; शोधार्थी आ छात्र–छात्रा उपस्थित रहे लोग। डा0 रमाशंकर श्रीवास्तव (दिल्ली विश्वविद्यालय) डा0 सुशील कुमार तिवारी (इग्नू) प्रोफे0 गोविन्द प्रसाद, डा0 गंगा सहाय मीणा, डा0 रमण प्रसाद सिन्हा, डा0 आसिफ (जे0एन0यू0), डा0 प्रमोद कुमार तिवारी (गुजरात विश्वविद्यालय) आदि लोगन का सक्रिय सहभागिता से भोजपुरी के ई आयोजन जे0 एन0 यू0 परिसर में बहुत सराहल गइल।

■ iLrqfr % lkUrouk] ¼t0,u0;0½

राउर पन्ना

दिसंबर क पाती–74 मिलल। 'हमार पन्ना' में कहल कुछ बात मन के छू लेत बा। आपके सुझाव पर अमल के आवश्यकता बा। प्रगत द्विवेदी क 'हट हटा के' कहल आँख खोले वाला स्तंभ बा। पत्रिका क लेख, कहानी कविता स्तरीय आ सराहनीय बा। 'बनचरी' (पहिली कड़ी) पढ़ले के बाद मन छपटाये लगल कि आगे का भइल? हिडिमा का पौराणिक चरित्र के नया ढंग से गढ़े बदे उपन्यास लेखक के साधुवाद न दिहल जाय त अपराध बोध होई। ई उपन्यास भोजपुरी भाषा खातिर बहुत बड़ी देन साबित होई। आगे क कथा क इन्तजार रही। शशि प्रेमदेव क गजल बहुत अच्छा आ मौजूँ लगल 'मोथा के, का खाक बिगारी? आन्ही, पीपर, बर उखारी!

fot;'kdj ik.M;] ujk;.khfogkj dkykuh] fprbZij] lqUnjiqj] okjk.klh

'पाती' दिसंबर 14 के अंक। सचमुच बेहतरीन बा। हर रचना अपना आप में पठनीय, प्रभावशाली। 'बनचरी' के जीवन्त अंश, पढ़ल, पूरा 'नावेल' पढ़े खातिर विवश क देले बा। अब एह पत्रिका के अंक नियमित रूप से देखब।

iq"dj dqekj] ^vkjk*] fcgkj

'पाती'– 74 में 'बनचरी' उपन्यास अंश पढ़त–पढ़त अइसन लागल जइसे बन के दृश्यन के सजीवे देखत होईं। महाभारत में कथा चाहे जवन होखे बाकि इहाँ त कथाकार का दुनिया में बिचरत खा 'हिडिमा' का बारे में अउर जाने क जिज्ञासा बढ़ल जात बा। आगे का कथा खातिर हमरो इन्तजार करहीं के पड़ी। ओइसे हमेशा नियर एहू बेरी 'पाती' कुछ नया आ सुन्दर लागल। अच्छा लेख, कहानी, कविता, गजल....वाह!!

/khjk izlkn ;kno] jkeiqj mn;Hkku] cfy;k] m0iz0

'पाती' के नया अंक देखिके सुखद अचरज भइल। कलात्मक कवर आ रचना–चयन के विविधता से भरपूर। सामग्री के सुरुचि से परोसल मामूली झंझटियाह काम ना हऽ। आपके संपादन कौशल सराहे से नइखीं रहि सकत। पुस्तक चर्चा, साहित्यिक गतिविधियन क शानदार रिपोर्टिंग आ 'राउर पन्ना' एकरा में चार चान लगावत बा। कविता किसिम–किसिम के त बटले बा, 'लघुकथा' कम नइखी सऽ। विनोद द्विवेदी, कौशलेन्द्र सिनहा क लघुकथा नया तेवर के सोद्देश्य कहानी बाड़ी सन। मेसेज देबे में सफल। भोजपुरी कविता पर आलोचनात्मक लेख कामचलाऊ बा। रदीफ–काफिया, आ 'बहर'– अनुशासन से भरपूर गजल भोजपुरी का ताकत के बयान करत बाड़ी सऽ। सधल ढंग से कहल गइल गजल असर डलबे करी। एही तरे संधिदूतजी, कन्हैया पाण्डे के कविता, विष्णुदेव तिवारी आ कृष्ण कुमार के कहानी बहुत प्रभावशाली लागल।

'बनचरी' पढ़त खा बुझाइल कि हम एगो दोसरे लोक में पहुँच गइल बानी। गजब चित्रण बा...मन लुलुवा गइल....पता ना अगिला अंक कब मिली? साँचो ई भोजपुरी के एगो संपूर्ण पत्रिका बिया। अगिला सोनहुला 'अंक–75' खातिर हमार अगवढ़ शुभकामना।

vkdk{kk] dkfnoyh ¼oLV½] eqEcbZ] egkjk"V

'पाती' के हर अंक अपना प्रस्तुति में नया आ मोहक लागेला। चौहत्तरवाँ अंक के कवर–चित्र अतना कलात्मक आ सादगी भरल रहे कि मुग्ध हो गइनी। एकरा चित्रकार के साधुवाद। शिलीमुख आ शशि प्रेमदेव के गजल बार–बार पढ़नी। अपना जवार के संस्कृति आ जीवन से जुड़ल आलेख ज्ञानवर्द्धक बा। इहाँ हमनी का क्षेत्र का लोगन में अपना भाषा का पत्रिका से बहुत खुशी मिलेला। 'पाती' भरल पुरल पत्रिका बिया। कथा–कहानी, विचार, चिन्तन जानकारी का साथ किताब–चर्चा। एह अंक के कूल्हि कहानी, खास कर विष्णुदेव के बहुत जोरदार लागल। लेखक लोग के हमार बधाई।

t0t0 jktiqr] HkkMqp] xqtjkr